

आज़ादी के बाद उर्दू अफ़साना

(ایک انتخاب)

आज़ादी के बाद उर्दू अफ़साना (एक इन्तिख़ाब)

जिल्द दोम

جلددوم

तरतीब

गोपी चंद नारंग इर्तज़ा करीम असलम जमशेदपुरी (1)

گو پی چند نارنگ ارتضلی کریم اسلم جمشید پوری



قومی کوسل برائے فروغ اردو زبان وزارت رق انسانی دسائل (حکومت بند) دیسٹ بلاک ۱،آرے۔ پورم، نی دمل 110066

Azadi Ke Bad Urdu Afsana (An Anthology), Vol. 2

Selected & Edited by

Gopi Chand Narang, Irteza Karim & Aslam Jamshedpuri

ت قومی کونسل براے فروغ اردو زبان، نی دبلی

سنداشاعت : نومبر 2003

يبلا او يشن : 1100

Rs. 200/- : قيت

سلسله مطبوعات : 990

كېوزنگ : عروف انثر پرائزيز، ئي د مل

ISBN: 81-7587- 041-9(Set) ISBN: 81-7587- 043-5(Vol II)

ناشر: دُائِرُكُمْ، تُومى كُوْسَل برائ فروخ اردو زبان، ويست بلاك -1، آر.ك. بورم، نى وبلى 110066 فالح : لا بوقى بنث اليس، جامع معجد، وبلى - 110006

आज़ादी के बाद उर्दू अफ़साना

जिल्द दोम

जिल्द दोम नुगर्भ

425 जीलानी बानो मोम की मरियम 454 अ केट हैं एर्ट प्रेस्ट कि कि कि में ना 455 नव्यर मसऊद ताऊस चमन की मैना 546 प्रेस्ट हैं हैं कि किया मरहदी विद्या नहीं मरी 570 ज़िक्या मरहदी विद्या नहीं मरी 570 अंजाम कार 606 पिर अनवर ख़ान 607 अनवर ख़ान 608 अंजाम कार 607 अनवर ख़ान 632 अली इमाम नक्वी 646 केट पिर केट कि	424	جيلاني بالو	موم کی مریم	13
455 नव्यर मसर्ज्य ताउस चमन की मैना 546 उर्दे रेंद्र रेंद्	425	जीलानी बानो	मोम की मरियम	
546 المَارِيِّ الْحِرْ الْمِرْ الْمِرْ الْمُرْ الْمُرْالِلْمُ لِلْمُلْمُ الْمُرْ الْمُلْمُ الْمُرْمُ الْمُرْ الْمُرْ الْمُرْ الْمُرْ الْمُرْ الْمُرْ	454	فيمسعود	ھاؤس چ ن کی مینا	14
547 ज्किया मश्ह्दी विद्या नहीं मरी 570 انور ال انور ال ال الإنوان اله الهزير	455	नव्यर मसऊद	ताऊस चमन की मैना	
570 انجاع الله الجارات الله الإسلام الله الإسلام الله الله الله الله الله الله الله ا	546	ذكيه مشهدى	بذ انہیں مری	15
571 सलाम बिन रज्ज़ाक़ । अंजाम कार 17 रि रि थी। है कि विशेष 18 थी। है कि विशेष 19 थी। ह	547	ज्किया मश्हदी	बिद्दा नहीं मरी	
17 का अनवर ख़ान हक् कि	570	سلام بن رزاتی	انجام کار	16
607 अनवर ख़ान हक्क़ 632 ८००००००००००००००००००००००००००००००००००००	571	सलाम बिन रज्ज़ाक	अंजाम कार	
632 हैंगा है हैंगा है हैंगा है हैंगा है हैंगा है हैंगा है है हैंगा है	606	انور خال	$\mathcal {S}$	17
633 अली इमाम नक्वी डोंगरवाड़ी के गिध 646 हैं। हैं। हैं। हैं। हैं। हैं। हैं। हैं।	607	अनवर ख़ान	हक्	
646 الورقر الحراق الورقر अनवर क्मर काबुली वाले की वापसी 690 الحراق الح	632	علی امام نفوی	ڈوگرواڑی کے گدھ	18
647 अनवर क्मर काबुली वाले की वापसी 690 जुरी हैं। 691 सय्यद मोहम्मद अशरफ़ 708 जुर्म उस्मानी 709 अंजुम उस्मानी 718 शहरे गिरया का मर्की 718 जुर्र रशीद चादर वाला आदमी और मैं 752 जुर्र रशीद चादर वाला आदमी और मैं 752 केंग्रें जुर्म अहमद 773 शोकत हयात 784 जुर्र राजें जुर्म जुर्म जुर्मे की 785 मुशर्रफ आलम ज़ैकी 786 कातयाईन बहनें 787 की	633	अली इमाम नक्वी	डॉगरवाड़ी के गिध	
690 اَرَى الرَّرِي الرَّرِي اللَّهِ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ الللَّهُ الللَّهُ الللَّهُ الللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّ	646	انورقر	کالمی والے کی والیسی	19
691 सव्यद मोहम्मद अशरफ़ आदमी 708 छेड़ हैं। छुटी हुँ 21 709 अंजुम उस्मानी शहरे गिरया का मकीं 718 प्राच्य की मकीं 719 साजिद रशीद चादर वाला आदमी और मैं 752 की के के शिर्म अलम बीकी 753 शोकत हयात 764 छेड़ हें हैं 23 765 मुशर्रफ़ आलम ज़ैकी 765 कातयाईन बहनें 766 के के रहे हो हैं हैं 777 के शोकत हयात 778 के सुशर्रफ़ आलम ज़ैकी 778 के सुशर्रफ़ आलम ज़ैकी 778 के सुशर्रफ़ आलम ज़ैकी 778 के रहे हो हैं 779 के रहे हो हैं	647	अनवर क्मर	काबुली वाले की वापसी	
708 اَلْمُ مُرِالًا أَدِي الِّرِ عَلَى اللهِ كَالِي اللهِ كَالِي اللهِ كَالِي اللهِ اللهِ كَالِي اللهِ اللهِ كَالِي اللهِ كَالِي اللهِ كَالِي اللهِ اللهِ كَالِي اللهِ كَالِي اللهِ كَالِي كَالِي كَالِي كَالِي كَالِي كَالِي كَالِي كَالِي كَالِي كَاللهِ كَاللهُ كَا	690	سيدفحر انثرف	5.7	20
709 अंजुम उस्मानी शहरे गिरया का मकीं 718 प्रेन्ट्रा प्रिंग प्रेन्ट्र प्रिंग प्रिंग प्रेन्ट्र प्रेन्ट्र प्रिंग प्रेन्ट्र वाला आदमी और में 22 719 साजिद रशीद चादर वाला आदमी और में 23 752 केंग्री अंग्रन का पेड़ आंगन का पेड़ 24 772 बेटिन द्वान प्रंव पांव पांव 784 ग्रेन्ट्र प्रेन्ट्र प्रेन्ट्र प्रेन्ट्र प्रमार्थफ आलम जौकी कातयाईन बहनें कातयाईन बहनें 818 ग्रेन्ट्र प्रेन्ट्र प्राप्त	691	सय्यद मोहम्मद अशरफ्	आदमी	
718 عادر دالا آدى اور ش 22 719 साजिद रशीद चादर वाला आदमी और में 752 شوك الا 23 753 शामोएल अहमद आंगन का पेड़ 772 توكت حيات 24 773 शोकत हयात पांव 784 تاني كين كين كين كين كين كين كين كين كين ك	708	الجحم عثانى	شهر بدکاکس	21
719 साजिद रशीद चादर वाला आदमी और मैं 752 की	709	अंजुम उस्मानी	शहरे गिरया का मकीं	
752 يَوْلُ الا كُوْلُ الا كُوْلُ اللهِ 23 753 शामोएल अहमद आंगन का पेड़ 772 يَوْلَت حِيات يُولُت حِيات 773 शोकत हयात पांव 784 مَرْن عالم وَدُولٌ عَلَيْ مِنْ بَيْنِ بَيْنِ اللهِ كَالِي بَيْنِ اللهِ كَاللهِ كَاللهُ كَاللهِ كَاللهُ كَا	718	ماجد دشید	چادر والا آ دمی اور میں	22
753 शमोएल अहमद आंगन का पेड़ 772 चीट ट्यूं चे चीट ट्यूं च्युं च	719		-	
772 وكت حيات 24 773 शोकत हयात पांव 784 مشرف عالم ؤدول الحجاج 25 785 मुशर्रफ् आलम जौकी कातयाईन बहनें 818 بتم رياش 26	752	-		23
773 शोकत हयात पांव 784 سُرْف عالم وُدول 25 785 मुशर्रफ् आलम जौकी कातयाईन बहनें 818 بِمُ رياض 75 رُمُ رياض	753		आंगन का पेड़	
784 گاتيا كين بېين 785 मुशर्रफ् आलम ज़ैक़ी कातयाईन बहनें 818 ترتم رياض 26	772	شوكت حيات	باؤل	24
785 मुशर्रफ् आलम ज़ैक़ी कातयाईन बहनें 818 दें र पुर्च २६	773			
26 شير ياض 818				25
•	785			
819 तरन्तुम रियाज् शहर	818	•	شهر	26
	819	तरन्तुम रियाज्	शहर	

موم کی مریم

آج بھی کرے میں لیٹا میں خیالی ہواوں سے کمیل رہا تھا۔

اور جب بھی اندھرا چھا جاتا ہے تم نہ جانے کہاں سے نکل آتی ہوجسے تم نے تار کی کی کو کھ سے جنم لیا ہو۔ مجوراً مجھے بطے ہوئے سگریث کی طرح شمیں بھی ذہن سے جھلک دیا پڑتا ہے۔

میں نے مجھی تحمارے سامنے ہاتھ نہیں پھیلائے، بھی تحماری آواز پر نظمیں نہیں لکھیں، بھی تحماری یوں اور پر نظمیں نہیں لکھیں، بھی تحماری یادیں تارے گنے کا پروگرام نہیں بتایا، پھر بی تصمیں کیوں یاد کے جاؤں! زندگی بجرتم سے اتی دور رہا۔ کہ بھی اس رنگ و ہو کے سیلاب بیس غرق نہ ہو سکا جو تحمارے جادوں طرف پھیلا رہا۔ ہمارے نیج جھوٹی عقیدت اور معکمہ خیز احترام کی ضلیح ماکل رہی۔ پھرآج تم ابنی آ ہوں اور سکیوں سے کون سے جذبے جگانا جائی ہو!

جھے ! آن صح بی عائشہ کے خط سے تمحاری موت کی خبر مل چک ہے۔ لیکن میں اس موت پر اظہار افسوس نہ کر سکا اور نہ جانے کتنے بادل بنا برسے کیوں گزر جاتے ہیں۔ کتنے سنے ساز کے اندر بی دم توڑ دیتے ہیں۔ کتنے انسان ایک لمح کی خوثی ڈھویڈتے مر جاتے ہیں۔ پھر تمحاری موت تو میرے سامنے کئی بار ہوچک ہے۔ حالاں کہ مادی طور پرتم چلتی پھرتی نظر آتی تھیں، بالکل ہوئی جیسے آج میرے کرے میں آئیلی ہو۔

مراس وقت میں تممارے خیالی وجود سے باتین نیس کر رہا ہوں کو تکہ جب تمماری جانی بچیانی سسکیاں تممارے وجود کا بقین دلا ربی ہوں تو میں اسے واجمہ کیے بجدلوں! تممارا اور اندھرے کا جیشہ ساتھ رہا ہے تم جہاں جہاں بھی گئیں چراغ گل ہوتے گئے۔ تاریکی کے

मोम की मरियम

आज भी कमरे में लेय मैं ख्याली हयोलों से खेल रहा था।

और जब भी अंधेरा छा जाता है तुम न जाने कहां से निकल आती हो जैसे तुम ने तारीकी की कोख से जन्म लिया हो। मजबूरन मुझे जले हुए सिगरेट के राख की तरह तुम्हें भी जेहन से झटक देना पड़ता है।

मैंने कभी तुम्हारे सामने हाथ नहीं फैलाये कभी तुम्हारी आवाज पर नज़में नहीं लिखीं, कभी तुम्हारी याद में तारे गिनने का प्रोग्राम नहीं बनाया, फिर मैं तुम्हें क्यों याद किए जाऊं! जिन्दगी भर तुम से इतनी दूर रहा कि कभी इस रंगो-बू⁽¹⁾ के सैलाब में गुर्क़⁽²⁾ न हो सका जो तुम्हारे चारों तरफ़ फैला रहा। हमारे बीच झूटी अकीदत और मज़हका-खेज़⁽³⁾ एहतेराम की ख़लीज हाएल⁽⁴⁾

रही·····फिर आज तुम अपनी आंहों :और सिसिक्यों से कौन से जज्बे जगाना चाहती हो!

मुझे आज सुबह ही आयशा के खत से तुम्हारी मौत की ख़बर मिल चुकी है। लेकिन मैं उस मौत पर इज़हारे अफ़सोस न कर सका और न जाने कितने बादल बिना बरसे क्यों गुज़र जाते हैं। कितने नग़मे साज के अंदर ही दम तोड़ देते हैं। कितने इन्सान एक लम्हें की ख़ुशी ढूंढते मर जाते हैं। फिर तुम्हारी मौत तो मेरे सामने कई बार हो चुकी है हांलांकि माद्दी (5) तौर पर तुम चलती फिरती नज़र आती थीं, बिल्कुल यूहीं जैसे आज मेरे कमरे में आ बैठी हो।

मगर इस वक़्त मैं तुम्हारे ख़्याली वजूद से बातें नहीं कर रहा हूं क्योंिक जब तुम्हारी जानी पहचानी सिसिकयां तुम्हारे वजूद का यक़ीन दिला रही हों तो मैं उसे वाहेमा कैसे समझ लूं! तुम्हारा और अंधेरे का हमेशा साथ रहा है तुम जहां जहां

^{1.} रंग और महक 2. डुबा हुआ 3.हास्यजनक 4. रुकावट 5. भौतिक

طلق صمیں اپ گیرے میں لیتے گئے۔ جس طرح مریم کی تصویر کے گرد معور نور کا ہالہ کھنے دیتا ہے۔ تقدس اور معصومیت کی لکیریں ! جن کے اندر مریم کی روح کو محصور کر دیا عمیا ہے (عورت کی روح کو کسے کیے شکنجوں میں کسا عمیا؟)۔ اس وقت بھی جب تمحارے مستقبل کی طرح میرے کرے میں اندھرا چھایا ہوا ہے تمحارے آنو ہوں چک رہے ہیں جیے کی بہمن نے دریا کی سطح پر چرافوں کی قطار چن دی ہو۔ میرے کرے میں تمحارے آنووں نے اجالے کی امید قائم رکھی ہے۔

(ہم مشرق کے مروصدیوں سے اپنی عیش گاہوں میں تممارے افکوں سے جشن مناتے آئے ہیں) تممارے متعلق جولوگوں نے کہانیاں مشہور کر رکمی تمیں وہ بالکل سطی تقیمیں اس لیے میں نے حقیقت کی روشی میں آ کر شمیں سجمتا چاہا۔ تم کیا تھیں؟ المادس کی رات کو ٹوشنے والا ایک ستارہ جو اپنی آخری جھلک سے بہت سے ولوں میں امید کی ایک کرن جگا کر عائب ہو جائے۔ ایک تندلہ جو اپنے زعم میں ساطل کے پر نچے اڑانے کے ساتھ خود بھی مٹ گئی ہو۔

آئ جبتم اپ مناہوں کی لبی فہرست سمیت خود بی میرے کمرے جی آگئی ہو، جھے اعتراف کرناپڑتا ہے کہ آگئی ہونے کے باوجود دوسروں سے کس قدر علاقتص ۔ تم ایک محود کرناپڑتا ہے کہ قال جادو بن گئیں جو کتنے بی خریداروں کو کھنے لایا، محرسو کھا ہوا بھول سجے کرسب واپس ملے گئے۔

دوکان دار کے نزدیک دو چیز کتنی تقیر ہو جاتی ہے جے گا بک الث پلٹ کر پھر دوکان میں رکھ دے۔

شیشے کے کیس میں بند رہنے والی گڑیا۔ آج تم اتن صاف صاف باتی سن کر اتی جران کیوں ہو رہی ہو جب کے تم نے آس پاس کے شیش کل چکتا چور کر ڈالے تھے اور ساج کی کھنی ہوئی کیروں پر چلنے سے افکار کر دیا تھا۔ ایک بارتم سب لڑکیوں کو آگان میں دھا چوکڑی مجاتے و کھوکرا فی نے کہا تھا۔

"او نہد مت روکو محودی ماریوں کو۔ کنواری لڑکیاں برساتی چیاں ہوتی ہیں کون جانے کل کس کا ڈولا دروازے بر کھڑا ہوگا۔"

भी गई चराग् गुल होते गए। तारीकी के हलक़े तुम्हें अपने घेरे में लेते गए। जिस तरह मिरयम की तस्वीर के गिर्द मुसच्चिर⁽¹⁾ नूर का हाला खींच देता है। तक़द्दुस⁽²⁾ और मास्मियत की लकीरें! जिन के अंदर मिरयम की रूस को महसूर⁽³⁾ कर दिया गया है (औरत की रूह को कैसे कैसे शिकन्जों में कसा गया?) इस वक़्त भी जब तुम्हारे मुस्तिविबल की तरह मेरे कमरे में अंधेरा छाया हुआ है तुम्हारे आंसू यूं चमक रहें है जैसे किसी ब्राहनण ने दिया की सतह पर चिराग़ों की क़तार चुन दी हो। मेरे कमरे में तुम्हारे आंसुओं ने उजाले की उम्मीद क़ायम रखी है।

(हम मशरिक़ के मर्द सदियों से अपनी ऐश गाहों में तुम्हारे अशकों से जशन मनाते आए हैं) तुम्हारे मुतल्लिक़ लोगों ने जो कहानियां मशहूर कर रखी थीं वह बिल्कुल सतही थीं इस लिए मैंने हक़ीक़त की रौशनी में आकर तुम्हें समझना चाहा। तुम क्या थीं-?अमावस की रात को टूटने वाला एक सितारा जो अपनी आख़री झलक से बहुत से दिलों में उम्मीद की एक किरण जगा कर ग़ायब हो जाए। एक तुंद लहर जो अपने जोम में साहिल के परख़चे उड़ाने के साथ खुद भी मिट गई हो।

आज जब तुम अपने गुनाहों की लम्बी फ़हरिस्त समेत खुद ही मेरे कमरे में आ गई हो, मुझे एतेराफ़ करना पड़ता है कि तुम एक आम लड़की होने के बावजूद दूसरों से किस क़दर मुख़्तलिफ थीं। तुम एक मसहूर⁽⁴⁾ करने वाला जादू बन गईं जो कितने ही ख़रीदारों को खींच लाया, मगर सूंघा हुआ फूल समझ कर सब वापस चले गए।

दुकानदार के नजदीक वह चीज कितनी हक़ीर होजाती है जिसे ग्राहक उलट पलट कर फिर दुकान में रख दे।

शीशे के केस में बंद रहने वाली गुड़िया आज तुम इतनी साफ़ साफ़ बातें सुन कर हैरान क्यों हो रही हो। जबिक तुम ने आस पास के शीश महल चकना चूर कर डाले वे और समाज की खींची हुयी लकीरों पर चलने से इन्कार कर दिया था। एक बार तुम सब लड़िकयों को आंगन में धमा चौकड़ी मचाते देख कर अम्मी ने कहा था!

''क्हं मत रोको निगोडी मारियों को कुंवारी लडकियां बरसाती चिडियां

^{1.} चित्रकार 2. पवित्रता 3. घेराबंदी 4. मंत्र मुग्ध

اس وقت اخبار پڑھے پڑھے میں نے تماری زعری کی پوری فلم دکھ وال۔ جب تم

می نامر، شاہد، کلرک سے بیاہ رچا کر آ نسو پہتی و ولے میں سوار ہوکر چل جاؤ گی۔ ہر
سال ایک منے کی پیدائش میں اضافہ ہوتا رہے گا اور آ خویں یا دویں سنے کی پیدائش پ
ت وق کا شکار ہوکر مر جاؤگی ۔ ہرلاکی اٹی لکیروں پر دوڑتی چلی آئی ہے گرتم نے اپنی
افزادیت سے ایک نیا راست و حوش اچا بہ جس کی سزا میں تم پر موت وزندگی حرام ہوگئ۔
تم مضلے بیا کی دویں یا میارمویں اول و تھیں اور نامرادلاکی۔

"اونبدائل ہے تو کیا، نعیب اجھے موں، اڑے کون سافیض پنچاتے ہیں۔ مال باپ کی موت پر آنسو بہانے والی تو بیٹی عی موتی ہے۔"

اور اپنی موت کے فوحہ کر کے پیدا ہوتے تا کی نے تسمیں خوش آ مدید نہ کہا۔ اپنے خودداری کو بحر وں کے چینے کی طرح چیئر دیا اور تم نے پکھ کرنے، پکھ پانے کی تم کھال۔ خودداری کو بحر وں کے چینے کی طرح چیئر دیا اور تم نے پکھ کرنے، پکھ پانے کی تم کھال۔ تممارے متعلق بدنامیاں اور مرکوشیاں پڑھتی گئیں۔ جائل، بدوباغ، بدمورت اور مغرور بیلے ناموں سے یاد کیا جاتا۔ لیکن تم ایک نخی می چڑیا کی طرح اتر ااتر اکر کہیں" جو میر کیاں ہو و راجا کے کل بھی نہیں' ای انانیت پندی سے تم ایک ایسا شعر بن گئیں جس کے، قالب کے شارمین کی طرح، بر ایک نے الگ معنی لگالنے چاہے گر پر بھی بہت کر حقیقت کی تہد تک بھی تھے اور میں نے بہت دور ہوکر بھی جمنا چاہ۔۔ یہ بی ہے میں نے دوسرے مردوں کی طرح تمماری دو ثیر گی کی جانب ہاتھ نہیں بڑھایا۔۔ بھی ہے میں نے نود یک نورسرے مردوں کی طرح تمماری دو ثیر گی کی جانب ہاتھ نہیں بڑھایا۔۔ بھی اپنی والی ریسرج کی، داخ کی لیبارٹری میں دو سال تک تجربے کے گر بھی نہ بھی سالہ ایک بار جھے اپنی جانب ہو میا۔ ایک بار جھے اپنی جانب ہی دیا تھے دیکھ کرتم نے کہا تھا۔

"احمد بھائی میں آپ کی بہت عزت کرتی ہوں اور بیٹین جاہتی کد کوئلوں کی ولال میں آپ بھی اپنے ہاتھ کالے کر بیٹھیں'

محرید کتا بوا مزدیہ ہے کہتم نے بہت سوں کو کو کلے کی دلالی سے بچانے کی خاطر

होती हैं कौन जाने कल किस का डोला दरवाजे पर खड़ा होगा।"

उस वक्षत अख़बार पढ़ते पढ़ते मैंने तुम्हारी जिन्दगी की पूरी फ़िल्म देख डाली। जब तुम किसी नासिर, शाहिद, क्लर्क से ब्याह रचाकर आंसू पोंछती डोले में सवार हो कर चली जाओगी। हर साल एक मुन्ने की पैदाइश में इजाफा होता रहेगा और आठवें या दसवें मुन्ने की पैदाइश पर तपेटिक का शिकार हो कर मर जाओगी हर लड़की अपनी लकीरों पर दौड़ती चली आई है मगर तुमने अपनी इनफ़ेरादियत⁽¹⁾ से एक नया रास्ता ढूंढना चाहा। जिस की सजा में तुम पर मौतोजिन्दगी हराम होगई।

तुम मंझिले चचा की दसवीं या ग्यारहवीं औलाद थीं और नामुराद लड़की.....

"उन्हें लड़की है तो क्या,नसीब अच्छे हों, लड़के कौनसा फैज पहुंचाते हैं मां बाप की मौत पर आंसु बहाने वाली बेटी ही होती है,"

और अपनी मौत के नौहागर के पैदा होते ही किसी ने तुम्हें खुश आमदीद न कहा अपने आस पास के इस माहौल ने तुम्हें ज्यादा हस्सास बना दिया। हकारत भरी नजरों ने तुम्हारी खुद्दारी को भिड़ों के छत्ते की तरह छेड़ दिया और तुमने कुछ करने, कुछ पाने की क्रसम खाली। तुम्हारे मुताल्लिक बदनामियां और सरगोशियां बढ़ती गयों, जाहिल, बद्दिमाग़, बद्सूरत और मग़रूर जैसे नामों से याद किया जाता। लेकिन तुम एक नन्ही सी चिड़ियां की तरह इतरा इतरा कर कहतीं, ''जो मेरे पास है वह राजा के महल में नहीं'' इसी अनानियत⁽²⁾ पसन्दी से तुम एक ऐसा शेर बन गयों जिसके, ग़ालिब के शारेहीन⁽³⁾ की तरह हर एक ने अलग मानी निकालने चाहे, मगर फिर भी बहुत कम हक्कीकृत की तह तक पहुंच सके और मैने बहुत दूर होकर समझाना चाहा…… यह सच है कि मैने दूसरे मदों की तरह तुम्हारी दोशीजगी⁽⁴⁾ की जानिब हाथ नहीं बढ़ाया…… कभी इतने नजदीक नहीं आया कि तुम्हारे तनप्रफ़ुस⁽⁵⁾ की रफ़्तार से कोई राज पा सक्तूं…… फिर कभी इस शेर पर मैने काफ़ी रिसंच की, दिमाग़ की लेबॉरेट्री में दो साल तक तर्जुबे किये लेकिन कुछ समझ न सका। एक बार मुझे अपनी जानिब झकते देखकर मुझसे तुमने कहा था।

''अहमद भाई मैं आपकी बहुत इंज्ज़त करती हूं और यह नहीं चाहती कि

^{1.} व्यक्तिवाद् 2. अहंकार 3. शारेह (टीकाकार) का बहुवचन 4. कुंबार पन 5. सांस

اپنے مند پر کالک ل فی تقی، تا کہ ان کے سفید دامن سابی سے ملوث نہ ہوں۔ تم میری بہت عزت کرتی تھیں، ایک فوجوان مرد کی، جو تمعارے ذرا سے مہارے پر آگے بیا منا چاہتا تھا۔ جس نے افغارہ سال کی عمر ش تم کو کئی بار فریب دیے۔ منزل کے قریب لا کر بعث دیا۔ بدنای کی کو فری میں ڈھکیل کر ہر دروازہ بند کردیا۔ پھر تم نے اپنی ربی سی عزت کی دھیاں بھیر ڈالیس اور بھے چوراہے پر اپنے سب فلاہری لہاس فوج چیکے۔ وہ تو خیر ہوئی کہ تم میری عزت کرتی رہیں اور میں تمعیس بھنے میں اتنا منہمک ہو گیا کہ جذبات کے ایکشن تعلی بے اثر ہوگے ورنہ مکن تھا ایک دن میری خودداری تمعارے قدموں پر پڑی بخش کی طلب گار ہوتی اور تم اطہر کی طرح جمعے ایک چٹان پر چھوڑ کر کہیں۔

"میں نے شمیں پانے کے لیے بہت ی ٹوکریں کھائیں گرتمعارے چھونے سے بہلے اتی بلندی پر پہنچ مٹی کہ جب تم وہاں پہنچ تو میں سراب بن چکی تھی۔"

گھراؤ مت تم نے یہ الفاظ اطہریا ریاض سے خور نہیں کے لیکن آئ تک تم نے اور کون کی ہاتی زبان سے اوا کی ہیں۔ تم تو اس گوٹی کی طرح ہو جے اپنا منہوم ہیں ملی طور پر مجھاٹا پڑتا ہے ۔ بظاہرتم کنی معمولی کی تھیں۔ چھوٹے چھوٹے کا ندھوں تک لہراتے ہوئے بال، جن کی باریک باریک آوارہ لئیں چہرے کے گرد ہالہ بنائے کا نہی رہیں۔ معمولی سا قد، وبلا پتلا دھان پان ساجم، جیسے تیز ہوا کے جھوٹے بھی شمیس اڑا کر لے جاکس کے۔ جیسے تمماری جانب ہاتھ بڑھایا تو چھوٹی موٹی کی طرح کمبلا جاؤگی۔ ایک واہدی۔ اورا فاک، کتنے ہلکے بلا تتے تممارے فدوفال پتلے خیدہ لب جو ہیں سرد واہدی۔ اورا فاک، کتنے ہلکے بی تحمارے فدوفال پتلے خیدہ لب جو ہیں سرد مہرے بند رہے۔ ہر چیز کو تجس سے و کھنے والی ہمرد آ تھیں جو اپنے سارے گناہوں کو مہرے بند رہے۔ ہر چیز کو تیا روائی اور ای خیال سے بات کرتے وقت بار ہا بند ہوجا تیں تاکہ ان کی گہرائیوں کا کوئی پید نہ لگا سکے اور ہر لور بدلنے والا ریک، جو کبی شعلہ کی طرح و کہنے گئی مشکل کو گئی ہے نہ لگا سے بات کرتیں تو تممارے نقوش بالکل نہ بدلنے گئی مشکل بات تھی تممارے چہرے سے کی بات کا اندازہ لگانا۔ اس معمولی کی شکل و صورت بی نے تو گھر میں شمیس ایک نا قابل النات چیز بنا دیا۔ اپنی خوب صورت بی نے تو گھر میں شمیس ایک نا قابل النات جیز بنا دیا۔ اپنی خوب صورت بی نے تو گھر میں شمیس ایک نا قابل النات جیز بنا دیا۔ اپنی خوب صورت

कोयले की दलाली में आप भी अपने हाथ काले कर बैठें''

मगर यह इतना बड़ा हुजनिया है कि तुमने बहुत सों को दलाली से बचाने की ख़ातिर अपने मुंह पर कालिख मल ली थी ताकि उनके सफ़ेद दामन सियाही से मुलिव्वस⁽¹⁾ न हों...... तुम मेरी बहुत इज्जत करती थीं। एक नौजवान मर्द की, जो तुम्हारे जरा से सहारे पर आगे बढ़ना चाहता था। जिसने अद्धारह साल की उम्र में तुम को कई बार फ़रेब दिए। मन्जिल के क़रीब लाकर भटका दिया, बदनामी की कोठरी में ढकेल कर दरवाजा बंद कर दिया, फिर तुम ने अपनी रही सही इज्जत की धिज्जयां बिखेर डाली और बीच चौराहे पर अपने सब जाहिरी लिबास नोच फेंके, वह तो ख़ैर हुई कि तुम मेरी इज्जत करती रहीं और मैं तुम्हें समझने में इतना मुनहमिक⁽²⁾ हो गया कि जज़्बात के इनजेक्शन क़तअई⁽³⁾ बे असर हो गए, वरना मुमिकन था कि एक दिन मेरी खुद्दारी तुम्हारे क़दमों पर पड़ी बिख्नाश की तलबगार होती और तुम अत्हर की तरह मुझे एक चट्टान पर छोड़ कर कहतीं—:

"मैंने तुम्हें पाने के लिए बहुत सी ठोकरें खाई मगर तुम्हारे छूने से पहले इतनी बुलंदी पर पहुंच गई कि जब तुम वहां पहुचे तो मैं सराब बन चुकी थी।"

घबराओ मत तुम ने यह अलफ़ाज़ अत्हर या रियाज से खुद नहीं कहें लेकिन आज तक तुम ने और कौन सी बातें जुबान से अदा की हैं...... तुम तो उस गूंगी की तरह हो जिसे अपना मफ़हूम हमेशा अमली तौर पर समझना पड़ता है......बज़ाहिर तुम कितनी मामूली सी थीं, छोटे छोटे कांधों तक लहराते हुए बाल, जिन की बारीक बारीक आवारा लटें चेहरे के गिर्द हाला बनाए कांपती रहतीं। मामूली सा क़द, दुबला पतला धान पान सा जिस्म, जैसे तेज हवा के झोंके भी तुम्हें उड़ा कर लेजाएगें। जैसे तुम्हारी जानिब हाथ बढ़ाया तो खुई मूई की तरह कुम्हला जाओगी। एक वाहमा सी, अधूरा ख़ाका, कितने हल्के हल्के थे तुम्हारे ख़ाल, पतले ख़मीदह लब जो हमेशा सर्दमेहर (4) से बंद रहते। हर चीज को तजस्सुस (5) से देखने वाली हमदर्द आंखें, जो अपने सारे गुनाहों को आक्कारा करने को तैयार रहतीं और उसी ख़्माल से बातें करते वक़्त बारहा बंद हो जातीं ताकि उनकी गहराइयों का कोई पता ना लगा सके। और हर लमहां बदलने वाला रंग, जो कभी शोला की तरह दहकने लगता, कभी मिट्टी की तरह मैला पड़ जाता। जब तुम बातें करतीं तो तुम्हारे नुक़ूश बिल्कुल न बदलते कितनी मुश्किल बात थी

^{1.} लिप्त 2. मग्न 3. बिल्कुल 4. ठंडे पन से 5.जिज्ञासा 6. जाहिर

سعادت مند بہنوں کے مقابلے میں تمماری کوئی قبت نہتی۔

خرید و فروخت کے اس بازار میں صرف انچی صورت والی لڑکی کے او نیچ وام لکتے ہیں۔ پھا اور چی کے لیے یہ خیال سوہان روح تھا۔

بجھے آئے سے تین سال پہلے والی جاڑوں کی ایک میچ یاد آری ہے۔ تم اس وقت نہا کر آئی تھیں۔ نسرین اور عائشہ کے ساتھ محن بیں بیٹھی سوئٹر کا نمونہ بنا بنا کر اوھ رہی تھیں۔ نومبر کی لطیف دھوپ آئلن بیں بھری ہوئی تھی۔ چی نیچ بیٹھی نے لحافوں کو گلند رہی تھیں۔ اس وقت تممارے گلابی دو پے ، بھیکے بال اور تھرے ہوئے رگگ کو دیکھ کر بھی جھے کوئی شعر یادنہیں آیا۔ کوئی تشبیہ دماغ بیں انھیں امجری۔ عائش، نسرین، اور فرزانہ کے فروزاں حسن یادنہیں آیا۔ کوئی تشبیہ دماغ کی نہیں دیا۔ کئی کمتر تھیں تم، مغرور اور اپنے حسن کے بہتھیاروں سے واقف بہنوں کے طلتے ہیں۔۔ اس وقت ہیں نے سوچا تھا کہ حسن کے اس جھیاروں سے واقف بہنوں کے طلتے ہیں۔۔ اس وقت ہیں نے سوچا تھا کہ حسن کے اس جھیاروں سے واقف بہنوں کے طلتے ہیں۔۔ اس وقت ہیں نے سوچا تھا کہ حسن کے اس جھیاروں کے ایک جھیاروں کے کار میں کھیلی اور مختصر ہوگی۔

اتھی دنوں مسلسل بے کاری نے مجھے نی نی راہوں سے واقف کرایا۔ گھر سے بہت دور ایک ہڑتال کے سلسلے میں گرفتار ہوا تو عائشہ کے خط سے پہلی بارتمماری جانب متوجہ ہواتھاتم لڑکیوں کو خط لکھنے کے لیے بھی تو کوئی بات نیس ملتی۔

عائشہ کے خط بھی اس کی طرح خاموش اور معصوم ہوتے ہیں، جن بیں آتا کی نارائمتی

سے لے کر خاندان کی اہم تقریبوں ہیں آنے دالی عورتو سے کیڑے، زیوروں کے
ڈیزائن اور اسکول کی سمیلیوں کے رومان تک، ہر چیز کا ذکر تفصیل سے ہوتا، ساتھ بی جھے
بھی ایبا بی حزے دار لمباخط لکھنے کی ہدایت کرتی۔ میری بہن جونہیں جانتی تھی کہ ہیں
رومانوں، سرگوشیوں اور رنگینیوں سے کتنا دور تھا۔ لیکن وہ میری مسلسل خاموثی کے باوجود
ایک ہنگامہ پر گھر ہیں بیٹھی، بار بارمنے پر جھک آنے دالی لئوں کو چھے جھنگ کر گھتی رہی۔''
آپ نے اور سنا بھائی جان !قدسیہ کے یہاں چھوٹی خالد امجد بھائی کا بینام لے کر
گئ تو قدسیہ نے آکرخود کہ دیا کہ وہ امجد سے بیاہ نیس کرے گی سنا ہے بچا ابا زہر کھانے
دالے ہیں۔ سارے خاندان میں تھوتھو ہوری ہے''۔

तुम्हारे चहरे से किसी बात का अंदाजा लगाना!

इस मामूली सी शक्लो सूरत ही ने तो घर में तुम्हें एक नाक़ाबिले-इल्तेफ़ात चीज बना दिया। अपनी ख़ूबसूरत सआदतमंद⁽¹⁾ बहनों के मुक़ाबले में तुम्हारी कोई क़ीमत न थी।

ख़रीदोफ़रोख़्त के इस बाजार में सिर्फ़ अच्छी सूरत वाली लड़की के ऊंचे दाम लगते हैं, चचा और चची के लिए यह ख़्याल सूहाने रूह था।

मुझे आज से तीन साल पहले वाली जाड़ों की एक सुबह याद आ रही है, तुम उस वक़्त नहा कर आई थीं, नसरीन और आयशा के साथ सहन में बैठी स्वेटर का नमूना बना बना कर उधेड़ रही थीं, नवम्बर की लतीफ़ धूप आंगन में बिखरी हुई थी, चची नीचे बैठी नए लेहाफ़ों को नगंद रही थीं। उस वक़्त तुम्हारे गुलाबी दोपट्टे, भीगे बाल और निखरे हुए रंग को देख कर भी मुझे कोई शेर याद नहीं आया। कोई तश्बीह⁽²⁾ दिमाग़ में नहीं उभरी। आयशा, नसरीन, और फरजाना के फरोजां हुस्न ने तुम्हारे चराग़ को टिमटिमने भी नहीं दिया। कितनी कमतर थीं तुम, मगरूर और अपने हुस्न के हथियारें से वाक़िफ़ बहनों के हलक़े में..... उस वक़्त मैने सोचा था कि हुस्न के इस जमघट में तुम्हारी कहानी कितनी फीकी और मुख्तसर होगी।

उन्हीं दिनों मुसलसल बेकारी ने मुझे नई नई राहों से वाक्रिफ़ कराया। घर से बहुत दूर एक हड़ताल के सिलिसले में गिरफ़्तार हुआ तो आयशा के ख़त से पहली बार तुम्हारी जानिब मुतवज्जा हुआ था। तुम लड़िकयों को ख़त लिखने के लिए भी तो कोई बात नहीं मिलती।

आयशा के ख़त भी उस की तरह ख़ामोश और मासूम होते हैं जिन में अब्बा की नाराजगी से लेकर ख़ानदान की अहम तक़रीबों '3' में आने वाली औरतों के कपड़े, जेवरों के डिजाईन और स्कूल की सहेलियों के रोमान तक हर चीज का जिक तफ़सील से होता। साथ ही मुझे भी ऐसा ही मज़ेदार लम्बा खत लिखने की हिदायत करती। मेरी बहन जो नहीं जानती थी कि मैं रोमानों, सरगोशियो और रंगीनियों से कितना दूर था लेकिन वह मेरी मुसलसल ख़ामोशी के बावजूद, एक हंगामा पर घर के कमरे में बैठी, बार बार मुंह पर झुक आने वाली लटों को पीछे झटक कर लिखती रही, ''आपने और सुना भाई जान! क़ुद्सिया के यहां छोटी

^{1.} आज्ञाकारी 2. उपमा 3. प्रोग्रामों

اس دن میں بہت دنوں کے بعد جیل کی منحوس کو قری میں مسکرایا تھا۔ اس دلیرانہ جرات پر غائبانہ تمماری پیٹے شوکی تھی اور محسوس کیا تھا کہ جس خول میں ہم اپنے آپ کو لینے ہوئے ہیں وہ جگہ جگہ سے نوٹ رہا ہے۔ بی چاہا بچا ابا کو ایک زہر کی شیشی فورا پارس کر دول تاکہ وہ صرف ادادہ کر کے بی نہ رہ جا کیں۔ تم پھر ایک بار میرے سامنے آئی تھیں۔ جمنجعلا کرسٹر ادھ رتی ہوئی۔ پھر میں اس واقعہ کو بھول گیا۔ عائشہ اپنے خطوں میں کھتی رہتی ہے کہ تممارا اور ریاض کا رومائس چل رہا ہے۔ اپنی صفائی میں کچھ کہنے کی کوشش مت کرو۔۔ جمیے معلوم ہے کہتم نے اس مجت کو کامیاب بنانے کی کتنی کوشش کی۔

لیکن ریاض تمحارے یہاں کالے پالک تھا۔ تمحارے دستر خوان کہ کھڑوں پر پلا تھا۔
پر بچا ابا کو اس محبت کی من کن لی تو ریاض کو گھر بی سے نہیں بلکہ شہر سے نکال دیا گیا اور
تم نے بڑے تخل سے محبت کی اس لاش کو دل کے قبرستان میں فن کر دینا چاہا لیکن شاید
الیا نہ ہو سکا کیوں کے مردار کھانے والے گدھ، جو ایسے موقعوں کی الاش میں پھرتے ہیں،
اس لاش کو باہر کھینے لائے۔ بی بحر کے لطف اٹھایا اور چیر پھاڑ کے پھینک دیا۔ تمحاری
بیاری کو بڑے معنی بہنائے گئے۔ یعنی بہسب ریاض کی امانت کو ٹھکانے لگانے کے بہانے
ہیں اور تم ایسے بند کمرے میں نہیں بڑی رہتی بلک ریاض کے ساتھ فرار ہو چکی ہو۔

یدافواہیں میں نے بہت دور پیٹے کرسنی اور یقین کے خانے میں ڈالٹا کیا۔ یہ کوئی نا قابل یقین ہات بھی آت میں دلانے کا فیصلہ کر تاقابل یقین ہات بھی تو نہ تھی۔ بھول عائشہ کے تم اپنی اجمیت کا احساس دلانے کا فیصلہ کر بھی تھیں اور تم نے ساری دنیا کو تھکرا کر اپنی من مانی کرنے کا ارادہ کر لیا تھا۔۔ پھرتم جیسی محبت کی ماری لڑکیاں اس سے زیادہ اپنی اجمیت کا شہوت کیا دے سکتی ہیں۔

اس کے بعد جب میں رہا ہوکر گھر آیا تو تم وقت کا اہم موضوع بن چکی تھیں، یا عائشہ کے الفاظ میں کچھ کرنے کی دھن میں اپنا رہا سہا وقار بھی کھو چکی تھیں۔

اس دوران میں تم اپنے اسٹر سے مجت کر چکی تھیں، جو تسمیں پڑھانے آتا تھا۔ ایک سیدھا سادا خطرناک حد تک شریف انسان۔ جو اپنی مظلومی اور بے چارگی ظاہر کرکے دوسرول سے رقم کی بھیک مانگنا تھا۔

खाला अमजद भाई का पैग़ाम लेकर गईं तो क़ुद्दिसया ने खुद आकर कह दिया कि अमजद से ब्याह नहीं करेगी। सुना है चचा अब्बा जहर खाने वाले हैं सारे ख़ानदान में यू थू हो रही है।''

उस दिन बहुत दिन के बाद मैं जेल की मनहूस कोठरी में मुस्क्राया था। इस दिलेराना जुरअत⁽¹⁾ पर गाएबाना तुम्हारी पीठ ठाँकी थी और महसूस किया था कि जिस खोल में हम अपने आप को लपेटे हुए हैं वह जगह जगह से टूट रहा है। जी चाहा चचा अब्बा को एक जहर की शीशी फ़ौरन पार्सल कर दं। ताकि वह सिर्फ़ इरादा करके ही न रह जाएं। तुम फिर एक बार मेरे सामने आई थीं। झुंझला कर स्वेटर उधेडती हुई. फिर मैं उस वाक्या को भूल गया। आयशा अपने खुतों में लिखती रहती है कि तम्हारा और रियाज का रूमान चल रहा है। अपनी सफ़ाई में कुछ कहने की कोशिश मत करो..... मुझे मालूम है कि तुम ने उस मोहब्बत को कामयाब बनाने की कितनी कोशिश की लेकिन रियाज तुम्हारे यहां का लेपालक था। तुम्हारे दस्तर खान के ट्रकड़ो पर पला था। फिर चचा अब्बा को इस मोहब्बत की सुन गृन मिली, तो रियाज को घर ही से नहीं बल्कि शहर से निकाल दिया गया और तमने बड़े तहम्म्ल⁽²⁾ से मोहब्बत की इस लाश को दिल के क़ब्रिस्तान में दफ़न कर देना चाहालेकिन शायद ऐसा न हो सका क्यों कि मुदीर खाने वाले गिद्ध, जो ऐसे मौकों की तलाश में फ्रिते हैं उस लाश को बाहर खींच लाए। जी भर के लुत्फ उठाया और चीर फाड कर फेंक दिया। तुम्हारी बीमारी को बड़े मानी पहनाए गए यानी यह सब रियाज की अमानत को ठिकाने लगाने के बहाने हैं, और तुम अपने बंद कमरे में नहीं पड़ी रहतीं बल्कि रियाज के साथ फ़रार हो चकी हो ।

यह अफ़्याहें मैंने बहुत दूर बैठ कर सुनीं और हर बात को यक्नीन के ख़ाने में डालता गया। यह कोई नाक़ाबिले यक्नीन बात भी तो न थी। बक्नौल आएशा के तुम अपनी अहमियत का एहसास दिलाने का फ़ैसला कर चुकी थीं और तुम ने सारी दुनिया को ठुकरा कर अपनी मनमानी करने का इरादा कर लिया था...... फिर तुम जैसी मोहब्बत की मारी लड़कियां इस से ज्यादा अपनी अहमियत का सबूत क्या दे सकती हैं।

इस के बाद जब मैं रिहा हो कर घर आया तो तुम वक्नत का अहम मौजू बन

^{1.} हिम्मत 2. सहन

پہلے اس نے شمیں عزت اور شرافت کے سبق پڑھائے، اپنی بے چارگی اور دکھ کے افسانے سنائے۔اس کی مجوبہ نے اسے دحوکا دیا تھا۔ محض غرجی کی وجہ سے محکرا دیا تھا۔ (یہ مجوباؤں کے دحوکا دینے کا دکھڑانجی کننا فرسودہ ہو چکا ہے؟)

پھر اس کی بیای دنیا میں تم نے اپنی ہدردی کے چند قطرے برسانے جاہے۔ اپنے اپنے طرزعمل سے سے اس کا دکھ کم کرنا جاہا اپنے غم کی کہانی بھی اسے سنا ڈالی۔ کورس کی کتابوں کو ایک جانب سمیٹ کرتسکین وتسلی کے سبق پڑھائے جانے گئے۔

تممارا باسر بیار ہو گیا اور بچا ابا نے دوسرا باسر رکھنا چاہا تو تم نے انکار کر دیا۔ تم اس ماسر سے پر منا چاہتی تھیں۔ اس کی مزان پری کے لیے اس کے گھر جانے پر معر تھیں۔ بساری باتیں گھر کے بچوں نے جھے سائیں میں کیے یقین کرلوں کے باسر سے محبت نہیں صرف ہدردی تھی یہ انسانیت کاجذبہ بی ایک رات چیکے سے اٹھا کر صعیب ماسر کے گھر لے گیا اور جب تم دروازہ کھنکھنا ربی تھیں تو بچا ابا کے ڈیڈے کی ضرب سے بہون ہوگئیں۔

پر مینوں کمر والے تممارے سائے سے اچھوتوں کی طرح بیخے رہے۔ کمر کی لمی لمی ناکوں والی عورتوں نے براوری میں نکٹا چھوڑ دیا۔ چپا اہا نے وقت سے پہلے پینفن لے لی اورتم سارے خاندان برکٹک کا جمومر بن کرلبرانے لکیں۔

لڑکوں کوتممارے قریب جینے کی اجازت نہتی۔ گرتم شان بے نیازی سے رہتی تھیں' گڑکا ری گڑکا تو کہاں لہرائے؟ میں یاؤں بھی تو ڈبوؤں !''

اور ﴿ آتَكُن مِن كَرْب موكرتم في المال سى كها "جوميرا في جاب كاكرول كي يا كرآب لوك جمع مار واليد"

پھرسب نے دوسری بات سے اتفاق کر لیا۔ سب نے تم پر فاتحہ پڑھ ڈالی۔ مرضیم ماموں اس فاتحہ میں شریک نہیں ہوئے۔ رفتہ رفتہ دوسراخم بھی بھولنے لگا۔ پھے شیم ماموں کی ناز بردار ہوں نے منا ڈالا۔ دہ تم پر بے حدم بریان تھے۔ مائشہ بتی تقی دھیم ماموں کی عذرا بھی تو قدسیہ کی کاس فیو ہے جیسی ان کی بٹی دلی قدسید پھر دہ کیے ایک لڑکی کو تمل

चुकी थीं या आयशा के अलफाज में कुछ करने की धुन में अपना रहा सहा वकार भी खो चुकी थीं।

इस दौरान में तुम अपने मास्टर से मोहब्बत कर चुकी थीं, जो तुम्हें पढ़ाने आता था। एक सीधा सादा ख़तरनाक हद तक शरीफ़ इन्सान, जो अपनी मजलूमी और बेचारगी जाहिर कर के दूसरों से रहम की भीख मांगता था।

पहले उसने तुम्हे इज्जात और शराफ़त के सबक पढ़ाए, अपनी बेचारगी और दुख के अफ़साने सुनाए। उसकी महबूबा ने उसे धोखा दिया था। महज्र ग़रीबी की वजह से उसे दुकरा दिया था। (ये महबूबाओं के धोखा देने का दुखड़ा भी कितना फ़रसूदा⁽¹⁾ हो चुका है।) फिर उस की प्यासी दुनिया में तुमने अपनी हमदर्दी के चन्द क़तरे बरसाने चाहे। अपने अपने तर्जे अमल से उसका दुख कम करना चाहा, अपने ग़म की कहानी भी उसे सुना डाली। कोर्स की किताबों को एक जानिब समेट कर तसकीनो तसल्ली के सबक़ पढ़ाए जाने लगे।

तुम्हारा मास्टर बीमार हो गया और चचा अब्बा ने दूसरा मास्टर रखना चाहा तो तुम ने इनकार कर दिया। तुम उस मास्टर से पढ़ना चाहती थी। उस की मिजाज पुरसी के लिए उस के घर जाने पर मुसिर⁽²⁾ थीं। यह सारी बातें घर के बच्चों ने मुझे सुनाईं, मैं कैसे यक्षीन करलूं कि उस मास्टर से मोहब्बत नहीं सिर्फ़ हमदर्दी थी। यह इन्सानियत का जज्बा ही एक रात चुपके से उठा कर तुम्हें मास्टर के घर ले गया और जब तुम दरवाजा खटखटा रही थीं तो चचा अब्बा की जर्ब से बेहोश हो गईं।

फिर महीनों घर वाले तुम्हारे साये से अछूतों की तरह बचते रहे। घर की लम्बी लम्बी नाकों वाली औरतों ने बिरादरी में निकलना छोड़ दिया। चचा अब्बा ने वक़्त से पहले पैंशन ले ली और तुम सारे ख़ानदान पर कलंक का झूमर बन कर लहराने लगीं।

लड़िकयों को तुम्हारे क़रीब बैठने की इजाज़त न थी मगर तुम शाने बेनियाज़ी से रहती थीं, ''गंगा री गंगा तु कहां लहराए ? मैं पाऊँ भी तो डुबोऊं।''

और बीच आंगन में खड़े होकर तुमने अम्मा से कहा. ''मेरा जो जी चाहेगा करूंगी या फिर आप लोग मुझे मार डालिये।''

फिर सब ने दूसरी बात से इत्तेप्नक कर लिया। सब ने तुम पर फ्रातेहा पढ़

^{1.} पुराना 2. इंट

کمل کر مرتا دیکھیں۔ " هیم ماموں بدی دت سے بوی بچاں سے قبل تعلق کیے بدی
رتین زیرگی گزار رہے تھے۔ صرف اتن می بات پر کدان کی بوی بھی اچی ساڑی نہ بائدہ
سکیں۔ (ایک بار عائش نے لکھا تھا کہ بہترین ساڑی بائدھنے پتم انعام لے چکی ہو!) دہ
این بچی کو چھوڑ کر تمھیں سر کرانے جاتے ہیں۔ تمھارے صدقہ بی سارا گرسنیما دیکھا،
کیک پر جاتا، موڑوں بی گھومتا، تم کوئی اعلا ڈگری لیتا چاہتی تھیں ادر پچا ابا تمھیں تھا
ہوشل میں چھوڑ نے کو تیار نیس تھے۔ اس لیے بے چارے قیم ماموں اپنی دکالت کے ب
شاراہم کام چھوڑ کر بارہ بارہ بے رات تک فاری اور اردو شاعروں کا کلام پڑھائے۔ مشق
وتصوف میں ڈوبے ہوئے اشعار کا مطلب تم سے ہو چھتے اور ان میں چھے ہوئے کتوں کی
وضاحت برجھوم جھوم اشھتے۔

سبطرف سے محکوائے جانے سے پہلے تم خود ہی کی سے بات نہیں کرتی تھیں۔
دن جر چک پر اوندهی پڑی نہ جانے کیا کیا سوچا کرتی تھیں کوئی بات نہ کرتا تو شکایت نہ
کرتیں۔ قیم ماموں سر پر ہاتھ چھیرتے تو منع نہ کرتیں۔ ہاتھ پکڑ کر موٹر بیل بھا دیتے تو
بیٹہ جا تیں۔ ممکن ہے تم سے ان کی ویران زندگی نہ دیکھی گئی ہواور انسانیت کے تقاضے نے
مجود کہا ہو!

پر تمماری برروش کتنی تعجب خیر تھی۔ ممانی کو اپنا مستقبل خطرے میں نظر آنے لگا اور سب کی سوالیہ نظریں تممارے چیرے بر گر حمیس۔

ایک رات جب تم تحیم ماموں سے پڑھ رہی تھیں، کمرے میں پچھ شور ہوا اور تم بغیر دویے کے کمرے میں بھاگتی ہوئی آئیں اور پلٹک برگر کررد نے لکیں۔

یکھے یکھے گر کے سب لوگوں کی لمی قطار تھی۔ بی بدی دلچیں سے تماشہ دیکھنے لگا۔
پہلے یکھے گر کے سب لوگوں کی لمی قطار تھی۔ بی بدی دار دار دھمو کے رسید کیے اور بہت کی مرفاییاں کر کڑانے گئیں۔ جواب بی سسکیاں روک کرتم نے بدی مشکل سے کہا "بیل جدھر بھی جاوں سب بھی کو برا کہتے ہیں بھے کیا معلوم کہ وہ اتنا کمینے۔" بھے المی آگی۔
کوئی مرد ماموں تھی ہوتا صرف کمینہ ہوتا ہے، جو حورت سے سب بھی لینے کے بعد بھی

हाली। मगर शमीम मामूं उस फ़ातेहा में शरीक नहीं हुए। रफ़्ता रफ़्ता दूसरा ग्रम भी भूलने लगा, कुछ शमीम मामूं की नाज बरदारियों ने मिटा खाला। वह तुम पर बेहद मेहरबान थे। आयशा कहती थी "शमीम मामूं की अजरा भी तो कुदिसया की क्लास फेलो है जैसी उनकी बेटी वैसी कुदसीया। फिर वह कैसे एक लड़की को घुल घुल कर मरता देखें," शमीम मामूं बड़ी मुद्दत से बीवी बच्चों से फ़तअ-तअल्लुक़ (1) किये बड़ी रंगीन जिन्दगी गुजार रहे थे। सिर्फ़ इतनी सी बात पर कि उनकी बीवी कभी अच्छी साड़ी न बांध सकीं, (एक बार आयशा ने लिखा था कि बेहतरीन साड़ी बांधने पर तुम ईनाम ले चुकी हो।) वह अपने बच्चों को छोड़ कर तुम्हें सैर कराने जाते हैं,। तुम्हारे सदक़े में सारा घर सिनेमा देखता, पिकनिक पर जाता, मोटरों में घूमता, तुम कोई आला डिगरी लेना चाहती थीं और चचा अब्बा तुम्हें तन्हा होस्टल में छोड़ने पर तैयार नहीं थे इस लिए बेचारे शमीम मामूं अपनी वकालत के बेशुमार अहम काम छोड़कर बारह बारह बजे रात तक फ़रसी और उर्दू शायरों का कलाम पढ़ाते, इश्को व तसव्वुफ में डूबे हुए अशआर का मतलब तुम से पूछते और उनमें छुपे हुए नुकर्तों की वजाहत (2) पर झूम-झूम उठते।

सब तरफ़ से ठुकराए जाने से पहले तुम खुद ही किसी से बात न करती थीं। दिन भर पलंग पर आँधी पड़ी न जाने क्या क्या सोचा करतीं। कोई बात न करता तो शिकायत न करतीं। शमीम मामूं सर पर हाथ फेरते तो मना न करतीं। हाथ पकड़ कर मोटर में बिठा देते तो बैठ जातीं। मुमिकन है तुम से उनकी वीरान जिन्दगी न देखी गई हो और इंसानियत के तक़ाजे ने मजबूर किया हो।

फिर तुम्हारी यह रविश कितनी ताअज्जुब खेज थीं मुमानी को अपना मुसतक्रबिल ख़तरे में नजर आने लगा और सब की सवालिया नजरें तुम्हारे चेहरे पर गड़ गई।

एक रात जब तुम शमीम मामूं से पढ़ रहीं थीं, कमरे में कुछ शोर हुआ और तुम बग़ैर दोपट्टे के कमरे में भागती हुई आई और पलंग पर गिर कर रोने लगीं।

पीछे -पीछे घर के सब लोगों की लम्बी क़तार थी मैं बड़ी दिलचस्पी से तमाशा देखने लगा। चची ने अपनी दानिस्त में तुम्हरी पीठ पर बड़े जोर दार धमूके रसीद किए और बहुत सी मुर्ग़ायां कुड़कुड़ाने लगीं। जवाब में सिसकियां

^{1.} सम्बंध विच्छेद 2. व्याख्या

اسے جھلملاتے ہوئے آنسوؤں کے علاوہ کھے بھی تیس دے سکا۔

قیم ماموں نے سوچا ہوگا کہ اگر ریاض یا ماسر صعیں کوئی امانت نہیں دے سکے تو وہ کیوں نہ اس بہتی گڑگا میں ہاتھ دھولیں، جبکہ دہ کی رشتہ سے تمعارے ماموں بھی بنے ہوئے تھے۔ پھر تو ان کی بوی نے بی خبر شہر بھر میں عام کردی کہتم چاہوتو بیوی بچوں والے مردوں کو بھی بہکادو۔ قیم ماموں جیسا پر بیزگار انسان شعیں دیکے کر سفھیا گیا۔

كى ميوزيم ميں ركى موئى لاكھول سال برانى مى كى طرح تم ايك نمائش كى چزين محسير چيوں كو بھلائلى بوكى يہ بات سارے شہر كاكشت لكا كرتممارے ماتھ ير جيك كى۔ عورتی اور لڑکیاں دور دور سے کولہوں پر ہاتھ نکائے ناک پر انگل رکھے شمیس دیکھنے کو آتیں۔ مردوں کی محفلوں میں، بلند قبقبوں اور فخش کالیوں کے چے تمھارا نام آ جاتا تو خود بھی اس للنے والے باغ میں جانے کوطبیعت محل اضی ہے۔ اطہرای مال غنیمت کی امید میں آیا تھا۔ میرا چھوٹا بھائی، جو اپنی آ وارگ کے سبب حوالات تک ہو آیا تھا۔ متوسط طبقے کا ایک بيكارنوجوان، جے بكارى فى منا دالا تھا ادرسب اس سے مايوس ہو كئے تھے۔ متفقطور یر طے ہوگیا تھا کہ کوئی اسے بٹی نہ دیگا۔ باہری تغریحوں کے علادہ وہ کی بار گھریلوائر کیوں کو مجی جمانیا دے چکا تھا بلکہ راحت کے متعلق تو پیمشہور تھا کہ محض اطہر کی وجہ سے وہ اینے شوہر کا محر چھوڑے بیٹی ہے۔ محراتے ساہ کارناہے کرنے کے باوجود وہ تمھاری جانب ے مایس نیس لوٹا، ساری دنیا ہے دھتکارا ہوا، منے چیٹ ، بدرحم، چی چی کر باتی کرنے والا اطبر۔ جے ایا روز گھر ہے نکال دیتے، ای کو نے دیتی اور عائشہ ای قسمت برمبر کر کے بیٹے گئے۔ اگر بہنوں کے بھائی قابل فخر نہ ہوں تو وہ کتنی برنصیب نظر آتی ہیں۔ خوبصورت کماؤ بھا ہوں کے مجروے یر بی تودہ نہ جانے کتنی ناکوں کو اینے سامنے رکڑ واسکتی ہیں۔ عائشہ کی ساری توجد میری جانب مرکوز ہوگئ تھی۔ میری خلک اور بے ربط زندگی میں لڑ کیوں کے لیے کوئی دلچیں نتھی۔ چر بھی اپنی اصول پندی اور صاف کوئی کی وجہ سے ميري شخصت كو كافي ابمت حامل تقي ..

रोक के तुम ने बड़ी मुश्किल से कहा, ''मैं जिधर भी जाऊं सब मुझी को बुरा कहते हैं मुझे क्या मालूम कि वह इतना कमीना ''' मुझे हंसी आ गई, कोई मर्द मामूं नहीं होता सिर्फ़ कमीना होता है, जो औरत से सब कुछ लेने के बाद भी उसे झिलमिलाते हुए आंसुओं के अलावा कुछ भी नहीं दे सकता ।

शमीम मामूं ने सोचा होगा कि अगर रियाज या मास्टर तुम्हें कोई अमानत न दे सके तो वह क्यों न इस बहती गंगा में हाथ धोलें, जबिक वह किसी रिश्ते से तुम्हारे मामूं भी बने हुए थे, फिर तो उन की बीवी ने यह ख़बर शहर भर में आम कर दी कि तुम चाहो तो बीवी बच्चों वाले मदौं को भी बहकादो, शमीम मामूं जैसा परहेजगार इन्सान तुम्हें देख कर सठिया गया।

किसी म्युजियम में रखी हुई लाखों साल प्रानी ममी की तरह तुम एक नुमाईश की चीज बन गईं। छतों को फलांगती हुई यह बात सारे शहर का गश्त लगाकर तुम्हारे माथे पर चिपक गई। औरतें और लड़िकयां दूर दूर से कुल्हों पर हाथ टिकाए नाक पर उंगली रखे तुम्हें देखने को आतीं। मदौं की महफ़िलों में बुलंद क़हक़हों और फहरा⁽¹⁾ गालियों के बीच तुम्हारा नाम आ जाता तो खुद भी उस लुटने वाले बाग़ में जाने को तबीयत मचल उठती। अत्हर उसी माले गनीमत की उम्मीद में आया था। मेरा छोटा भाई जो अपनी आवारगी के सबब हवालात तक हो आया था। मोतवस्सित(2) तबक़े का एक बेकार नौजवान जिसे बेकारी ने मिटा डाला था और सब उस से मायुस होगए थे। मृत्तफ़िक़ा⁽³⁾ तौर पर तय हो गया था कि कोई उसे बेटी न देगा। बाहर की तफ़रीहों के अलावा वह कई बार घरेलू लडिकयों को भी झांसा दे चुका था, बल्कि राहत के मोतअल्लिक तो यह मशहूर था, कि महज अतहर की वजह से वह अपने शौहर का घर छोड़े बैठी है। मगर अपने सियाह कारनामों के बावजूद वह तुम्हारी जानिब से मायूस नहीं लौटा। सारी दुनिया से धृतकारा हुआ मुंह फट, बेरहम चींख चींख बातें करने वाला अत्हर.....जिसे अब्बा रोज घर से निकाल देते। अम्मी कोसने देतीं और आयशा अपनी किस्मत पर सब करके बैठ जाती। अगर बहनों के भाई काबिले फ़ख न हों तो वह कितनी बदनसीब नज़र आती हैं। खुबसुरत कमाऊ भाइयों के भरोसे पर ही तो वह न जाने कितनी नाकों को अपने सामने रगडवा सकती हैं। आयशा की सारी तवज्जोह मेरी जानिब मरकूज़⁽⁴⁾ हो गई थी। मेरी खुश्क और बे-स्ब्त⁽⁵⁾ जिन्दगी

अशलील 2. मध्यम वर्ग 3. सब की राय में 4. केन्द्रित 5. बे तअल्लुक

تمماری بارگاہ میں اطہر کو کیے شرف نیاز بخشا گیا!یہ بات سب کے لیے جیران کن تقی۔ وہ تو اپنے خوبصورت جم اور بے باک لیج سے معر کے سر کرآتا تھا لیکن تم نے بمیشہ بھیے دل اور بیار ذہن تلاش کیے تھے۔

یہاں مجھے اپنی تھیلی ریسرچ بے کارمعلوم ہوئی اور اسے اٹھا کر سیکنے سے پہلے میں نے تم سے راہ ورسم برحانا چاہی۔ مجھے گھر میں بہت کم رہنے کا اٹھاق ہوتا تھا خصوصاً تم سے بھی بدت کو خصصہ نہ لی۔ اس ایک گھر میں رہنے کے باوجود ہم ایک دوسرے سے بہت دور رہے۔ تم مجھ سے ہمیشہ چھپنا چاہتی تھیں، کیوں کہ پہلے دن ہماری طاقات نے بوی تلخ فضا پیدا کر دی تھی۔

اس دن ہم ناشتہ کی میز پر ملے تھے۔ تم شاید میرے متعلق عائشہ سے پہلے ہی سن چک تھیں اور جھے تک اپنے کارنا سے پہلے نے سے گریز کر رہی تھیں۔ احتیاط سے سر پر پلو ڈالے، نظریں جمکائے ہوں بیٹی تھیں جیسے کی پادری کے سامنے اپنے گناہوں کا اعترف کرنے آئی ہو۔ عائشہ نے میری طرف بڑی معنی خیز نظروں سے دکھے کر کہا تھا۔ "جمائی جان دیکھئے یہ ہے قدسیہ" عائشہ کی طنزیہ نظروں کوتم نے پکڑلیا اور ہونؤں پر زبان پھیر کر خلک لہج میں کہا" تو احمد ہمائی جھے پہلے سے جانے ہیں؟" اور تم چائے کی پیالی رکھ کر انٹھ کی تھیں۔

برسات کی ایک رات کو ہکی ہلی رم جھم نے موسم بڑا پرکیف بنا دیا تھا۔ یس حسب عادت دھوئیں سے خیالی ہولے بنا رہا تھا۔ عائش، پردین، چھوٹی بھابھی اور فرزانہ قریب بیٹی کیرم کھیل ربی تھیں اور کی قلم پر زور دار بحث ہو ربی تھی۔ ایک ہیرو دولڑ کیوں سے بیک وقت محبت کرتا ہے اور ڈائز کیٹر ہر باراس کی محبت کو چی بنانے پرمعرہے۔ عائشہ کے خیال میں یہ محبت کی تو بین تھی یا ہیرو کی بوالہوی۔ تم ان کے قریب بیٹی، سیاہ ساٹن کے خیال میں یہ محبت کی تو بین تھی یا ہیرو کی بوالہوی۔ تم ان کے قریب بیٹی، سیاہ ساٹن کے ایک گلڑے پر نفح نفح آئے ٹا تک ربی تھی جن کی بہت می شعاعوں نے تھارے چہرے پرمشعلیں جلا دی تھیں۔ اپنی رائے کو وزنی بنانے کے لیے عائشہ نے جمعے سے پوچھا '' آپ برمشعلیں جلا دی تھیں۔ اپنی رائے کو وزنی بنانے کے لیے عائشہ نے جمعے سے پوچھا '' آپ بتائے بھائی جان، کیا محبت ایک سے زیادہ بار کی جاسکتی ہے؟''

में लड़िकयों के लिए कोई दिलचस्पी न थी फिर भी अपनी उसूल पसंदी और साफ़ गोई की वजह से मेरी शिख्सयत को काफ़ी अहमियत हासिल थी। तुम्हारी बारगाह में अतहर को कैसे शफ़ें नियाज बख़्शा गया! यह बात सब के लिए हैरान कुन थी। वह तो अपने खूबसूरत जिस्म और बे बाक लहजे से मारके सर कर आता था लेकिन तुम ने हमेशा बुझे दिल और बीमार जेहन तलाश किए थे।

यहां मुझे अपनी रिसर्च बेकार मालूम हुई और उसे उठा कर फैंकने से पहले मैंने तुम से राहो रस्म बढ़ाना चाही। मुझे घर में बहुत कम रहने का इतेफ़ाक़ होता था। खुसूसन तुम से कभी बेतकल्लुफ़ बात करने की फ़ुर्सत न मिली। इस एक घर में रहने के बावजूद हम एक दूसरे से बहुत दूर रहे। तुम मुझ से हमेशा छिपना चाहती थी, क्योंकि पहले दिन हमारी मुलाक़ात ने बड़ी तल्ख़ फ़िज़ा पैदा कर दी थी। उस दिन हम नाशते की मेज पर मिले थे। तुम शायद मेरे मुता अल्लिक़ आयशा से पहले ही सुन चुकी थीं और मुझ तक अपने कारनामे पहुंचाने से गुरेज कर रही थी। एहतियात से सर पर पल्लू डाले नजरें झुकाए बैठी थीं जैसे किसी पादरी के सामने अपने गुनाहों का एतराफ़ करने आई हो। आयशा ने मेरी तरफ़ बड़ी मानी ख़ेज नजरों से देख कर कहा था। ''भाई जान देखिए यह हैं क़ुदिसया।'' आयशा की तनजिया⁽¹⁾ नजरों को तुम ने पकड़ लिया और होठों पर जबान फेर कर ख़ुश्क लहजे में कहा। ''तो अहमद भाई मुझे पहले से जानते हैं?'' और तुम चाय की प्याली रख कर उठ गई थीं।

बरसात की एक शाम को हल्की हल्की रिमझिम ने मौसम बड़ा पुरकैफ़ बना दिया था। मैंहसबे आदत धुओं से ख़्याली हयोले बना रहा था। आयशा, परवीन, छोटी भाभी, और फरजाना क़रीब बैठी कैरम खेल रही थीं। और किसी फ़िल्म पर जोरदार बहस हो रही थी। एक हीरो दो लड़िकयों से बयक वक़्त मोहब्बत करता है और डायरेक्टर हर बार उस की मोहब्बत को सच्ची बनाने पर मुसिर⁽²⁾ है आयशा के ख़्याल में यह मोहब्बत की तौहीन थी या हीरो की बुल-हवसी⁽³⁾। तुम उन के क़रीब बैठी सियाह साटन के एक टुकड़े पर नन्हें नन्हें आईने टांक रही थीं। जिन की बहुत सी शुआओं⁽⁴⁾ ने तुम्हारे चहरे पर मशालें जला दी थीं। अपनी राय को वजनी बनाने के लिए आयशा ने मुझ से पूछा, ''आप बताइए भाई जान, क्या मोहब्बत एक से ज्यादा बार की जा सकती है?''

^{1.} कटाश्रीय 2. हठ 3. लालची 4. किरणों

اور میں نے بلا سوچ سمجے کہد دیا" قدسہ سے پوچھو"۔ تممارے ہاتھ کام کرتے کرتے رک مجے۔ چرکے پر جلتی ہوئی مشعلیں بھے گئیں اور شکایت آمیز نظروں سے تم میری طرف دیکھتی ہوئی باہر چلی گئیں۔

ہماہی اور فرزانہ آہتہ آہتہ بنے گئیں۔ پروین بات ٹالنے کو ممثلنانے کی اور ماکشہ نے واوطلب ٹاہوں سے جھے دیکھا۔ پھر میں نے اس فوبصورت شام کا زرلباس نوج کر پہیک دیا۔ رم جم شور کیانے والی بوئدیں آنسوؤں کے دھارے بن ممثل اور کرے میں اندھرا برھنے لگا۔

" آج موسم كتنا خوش كوار مور إ ب-"

"net"

"عی جاور ہا ہے کہیں باہر موسے جاکیں"۔

" تو جائے" ۔ تم حسب عادت مخفر جواب دے ری تھیں۔

"مرکوئی ساتھ چلنے والا جونہیں۔ اطہر نے وعدہ کیا تھا کر وہ نہیں آیا۔ بہت غیر ذمہ دار اور جموٹا ہوگیا ہے بیائی ا دار اور جموٹا ہوگیا ہے بیاڑکا"۔ اطہر کی برائی کر کے بیس نے تمعارے چہرے پر کچھ ڈھوٹڈ تا چاہا، تمعاری آنھیں کھلی ہوئی کتاب پرتھیں اور ہاتھ نیبل کاتھ کی فکنیں درست کرنے بیں معروف، پھر بڑے طبخ کے ساتھ تم نے کہا۔

"این اچی طرح جانے ہیں تا"۔ یہ تم کہ ری تھی۔ تم ۔ جس کے متعلق مشہور تھا کہ المحیں اچی طرح جانے ہیں تا"۔ یہ تم کہ ری تھیں۔ تم ۔ جس کے متعلق مشہور تھا کہ سارے فائدان کی عزت جوتے کی نوک پر اچھال کرتم نے اطہر سے شادی کر لی ہے۔ سب سے چھیا کر اے روپ دی ہو وہ شراب پی کر آتا ہے تو اس کی پردہ پڑی کرتی ہو۔ استے برے انسان پر تماری یہ متاتیں کول تھیں جبکہ کچیلی زندگی ہیں گئی تا قابل اعتبار لوگ دس کے بے تھے ۔ تممارے متعلق پھیلی ہوئی بدنامیوں کے درمیان جھے اپی رائے بین معتکہ خیر گئی۔ اسے میں نے دماغ سے کھری دیا۔ تم سب کے لیے تا قابل قہم بن بین معتکہ خیر گئی۔ اسے میں نے دماغ سے کھری دیا۔ تم سب کے لیے تا قابل قہم بن کئیں۔ بحول جیلوں کی طرح تممارے گرد کرد فریب کے جو جال بچے ہوئے تھے جھے ان سے نفرت ہوئی۔ پر ایک دن بڑا حاس باختہ سا میں تمارے کرے میں آیا۔

और मैंने बिला सोचे समझे कह दिया "क़ुद्दसिया से पूछो" तुम्हारे हाथ काम करते करते रुक गए। चेहरे पर जलती हुई मशालें बुझ गई और शिकायत आमेज नजरों से तुम मेरी तरफ देखती हुई बाहर चली गई।

भाभी और फरज़ाना आहिस्ता आहिस्ता हंसने लगीं परवीन बात टालने को गुनगुनाने लगी और आयशा ने दाद-तलब⁽¹⁾ निगाहों से मुझे देखा। फिर मैंने उस खूबसूरत शाम का जर लिबास नोच कर फैंक दिया। रिमिझिम शोर मचाने वाली बूंदें आंसूओं के धारे बन गईं और कमरे में अंधेरा बढ़ने लगा।

- ''आज मौसम कितना खुशगवार हो रहा है''
- ''हं ह''
- ''जी चाह रहा है कहीं बाहर घूमने जाएं'
- ''तो जाइये'' तुम हसबे आदत मुख्तसर⁽²⁾ जवाब दे रही थीं।
- "मगर कोई साथ चलने वाला जो नहीं। अत्हर ने वादा किया था मगर वह नहीं आया। बहुत ग़ैरिज़म्मेदार और झूठा हो गया है यह लड़का" अत्हर की बुराई कर के मैंने तुम्हारे चेहरे पर कुछ ढूंढना चाहा। तुम्हारी आंखें खुली हुई किताब पर थीं और हाथ टेबुल कलाथ की शिकनें दुरस्त करने में मसरूफ़, (3) फिर बड़े तंज के साथ तुम ने कहा।

"इतने सुहाने मौसम में तो वह किसी बार में बेहोश पड़े होंगे! आप लोग तो उन्हें अच्छी तरह जानतें हैं ना" यह तुम कह रहीं थी। तुम जिस के मुताल्लिक मशहूर था कि सारे खानदान की इज़्ज़त जूते की नोक पर उछाल कर तुम ने अत्हर से शादी कर ली है। सब से छुपा कर उसे रुपये देती हो वह शराब पी कर आता है तो उस की पर्दा पोशी करती हो। इतने बुरे इंसान पर तुम्हारी यह इनायतें क्यों थी जब कि पिछली जिन्दगी में कई नाक़ाबिलेएताबर लोग धोखा दे चुके थे.....? तुम्हारे मुताल्लिक फैली हुई बदनामियों के दरिमयान मुझे अपनी राय बड़ी मजहका खेज लगी। इसे मैंने दिमाग्र से खुरन दिया। तुम सब के लिए नाक़ाबिलेफ़हम⁽⁴⁾ बन गई। भूल भुलैयों की तरह तुम्हारे गिर्द मकरोफ़रेब के जो जाल बिछे हुए थे, मुझे उन से नफ़रत हो गयी। फिर एक दिन बड़ा हवास-बाख़्ता⁽⁵⁾ सा मैं तुम्हारे कमरे में आया, "मैं तुम्हारे मुतल्लिक कुछ जानना चाहता हूं। कूदिसया अगर तुम इजाजत दो तो..... तो" अपनी घबराहट पर मैं

^{1.} प्रशंसा याचना 2. छोटा, 3. व्यस्त 4. समझ से परे 5. हटसंज्ञ

"می تمحارے متعلق کچھ جانا جاہتا ہوں قدسید اگرتم اجازت دو تو ۔۔ تو"اپی گھراہٹ پر میں خود متجب تھا۔ اس دن پہلی بار میں نے تمحارے چیرے پر خوف کی پرچھائیاں دیکھیں، جن پر جیرانی عالب تھی۔تم بوں کھڑی ہوگئیں جیے ہیم ماموں جھپٹتا جاسے ہوں۔تم نوں۔تم ہوں۔تم نوں۔تم ہوں۔تم نے دویے کو سینے پرسنجال کرکہا:

" آپ بھی جھے جاتا جاجے ہیں احمد بھائی! ش آپ کی بہت عزت کرتی ہوں پھر آپ کیوں کو کلے کی دلالی میں ہاتھ کالے کرنا جاجے ہیں'۔ اور تم چھیے دیکھے بغیر باہر بھاگ کی تھیں۔

ان دنوں اتفاق سے جھے تھارا ایک خط ہاتھ لگا، جوتم نے شاید ریاض کولکھا تھا، گر اے نہ جھی سکیں، یا شاید سیج کولکھا تی نہ تھا، کیوں کہ بہتمھاری روح کی پکارتھی۔ جے ریاض جیسا بیوتوف انسان بھی نہ بجھ پاتا۔ اس کی مجت میں تمھاری برتری اور پرسش کا جذبہ عالب تھااورتم اے روح کی بلندی بھی نہ دے سی تھیں۔ بھابھی کا نخا راشدنا و بنوانے کے لیے یہ خطاتمھاری الیجی ہے نکال لایا تھا۔ اپنی شرافت کا جوت دینے کے لیے میں رکھوانا جا ہا گر ایک بار پڑھنے سے بعض نہ رو سکا۔

مری جانب طامت آمیزنظروں سے نہ دیمو۔

ان دنوں میں تم پر ریسرج کر رہا تھا۔ جیبویں صدی کا ایک نکما اعلکج کل۔

تممارا وہ خط بہت ی ذھی جمیی حقیقوں کو سائے لے آیا اور میری رائے پھر ڈاگھانے تھی۔

اس خط میں لکھا تھا تم نے بھین سے ہرول میں اپنے لیے نفرت اور تھارت پائی کی نظر میں برتری حاصل کرنے کا یہ جذب ہی تحصیں ریاض کی جانب لے کیا، جوتمحاری طرح سب کی جانب سے دھتارا ہوا دومرا فرو تھا۔ ریاض کی نیاز مندی نے اسے گہرا کر دیا اور گھر والوں کی خالفت نے اسے جگل میں گی ہوئی آگ کی طرح بجڑکا دیا۔ پھرتم نے ہر تیمت اوا کر کے اسے پانے کا ارادہ کرلیا، گرریاض کے قدم اس دھوار راستہ پر ڈگرگا گئے۔ قیمت اوا کر اسے بانے کا ارادہ کرلیا، گرریاض کے قدم اس دھوار راستہ پر ڈگرگا گئے۔ ابا کی ایک ڈانٹ پر جبت اچل کر دور جا پڑی۔ اور وہ اپنا بوریا بستر سمیٹ کر ہماگ کیا۔ خط کے آخر میں تم نے اسے خوب ذلیل کیا تھا۔ بردل آت جمتا ہے کہ اس طرح آتو

खुद मुताअज्जब था। उस दिन पहली बार मैंने तुम्हारे चेहरे पर ख़ौफ़ की परछाइयां देखीं, जिन पर हैरानी गृलिब थी। तुम यूं खड़ी हो गई जैसे शमीम मामूं झपटना चाहते हों। तुम ने दोपट्टे को सीने पर संभाल कर कहा:

''आप भी मुझे जानना चाहते हैं अहमद भाई। मैं आप की बहुत इज्जत करती हूं फिर आप क्यों कोयले की दलाली में हाथ काले करना चाहते हैं।'' और तुम पीछे देखे बग़ैर बाहर भाग गई थीं।

उन दिनों इत्तेफ़ाक़ से मुझे तुम्हारा एक ख़त हाथ लगा, जो तुम ने शायद रियाज़ को लिखा था। मगर उसे न भेज सकीं, या शायद भेजने को लिखा ही न था, क्योंकि यह तो तुम्हारी रूह की पुकार थी जिसे रियाज़ जैसा बेवक़ूफ़ इन्सान कभी न सुन पाया था। उस की मोहब्बत में तुम्हारी बरतरी और परस्तिश⁽¹⁾ का जज़्बा ग़ालिब था और तुम उसे रूह की बुलंदी कभी न दे सकती थीं, भाभी का नन्हा राशिद नाव बनवाने को यह ख़त तुम्हारी अटैची से निकाल लाया था। अपनी शराफत का सबूत देने के लिये मैंने उसे वापस रखवाना चाहा मगर एक बार पढ़ने से बाज़ न रह सका। मेरी जानिब मलामत—अमेज़⁽²⁾ नज़रो से न देखो।

उन दिनों मैं तुम पर रिसर्च कर रहा था। बीसर्वी सदी का एक निकम्मा इन्टिलेकचुवल तुम्हारा वह ख़त बहुत सी ढकी छुपी हक़ीक़तों को सामने ले आया और मेरी राय फिर डगमगाने लगी।

उस ख़त में लिखा था कि तुमने बचपन से हर दिल में अपने लिये नफ़रत और हक़ारत⁽³⁾ पायी और किसी नज़र में बरतरी हासिल करने का यह जज़्बा ही तुम्हें रियाज की जानिब ले गया जो तुम्हारी तरह सबकी जानिब से धुत्कारा हुआ घर का दूसरा फ़र्द था। रियाज की नियाज मंदी ने उसे गहरा कर दिया और घर वालों की मुख़ालफ़त ने उसे जंगल में लगी आग की तरह भड़का दिया। फिर तुमने हर क़ीमत अदा करके उसे पाने का इरादा कर लिया, मगर रियाज के क़दम इस दुश्वार रास्ते पर डगमगा गये। अब्बा की एक डांट पर मुहब्बत उछल कर दूर जा पड़ी और वह अपना बोरिया बिस्तर समेट कर भाग गया।

ख़त के आख़िर में तुम ने उसे ख़ूब जालील किया था......बुज़िदल तू समझता है कि इस तरह तूने अपनी मुहब्बत को रुसवाई से बचा कर मेरी लाज रखली। मगर अभी हमारी मोहब्बत शुरू है कहां हुई थी। मेरी इज़्ज़त पहले ही

^{1.}अर्चना 2. धुतकार भरी 3. घृणा

نے اپنی محبت کو رسوائی سے بچا کر میری لاخ رکھ لی۔ مگر اہمی ہماری محبت شروع بھی کہاں ہوئی تقی۔ میری عزت پہلے ہی کون سے جمنڈ سے پر چڑھی بیٹی ہے۔ میں تجھے وہ دے ہی نہ کی جو میری زندگی کا آ درش تھا۔ کاش میں تجھے اس بلندی پر پہنچا سکتی جہاں میرا بھی ہاتھ نہ جاتا ۔۔۔ اب میری روح اس وسیج سمندر میں ایک شکے کو تلاش کرتی پھرے گی۔

اب تم اس تنکے کی تلاش میں خوف ناک پہاڑوں سے نکرا ربی تھیں۔تم جو موم کی مورتی کی طرح اپنے خالق کے تخیل کی گرمی سے پکھل سکتی تھیں، کسی کی تیز نگاہوں سے سلگ سکتی تھیں، پھراینے چاروں طرف لیکنے والے شعلوں میں کیسے کھڑی تھیں۔

دوسرے دن میں نے تمھارے سامنے اطبر کو خوب ڈانٹا! '' کل تم مجھ سے وعدہ کرنے کے باوجود کیوں نہیں آئے میں یہاں انتظار میں بیٹھا رہا اور جناب بقول قدسیہ کے کی بار میں جے رہے''۔

اطہر کے قبیقیے رک گئے وہ یوں چپ ہوگیا جیسے میں نے اسے پھانی کا حکم سایا ہو۔ تھوڑی در بعدوہ برا اپٹیمان ہوکر میرے پاس آیا۔

اوراس نے میرے متعلق کیا کہا۔ اسے میری عادتوں کی خبر ہے۔ وہ بہت رنجیدہ ہے ؟ زندگی میں پہلی بار میں نے اطہر کوشرمندہ ویکھا تھا وہ بھی کسی کی شکایت سننے کو تیار تھا۔ اس سے متاثر ہوسکتا تھا۔

'' یہ کوئی نی بات نہیں ہے۔ جب کہتم ہمیشہ فریب دیتے آئے ہو اور قدسیہ ہمیشہ فریب کھاتی آئی ہے''۔

" آپ بھی ایا سیحت ہیں بھائی جان!" اس نے شکایت آمیز لیج میں کہا۔" قدسیہ کرنے میں ایا سیحت ہیں بھائی جات برا کے گرنے میں اس کا کوئی قصور نہیں۔ وہ بڑی بدنھیب لڑکی ہے۔ میں تج مج بہت برا موں اور قدسہ کو فریب دے کر نقصان میں رہوں گا۔۔۔۔"

اطہر باہرچلا گیا اور تم ایک بار پھر بیرے سامنے نی محقیاں لے کرآسمئیں۔ اطہر کون سا راستہ افقیار کر رہا تھا۔ وہ برم انہان جو اپنے مفاد کے آگے کسی پر رحم ندکر سکا تھا۔

تم بجھے وہ کسوٹی نظر آئیں جس پر سونا اور پیٹل دونوں واضح شکل میں چیک اشتے

कौन से झंडे पर चढ़ी बैठी है..... मैं तुझे वह दे ही न सकी जो मेरी जिन्दगी का आदर्श था। काश मैं तुझे उस बुलंदी पर पहुंचा सकती जहां मेरा भी हाथ न जाता.....अब मेरी रूह उस वसी⁽¹⁾ समुंदर में एक तिनके को तलाश करती फिरेगी।

अब तुम उस तिनके की तलाश में ख़ौफ़नाक पहाड़ों से टकरा रही थीं। तुम, जो मोम की मूर्ती की तरह अपने खालिक के तख़य्युल⁽²⁾ की गर्मी से पिघल सकती थीं, किसी की तेज निगाहों से सुलग सकती थीं, फिर अपने चारों तरफ़ लपकने वाले शोलों में कैसे खड़ी थीं।

दूसरे दिन तुम्हारे सामने मैने अत्हर को खूब डांटा! "कल तुम मुझ से वादा करने के बावजूद क्यों नहीं आए मैं यहां इंतिजार में बैठा रहा और जनाब बक़ौल क़ुदिसिया के किसी बार में जमे रहे।"

अत्हर के क़हक़हे रुक गए वह यूं चुप होगया जैसे मैं ने उसे फांसी का हुक्म सुनाया हो। थोड़ी देर बाद वह बड़ा पशेमान होकर मेरे पास आया।

और उसने मेरे मुताल्लिक क्या कहा। उसे मेरी आदर्तों की ख़बर है। वह बहुत रंजीदा है ? जिन्दगी में पहली बार मैंने अत्हर को शर्मिंदा देखा था वह भी किसी की शिकायत सुनने को तैयार था। उस से मुतास्सिर हो सकता था।

"यह कोई नई बात नहीं है जबिक तुम हमेशा फ़रेब देते आए हो और कुदिसया हमेशा फ़रेब खाती आई है।"

"आप भी ऐसा समझते हैं भाई जान!" उस ने शिकायत अमेज लहजे में कहा। क़ुद्दिया के बिगड़ने में उस का कोई क़ुसूर नहीं। वह बड़ी बदनसीब लड़की है। मैं सच मुच बहुत बुरा हूं और क़ुद्दिया को फ़रेब देकर नुक़सान में रहूंगा।" अतहर बाहर चला गया और तुम एक बार फिर मेरे सामने नई गुत्थियों लेकर आ गई। अतहर कौन सा रास्ता इंक्ट्रियार कर रहा था। वह बेरहम इन्सान जो अपने मुफ़ाद्द⁽³⁾ के आगे किसी पर रहम न कर सकता था।

तुम मुझे वह कसौटी नज़र आईं जिस पर सोना और पीतल दोनो वाजे शक्ल में चमक उठते हैं..... दो गुनाहों के इत्तेसाल से इतना पाक जख्बा भी वजूद में आता है? फिर तुम्हारी कहानी का बाक़ी हिस्सा न देख सका। मेरी मसरूफ़ियतें मुझे आंधरा ले गई और वहां से मुझे कलकत्ता जाना पड़ा।

^{1.} विशाल 2. विचारण 3. लाभ

ہیں۔ دوکتاہوں کے انسال سے اتنا پاک جذبہ بھی وجود میں آتا ہے۔ پھر تمحاری کہانی کا باقی حصہ ندد کھ سکا۔ میری معرفیتیں مجھے آئد حرا لے گئیں اور وہاں سے جھے کلکتہ جانا پڑا۔ کلکتہ کی ہنگامہ پرور زندگی اور پر جوش سرگرمیوں نے تمحاری عبت کی نیم مردہ ریگتی ہوئی کہانی بھلادی اور گھر میں ہونے والے یہ چھوٹے چھوٹے حادثے ذہن کے کس کونے میں تھک کرسو مجے۔

ایک بار عائشہ نے لکھا کہ اطہری مسلسل تافر مانیوں کے سب ابا نے اسے عال کر دیاہ اور دہ محمر سے چلا گیا۔ پھر معلوم ہوا کہ تم اچا تک محر سے غائب ہو گئیں۔ کی نے جمعے بتایا کہ تم دونوں لکھ علی رہنے ہو۔ پچا ابا شمیس واپس بلانے پر تیار نہیں ہیں ۔۔ اس سے آ کے کی کہانی جمعے کی نے نہیں سائی۔ محر میں اس بات کا ختھر رہا کہ اب اطہر اپنا الو سید ماکر کے ممئی جائے گا جہاں گئی برسوں کے بعد میں شمیس ایک فلم میں دیکھوں گا۔! ہیروئن کے پیچے! ایک شراؤں میں کو فعے مفکاتی ہوئی، کوئی آوارہ سا گیت تممارے لیوں پر ہیروئن کے پیچے! ایک شراؤں میں کو فعے مفکاتی ہوئی، کوئی آوارہ سا گیت تممارے لیوں پر ہوگا، جو تممارے چہرے، پنڈلیوں اور چھاتیوں کی نمائش کرے گا۔ تم جموث کا ایک خول ہوگی۔ سلو لائڈ کی گڑیا، جس کی ہر جنبش دوسروں کے تابع ہوتی ہے۔ تم اپنی خودداری کی ہوگی۔ سلو لائڈ کی گڑیا، جس کی ہر جنبش دوسروں کے تابع ہوتی ہے۔ تم اپنی خودداری کی

ایک صد سے زیادہ جذباتی الزی کے خیل کی اڑان ہوں بی کھائیوں میں گر کے دم توڑ دیتی ہے۔ جمعے تم دونوں کے نام سے نفرت ہوگئی۔ عائشہ نے ایک بار تکھا بھی کہ قدسیہ نے لکھؤ کے کسی پرائیویٹ اسکول میں نوکری کر لی ہے۔ اطہر بہت بیار ہے اور وہ دونوں بڑی تکھؤ کے کسی پرائیویٹ اسکول میں نوکری کر لی ہے۔ اطہر بہت بیار ہے اور وہ دونوں بڑی تکلیف سے دن گزار رہے ہیں۔ لیکن میں نے بڑی بختی سے لکھ دیا کہ اب میں قدسیہ کے متعلق بھر میں سننا چاہتا۔ اطہر کی ہے تبدیلی جنتی نفرت انگیز تھی اتن بی تجب خز بھی۔

کی کی شاوی کی خبرس کر بھی وہ غداق اڑایا کرتا تھا '' ایک بی راگ مسلسل کینے سے جاتے ہیں۔ بیں تو دو بی دن میں پاگل ہوجاؤں''۔ پھر اس نے دو سال تک اس راگ کو کیسے سنا ؟ امی اپنی قسمت کو رو کر بیٹے رہیں۔ ان کی زعدگی کے دونوں پھل کڑو ہے نظے۔ میں تو خبر اپنی آزاد زعدگی سے انھیں کوئی فیض نہ پچیا سکتا تھا گر ایا یہ بھی برداشت نہ کر سکے کہ اطہر کی زعدگی اجا تک پلٹا کھا ئے دہ ایک دم شریف بن جائے اور کی اچھی

कलकता की हंगामा परवर जिन्दगी और पुर जोश सरगर्मियों ने तुम्हारी मोहब्बत की नीम मुद्दी रेंगती हुई कहानी भुला दी और घर में होने वाले यह छोटे छोटे हादसे जहन के किसी कोने में थक कर सोगए।

एक बार आयशा ने लिखा कि अतहर की मुसलसल नाफ़रमानियों के सबब अब्बा ने उसे आक कर दिया है और वह घर से चला गया। फिर मालूम हुआ कि तुम अचानक घर से ग़ायब हो गईं। किसी ने मुझे बताया कि तुम दोनों लखनक में रहते हो। चचा अब्बा तुम्हें वापस बुलाने पर तैयार नहीं हैं। उस से आगे की कहानी मुझे किसी ने नहीं सुनाई मगर मैं इस बात का मुन्तजिर रहा कि अब अतहर अपना उल्लू सीधा कर के बम्बई जाएगा। जहां कई बरसों के बाद मैं तुम्हें एक फ़िल्म में देखूंगा। हीरोइन के पीछे! एक्सट्राओं में कुल्हे मटकाती हुईं, कोई आवारा सा गीत तुम्हारे लबों पर होगा, जो तुम्हारे चेहरे, पिंडलियों और छातियों की नुमाइश करेगा, तुम झूठ का एक खोल होगी, सेलोलैंड की गुड़िया, जिस की हर जुंबिश⁽¹⁾ दूसरों के ताबे होती है। तुम अपनी खुद्दारी की लाश पर नाच रही होगी।

एक हद से ज़्यादा जज़्बाती लड़की के तख़्य्युल की उड़ान यों ही खाइयों में गिर के दम तोड़ देती है। मुझे तुम दोनों के नाम से नफ़रत हो गई। आयशा ने एक बार लिखा भी कि क़ुदसिया ने लखनऊ के किसी प्राइवेट स्कूल में नौकरी करली है, अत्हर बीमार है और वह दोनों बड़ी तकलीफ़ से दिन गुजार रहे हैं। लेकिन में ने बड़ी सख़्ती से लिख दिया कि अब में क़ुदसिया के मुताल्लिक़ कुछ सुनना नहीं चाहता, अत्हर की यह तब्दीली जितनी नफ़रत अंगेज़ थी उतनी ही ताज्जुब ख़ेज भी।

किसी की शादी की ख़बर सुन कर भी वह मज़ाक़ उड़ाया करता था, "एक ही राग मुसलसल कैसे सुने जाते हैं, मैं तो दो ही दिन में पागल हो जाऊं" फिर उस ने दो साल तक उस राग को कैसे सुना, अम्मी अपनी क़िस्तत को रेकर बैठ रहीं। उन की जिन्दगी के दोनों फल कड़वे निकले, मैं तो ख़ैर अपनी आज़ाद जिन्दगी से उन्हें कोई फैज़ नहीं पहुचा सकता था मगर अब्बा यह भी बर्दाश्त ना कर सके कि अत्हर की जिन्दगी अचानक, पल्य खाए वह एक दम शरीफ़ बन जाए और किसी अच्छी पोस्ट पर ले लिया जाए।

^{1.} हरकत

يوست ير كليا جائه

پرای کے آنووں نے اپائے کی عطالعوائے جن میں اطہر کو فائدانی عزت اور بے شار دولت کا واسطہ دیا گیا تھا اور صعیں اطہر کی عجت کا۔ اور آج عائشہ نے لکھا ہے۔ " بھائی جان آپ قدسیہ سے نفرت کرتے رہیے کیوں کے آئدہ اس کی کوئی بات نہ ہوگی جو میں آپ کو سناول آج تنہا ابا اطہر بھائی کو گھر لے آئے ہیں قدسیہ کی معمولی ک بیاری سے مرچکی ہے۔"

تم زندگی بحرمیری عزت کرتی ربین اور مستم سے نفرت کرتا رہا۔

یا بی اپی الی قست کا قسور ہے۔ ادھر من کرو تممارے جیکتے آنوکیا کہ رہے ہیں۔
کیا تی بی مم کی معمولی بیاری ہے مرکئیں اس چھوٹی می بیاری کو اپنے نازک ہے جم
پر نہ سہد سکیں اور اس بیاری کا علاج کی سے نہ ہوسکا۔ اطہر سے بھی نہیں۔ شمیس اپی
کست پر آنو نہ بہانا چاہئے کوں کہ اطہر کوتم نے وہ تخذ دے دیا ہے جس کے لیے تم
زندگی بحر سرگرداں رہیں اور چپ چاپ اندھرے میں کھوگئیں۔ اب تمماری روندی ہوئی
سکیاں اور جملاتے ہوئے آنو بی جھے تماری موجودگی کا احیاس ولاتے ہیں۔

تم آج پھر مجنی کھنی آ ہوں اور بہتے ہوئے آ نسو دَں سے اس کمرے بی میرے لیے اپنی عزت کا تخد لے کر آئی ہولیکن بیں اس کے علاوہ پچو نہیں کر سکا کہ جلے ہوئے سگریٹ کو ایش ٹرے بیں پھیک کرتمھارے خیال کو ذہن سے جنک دوں۔



फिर अम्मी के आंसूओं ने अब्बा से कई ख़त लिखवाए जिन में अत्हर को ख़ानदानी इज़्तत और बेशुमार दौलत का वासता दिया गया था और तुम्हें अत्हर की मोहब्बत का। और आज आयशा ने लिखा है।

"भाई जान! आप क़ुद्सिया से नफ़रत करते रहिये! क्योंकि आइन्दा कोई उस की बात न होगी जो मैं आप को सुनाऊं आज तन्हां अब्बा अत्हर भाई को घर ले आए हैं। कुद्सिया किसी मामूली सी बीमारी से मर चुकी है।"

तुम जिन्दगी भर मेरी इज्जत करती रहीं और मैं तुम से नफ़रत करता रहा। यह अपनी अपनी क्रिस्मत का क़ुसूर है। इधर मुंह करो। तुम्हारे चमकते आंसू क्या कह रहे हैं।

क्या सचमुच तुम किसी मामूली सी बीमारी से मर गईं ! इस छोटी सी बीमारी को अपने नाजुक जिस्म पर न सह सकीं और इस बीमारी का इलाज किसी से न हो सका। अत्हर से भी नहीं। तुम्हें अपनी शिकस्त⁽¹⁾ पर आंसू न बहाना चाहिए क्योंकि अत्हर को तुम ने वह तोहफ़ा दे दिया है। जिस के लिए तुम जिन्दगी भर सर गरदां रहीं और चुपचाप अंधेरे में खोनई। अब तुम्हारी रौंदी हुई सिसकियां और झिलमिलाते हुए आंसू ही मुझे तुम्हारी मौजूदगी का एहसास दिलाते हैं।

तुम आज फिर घुटी घुटी आंहों और बहते हुए आंसूओं से इस कमरे में मेरे लिए अपनी इज़्ज़त का तोहफ़ा लेकर आई हो लेकिन मैं इस के अलावा कुछ नहीं कर सकता कि जले हुए सिगरेट को एशट्रे में फैंक कर तुम्हारे ख़्याल को ज़ेहन से झटक दूं।



^{1.} पराजय

طاوُس چمن کی مینا

(1)

روز کا معمول تھا۔ میں باہر ہے آتا، دروازہ کھنکھٹا تا۔ دوسری طرف سے جعراتی کی امال کے کھانسے کھنکھار نے کی آواز قریب آنے گئی، لیکن اس سے پہلے ہی دوڑتے ہوئے چھوٹے قدموں کی آبٹ دروازے پر آکر رکتی۔ ادھر سے میں آواز لگا تا۔

"دروازه كمولا كالے كالے كالے خال آئے ہيں -"

دروازے کے پیچھے سے مملکھلانے کی دبی دبی آ داز آتی اور قدموں کی آ ہث دور بھاگ جاتی ہور بعد جعراتی کی اماں آ پہنچتیں، دروازہ کھاتا اور میں گھر میں ہرطرف کچھ ڈھویڈھتا ہوا ساداخل ہوتا۔ ایک ایک کو نے کو دیکھتا اور آ واز لگاتا:

"ارے بھی، کالے خال کی گوری گوری بٹی کہال ہے۔"

بنعی بکارتا:

''یہاں کوئی فلک آ راشنرادی رہتی ہے؟'' اور بھی کامنی کی شاخوں کو ہلا کر کہتا:

" ہاری پہاڑی مینا کسی نے دیکھی ہے؟" ِ

ساتھ ساتھ ساتھ متکھیوں سے دیکھتا جاتا کہ تھی فلک آرا ایک کونے سے بھاگ کر دوسرے کونے میں چھپ رہی ہے اور رہ رہ کر ہنس پڑتی ہے۔ لیکن میں اندھا بہرا بنا وہاں ڈھونڈتا جہاں وہ نہیں ہوتی تھی۔ آخر مجھے اپنے پیچھے کھلکھلا کر ہننے کی آوا ز سائی دیتی۔ میں چیخ مارکر اچھل پڑتا' پھر گھوم کر اسے گود میں اُٹھا لیتا اور وہ واقعی پہاڑی مینا کی طرح چہکنا شروع کر دیتی۔ روز کا یہی معمول تھا، اور یہ اس دن سے شروع ہوا تھا جب شاہی جانوروں کے داروغہ نبی بخش نے مجھے کو قیصر باغ کے طاؤس چن میں ملازمت دلائی تھی۔

ताऊस["] चमन की मैना

रोज का मामूल था, मैं बाहर से आता दरवाजा खटखटाता, दूसरी तरफ़ से जुमेराती की अम्मां के खांसने, खंखारने की आवाज क़रीब आने लगती, लेकिन उससे पहले ही दौड़ते हुए छोटे छोटे क़दमों की आहट दरवाजे पर आकर रुकती, इधर से मैं आवाज लगाता।

''दरवाजा खोलो, काले काले काले खां आए हैं।''

दरवाजे के पीछे से खिलखिलाने की दबी दबी आवाज आती और क़दमों की आहट दूर भाग जाती, कुछ देर बाद जुमेराती की अम्मां आ पहुंचती, दरवाजा खुलता और मैं घर में हर तरफ़ कुछ ढूंढता हुआ सा दाख़िल होता, एक एक कोने को देखता और आवाज लगाता-:

"अरे भई काले खां की गोरी गोरी बेटी कहां है," कभी पुकारता-:

''यहां कोई फ़लक आरा शहजादी रहती हैं।''

और कभी कामनी की शाखों को हिला कर कहता-:

"हमारी पहाड़ी मैना किसी ने देखी है।"

साथ साथ कंखियों से देखता जाता कि नन्ही फ़ल्क आरा एक कोने से भाग कर दूसरे कोने में छुप रही है और रह रह कर हंस पड़ती है, लेकिन मैं अंधा बहरा बना उसे वहां ढूंढता जहां वह नहीं होती थी, आख़िर मुझे अपने पीछे खिलखिला कर हंसने की आवाज सुनाई देती, मैं चीख़ मार कर उछल पड़ता, फिर घूम कर उसे गोद में उठा लेता और वह वाक़ई पहाड़ी मैना की तरह चहकना शुरू कर देती।

^{1.} मोर

اس سے پہلے میں گوئتی کے کنارے جانوروں کے رمنوں کے آس پاس آ وارہ گردی کیا کرتا، او نچے او نچے گئہروں کے پیچے گھومتے ہوئے شیروں تیندوؤں کو دیکھا اور تمناکرتا کہ رہنے کا شیر کنہرا چاند کر باہر آئے اور مجھے بھاڑ کھائے۔ اس وقت یہی میرا روز کا معمول تھا، اور بیاس دن سے شروع ہوا تھا جب میری بیوی گیارہ مبینے کی فلک آ را کو چھوڑ کر مر، گئی تھی۔ اس سے پہلے میں حسین آ باد مبارک میں نوکر تھا۔ امام باڑے کی روشینوں کا انظام میرے ذہے تھا۔ تخواہ کم تھی کیئن گذر ہو جاتی تھی۔ بیوی شھر تھی۔ ای تخواہ میں گھر چلاتی اور پرندے پالنے کا شوق پورا کرتی تھی۔ ہمارے یہاں کی طوطے لیے ہوئے تھے جنہیں اس نے خوب پڑھایا تھا۔ دیشی مینا کی جی تھیں، لیکن اسے پہاڑی مینا کا ارمان تھا کہ بہاڑی مینا اکا ارمان تھا کے کیونکہ اس نے من رکھا تھا کہ بہاڑی مینابالکل آ دمیوں کی طرح با تیں کرتی ہے اسے خوش کرنے کے لیے بہاڑی مینا لاؤں گا۔

لیکن تخواہ کمنے سے چاردن پہلے اس کے سینے میں درد اٹھا ادر دوسرے ہی دن وہ چل بی میرا ہر شئے سے جی اچائے ہوگیا۔ نوکری پر جانا بھی چھوڑ دیا۔ اپ آپ سے بیگانہ ہوگیا تھا چر بھلا فلک آ راکی پردرش کیا کرتا۔ جعراتی کی امال نہ ہوتیں تواس پکی کا جینا نہ ہوتا۔ وہ میرے ہی مکان کی باہری کوٹھری میں رہتی تھیں۔ چھ مہینے پہلے ان کا کما تا ہوا جعراتی موتی کے کسی کنڈ میں پھنس کر ڈوب گیا تھا۔ اس کے بعد سے میری ہوی ان کی خبر رکھتی۔ بیوی کے بعد فلک آ راکی گہداشت انھوں نے اپنے ذمے لے لی تھی۔ جب خبر رکھتی۔ بیوی کے بعد فلک آ راکی گہداشت انھوں نے اپنے ذمے لے لی تھی اور میں دو وقت کے کھانے کے علاوہ ڈلی تمباکو کے لیے پکھ میں رہتیں۔ روٹی بھی پکا و بی تھیں اور میں دو وقت کے کھانے کے علاوہ ڈلی تمباکو کے لیے پکھ میں ان کے ہاتھ بررکھ دیتا تھا۔

نوکری ختم ہوگئی تھی۔ حسین آباد کے دارد خد احمد علی خان نے کی بار آدی بھی بھیجا لیکن میں نے بلیٹ کر ادھر کا رخ نہیں کیا تو ان بے چارے نے بھی مجبور ہو کر تخواہ موقو ف کرادی اور میں مہاجنوں سے سودی قرض لے لے کر کام چلانے لگا۔ گھر صرف رات کو جاتا تھا۔ اس دفت فلک آراسو چکی ہوتی تھی۔ صبح صبح طوطے میری ہوی کے سکھائے ہوئے بول دہراتے تو مجھے گھر میں تھہرنا مشکل ہوجاتا۔ آخر ایک دن میں اٹھا اور سارے پرندوں کو چڑیا مازار میں بچے آما۔

रोज का यही मामूल था और यह उस दिन से शुरू हुआ था जब शाही जानवरों के दारोग़ नबी बख़्श ने मुझ को क़ैसर बाग के ताऊस चमन में मुलाजमत दिलाई थी, इससे पहले मैं गोमती के किनारे जानवरों के रमनों के आस पास आवारा गर्दी किया करता, ऊंचे ऊंचे कटहरों के पीछे घूमते हुए शेरों, तेंदुओं को देखता और तमन्ना करता कि किसी रमने का शेर कटहरा फांद कर बाहर आए और मुझे फाड़ खाए, उस वक़्त यही मेरा रोज का मामूल था, और यह उस दिन से शुरू हुआ था जब मेरी बीवी ग्यारह महीने की फ़लक आरा को छोड़ कर मर गई थी, इससे पहले मैं हुसैनाबाद मुबारक में नौकर था, इमाम बाड़े की रौशनियों का इंतजाम मेरे जिम्मे था, तन्ख़्बाह कम थी लेकिन गुजर हो जाती थी, बीवी सुघड़ थी, उसी तन्ख़्बाह में गुजर चलाती और पिरंदे पालने का शौक़ भी पूरा करती थी, हमारे यहां कई तोते पले हुए थे जिन्हें उसने ख़ूब पढ़ाया था, देसी मैनाएं भी थीं, लेकिन उसे पहाड़ी मैना का अरमान था क्योंकि उसने सुन रखा था पहाड़ी मैना बिल्कुल आदमी की तरह बार्ते करती हैं उसे ख़ुश करने के लिये मैंने वादा कर लिया था कि अगली तन्ख़्बाह पर उसके लिये पहाड़ी मैना लाऊंगा।

लेकिन तन्ख़ाह मिलने से चार दिन पहले उसके सीने में दर्द उठा और दूसरे ही दिन वह चल बसी मेरा हर शै से जी उचाट हो गया। नौकरी पर जाना भी छोड़ दिया। अपने आप से बेगाना हों गया था। फिर भला फ़लक आरा की परविश्व क्या करता, जुमेराती की अम्मां न होतों तो उस बच्ची का जीना न होता, वह मेरे ही मकान की बाहरी कोठरी में रहती थीं। छः महीने पहले उनका कमाता हुआ जुमेराती गोमती के किसी कण्ड में फंस कर डूब गया था। उसके बाद से मेरी बीवी उनकी ख़बर रखती थी। बीवी के बाद फ़लक आरा की निगहदाशत (1) उन्होंने अपने जिम्मे ले ली थी। जब तक मैं घर से बाहर रहता वह मेरे घर में रहतीं, रोटी भी पका देती थीं, और मैं दो वक़्त के खाने के अलावा डली तम्बाकू के लिये कुछ पैसे उनके हाथ पर रख देता था।

नौकरी खत्म हो गई थी। हुसैनाबाद के दारोग़ा अहमद अली खां ने कई बार आदमी भी भेजा लेकिन मैंने पलट कर उधर का रुख़ नहीं किया तो उन बेचारे ने भी मजबूर हो कर तन्ख़्वाह मौकूफ़⁽²⁾ करा दी और मैं महाजनों से सूदी कर्ज ले

^{1.} लालन पालन 2. वेतन बन्द करना

ای زمانے میں ایک دن داروفہ نی بخش نے جھے پاس بلایا۔ کی دن سے وہ جھے کو رمنوں کے پاس آوارہ گردی کرتے و کھ رہے تھے۔ انھوں نے پچھ الی دل سوزی سے میرا حال دریافت کیا کہ میں نے سب پچھ تناویا۔ انھوں نے بری تسلی دی لیکن مہاجنوں سے قرض لینے کی بات پر بہت تاراض ہوئے۔ قرض ادانہ کرنے کی صورت میں جو پچھ ہونا تھا اس کا ایسا نقشہ کھینچا کہ میں برحواس ہوگیا اور خود کو بھی زیراں کی دیواروں سے سر کھراتے، میمی منی بیکی کی انگل تھا ہے لکھو کے گل کوچوں میں بھیک ما تھتے دیکھنے لگا۔

''دیکھو کالے خال، ابھی سوہرا ہے'' داروغہ نے کہا،''کہیں نوکری جاکری کرد اور قرض بھگنانے کی فکرشردع کردد،نہیں تو''

"دارونه صاحب، مرنوكري كهال كرول-"

"کول؟" انھوں نے کہا،" ایک تو حسین آباد مبارک بی کا دروازہ کھلا ہوا ہے۔"
"دوال مل سکتی ہے۔ لیکن دارونہ احمد علی خال صاحب سے س طرح آلکھیں جار کروں گا۔ انھوں نے کتنی بارآدی بلانے بھیجا، میں نے بلٹ کرنہیں دیکھا۔ اب کیا منہ لے کران سے نوکری ماگوں۔"

"اجما، باغول مي كام كرلومي؟"

" كرلول كا، يش ن كبا، كماس كودن كاكام بوكا وه يمي كرلول كا-"

"ب، تو چلوميرے ساتھ، ابھی،" انھوں نے کہا" ایک اسامی خالی ہے۔"

دارونہ ای وقت جھے بادشاہ منزل کے دفتروں میں لے گئے۔ کی جگہ پر میرا نام اور طید وفیرہ درج کیا گئے۔ پر میرا نام اور طید وفیرہ درج کیا گیا۔ حنائتی کی جگہ داروفہ نے اپنا نام کھوایا۔ پھر ہم کھی دروازے پر پہنچ۔ یہاں سرکاری عملے کے آ دمیوں، سپاہیوں وفیرہ کا ججم تھا۔ داروفہ نے گئی لوگوں سے صاحب سلامت کی پھر جھے سے کہا:

" يہال كمڑے رہو۔ ابھى نام بكارا جائے گا۔" اور دروازے پر جمولتا ہوا عنائي زرافع كا پردہ ذرا سا بناكر اندر چلے كئے۔ ش لكسى دروازے كى صنعتوں كو ديكتا اور جران ہوتا رہا۔ آخر دفتروں سے ممرے كاغذات بن كرآ گئے اور ميرا نام بكارا كيا ايك خواجہ سرانے جھے سے كئ سوال كيے، ميرے جوابوں كوكاغذات سے طايا، بكر عنائي بردے كى

ले कर काम चलाने लगा। घर सिर्फ़ रात को जाता था। उस वक्षत फ़लक आरा सो चुकी होती थी। सुबह सुबह तोते मेरी बीवी के सिखाए हुए बोल दोहराते तो मुझे घर में उहरना मुश्किल हो जाता। आख़िर एक दिन मैं उठा और सारे परिंदों को चिड़िया बाजार में बेच आया।

उसी जमाने में एक दिन दारोग़ा नबी बख्या ने मुझे पास बुलाया। कई दिन से वह मुझ को रमनों के पास आवारा गर्दी करते देख रहे थे। उन्होंने कुछ ऐसी दिलसोजी से मेरा हाल दरयाप्रत किया कि मैंने सब कुछ बता दिया उन्होंने बड़ी तसल्ली दी, लेकिन महाजनों से कुर्ज लेने की बात पर बहुत नाराज हुए। कर्ज अदा न करने की स्रत में जो कुछ होना था उसका ऐसा नक्ष्मा खींचा कि मैं बदहवास हो गया और खुद को भी जिन्दां की दीवारों से सर टकराते, कभी नन्ही बच्ची की उंगली थामे लखनक के गली कुचों में भीख मांगते देखने लगा।

"देखो काले खां, अभी सबेरा है।" दारोग़ा ने कहा "कहीं नौकरी चाकरी करो और क़र्ज भुगताने की फ़िक्र शुरू कर दो, नहीं तो....."

''दारोग्रा साहब, मगर नौकरी कहां करूं 3''

.''क्यों ?'' उन्होंने कहा ''एक तो हुसैनाबाद मुबारक ही का दावाजा खुला हुआ है।''

"वहां मिल सकती है। लेकिन दारोग्रा अहमद अली खां साहब से किस तरह आंखें चार करूंगा। उन्होंने कितनी बार आदमी बुलाने भेजा, मैंने पलट कर नहीं देखा। अब क्या मुंह लेकर उनसे नौकरी मांगूं।"

''अच्छा बाग़ों में काम कर लोगे।''

''कर लूंगा,'' मैंने कहा, ''घास खोदने का काम होगा वह भी कर लूंगा।''

"बस तो चलो मेरे साथ अभी," उन्होंने कहा "एक असामी ख़ाली है।"

दारोग्रा उसी वक्रत मुझे बादशाह मंजिल के दप्रतर्र में ले गए। कई जगह पर मेरा नाम और हुलिया वगैरा दर्ज किया गया। जमानती की जगह दारोग्रा ने अपना नाम लिखवाया। फिर हम लख्खी दरवाजे पर पहुंचे। यहां सरकारी अमले के आदिमयों, सिपाहियों वग्रैरह का हुजूम था। दारोग्रा ने कई लोगों से साहब सलामत की फिर मुझ से कहा—:

''यहां खड़े रहो, अभी नाम पुकारा जाएगा,'' और दरवाजे पर झूलता हुआ

طرف اشاره كيا ادركها:

ا " طاؤس چن میں چلے جاؤ۔"

اب میں پردے کے دومری طرف کھڑا تھا۔ اس دقت کی تحبراہث میں دہاں کی بہار
کیا دیکتا، کی روشوں پر مور تا ہے محوصے نظر آئے تو سمجھا بہی طاؤس جمن ہے۔ لیکن
واروغہ نی پخش کہیں دکھائی ٹیس دے رہے تھے۔ سمجھ میں نہ آتا تھا کدھر کا رخ کروں۔ ہر
طرف سناٹا سناٹا سا تھا۔ درختوں پر اور بارہ دری کی شکل کے بڑے بڑے بخبروں میں
پرندے البتہ بہت تھے۔ فاختہ اور شاما کی آوازیں رہ رہ کر آری تھیں۔ بھی بھی دور رمنوں
کی طرف کوئی ہاتی چکھاڑ دیتا تھا، بس۔ میں پریشان کھڑا ادھر ادھر دکھ رہا تھا کہ دور پر
سبز رمگ کے بہت بڑے برے مور کھڑے نظر آئے۔ ذرا خور سے دیکھا تو پا چلا درخت
جی جنمیں موروں کی صورت میں جھائنا کیا ہے۔

" طاؤس چن،" میں نے ول میں کہا اور لکتا ہوا وہاں پہنچ گیا۔ چن کے بھا تک پر مجل جائی گیا۔ چن کے بھا تک پر مجل جائی کے بیا تک مرمر کی جائی سنگ مرمر کی سنگ مرمر کی سال کا سنگ مرمر کی سال کرے سنے۔

'' چلے آو اعد کا ہوا دیے جاں'' انموں نے جھے چا تک کے باہر رکا ہوا دیے کہ آوازدی اور میں ان کے پاس چلا گیا۔ چن کے بچوں جھے میں گئی مستری ایک نیچا سا چبوترہ بتا رہے تھے۔ داروف نے انمیں کچے ہدائیں دیں، پھر میرا ہاتھ پکڑ کر چن کا ایک چکر لگا یا۔ میں ان درختوں کی چھٹائی دکھے کر جیران تھا۔ موروں کی ایک تی شکلیں بی تھیں کہ معلوم ہوتا تھا درختوں کو بھلاکر کسی ساف نظر رختوں کو بھلاکر کسی ساف نظر رختوں کو بھلاکر کسی ساف نظر کر دن بیچے کی طرف مو ڈکر اپنے پروں کو آری تھیں۔ سب سے کمال کا وہ مور بنا تھاجو گردن بیچے کی طرف مو ڈکر اپنے پروں کو کر برد ہا تھا۔ ہرمود پاس پاس کھے ہوئے پہلے توں دالے درختوں کو طاکر بنایا گیا تھا۔ ہی کر بدرہا تھا۔ ہرمود پاس پاس کھے ہوئے پہلے توں دالے درختوں کو طاکر بنایا گیا تھا۔ ہی موری چھوڈ دی گئی تھیں کہ بالکل مور کے بیٹے بن سے تھے داروف نے بنایا کہ دوز اند جرے موری میں تو دادو نے بنایا کہ دوز اند جرے میں مند بہت سے مالی سیر صیاں نگا کراور پاڑ ہا عمدہ کر ایک ایک درخت کی چھٹائی کرتے ہیں۔ مند بہت سے مالی سیر صیاں نگا کراور پاڑ ہا عمدہ کر ایک ایک درخت کی چھٹائی کرتے ہیں۔ من مند بہت سے مالی سیر صیاں نگا کراور پاڑ ہا عمدہ کر ایک ایک درخت کی چھٹائی کرتے ہیں۔ من نے تعریفوں پر تعریفیں شروع کیس تو دادونے جنے گئے۔

उनाबी जारे बफ़्त का पर्दा जारा सा हटा कर अंदर चले गये, मैं लख्खी दरवाजे की सिन्अतों को देखता और हैरान होता रहा। आख़िर दफ़्तरों से मेरे काग्रजात बन कर आ गये और मेरा नाम पुकारा गया, एक ख़्वाजा सर ने मुझ से कई सवाल किये, मेरे जवाबों को काग्जात से मिलाया, फिर उनाबी पर्दे की तरफ़ इशारा किया और कहा—:

"ताऊस चमन में चले जाओ"

अब मैं पर्दे के दूसरी तरफ़ खड़ा था। उस वक्त की घबराहट में वहां की बहार क्या देखता, कई रिवशों पर मोर नाचते घूमते नजर आए तो समझा यही ताऊस चमन है। लेकिन दारोग़ा नबी बख़्श कहीं दिखाई नहीं दे रहे थे। समझ में न आता था किथर का रुख़ करूं, हर तरफ़ सन्नाय सन्नाय सा था। दरख़्तों पर और बारादरी की शक्ल के बड़े बड़े पिंजड़ों में परिंदे अलबत्ता बहुत थे। फ़ाख़्ता और शामा की आवाजों रह रह कर आ रही थीं। कभी कभी दूर रमनों की तरफ़ कोई हाथी चिंघाड़ देता था, बस मैं परेशान खड़ा इथर उथर देख रहा था कि दूर पर सब्ज रंग के बहुत बड़े बड़े मोर खड़े नजर आए। जरा ग़ौर से देखा तो पता चला दरख़ा हैं जिन्हें मोरों की सूरत में छांटा गया है।

"ताऊस चमन" मैंने दिल में कहा और लपकता हुआ वहां पहुंच गया। चमन के फाटक पर भी चांदी के पतरों से मोर बनाए गए थे। अंदर दारोग़ा तले ऊपर रखी हुई संग मरमर की सिलों के पास खड़े थे।

"चले आओ अन्दर काले खां," उन्होंने मुझे फाटक के बाहर रुका हुआ देख कर आवाल दी और मैं उनके पास चला गया। चमन के बीचों बीच में कई मिस्त्री एक नीचा सा चब्तरा बना रहे थे। दारोग़ा ने उन्हें कुछ हिदायतें दीं, फिर मेरा हाथ पकड़ कर चमन का एक चक्कर लगाया। मैं उन दरख़्तों की छटाई देख कर हैरान था। मोरों की ऐसी सच्ची शक्तें बनी थीं कि मालूम होता था दरख़्तों को पिघला कर किसी सांचे में खल दिया गया है। तिकोनी कल्णियां और चोंचें तक साफ नजर आ रही थीं। सबसे कमाल का वह मोर बना था जो गर्दन पीछे की तरफ़ मोड़ कर अपने परों को कुरेद रहा था। हर मोर पास पास लगे हुए पत्तले तनों वाले दरख़्तों को मिलाकर बनाया गया था। यही तने मोरों के पैरों का काम करते

^{1.} कारीगरी

" تم نظے پیروں کو ی و کھ کرمش مش کر رہے ہو، "انعوں نے کہا "ای مہینے تو ان کی بیلیں اتاری کی جیسے نے بیلیں کے دھ کے پھولیس کی تو پروں کے رنگ و کھنا۔ "

اس کے بعد وہ مجھے قریب کے ایک اور چمن میں لے مکئے جس کے سب درخت شرکی شکل کے تھے۔

" یہ اسد چن ہے،" انعول نے بتایا" بادشاہ نے اس چن کے درفتوں کے نام بھی رکھے ہیں۔"

مجروه مجھے طاؤس چمن میں واپس لائے۔

" تممارا کام طاؤس کوآ کینے کی طرح رکھناہے" انموں نے کہا اور ادھورے چبوتر ب کی طرف اشارہ کیا،" اس کی تیاری کے بعد کام پھو برھے گا، بڑھ کربھی آ دھے دن سے زیادہ کانہ ہوگا تمماری باری ایک ہفتہ مج سے دو پہر، ایک ہفتہ دو پہر سے مغرب تک۔" انھوں نے میرے کامول کی پھوتھیل بتائی۔ آخر میں کہا:

"آج سے تم سلطان عالم کے لمازم ہوئے۔ الله مبارک کرے۔ بس اب کھر جاؤ۔ کل سے آنا شروع کردو، اور بدوای تبای چرنا چیوڑؤ"

میں ان کو دعا کمیں دینے لگا۔

"كيسى باتى كرتے ہو، انعول نے كها اورمستريوں كو بدايتي دينے ككے"

(2)

بیوی کے مرنے کے بعد اس دن کیلی بار میں نے اپنی فلک آرا کو فور سے دیکھا۔
اس نے بالکل ماں کا رنگ روپ پایا تھا۔ یقین کرنا مشکل تھا کہ یہ چینی کی گڑیا الی پکی
اس نے بالکل ماں کا رنگ روپ پایا تھا۔ یقین کرنا مشکل تھا کہ یہ چینی کی گڑیا الی پکی
اس کا لے دیوکی بٹی ہے جے لوگ شیدیوں کے احاطے کا کوئی مبٹی سجھ لیتے بیں۔ جھے
فلک آرا پر ترس آیا اور خود پر ضعہ بھی کہ مال سے پھڑ کر یہ نفی کی جان استے دن تک باپ
کی محبت کو بھی ترتی رہی۔ گر نجر، دو بی تین دن جی وہ جھے سے ایسائل گئی کہ اپنی مال سے بھی
نہ ملی لی بوگی، اور جس بھی بس کی کی دن بازاروں کی سرکر لینے کے سواکام پر سے سیدھا گھر
آتا اور دروازہ کے بیچے اس کے دوڑتے ہوئے جھوٹے جھوٹے قدموں کی آ جٹ کا انتظار

थे, और उनकी कुछ जड़ें उसी तरह जमीन पर उभरी हुई छोड़ दी गई थीं कि बिल्कुल मोर के पंजे बन गये थे दारोग़ा ने बताया कि रोज अंधेरे मुंह बहुत से माली सीढ़ियां लगाकर और पाड़ बांध कर एक एक दरख़त की छटाई करते हैं। मैंने तारीफों पर तारीफों शुरू की तो दारोग़ा हंसने लगे।

"तुम नंगे पेड़ों ही को देख कर अश अश कर रहे हो" उन्हों ने कहा इसी महीने तो इनकी बेलें उतारी गईं हैं। नई बेलें चढ़ के फूलेंगी तो परों के रंग देखना।

उस के बाद वह मुझे क़रीब के एक और चमन में ले गए जिस के सब दरख्त शेर की शक़्ल के थे।

"यह असद चमन है," उन्होंने बताया "बादशाह ने इस चमन के दरख़्तों के नाम भी रखे हैं।"

फिर वह मुझे ताऊस चमन में वापस लाए।

"तुम्हारा काम ताऊस को आईने की तरह रखना है," उन्हों ने कहा और अधूरे चबूतरे की तरफ़ इशारा किया, "इसकी तैयारी के बाद काम कुछ बढ़ेगा, बढ़ कर भी आधे दिन से ज़्यादा का न होगा। तुम्हारी बारी एक हफ़्ता सुबह से दोपहर, एक हफ़्ता दोपहर से मगृरिब तक।"

उन्होंने मेरे कामों की कुछ तप्सील बताई। आखिर में कहा-:

"आज से तुम सुल्ताने आलम के मुलाजिम हुए। अल्लाह मुबारक करे। बस अब घर जाओ। कल से आना शुरू कर दो, और यह वाही तबाही फिरना छोडो।"

मैं उनको दुआयें देने लगा।

कैसी बातें करते हो. उन्होंने कहा और मिस्त्रियों को हिदायतें देने लगे।

(2)

बीवी के मरने के बाद उस दिन पहली बार मैंने अपनी फ़लक आरा को गौर से देखा। उसने बिल्कुल मां का रंग रूप पाया था। यक्षीन करना मुश्किल था कि यह चीनी की गुड़िया ऐसी बच्ची उसी काले देव की बेटी है जिसे लोग शैदियों के अहाते का कोई हब्शी समझ लेते हैं। मुझे फ़लक आरा पर तरस आया और खुद पर गुस्सा भी कि मां से बिछड़ कर यह नन्हीं सी जान इतने दिन तक बाप की मुहब्बत को भी तरसती रही। मगर ख़ैर, दो ही तीन दिन में वह मुझ से ऐसा हिल

كرتاتغابه

میں اس کے لیے بازار سے پھی نہیں لاتا تھا۔ تخواہ حالال کہ حسین آباد سے زیادہ ملی مقی سکی اس کے لیے بازار سے پھی نہیں اتا تھا۔ خود مقی لیکن قرضوں کی واپسی میں اتنی کٹ جاتی تھی کے دال روٹی کا خرج لکل پاتا تھا۔ خود اس نے بھی فرمائش کرنانہیں سیکھا تھا۔ لیکن ایک دن با تیں کرتے کرتے اچا تک وہ بولی:
"ایا، اللہ میں بہاڑی مینا لادو"۔

میں چپ رہ گیا ہوی کے مرنے کے بعد میں نے قتم کھالی تھی۔ کہ اب گھر میں کوئی پرندہ نہیں پالوں گا، پھر بھی جب میں نے دیکھا وہ امید بھری نظروں سے مجھے و کھے رہی ہے تو میں نے کہا:

" ہم اپنی پہاڑی مینا کو اس کی پہاڑی مینا لا کے بالکل ویں ہے۔"

اس دن سے وہ روز اپنی مینا کا انظار کرنے گی۔ ایک دن میں نے چڑیا بازا کا ایک کھیرا بھی کیا۔ پہاڑی مینا کے دام دلی مینا سے زیادہ تھے، استے زیادہ بھی نہیں کہ میں مول نہ لے سکنا، لیکن بھتی تخواہ اس وقت باتھ آئی تھی اس میں نہیں لے سکنا تھا۔ میں چڑیوں سے ذرا ہٹ کر بنجر سے والوں کے قریب چلا گیا۔ گا کوں کی بھیڑتی اور اس بھیڑ میں اس دن پہلی بار میں نے حضور عالم کے ایجادی قش کا ذکر سنا۔ لوگوں کی باتوں سے جھے معلوم ہوا کہ وہ بادشاہ کو نذر کرنے کے لیے بہت دن سے ایک بڑا پنجرا بخوار ہے ہیں۔ یہ بھی معلوم ہوا کہ تھنو کی مطرف اس کا چرچا ہے۔ چڑیا بازار کے ان گا کھوں میں سے کی معلوم ہوا کہ تھنو کی دو وی کیا اور یہ بھی کہا کہ ان کی سجھ میں نہیں آتا اتنا بڑا ہنجرہ قیمر باغ میں بنجا یا کس طرح جائے گا۔ اس پر ایک پرانے بڑھے نے کہا:

"اے میال بد وزیروں کے معاملے ہیں۔ بد جاہیں تو سلطنت کی سلطنت ادھر سے ادھر ہیں۔" ادھر پہنچادیں۔ آپ اتی سی پنجری کے لیے بلکان ہور ہے ہیں۔"

سب لوگ ہننے گھے۔ پنجرا ویکھنے کا ایک دعوے دار بولا: "بوے میاں آپ بے دیکھے کی بات کر رہے ہیں۔ پنجری! اتی اگر آپ نے اس کی اونچائی

"كتنى موكى؟ روى وروازے سے زياده؟"

ادرى دروازوتو خرراكين حسين آبادك يهاكلول كم نه موكى-"

मिल गई कि अपनी मां से भी न हिली मिली होगी, और मैं भी बस किसी किसी दिन बाजारों की सैर कर लेने के सिवा काम पर से सीधा घर आता और दरवाजे के पीछे उसके दौड़ते हुए छोटे छोटे क़दमों की आहट का इंतिजार करता था।

में उसके लिये बाजार से कुछ नहीं लाता था। तनख़्वाह हालांकि हुसैनाबाद से ज़्यादा मिलती थी लेकिन कर्जों की वापसी में इतनी कट जाती थी कि दाल रोटी भर का ख़र्च निकल पाता था। खुद उसने भी फ़र्माइश करना नहीं सीखा था, लेकिन एक दिन मुझ से बातें करते करते अचानक वह बोली:

''अब्बा, अल्लाह हमें पहाड़ी मैना ला दो।''

मैं चुप रह गया बीवी के मरने के बाद मैंने क़सम खा ली थी, कि अब घर में कोई परिंदा नहीं पालूंगा, फिर भी जब मैं ने देखा कि वह उम्मीद भरी नज़रों से मुझे देख रही है तो मैंने कहा:

"हम अपनी पहाड़ी मैना को उसकी पहाड़ी मैना ला के बिल्कुल देंगे।"

उस दिन से वह रोज अपनी मैना का इंतजार करने लगी, एक दिन मैंने चिड़िया बाजार का एक फेरा भी किया, पहाड़ी मैना के दाम देसी मैना से ज्यादा थे, इतने ज्यादा भी नहीं कि मैं मोल न ले सकता, लेकिन जितनी तनख्वाह उस वक्षत हाथ आई थी उसमें नहीं ले सकता था। मैं चिड़ियों से जरा हट कर पिंजड़े वालों के क़रीब चला गया। ग्राहकों की भीड़ थी और उस भीड़ में उस दिन पहली बार मैंने हुजूरे आलम के ईजादी क़फ़स का जिक्र सुना। लोगों की बातों से मुझे मालूम हुआ कि वह बादशाह को नज़ करने के लिये बहुत दिन से एक बड़ा पिंजड़ा बनवा रहे हैं। यह भी मालूम हुआ कि लखनऊ में हर तरफ़ उसका चर्चा है। चिड़िया बाजार के उन ग्राहकों में से कई ने उसे बनते देखने का दावा किया और यह भी कहा कि उनकी समझ में नहीं आता कि इतना बड़ा पिंजड़ा क़ैसर बाग़ में पहुंचाया किस तरह जाएगा। उस पर एक पुराने बुड़ढे ने कहा,

"ऐ मियां यह वजीरों के मामले हैं। यह चाहें तो सल्तनत की सलतनत इधर से उधर पहुंचा दें। आप इत्ती सी पिंजड़ी के लिये हलकान हो रहे हैं।"

सब लोग इंसने लगे, पिंजड़ा देखने का एक दावेदार बोला:

"बड़े मियां आप बेदेखे की बात कर रहे हैं, पिंजड़ी! अजी अगर आप ने उसकी ऊंचाई------''

"بس ؟" بوے میاں بولے،" بھراسے تو وہ بائیں ہاتھ کی چینگلیا میں لفکا کر ردی دروازے کے اوپر"

تبقیم لکنے لگے اور میں وہاں سے محر جلا آیا۔

ተ

دوسرے بی دن میں نے طاؤس چن میں بھی حضور عالم کے ایجادی قفس کا ذکر سا۔ چبوترہ تیار ہوگیا تھا۔ چن کی ہریالی میں اس کی چکیلی تھین سفیدی آٹھوں کو بھلی بھی لگتی تھی چبھتی بھی تھی۔ داروغہ نبی بخش نے جمعے بتایا کے قفس اس چبوترے پر رکھا جائے گا۔ در میں دوروغہ نبی بخش نے جمعے بتایا کے قفس اس چبوترے پر رکھا جائے گا۔

" مر واروند صاحب" میں نے پوچھا "اتا برا قفس یہاں تک پنچے گا۔ کس ح

" کروں کروں میں آرہا ہے۔ بھائی" داردفہ نے بتایا۔" کر بہیں جوڑا جائے گا۔ حضور عالم کے آدمی آتے ہوں عے۔ اب یہاں ان کا تصرف ہوگا۔ رات بحر کام کریں گے۔ کل قض میں جانورچیوڑے جائیں مے"

" جانورچوڑے جاکیں گے۔ بابند کے جاکیں گے؟" میں نے ہس کر کہا۔

" ایک بی بات ہے۔ اما ل زبان کے کھیل چھوڑو اور مطلب کی سنو۔حضور عالم تو خیر آبی رہے ہیں۔ جیب نہیں حضرت سلطان عالم بھی تشریف لائیں۔ کل سے تمعارا اصلی کام شروع ہوگا۔ شمیں ایجادی قض اور اس کے جانو رول کی نگاہ داری پر رکھا گیا ہے کیا سمجھے؟ کل آبے گا ضرور کہیں چھٹی نہ لے بیٹھے گا۔"

ای وقت ایک چوبدار طاؤس چن میں داخل ہوااس نے داروغہ کے پاس جاکر چیکے چکے پاتی کیں۔ داروغہ نے باس جاکر چیکے چکے پاتیں کیں۔ داروغہ نے جواب میں کہا۔'' سر آنکھوں پر آئیں۔ ہمارا کام پورا ہوگیا۔''انھوں نے چبوترے کی طرف اشارہ کیا پھر جھے سے کہا'' چلو بھا کی تفس کے لیے چہن چھوڑو۔''

دوسرے دن میں وقت سے بہت پہلے گھرے نکل کھڑا ہوا۔ تھی فلک آرا نے روز کی طرح چلتے چلتے یاددلایا۔

- ''कितनी होगी ? रूमी दरवाजे से ज्यादा ?''
- ''रूमी दरवाजा तो खैर, लेकिन हुसैनाबाद के फाटकों से कम न होगी।''
- "बस?" बड़े मियां बोले, "फिर उसे तो वह बाएँ हाथ की छिंगुलिया में लटका कर रूमी दरवाजे के ऊपर"

क़हक़हे लगने लगे और मैं वहां से घर चला आया। ☆☆

दूसरे ही दिन मैंने ताऊस चमन में भी हुजूरे आलम के ईजादी क़फ़स का जिक्र सुना। चबूतरा तैयार हो गया था। चमन की हरिगाली में उसकी चमकीली संगीन सफ़ेदी आंखों को भली भी लगती थी, और चुभती भी थीं दारोग़ा नबी बख्श ने मुझे बताया कि क़फ़स उसी चबूतरे पर रखा जाएगा।

"मगर दारोग़ा साहब," मैं ने पूछा "इतना बड़ा क़फस⁽¹⁾ यहां तक पहुंचेगा किस तरह?"

"टुक्ड़ों टुक्ड़ों में आ रहा है भाई,'' दारोग्ना ने बताया, ''फिर यहीं जोड़ा जायेगा। हुजूरे आलम के आदमी आते होंगे। अब यहां उनका तसर्रूफ़⁽²⁾ होगा। रात भर काम करेंगे, कल क़फ़स में जानवर छोड़े जाएंगे.......''

''जानवर छोड़े जाएंगे या बंद किये जायेंगे ?'' मैंने हंसकर कहा।

"एक ही बात है, अमां जबान के खेल छोड़ो और मतलब की बात सुनो। हुजूरे आलम तो ख़ैर आ ही रहे हैं, अजब नहीं हजरत सुलताने आलम भी तशरीफ लाएं। कल से तुम्हारा असली काम शुरू होगा। तुम्हें ईजादी क़फ़स और उसके जानवरों की निगहदारी पर रखा गया है, क्या समझे? और कल आईयेगा जरूर कहीं छुट्टी न ले बैटिएगा।"

उसी वक्त एक चोबदार ताऊस चमन में दाख़िल हुआ उसने दारोग्रा के पास जाकर चुपके चुपके कुछ बातें की । दारोग्रा ने जवाब में कहो ।

"सर आंखों पर आएं हमारा काम पूरा हो गया," उन्होंने चबूतरे की तरफ़ इशारा किया फिर मुझ से कहा, "चलो भाई। क़फ़स के लिये चमन छोड़ो।"

**

दूसरे दिन मैं वक्त से बहुत पहले घर से निकल खड़ा हुआ। नन्ही फ़लक 1. पिंजरा 2. प्रयोग

''ابا، ہماری پہاڑی مینا۔۔۔۔۔۔'' ''ہاں بیٹی، بالکل لا کیں ھے۔''

" آپ روز بھول جاتے ہیں گے" اس نے ٹھنک کر کہا اور میں دروازے سے باہر آگیا۔ کچھ دورجا نے کے بعد میں نے مرکر دیکھا وہ دروازے کا ایک بٹ پکڑے مجھ کو دیکھ ری تھی، بالکل ای طرح جیسے اس کی مال جھے نوکری پر جاتے دیکھا کرتی تھی۔

رمنوں کے پاس سے ہوتا ہوا میں قیصر باغ کے شالی بھائک میں، وہاں سے اکسی دروازے میں داخل ہوا۔ اور سیدها طاؤس چن پہنچا آج وہاں بوی چہل پہل تھی۔ چن کے باہر ساہیوں کا پہرا تھا۔ اور داروغہ نی بخش ان سے باتیں کر رہے تھے۔ جھے دیکھتے ہی ہوئے:

" آؤہمی کالے خال، ویکھائیں نے کیا کہا تھا۔ حضرت سلطان عالم تشریف لارہ ہیں۔ تم نے اچھا کیا۔ جوآج سویرے سے آگے۔ یس آدی دوڑایا بی چاہتا تھا۔ " پر وہ جھے لے کر طاؤس چن میں داخل ہوئے۔ سامنے بی چہوڑے پر حضور عالم کا ایجادی قض نظر آ رہا تھا۔ یس جھتا تھا یہ تف کو کی بڑا ساخوبصورت پنجراہوگا۔ بس گر اسے دکھ کر میری تو آئیسیں کھلی کی کھلی رہ گئیں۔ قض کیا تھا ایک عمارت تھی۔ اس کا ڈھانچہ کو کی وارچار انگل چوڑی پٹریاں سے تیا رکیا گیا تھا۔ پٹریاں ایک رخ سے لال، دوسرے رخ چارچار انگل چوڑی پٹریاں سے تیا رکیا گیا تھا۔ پٹریاں ایک رخ سے لال، دوسرے رخ سے سبزتھیں۔ معلوم نہیں کٹڑی کی تھیں یا لوہ کی لیکن اس پر روغن ایبا کیا گیا تھا کہ لال اور زمر دکا وہوگا ہوتا تھا۔ جس دیو ارکی پٹریاں باہر لال اندر سبزتھیں اس کے مقابل والی دیوار کی پٹریاں باہر لال اندر سبزتھیں اس کے مقابل والی لاگر آ تا تھا دوسری طرف جا کر دیکھو تو سبز پٹریوں کے بچھ کی جگہوں میں پھولوں اور پرعدوں کی شکیس یاتی ہوئی روپہلی تیملیاں اور تیلیوں کے بچھ کی جگہوں میں پھولوں اور کی نازک جالیاں تھیں۔ ہرطرف جھوٹے دروازے اور کھڑکیاں بنائی گئی تھیں۔ اصل دروازہ قد آدم سے اونچا تھا۔ اور اس کی پیشائی پردوجل پریاں شابی تاج کو تھا ہے ہو سے تھیں۔ حس سبراگنبدتھا۔ گئید کے کل جھیت کے چاروں کونوں بر روپہلی برجیاں اور بچھ میں بڑا سا سبراگنبدتھا۔ گئید کے کل جھیت کے چاروں کونوں بر روپہلی برجیاں اور بچھ میں بڑا سا سبراگنبدتھا۔ گئید کے کل بربہت بڑا چائد تھا۔ برجیوں کی کھیاں سے اور پشلے کے ہوئے ساروں سے بنائی گئی تھیں۔

आरा ने रोज की तरह चलते चलते याद दिलाया-:

- ''अब्बा, हमारी पहाड़ी मैना····· ''
- ''हां बेटी, बिल्कुल लाएंगे।''

"आप रोज भूल जाते हैं" उसने ठुनक कर कहा और मैं दरवाजे से बाहर आ गया। कुछ दूर जाने के बाद मैंने मुड़ कर देखा। वह दरवाजे का एक पट पकड़े मुझ को देख रही थी, बिल्कुल उसी तरह जैसे उसकी मां मुझे नौकरी पर जाते देखा करती थी।

रमनों के पास से होता हुआ मैं कैसर बाग के शुमाली⁽¹⁾ फाटक में, वहां से लख्खी दरवाजे में दाख़िल हुआ और सीधा ताऊस चमन पहुंचा। आज वहां बड़ी चहल पहल थी। चमन के बाहर सिपाहियों का पहरा था और दारोग़ा नबी बख़्श उन से बातें कर रहे थे, मुझे देखते ही बोले:

"आओ भाई काले खां, देखा मैंने क्या कहा था? हजरत सुलताने आलम तशरीफ ला रहे हैं। तुमने अच्छा किया जो आज सबेरे से आ गये। मैं आदमी दौड़ाया ही चाहता था।"

फिर वह मुझे लेकर ताऊस चमन में दाख़िल हुए। सामने ही चब्तरे पर हुजूरे आलम का ईजादी क़फ़स नजर आ रहा था। मैं समझता था यह क़फ़स कोई बड़ा सा, खूबसूरत पिंजड़ा होगा, बस। मगर उसे देख कर मेरी तो आंखें खुली की खुली रह गई। क़फ़स क्या था एक इमारत थी। उसका ढांचा कोई चार चार उंगल चौड़ी पटिरयों से तैयार किया गया था। पटिरयां एक रुख़ से लाल और दूसरे रुख़ से सब्ज थीं। मालूम नहीं लकड़ी की थीं या लोहे की लेकिन उनपर रोगन ऐसा किया था कि लाल और जमुर्रद⁽²⁾ का धोखा होता था। जिस दीवार की पटिरयां बाहर लाल, अंदर सब्ज थी उसके मुक़ाबिल वाली दीवार की पटिरयां बाहर सब्ज अंदर लाल रखी गई थीं। इस तरह एक तरफ़ से देखने पर पूरा क़फ़स लाल नजर आता था। दूसरी तरफ़ जाकर देखो तो सब्ज । पटिरयों के बीच की जगहों में फूलों और पिरदों की शक्लें बनाती हुई रूपहली तीलियां और तीलियों के बीच की जगहों में सुनहरे तारों की नाजुक जालियां थीं हर तरफ़ छोटे दरवाजे और खिड़िकयां बनाई गई थीं। असल दरवाजा क़हे-आदम से ऊंचा था और उसकी

^{1.} उत्तरी 2. गहरा हरा

تفن کے بڑے دروازے سے کھ بٹ کردس دس کی چار قطاروں میں چھوٹے چھو نے گول پنجرے رکھے ہوئے تھے اور ہرپنجرے میں ایک بہاڑی مینائقی۔ داروغہ نے کہا ''افعیں اچھی طرح دکھ لوکالے خال، اصیل بہاڑی مینا کمیں جیں۔ مینا کمین نہیں سونے کی چڑیاں ہیں۔ بادشاہ نے اس تفس کے لیے مہیا کرائی جیں۔ افعیں شنراویاں سمجھو۔''

پنجرول کے سامنے صندل کی ایک او ٹی ٹازک می میز تھی۔ جس پر ہاتھی وانت سے پول پیا اور طرح طرح کی جڑیاں بنی ہوئی تھیں۔

" اچھا اب ادھر دیکھو" داروغہ نے میزی فرف اشارہ کرتے ہوئے کہا"اس پر ایک ایک پنجرار کھا جائے گا۔ حضرت ملاحظہ فرماتے جائیں گے۔ تم یہاں دروازے کے پاس کھڑے ہوگے۔ حضرت کے ملاحظے کے بعد ہر پنجرا ہاتھوں ہاتھ ہوتا ہواتھارے پاس آئے گا۔ تمارا کام جانورکو پنجرے سے نکال کرتنس میں ڈالنا ہوگا۔ یہ بہت چکی کا کام ہے۔ ذرا ڈھیلے پڑے اور چڑیا کھررد........"

'' فکرنہ کیجیے استاد'' میں نے کہا'' ہزار نچڑیا اس پنجرے سے اس پنجرے میں کردول مجال ہے۔ جو ہاتھ بہک جائے۔''

" مج كتبتے ہو بھائى" داروغہ بولے،" پھر بھى حضرت كا سامنا ہوگا، ذرااوسان ٹھكانے ركئا"_

اس کے بعد وہ باہر چلے گئے اور میں پھر تفس کود کھنے لگا۔ اند رہے وہ ایک چھوٹا سا
قیصر باغ ہور ہاتھا۔ فرش پرسگ سرخ کی بجری بچھی ہوئی تھی۔ نظ میں پانی سے بجرا ہوا حوش
جس میں چھوٹی چھوٹی سنہری کشتیاں تیر بہی تھی۔ اور ان کشتیوں میں بھی تھوڑ اتھوڑ اپانی تھا۔
فرش پر لال سبزچینی کی نیچی نیموں میں پتلی لمبی شاخوں والے چھوٹے قد کے درخت
تھے۔ دیواروں سے ملی ملی بسنت مالتی، بشن کا نتا، جوبی اور پچھ ولا بی پھولوں کی
بیلیں تھیں۔ ان میں نہیوں سے زیادہ پھول تھے۔ اور انھیں اس طرح چھاٹا گیا تھا۔ کونس
کی صنعتیں ان میں چھپ جانے کے بجائے اور ابھر آئی تھیں۔ جگہ جگہ ستاروں کی وضع کے
گوستیں ان میں جھپ جانے کے بجائے اور ابھر آئی تھیں۔ جگہ جگہ ستاروں کی وضع کے
آئینے جڑے جن کی وجہ سے قئس بین جدھر دیکھو پھول بی پھول نظر آتے تھے۔ پانی

पेशानी पर दो जलपरियां शाही ताज को थामे हुए थीं। छत के चारों कोनों पर रूपहली बुरजियां और बीच में बड़ा सा सुनहारा गुंबद था। गुंबद के कलस पर बहुत बड़ा चांद था। बुरजियों की कलियां तले ऊपर बिठाए हुए सितारों से बनाई गई थीं।

क्रफ्रस के बड़े दरवाजे से कुछ हट कर दस दस की चार क़तारों में छोटे -छोटे गोल पिंजड़े रखे हुए थे और हर पिंजड़े में एक पहाड़ी मैना थी। दारोग़ा ने कहा:

"इन्हें अच्छी तरह देख लो काले खां, असली पहाड़ी मैनाएं हैं मैनाएं नहीं सोने की चिड़ियाएं हैं, बादशाह ने इस क़फ़स के लिये मुहय्या कराई हैं। इन्हें शहजादियां समझो।"

पिंजड़ों के सामने संदल की एक ऊंची नाजुक सी मेज थी जिस पर हाथी दांत से फूल पत्तियां और तरह तरह की चिड़ियां बनी हुई थीं।

"अच्छा अब इधर देखो" दारोग्ना ने मेज की तरफ़ इशारा करते हुए कहा, "इस पर एक पिंजड़ा रखा जाएगा। हजरत मुलाहिजा^(‡) फरमाते जाएंगे। तुम यहां दरवाजे के पास खड़े होगे। हजरत के मुलाहिजे के बाद हर पिंजड़ा हाथों हाथ होता हुआ तुम्हारे पास आएगा। तुम्हारा काम जानवर को पिंजड़े में से निकाल कर कफ़स में डालना होगा। यह बहुत चौकसी का काम है। जरा ढीले पड़े और चिड़िया फ़ुर्ररि....."

"फ़िक्र न कीजिये उस्ताद" मैंने कहा। "हजार चिड़ियां इस पिजड़े से उस पिजड़े में कर दूं, मजाल है जो हाथ बहक जाये।"

"सच कहते हो भाई" दारोग्ना बोले "फिर भी, हजरत का सामना होगा, जुरा औसान ठिकाने रखना।"

उसके बाद वह बाहर चले गये और मैं फिर क़फ़स को देखने लगा। अंदर से वह एक छोटा सा क़ैसर बाग़ हे रहा था। फर्श पर संगे सुर्ख़ की बजरी बिछी हुई थी। बीच में पानी से भरा हुआ हौज जिसमें छोटी छोटी सुनहरी कश्तियां तैर रही थीं और इन कश्तियों में भी थोड़ा थोड़ा पानी था। फ़र्श पर लाल सब्ज चीनी की नीची नीची नांदों में पतली लम्बी शाख़ों वाले छोटे क़द के दरख़्त थे। दीवारों से मिली मिली बसंत मालती, बुशन कांता, जुही और कुछ विलायती फुलों की

^{1.} ध्यानपूर्वक देखना

بلے پلے مچان اور آشیا نے برطرف سے اور انھیں سے معلوم ہوتا تھا۔ کہ یہ جگد پرندوں کے لیے بے۔

ہوا چل رہی تھی۔ اور پورائنس بہت بکی آواز میں جمنجمنارہا تھا۔ مجھے محسوس ہواکہ طاؤس چمن میں اچا یک خاموثی جھاگئی ہے۔ اور میں چونک پڑا میں نے ویکھا بادشاہ حضور عالم اور اپنے خاص خاص مصاحبوں کے ساتھ طاؤس چمن میں وافل ہورہ ہیں۔ سب سے پیچھے دارونے نبی بخش سینے پر باتھ باندھے، سر جھکا ئے چل رہے تھے۔ صندل کی میز کے یاس آگر بادشاہ رکے اور دیر تک تفس کو دیکھتے رہے۔

" واو" انھوں نے کہا، پھر وزیر اعظم کودیکھا،" حضور عالم! یہ ہما رہے ہی یہال کا کام ہے۔"

'' جہاں پناہ'' حضور عالم سینے پر ایک ہاتھ رکھ کر جھکے اور بولے، ایک ایک تار لکھنو کے کاریگروں کا موڑا ہواہے۔''

'' تو انھیں کچھ اوپر سے بھی دیا؟''

" سلطان عالم ك تفدق مين ايك ايك كي سات پشتن كها كين كي-"

"ا وجها كيا،" با دشاه بول،" تو كهر برهاك بهم سي بهى دلواد يجيه."

حضور عالم اورزیادہ جھک گئے۔ میں بادشاہ کے چبرے کی طرف نہیں دیکے رہا تھا۔ کوئی بھی نہیں دیکے رہا تھا۔ سب آنکھیں جھکائے ہاتھ باندھے کھڑے تھے۔ کچھ دیر بعد مجھے بادشاہ کی آواز سائی دی۔

'' لاؤ بھئی نبی بخش۔''

میں نے دارونہ کی طرف دیکھا انھوں نے سراور ابروؤں کو بہت خفیف ی جنبش دے کر جمعے سنجس جانے کا اشارہ کیا۔ ان کے چیچے ہے کسی ملازم نے پہلا پنجرا بڑھایا۔ دارونہ نے اسے دونوں ہاتھوں میں سنجالا اور دوقدم آ کے بڑھ کر شیشے کے کسی نازک برتن کی طرح بہت اختیاط سے میز پر رکھ دیا۔ اور چیچے ہٹ گئے۔ بادشاہ نے پنجراہاتھ میں اٹھا لیا۔ مینا پنجرے میں ادھر سے ادھر پھدک رہی تھی۔ بادشاہ نے ہنس کر کہا۔ لیا۔ مینا پنجرے میں ادھر سے ادھر پھدک رہی تھی۔ بادشاہ نے ہنس کر کہا۔

बेलें थीं। उनमें टहनियों से ज्यादा फूल थे और उन्हें इस तरह छांटा गया था कि कफ़स की सिन्अतें उनमें छुप जाने के बजाये और उभर आई थीं। जगह जगह सितारों की वजा के आईने जड़े थे जिनकी वजह से क़फ़स में जिथर देखो फूल ही फूल नज़र आते थे। पानी के कासे, दाने की कटोरियां, हांडियां, छोटे छोटे झूले, घूमने वाले अड्डे, पतले पतले मचान और आशियाने हर तरफ़ थे और उन्हीं से मालूम होता था कि यह जगह परिंदों के लिये है।

हवा चल रही थी और पूरा क़फ़स बहुत हल्की आवाज में झनझना रहा था। मुझे महसूस हुआ कि ताऊस चमन में अचानक ख़ामोशी छा गई है, और मैं चौंक पड़ा। मैंने देखा बादशाह हुजूरे आलम और अपने ख़ास ख़ास मुसाहिबों के साथ ताऊस चमन में दाख़िल हो रहे हैं। सबसे पीछे दारोग़ा नबी बख़्श सीने पर हाथ बांधे, सर झुकाए चल रहे थे। संदल की मेज के पास आकर बादशाह रुके और देर तक क़फ़स को देखते रहे।

"वाह!" उन्होंने कहा, फिर वजीरे आजम को देखा "हुजूरे आलम! यह हमारे ही यहां का काम है?"

"जहां पनाह" हुजूरे आलम सीने पर एक हाथ रख कर झुके और बोले "एक एक तार लखनऊ के कारीगरों का मोड़ा हुआ है।"

- "तो उन्हें कुछ ऊपर से भी दिया?"
- ''सुलताने आलम के तस**दु**क़⁽¹⁾ में एक एक की सात पुश्तें खाएंगी।''
- ''अच्छा किया'' बादशाह बोले ''तो कुछ बढ़ा के हम से भी दिलवा दीजिये।''

हुजूरे आलम और ज्यादा झुक गये। मैं बादशाह के चेहरे की तरफ़ नहीं देख रहा था। कोई भी नहीं देख रहा था। सब आंखें झुकाए, हाथ बांधे खड़े थे। कुछ देर बाद मुझे बादशाह की आवाज सुनाई दी:

''लाओ भई नबी बख्श''

मैंने दारोग़ा की तरफ़ देखा। उन्होंने सर और अबरूओं को बहुत खफ़ीफ़⁽²⁾ सी जुंबिश⁽³⁾ देकर मुझे संभल जाने का इशारा किया। उनके पीछे से किसी मुलाज़िम ने पहला पिंजड़ा बढ़ाया। दारोग़ा ने उसे दोनों हाथों में संभाला और दो

^{1.} व्योदावर 2. हलकी 3. हरकत

ایک مصاحب نے پنجراا ٹھا کر دوسرے مصاحب کودیا۔ دوسرے نے تیسرے کواور آخر میں پنجر امیرے پاس آگیا۔ میں نے اسے قفس کے دروازے کی جمری کے قریب کیا اور بڑی پھرتی کے ساتھ چلبلی بیگم کو نکال کر قفس میں ڈال دیا۔ ایک اور طازم نے خالی پنجرامیرے ہاتھ سے لے لیا۔ اتن دیر میں میز پر دوسرا پنجرا آگیا تھا۔ بادشاہ نے اسے بھی ہاتھ میں اٹھایا اس کی مینا اڈے پر سر جھکائے بیٹھی تھی۔ بادشاہ نے اسے بھی می چکاری دی تو اس نے اور زیا دوسر جھکا لیابادشاہ نے کہا۔

''اے بی صورت تو دیکھنے دو'' پھر پنجرامیز پررکھ کر بولے:''یہ حیا دار دلھون ہیں۔''
پھریہ پنجرامیرے پاس آیا۔ اور میں نے حیادار دلھون کو بھی تفس میں پہنچادیا۔ ای
طرح ایک کے بعد ایک مینا کی بادشاہ کے پاس آئی رہیں اوروہ ان کے نام رکھتے رہے۔
کس کا نام نازک قدم رکھا۔ کس کا آہوچشم، کس کا بروگن، ایک پنجرا جیسے بی بادشاہ کے
باتھ میں آیا اس کی مینا نے پر پھڑ پھڑا کر چیجہانا شروع کردیا۔ بادشاہ نے اس کانام زہرہ
پری رکھا۔ جھ کو سب مینا کی ایک معلوم ہور بی تھیں۔ لیکن بادشاہ کو ہرایک میں کوئی نہ
کوئی بات سب سے الگ نظر آئی اوروہ اس کی رعایت سے اس کانام رکھتے تھے۔ دیر تک
موجودگی سے شروع میں آتے اور میناؤل کے نام میرے کان میں پڑتے رہے۔ بادشاہ کی
موجودگی سے شروع میں جھے جو گھراہٹ ہور بی تھی۔ وہ اب پچھ کم ہوئی تھی۔ اور
میں ہر مینا کونس میں ڈالنے سے پہلے ایک نظر دکھے بھی لیتا تھا۔ بائیس تعیس پنجروں کے بعد
میں ہر مینا کونس میں ڈالنے سے پہلے ایک نظر دکھے بھی لیتا تھا۔ بائیس تعیس پنجروں کے بعد

"فلك آرا"

اورایک پنجرامیرے ہاتھ میں آگیا۔

یں نے دل بی دل یں دہرایا، ''فلک آراء'' اوراس مینا کوغور سے دیکھا۔ وہ بھی دوسری مینادں کی طرح تھی۔ میری سجھ میں نہیں آیا کہ بادشاہ نے اسکا نام فلک آراکیوں رکھا ہے۔ مینا کود کھ کر انھوں نے جو کھ کہا ہوگا۔ وہ میں نہیں پایا تھا۔ میں نے فلک آرا کو اورغور سے دیکھا وہ گردن اٹھائے پنجر سے میں بیٹی تھی۔ است بھی مجھ کود یکھا اور مجھے ایسا معلوم ہوا کہ میں اپنی نمنی فلک آراکو دیکھ رہا ہوں اس میں مجھے کھے دیر لگ می۔ اور

क़दम आगे बढ़ कर शीशे के किसी नाजुक बर्तन की तरह बहुत एहतियात से मेज पर रख दिया और पीछे हट गये। बादशाह ने पिंजड़ा हाथ में उठा लिया। मैना पिंजड़े में इधर से उधर फुदक रही थी। बादशाह ने हंस कर कहा:

"जरा क़रार तो लो, चुलबुली बेगम!" और पिंजड़ा वापस मेज पर रख दिया।

एक मुसाहिब ने पिंजड़ा उठा कर दूसरे मुसाहिब को दिया। दूसरे ने तीसरे को, और आख़िर में पिंजड़ा मेरे पास आ गया। मैंने उसे क़फ़स के दरवाज़े की झिरी के क़रीब किया और बड़ी फुर्ती के साथ चुलबुली बेगम को निकाल कर क़फ़स में डाल दिया। एक और मुलाजिम ने खाली पिंजड़ा मेरे हाथ से ले लिया। इतनी देर में मेज पर दूसरा पिंजड़ा आ गया था। बादशाह ने उसे भी हाथ में उठाया इसकी मैना अड्डे पर सर झुकाए बैठी थी। बादशाह ने उसे हलकी सी चुमकारी दी तो उसने और ज्यादा सर झुका लिया। बादशाह ने कहा:

"ऐ बी, सूरत तो देखने दो।" फिर पिंजड़ा मेज पर रख कर बोले "यह हयादार दुल्हन हैं" फिर यह पिंजड़ा मेरे पास आया तो मैं ने हयादार दुल्हन को भी क्रफ़स में पहुंचा दिया। इसी तरह एक के बाद एक मैनाएं बादशाह के पास आती रहीं और वह उनके नाम रखते रहे। किसी का नाम नाजुक क़दम रखा किसी का आहू चश्म, किसी का ब्रोगन, एक पिंजड़ा जैसे ही बादशाह के हाथ में आया उसकी मैना ने फड़फड़ा कर चहचहाना शुरू कर दिया। बादशाह ने उसका नाम जोहरा परी रखा। मुझ को सब मैनाएं एक सी मालूम हो रही थीं लेकिन बादशाह को हर एक में कोई न कोई बात सब से अलग नजर आती और वह उसी की रिआयत को से उसका नाम रखते थे। देर तक पिंजड़े मेरे हाथ में आते और मैनाओं के नाम मेरे कान में पड़ते रहे। बादशाह की मौजूदगी से शुरू शुरू में मुझे जो घबराहट हो रही थी वह अब कुछ कम हो गई थी और मैं हर मैना को क़फ़स में डालने से पहले एक नजर देख भी लेता था। बाईस तेईस पिंजड़ों के बाद अचानक मैं ने बादशाह की आवाज सुनी:

''फ्रलक आरा''

और एक पिंजड़ा मेरे हाथ में आ गया। मैंने दिल ही दिल में दोहराया, फूलक आरा" और इस मैना को ग़ौर से देखा। वह भी दूसरी मैनाओं की तरह

اہمی پنجرامیر سے ہاتھ میں اور جڑیا پنجرے ہی میں تھی کہ میں نے دیکھا اگل پنجر ا میری طرف آرہا ہے۔ میں نے بو کھلاکر فلک آرا کوایے بے سکے پن سے تفس میں ڈال کہ وہ میرے ہاتھ سے چھوٹتے چھوٹتے نگی۔ خیریت گذری کہ کس نے دیکھانہیں اور فلک آرائنس میں پہنچ کرایک جھولے پر بیٹے گئی۔

اس کے بعد سولہ سترہ پنجر ہے اور آئے ہر بینا کوتنس میں ڈالنے سے پہلے میں ایک نظر فلک آرا پر ضرور ڈال لیتا تھا۔ وہ ای طرح جمولے پہیٹی ہوئی تھی۔ اور جمعے دیکھ رہی سمی ۔ اس وقت جمعے میں محسوس کر کے تعجب ہوا کہ اگر چہ میں اس میں اور دوسری میناؤں میں کوئی فرق نہیں بتا سکتا کین اسے سب میناوں سے الگ پہیان سکتا ہوں۔

چالیسوں مینا کیں قفس میں پہنچ چکی تھیں۔ اور ادھر سے ادھر اڑتی پھرری تھیں۔ پھر در پھر ملک آرانے بھی اپنے جمولے پرے بلکی کی اڑان بھری اور قفس کے پورٹی جھے میں ایک بہنی پر جابیٹی کے بادشاہ وہیمی آواز میں داروغہ کو پھر سمجھا رہے تھے کہ رمنوں کی طرف سے ایک شیر کی دہاڑے اور بادشاہ نے بولتے بولتے رک کر بوجھا۔

" بیمونی کس پر مجزری میں نبی بخش"

دارونے چیکے سے مسکرائے اور سرؤ رانیچ کرکے آٹکھیں مٹکاتے ہوئے بولے۔''غلام جان کی امان یاوے تو عرض کرے۔''

"إلى المناو"

'' وه سلطان عالم بی پریگرربی ہیں۔''

" ارے ارے ہم نے کیا کیا ہے۔ ہمی " بادشاہ نے یو چھا، گرا تکاچرہ خوثی سے دکتے لگا۔" اچھا اچھا ہم سمجھ گئے۔ آج ہم ان سے ملے بغیر سیدھے ادھرجو چلے آئے یمی بات ہے نہا"

داروغه سينے پر دونوں ہاتھ رکھ کر جمک محے اور بولے۔

" سلطان عالم سے زیادہ ان کی ادائیں کون پہانے گا۔ ای پرنازدکھاتی ہیں۔ پھر بیاری سے آخی ہیں۔اس سے اور مستعنی ہورہی ہیں۔ غلام کی توبات بی نہیں سنیں۔"
" سے کہتے ہو!" بادشاہ نے کہا، مصاحبوں کی طرف دیکھا، پھر حضور عالم کی طرف،

थी, मेरी समझ में नहीं आया कि बादशाह ने इसका नाम फ़लक आरा क्यों रखा है। मैंना को देख कर उन्होंने जो कुछ कहा होगा वह मैं सुन नहीं पाया था। मैंने फ़लक आरा को और ग़ौर से देखा वह गर्दन उठाए पिंजड़े में बैठी थी उसने भी मुझ को देखा और मुझे ऐसा मालूम हुआ कि मैं अपनी नन्ही फ़लक आरा को देख रहा हूं। इसमें मुझे कुछ देर लग गई और अभी पिंजड़ा मेरे हाथ में और चिड़िया पिंजड़े ही में थी कि मैं ने देखा अगला पिंजड़ा मेरी तरफ़ आ रहा है। मैं ने बौखला कर फ़लक आरा को ऐसे बेतुक पन से क़फ़स में डाला कि वह मेरे हाथ से छूटते छूटते बची। ख़ैरियत गुजरी कि किसी ने देखा नहीं और फ़लक आरा क़फ़स में पहुंच कर एक झुले पर बैठ गई।

इसके बाद सोलह सतरह पिंजड़े और आए हर मैना को क़फ़स में डालने से पहले मैं एक नज़र फ़लक आरा पर ज़रूर डाल लेता था। वह इसी तरह झूले पर बैठी हुई थी और मुझे देख रही थी। उस वक़्त मुझे यह महसूस करके ताज्जुब हुआ कि अगरचे मैं इसमें और दूसरी मैनाओं में कोई फ़र्क़ नहीं बता सकता लेकिन उसे सब मैनाओं से अलग पहचान सकता हूं।

चालीसों मैनाएं क्रफ़स में पहुंच चुकी थीं और इधर से उधर उड़ती फिर रही थीं। कुछ देर बाद फ़लक आरा ने भी अपने झूले पर से हलकी सी उड़ान भरी और क़फ़स के पूरबी हिस्से में एक टहनी पर जा बैठी। बादशाह धीमी आवाज में दारोग़ा को कुछ समझा रहे थे कि रमनों की तरफ़ से एक शेर की दहाड़ सुनाई दी। बादशाह ने बोलते बोलते रुक कर पूछा:

''यह मोहनी किस पर बिगड़ी रही हैं नबी बख्श ?''

दारोग़ा चुपके से मुस्कुराए और सर जरा नीचे करके आंखें मटकाते हुए बोले:

^{&#}x27;'ग़ुलाम जान की अमान पावे तो अर्ज करे।''

^{&#}x27;'बताओ बताओ.''

^{&#}x27;'वह सुलताने आलम ही पर बिगड़ रही हैं।''

[&]quot;अरे अरे, हम ने क्या किया है भई?" बादशाह ने पूछा, फिर उनका चेहरा खुशी से दमकने लगा। "अच्छा अच्छा, हम समझ गए। आज हम उनसे मिले बग़ैर सीघे इधर जो चले आए, यही बात है न?"

چرنی بخش کی طرف، اور بولے "و چاوہمی، ان کومنا کیں۔"

سب لوگ اور ان کے بیچے واروغہ بھی چن کے باہر نکل گئے۔ اتی دیر بیل ملازموں نے دانے کی تعلیاں اور پائی کے بڑے بدھنے لاکر تنس کے دردازے کے پاس رکھ دیے تھے۔ بیس نے دردازہ ذراسا کھولا اور ترجیا ہو کر قنس میں داخل ہوگیا ایک چھوٹے وروازے سے ہاتھ برجھا برجھا کر تعلیاں اور بدھنے اٹھالیے اورسب برتنوں میں دانہ پائی بجر دیا۔ بینا کیں اڑتی ہوئی ایک بہنی سے دوسری ٹبنی پر بیٹے ربی تعیں۔ سب ای طرح ایک می نظر آرہی تعیں۔ لیکن فلک آراکو میں نے چر پہچان لیا۔ اور اس کے پاس کھڑا کھ دریاتک اسے چکارتارہا۔

" من مسمس فلك بينا كبول كا" من في اس جيك سه بتايا-

قنس سے باہر نکل کر میں طاؤس جن کی حد بندی کرنے والی بغیوں میں پہنچاجنمیں جالی سے تعمیر کر اور جالی می کی جنتیں سائی گئی تعمیں۔ان میں طرح طرح کی ہزاروں چڑیاں چیک ری تعمیں۔ بہاں بھی میں نے وانے پانی کے برتن بحرے، زمین کی صفائی کی، چیوٹی جہاڑیوں پر یانی کے جیمیئے دیے اور پھر طاؤس جن میں جلاآیا۔

داروغہ رمنوں سے والی آگئے تھے اور قنس کے پاس کھڑے شاید میرابی انظار کر رہے تھے۔

" چلوبھائی، بیمبم بھی سر ہوئی، انھوں نے کہا اور تفس کو چاروں طرف سے محوم چر کر دیکھنے مجے۔

" ہارے شہر میں ہی کیا کیا کار مگر پڑاہے۔ داروف صاحب" میں نے کہا لیکن داروف اس کی سرد مکھنے میں محوتھے۔

"اتنا ہم کہیں گے۔" آخروہ بولے،"حضور عالم نے اسے دل لگا کر بنوایا ہے۔"

طاؤس چن میں میراکام کی مشکل نمیں تھا۔ تعور کے دنوں میں مجھ کو ہر بات کا ڈھب آھی۔ میں جلدی کا مختم کرلیتا اور جتناوقت بچنا وہ تنس کی مزید صفائی سخرائی میں لگا دیتا تھا۔ میں کہ جہد کی تھیں۔ اور جھے دیکھتے ہی دانے کے فالی برتوں

दारोग़ा सीने पर दोनों हाथ रख कर झुक गए और बोले:

"सुलताने आलम से ज़्यादा उन की अदाएं कौन पहचानेगा। इसी पर नाज दिखाती हैं। फिर बीमारी से उठी हैं, इससे और खनखनी हो रही हैं। गुलाम की तो बात ही नहीं सुनतीं।"

"सच कहते हो!" बादशाह ने कहा, मुसाहिबों की तरफ़ देखा, फिर हुज़ूरे आलम की तरफ़, फिर नबी बख़्श की तरफ़, और बोले "तो चलो भई, उनको मनाएं"

सब लोग और उनके पीछे पीछे दारोग़ा भी चमन से बाहर निकल गये। इतनी देर में मुलाजिमों ने दाने की थैलियां और पानी के बड़े बधने लाकर क़फ़स के दरवाज़े के पास रख दिये थे। मैंने दरवाज़ा ज़रा सा खोला और तिरछा हो कर क़फ़स में दाख़िल हो गया। एक छोटे दरवाज़े से हाथ बढ़ा बढ़ा कर थैलियां और बधने उठा लिये और सब बर्तनों में दाना पानी भर दिया। मैनाएं उड़ती हुईं एक टहनी से दूसरी टहनी पर बैठ रही थीं। सब इसी तरह एक सी नज़र आ रही थीं, लेकिन फ़लक आरा को मैंने फिर पहचान लिया और उसके पास खड़ा कुछ देर तक उसे चुमकारता रहा।

''मैं तुम्हें फ़लक मैना कहूंगा,'' मैंने उसे चुपके से बताया।

कफ़स से बाहर निकल कर मैं ताऊस चमन की हदबंदी करने वाली बग़ियों में पहुंचा, जिन्हें जाली से घेर कर ऊपर जाली ही की छतें बनाई गई थीं। उन में तरह तरह की हजारों चिड़ियां चहक रही थीं। यहां भी मैंने दाने पानी के बर्तन भरे, ज़मीन की सफाई की, छोटी झाड़ियों पर पानी के छीटें दिये और फिर ताऊस चमन में चला आया।

दारोग़ा रमनों से वापस आ गये थे और क़फ़स के पास खड़े शायद मेरा ही इंतिज़ार कर रहे थे।

''चलो भाई, यह मुहिम भी सर हुई,'' उन्होंने कहा और क़फ़स को चारों तरफ़ से घूम फिर कर देखने लगे।

''हमारे शहर में भी कैसा कैसा कारीगर पड़ा है, दारोग़ा साहब,'' मैंने कहा। लेकिन दारोग़ा क़फ़स की सैर देखने में महव थे।

''इतना हम कहेंगे,'' आख़िर वह बोले ''हुज़ूरे आलम ने उसे दिल लगाकर

کے پاس بیٹمناشروع کردی تی تھیں۔ فلک مینا کو شایداندازہ ہوگیاتھا کہ اس پر میری فاص توجہ ہے۔ وہ مجھ سے بہت بل گئ تھی۔ مجھے قنس کے درواز سے پر دیکھ کر قریب آتی اور سب میناؤں سے پہلے چپجہاتی تھی۔

ایک دن محلات میں معلوم نہیں کیا تھا کہ طاؤس چن اور ایجادی قنس کی سیر کوکوئی نہیں آیا۔ میں نے اپنا سارا کامخم کرلیا تھا۔ اوراب قفس کو ذرابیجے ہٹ کر دیکھ رہا تھا۔ حوض میں تیرتی ہوئی دو کشتیاں آپس میں مل منی تھیں۔ اور دیکھنے میں اچھی نہیں معلوم ہو ربی تھیں۔ میں ایک بار پھر تف میں واخل ہوا اور کشتیوں کو الگ الگ کر کے وہیں کھڑارہا۔ چیجہاتی ہوئی مینا کیں تغس بھر میں اڑتی پھر رہی تھیں۔ سب کے بوٹے بھرے ہو ے تھے۔اس لیے کسی کی توجہ میری طرف نہیں تھی۔لیکن فلک مینا بار بار میرے قریب آتی، زور، زورسے بولتی، پھر دورکسی اڈے یاجھولے پر بیٹھ جاتی، پھر وہاں سے اڑان بحركر ميرى طرف آتی، بولتی اور دور بھاگ جاتی۔ بالکل اُی طرح میری اپن تھی فلک آراکسی کسی دن مجھ سے کھیل کرتی تھی۔ مجھے بیسوج کر اس پر ترس آیا کہ روز جب میں گھر پہنچا ہوں تو وہ مجھ سے بھاگ کر چھینے کے بچائے دروازے ہی پرملتی ہے۔ اور بوچھتی ہے۔" اباہاری مینا لائے ؟' اور میرے خالی ہاتھ دیکھ کر اداس ہو جاتی ہے۔ اسکا اترابواچرہ میری نگابوں ئے سامنے گھومنے لگا۔ اوا تک میرے دل میں برائی آگئ اور میں نے مچھ اور ہی سوچناشروع كر ديا_قنس ميس جاليس ميناكيسارتي بهرتي بير ان كي صحح صحح كني كرنا آسان نہیں۔ آسان کیا ہے۔ ممکن ہی نہیں، ستاروں کی شکل والے آ کیے ایک ایک کو دس دس كرك دكھاتے ہيں۔ يوں بھي جاليس اور انتاليس ميں فرق عي كون سا ہے۔ ايك مينا کم ہو جائے تو کسی کو پتا بھی نہ چلے گا۔ ای وقت فلک مینا میرے قریب آ کر بولی اور میں نے ہاتھ لیکا کراہے بہت آ ہمتی کے ساتھ پکڑلیا۔ اس کے بروں کوسبلاتا ہوا میں قنس کے ایک کوشے میں آ میااور اڑتی ہوئی مینا وُ ل کو گنے لگ۔ بار بار گننے پر پانھیں چل یایا کہ بینا کی جالیں ہیں۔ یا انتالیس۔ مجمع اطمینان ہوگیا۔ فلک بینا کو میں نے ایک جمو لے بربیفاکر بلکاسا بینگ دیا اور تنس سے باہر نکل آیا۔

اس دن لکسی دروازے سے نکلتے تکتے میں فلک بینا کو گھر لے آنے کا بکا فیصلہ کر

बनवाया है।"

(3)

ताऊस चमन में मेरा काम कुछ मुश्किल नहीं था। थोड़े दिनों में मुझ को हर बात का ढब आ गया। मैं जल्दी काम खत्म कर लेता और जितना बक्कत बचता वह क़फ़स की मज़ीद सफाई सुथराई में लगा देता था। मैनाएं अब मुझ को अच्छी तरह पहचानने लगी थीं और मुझे देखते ही दाने के ख़ाली बर्तनों के पास बैठना शुरू कर देती थीं। फ़लक मैना को शायद अंदाज़ा हो गया था कि उस पर मेरी ख़ास तक्जो है। वह मुझ से बहुत मिल गई थी, मुझे क़फ़स के दरवाज़े पर देख कर क़रीब आती और सब मैनाओं से पहले चहचहाती थी।

एक दिन महल्लात में मालूम नहीं क्या था कि ताऊस चमन और ईजादी क़फ़स की सैर को कोई नहीं आया। मैंने अपना सारा काम ख़त्म कर लिया था और अब क़फ़स को ज़रा पीछे हट कर देख रहा था। हौज में तैरती हुई दो कश्तियां आपस में मिल गई थीं और देखने में अच्छी नहीं मालूम हो रही थीं। मैं एक बार फिर क़फ़स में दाख़िल हुआ और कश्तियों को अलग अलग करके वहीं खड़ा रहा।

चहचहाती हुई मैनाएं क्रफ़स भर में उड़ती फिर रही थीं सब के पोटे भरे हुए थे इस लिये किसी की तक्जो मेरी तरफ़ नहीं थी। लेकिन फ़लक मैना बार बार मेरे क़रीब आती, जोर जोर से बोलती, फिर दूर किसी अड्डे या झूले पर बैठ जाती, फिर वहां से उड़ान भर कर मेरी तरफ़ आती, बोलती और दूर भाग जाती। बिल्कुल इसी तरह मेरी अपनी नन्ही फ़लक आरा किसी किसी दिन मुझ से खेल करती थी, मुझे यह सोच कर उसपर तरस आया कि रोज जब मैं वापस घर पहुंचता हूं तो वह मुझ से भाग कर छुपने के बजाये दरवाजे ही पर मिलती है और पूछती है, "अब्बा हमारी मैना लाए?" और मेरे ख़ाली हाथ देख कर उदास हो जाती है। उसका उतरा हुआ चेहरा मेरी निगाहों के सामने घूमने लगा। अचानक मेरे दिल में बुराई आ गई और मैं ने कुछ और ही सोचना शुरू कर दिया। क्रफ़स में चालीस मैनाएं उड़ती फिरती हैं,। उनकी सही सही गिनती करना आसान नहीं। आसान क्या, मुमिकन ही नहीं, सितारों की शक्ल वाले आईने एक एक को दस दस कर के दिखाते हैं यूं भी चालीस और उन्तालीस में फ़र्क़ ही कौन सा है? एक

چکا تھا۔ اور اے ایک معمولی ساکام سمجھ رہاتھا۔ جس میں مجھ کوشرم یا پشیمانی والی کوئی بات نظر نہیں آری تھی۔ بلکہ شرمندگی تھی۔ تو صرف اپنی فلک آراے کہ میں اسے ون تک خواہ مخواہ اے میناکے لیے تر ساتا رہا۔ اور پچھتاوا تھا تو بس اسکا کہ فلک مینا کو آج بی تفس سے کیوں نہیں نکال لایا۔

چڑیا بازار میں رک کر میں نے تعوڑے مول تول کے بعد ایک ستاسا پنجراخرید لیا۔ پنجرے والے نے پہنے گئتے گئتے ہو چھا۔

" كون سا جنور ہے۔؟"

" بہا ڑی منا"، میں نے کہا اور میراول آستہ سے وحر کا۔

" پہاڑی مینا پالی ہے۔ تو شیدی صاحب پنجرا بھی ویساہی رکھناتھا۔" اس نے کہا" خیر، آپ کی خوشیٰ۔"

میں پنجرالے کرآ کے بڑھ گیا۔ لیکن چند ہی قدم چلاہوں گا کہ ہاتھ پاؤں سنسنا نے اگے اور گلاختک ہوگیا۔ ایسا معلوم ہورہا تھا۔ بھیے کوئی میرے کان میں کہ رہاہوں کالے فال !بادشاہی پرندے کی چوری ؟ رائے بحر مجھ کو یہی آواز سائی دیتی رہی۔ کئی بار ارادہ کیا پنجر اچھیرآؤں پھر خیال آیا فلک آراکوکی طرح خالی پنجر ے سے بہلالوں گا۔ گھر چننچت جمعے خود پرجیرت ہونے گئی۔ کہ میں نے الی خطرناک بات کا ارادہ کیا تھا۔ خوشی بھی بہت ہوری تھی۔ کہ میں نے فلک مینا کوئنس سے نکال نہیں لیا۔

یقین مجھے اب بھی تھا کہ ایک مینا کی چوری پکڑی نہیں جا سکتی تھی۔ پھر بھی معلوم ہو رہا تھا موت کے منع سے نکل آیا ہوں۔

محر پنچا تو فلک آرامیرے ہاتھ میں بنجرا دیکھ کرخوش سے چنج پڑی۔

" ہاری مینا آگئ!"

لیکن جب وہ دوڑتی ہوئی میرے قریب آئی تو پنجر اخالی دیکھ کر پھر اسکا چہرہ اثر گیا اس نے میرے طرف دیکھا اور روہانی ہوگئ۔ پس نے اسے کودیس اٹھا لیا اور کہا۔

" بحقُ آج بنجرا آیا ہے۔،کل مینا بھی آجائے گی۔"

" نہیں!" اس نے کہا، آپ جموث بہت بولتے ہیں مے۔"

मैना कम हो जाये तो किसी को पता भी न चलेगा। उसी वक़्त फ़लक मैना मेरे क़रीब आकर बोली और मैंने हाथ लपका कर उसे बहुत आहिस्तगी के साथ पकड़ लिया। उसके परों को सहलाता हुआ मैं क़फ़स के एक गोशे में आ गया और उड़ती हुई मैनाओं को गिनने लगा। बार बार गिनने पर भी पता नहीं चल पाया कि मैनाएं चालीस हैं या उन्तालीस। मुझे इत्मिनान हो गया। फ़लक मैना को मैंने एक झुले पर बिद्य कर हल्का सा पैंग दिया और क़फ़स से बाहर निकल आया।

उस दिन लख्खी दरवाजे से निकलते निकलते में फ़लक मैना को घर ले आने का पक्का फ़ैसला कर चुका था और उसे एक मामूली सा काम समझ रहा था जिस में मुझ को शर्म या पशेमानी वाली कोई बात नजर नहीं आ रही थी, बल्कि शर्मिंदगी थी तो सिर्फ़ अपनी फ़लक आरा से कि मैं इतने दिन तक ख़्वाह-म-ख़्वााह⁽¹⁾ उसे मैना के लिये तरसाता रहा, और पछतावा था तो बस इसका कि फ़लक मैना को आज ही क़फ़स से क्यों नहीं निकाल लाया।

चिड़िया बाजार में रुक कर मैंने थोड़े मोल तोल के बाद एक सस्ता सा पिंजड़ा खरीद लिया। पिंजड़े वाले ने पैसे गिनते गिनते पूछा:

''कौन सा जनवर है ?''

''पहाड़ी मैना,'' मैंने कहा और मेरा दिल आहिस्ता से धड़का।

"पहाड़ी मैना पाली है तो शैदी साहब पिंजड़ा भी वैसा ही रखना था," उसने कहा "ख़ैर, आप की ख़ुशी।"

मैं पिंजड़ा लेकर आगे बढ़ गया, लेकिन चंद ही क़दम चला हूंगा कि हाथ पाऊं सनसनाने लगे और गला खुश्क हो गया। ऐसा मालूम हो रहा था जैसे कोई मेरे कान में कह रहा हो, "काले खां! बादशाही परिंदे की चोरी?" रास्ते भर मुझ को यही आवाज सुनाई देती रही। कई बार इरादा किया पिंजड़ा फेर आठं, फिर ख़्याल आया फ़लक आरा को किसी तरह ख़ाली पिंजड़े से बहला लूंगा घर पहुंचते पहुंचते मुझे खुद पर हैरत होने लगी कि मैंने ऐसी ख़तरनाक बात का इरादा किया था। ख़ुशी भी बहुत हो रही थी कि मैं ने फ़लक मैना को क़फ़स से निकाल नहीं लिया।

यक्नीन मुझे अब भी था कि एक मैना की चोरी पकड़ी नहीं जा सकती थी <u>फिर भी मालूम हो रहा था मौत के मुंह से निकल आया हूं।</u> 1. यूं ही

" جموت نہیں بیٹی، کل دیکنا،" بیل نے کہا،" تمعاری بیناہم نے لے بھی لی ہے۔"
" کچی ؟" دو چہک کر بولی اور اس کا چرو خوشی سے چیکنے لگا۔" تو کہاں ہے؟"
" ایک بہت بڑے بیٹر سے بیل ہے،" بیل نے کہا،" دو تو ضد کرری تھی۔ کہ ہم آج بی بہن فلک آرا کے پاس جا کیں گے۔ ہم نے کہا بھی آج تو ہم تمعارے لیے پنجرامول لیں گے۔ پر فلک آرا نی پاس جا کیں گے۔ ہم نے کہا بھی آج اس بیل تمعارے کھانے پینے کے لیں گے۔ اس بیل تمعارے کھانے پینے کے بین دکھے گی۔ اس بیل تمعارے کھانے پینے کے برتن دکھے گی۔ تب تم کولے چلیں گے۔

فلک آرای خوشی دیمے والی تقی۔ فورا میری گود سے الزکر اس نے پنجرے کوسینے سے نگالگا کر چومائی وقت اسے خوب اچھی طرح دھویا ہو نجما اس کے اندر کامنی کی پتیوں کا فرش کیا، پکرمٹی کا آب خورہ اور دانے کے لیے سکوری رکھی۔ جھے سے مینا کی ایک ایک ایک بات ہوچھتی رہی۔ اس کی چورٹج کیسی ہے، پرکس رنگ کے بیں، کیا کیا باتیں کرتی ہیں۔ رات کو اے ٹھیک سے نینونیس آئی۔ بار بار جاگ کرمینا کی باتیں کرنے گئی تھی۔

دوسرے دن گر سے لکا تو دورتک اس کی آواز سالی دیتی ری۔ " آج ماری منا آئے گی۔"

راست جر میں بی سوچنا رہا کہ آج جب خانی ہاتھ گھر لوٹوں گا تو فلک آرا ہے کیا

بہاند کروں گا۔ جس میں میناؤں کو دانہ پانی دیتے ہوئے بھی طرح طرح کے بہانے سوچنا

رہا۔ اس دن کام میں میرا دل بیس لگ رہا تھا پھر بھی مغرب تک میں نے سارے کام بخنا

دید اور ایک بار پھر پلٹ کرفنس کے اندر میا۔ جمعے خیال آیا کہ آج میں نے فلک مینا کی
طرف دیکھا تک جیس۔ اس وقت ووقنس کی بچھی جالی کے ایک مچان پر میٹی ہوئی تھی اور
چپ چاپ میری طرف دیکھ رہی تھی۔ میں اس کے قریب میا تو اس نے کردن محمالی اور
دوسری طرف دیکھنے گئی۔ میں نے اسے چکارا۔ اس نے دھیرے سے پر پھڑ پھڑا ہے

دوسری طرف دیکھنے گئی میں نے فنس میں چاروں طرف نظریں ووڑا کیں۔ سب مینا کی اپنی اپنی اپنی

جر جھے دیکھنے گئی میں نے فنس میں چاروں طرف نظریں ووڑا کیں۔ سب مینا کی اپنی اپنی اپنی

قریب جہنیوں میں جھی ہوئی تھیں۔ کل مجھے شاتی مینا کی چدری کے خیال سے جو ڈر لگا تھا وہ
اچا کہ جاتا رہا، فلک آرا کو بہلانے کے لیے جو بہانے سوچ سے جے وہ بھی دماخ سے تکل میے
ادر مینا کی چرری پھرایک معمولی بات معلوم ہونے گئی۔ میں نے ادھر ادھر دیکھا۔ طاؤس جس

घर पहुंचा तो फ़लक आरा मेरे हाथ में पिंजड़ा देख कर खुशी से चीख़ पड़ी: ''हमारी मैना आ गई!''

लेकिन जब वह दौड़ती हुई मेरे क़रीब आई तो पिजड़ा खाली देख कर फिर उसका चेहरा उतर गया। उसने मेरी तरफ़ देखा और रूहांसी हो गई, मैंने उसे गोद में उठा लिया और कहा:

- " भई आज पिंजडा आया है, कल मैना भी आ जाएगी।"
- ''नहीं!'' उसने कहा ''आप झूठ बहुत बोलते हौ गे?''
- "ज़ूठ नहीं बेटी, कल देखना," मैंने कहा "तुम्हारी मैना हमने ले भी ली है।"
- "सच्ची?" वह चहक कर बोली और उसका चेहरा खुशी से चमकने लगा। "तो वह कहां है?"

"एक बहुत बड़े पिंजड़े में है," मैंने कहा "वह तो ज़िद कर रही थी कि हम आज ही बहन फ़लक आरा के पास जाएंगे। हमने कहा भई आज तो हम तुम्हारे लिये पिंजड़ा मोल लेंगे। फिर फ़लक आरा पिंजड़े को धोएगी। सजाएगी, उसमें तुम्हारे खाने पीने के बर्तन रखेगी, तब तुम को ले वलेंगे।"

फ़लक आरा की खुशी देखने वाली थी। फ़ौरन मेरी गोद से उतर कर उसने पिंजड़े को सीने से लगा लगा कर चूमा, उसी वक़्त उसे ख़ूब अच्छी तरह धोया पोछा, उसके अंदर कामनी की पत्तियों का फ़र्श किया, फिर मिट्टी का आबख़ोरा और दाने के लिये सिकोरी रखी, मुझ से मैना की एक एक बात पूछती रही, उसकी चोंच कैसी है, पर किस रंग के हैं, क्या क्या बातें करती हैं। रात को उसे ठीक से नींद नहीं आई। बार बार जाग कर मैना की बातें करने लगी थी।

दूसरे दिन घर से निकला तो दूर तक उसकी आवाज सुनाई देती रही:

''आज हमारी मैना आएगी, आज हमारी मैना आएगी''।

रास्ते भर मैं यही सोचता रहा कि आज जब खाली हाथ घर लौटूंगा तो फ़लक आरा से क्या बहाना करूंगा। चमन में मैनाओं को दाना पानी देते हुए भी तरह तरह के बहाने सोचता रहा। उस दिन काम में मेरा दिल नहीं लग रहा था फिर भी मग़रिब तक मैंने सारे काम निबदा दिये और एक बार फिर पलट कर क़फ़स के अंदर गया। मुझे ख़्याल आया कि आज मैंने फ़लक मैना की तरफ़ देखा तक

میں ساٹا تھا، مالی کام ختم کر کے جاچکے تھے۔ کوئی جھے نہیں دیکے رہا تھا۔ میں نے پھر فلک مینا کو چکارا۔ اس نے پھر دھیرے سے پر پھڑ پھڑا کر میری طرف دیکھا اور میں نے ایک دم سے ہاتھ بڑھا کر اس نے خود کو چھڑانے کے لیے زور کیا لیکن جب میں چکار چکار کر اس کے پروں پر ہاتھ پھیرنے لگا تو آئھیں موند لیں اور بدن ڈھیلا چھوڑ دیا۔ میں کچھ دیر دم سادھے کھڑا رہا، پھراسے اپنے کرتے کی لمی جیب میں ڈالا اور تفس سے باہرنکل آیا۔

کھی دروازے تک کئی جگہ پہرے کے سابی طے لیکن انھیں معلوم تھا کہ میں طاوّس چن میں ماری کی جگہ پہرے کے سابی طاوّس چن میں طاوّس چن میں شام تک کی باری کر رہا ہوں۔ کی نے مجھ سے پچھ نہیں پوچھا اور میں جیب میں ہاتھ ڈالے ڈالے قیصر باغ سے نکل کر گھر کی طرف روانہ ہوگیا۔ جی تو جاہتا تھا پوری رفتار سے دوڑنے لگوں لیکن کی طرح اپنے قدموں کو تھا ہے ہوئے چلتا رہا۔

گھر پہنچا۔ فلک آرا سو پھی تھی۔ جعراتی کی اماں میرا راستہ دکھے رہی تغییں۔ انھیں کھانا دے کر رخصت کیا۔ مکان کا دروازہ اندر سے بند کر کے بینا کو جیب سے نکالا اور پنجرے کے پاس لے گیا۔ آج فلک آرا نے پنجرے کو ادر بھی جا رکھا تھا۔ تیلیوں کے پخج میں جنگین کپڑے کی کترن باندھ کر بخج میں جنگین کپڑے کی کترن باندھ کر اپنے میں جنڈا بنایا تھا جو پنجرے کے سہارے ٹیڑھا ٹیڑھا کھڑا تھا، پنجرے کے اندر آب خورے میں لبالب پانی بجرا ہوا تھا ٹوکری میں روئی کے فلڑے بھیگ رہے تھے اور پرانی روٹی کی دو تین بتیاں کی بنا کر شاہی مینا کے لیے گاؤ بجکے تیار کے گئے تھے۔ میں نے برانی روٹی کی در تک پنجرے میں اور مینا کو آبت سے بنجرے میں پنجایا اور پنجرا اللّی میں لاکا دیا۔ بینا کچھ در تک پنجرے میں اور میں اور سے ادھرے ادھر چکرکائی رہی، پھر آرام سے ایک جگہ تھے۔ گیں۔

مبح فلک آرا کے ملکھلانے اور بینا کے چپجہانے کی آوازوں سے میری آکھ کھل۔
فلک آرا نے معلوم نہیں کس وقت آگئی کے نیچے مونڈ ھا رکھ کر پنجرا اتار لیا تھا اور اب ای
مونڈ ھے پر پنجرا رکھ، زمین پر گھنے فیکے بار بار پنجرے کو چوشی تھی اور مینا بار بار بول رہی
تھی جھے و کیھتے تی فلک آرائے خبر سائی۔

"ابا، جاری مینا آگی۔"

नहीं। उस वक़्त वह क़फ़स की पश्चिमी जाली के एक मचान पर बैठी हुई थी और चुप चाप मेरी तरफ़ देख रही थी। मैं उसके क़रीब गया तो उसने गर्दन घुमा ली और दूसरी तरफ़ देखने लगी। मैंने उसे चुमकारा। उसने धीरे से पर फड़्फड़ाए और फिर मुझे देखने लगी। मैंने क़फ़स में चारों तरफ़ नज़रें दौड़ाई सब मैनाएं अपनी अपनी जगह साकित बैठी थी। फिर भी उनकी गिनती आसान नहीं थी इस लिये कि उनमें से आधी के क़रीब टहनियों में छूपी हुई थीं। कल मुझे शाही मैना की चोरी के ख्याल से जो डर लगा था वह अचानक जाता रहा, फ़लक आरा को बहलाने के लिये जो बहाने सोचे थे वह भी दिमाग से निकल गये और मैना की चोरी फिर एक मामुली बात मालुम होने लगी मैं ने इधर उधर देखा। ताऊस चमन में सन्नाय था, माली काम खत्म कर के जा चुके थे। कोई मुझे नहीं देख रहा था। मैं ने फिर फ़लक मैना को चुमकारा। उसने फिर धीरे से पर फडफड़ा कर मेरी तरफ़ देखा और मैंने एक दम से हाथ बढ़ा कर उसे पकड़ लिया। उसने खुद को छुडाने के लिये जोर किया लेकिन जब मैं चुमकार चुमकार कर उसके परों पर हाथ फेरने लगा तो आंखें मुंद लीं और बदन ढीला छोड़ दिया। मैं कुछ देर दम साधे खड़ा रहा, फिर उसे अपने कुर्ते की लम्बी जेब में डाला और क़फ़स से बाहर निकल आया।

लक्खी दरवाजे तक कई जगह पहरे के सिपाही मिले लेकिन उन्हें मालूम था कि मैं ताऊस चमन में शाम तक की बारी कर रहा हूं। किसी ने मुझ से कुछ नहीं पूछा और मैं जेब में हाथ डाले डाले कैंसर बाग से निकल कर घर की तरफ़ रवाना हो गया। जी तो चाहता था पूरी रफ़्तार से दौड़ने लगूं लेकिन किसी तरह अपने क़दमों को थामे हुए चलता रहा।

घर पहुंचा। फ़लक आरा सो चुकी थी। जुमेराती की अम्मां मेरा रास्ता देख रहीं थीं। उन्हें खाना देकर रुख़्ता. किया। मकान का दरवाज़ा अंदर से बंद करके मैना को जेब से निकाला और पिंजड़े के पास ले गया। आज फ़लक आरा ने पिंजड़े को और भी सजा रखा था। तीलियों के बीच बीच में चांदनी के फूल लगाए थे, झाड़ू के तिनके में रंगीन कपड़े की कतरन बांध कर अपने ख़्याल में झंडा बनाया था जो पिंजड़े के सहारे टेढ़ा खड़ा था, पिंजड़े के अन्दर आब-ख़ोरे⁽¹⁾ में लबा लब पानी भरा हुआ था, सिकोरी में रोटी के टुकड़े भीग रहे थे और पुरानी 1. मिट्टी के प्याले (सिकोरा)

وریک وہ مجھے بناتی ربی کہ مینا کیا کہدری ہے۔ میں نے بھی پنجرے کے پاس بیٹے کر مینا سے وہ تین باتیں کیں۔لیکن اس نے اس طرح میری طرف دیکھا گویا جھے پیچانتی بی نیس۔اتنے میں فلک آرام نے پوچھا:

"ابا، اس كانام كيا بي؟"

"فلك آرا" ميرے منه سے فكا، كمرش ركا اور بولا" فلك آرا بي، اس كا نام مينا ..."

"واو مينا توبيخود ب

"ای لیے تو اس کا نام مینا ہے۔"

"توميناتوب كانام بوتاب-"

"ای لیے اس کا بھی نام مینا ہے۔"

اس طرح میں اس کے چھوٹے سے وہاغ کو الجھاتا رہا۔ اصل میں خود میرا دہاغ الجھا ہواتھا۔

کی دن تک یم درا ہوا طاوس چن پہنچا اور ڈرا ہوا دہاں سے دالی آتا۔ ہر وقت چونکا رہتا۔ قیمر باغ میں کوئی جمعے ذرا خور سے دیکھا تو بی جاہتا ہماگ کمراہوں۔
کمر پر دیکھا کہ فلک آرا بینا کا بنجرا سائے رکھے اس سے دنیا جہان کی باتیں کردہی ہے۔
جمعے دیکھتے ہی وہ بتانا شروع کر دیتی کہ آج مینا نے اس سے کیا کیا باتیں کی ہیں۔ دھیرے دھیرے میری وحشت کم ہونے گی، اور ایک دن جب فلک آرامینا کی باتیں بتا رہی تھی، دھیرے میری وحشت کم ہونے گی، اور ایک دن جب فلک آرامینا کی باتیں بتا رہی تھی،

"مرتمماری مینا ہم سے تو بولتی نہیں۔"

" آپ بھی او اس سے نہیں بولتے، وہ شکایت کرری تھی۔"

"اجما؟ كيا كبدرى تقى بعلا؟"

"كهدرى تقى تحمارے الائم كوجائة إن بم كونيس جائے۔"

"مراس کی بہن تواہے بہت جاہتی ہے۔"

"کون بین؟"

रोटी की दो तीन बत्तियां सी बनाकर शाही मैंना के लिए गाओ तिकए तैयार किए गए थे, मैं ने मैंना को आहिस्ता से पिंजड़े में पहुंचाया और पिंजड़ा अलगंनी में लटका दिया, मैंना कुछ देर तक पिंजड़े में इधर से उधर चक्कर काटती रही, फिर आराम से एक जगह ठहर गई,

सुबह फ़लक आरा के खिल-खिलाने और मैंना के चहचहाने की आवाजों से मेरी आंख खुली। फ़लक आरा ने मालूम नहीं किस वक्त अलगंनी के नीचें मूंढा रख कर पिंजड़ा उतार लिया था और अब इसी मूंढे पर पिंजड़ा रखे जमीन पर घुटने टेके बार बार पिंजड़े को चूमती थी, और मैंना बार बार बोल रही थी। मुझे, देखते ही फ़लक आरा ने ख़बर सुनाई:

''अब्बा हमारी मैना आ गई।''

देर तक वह मुझे बताती रही कि मैना क्या कहरती है। मैं ने भी पिंजड़े के पास बैठकर मैंना से दो तीन बार्ते की, लेकिन उसने इस तरह मेरी तरफ़ देखा गोया मुझे पहचानती ही नहीं। इतने में फ़लक आरा ने पूछा:

- ''अब्बा, इसका नाम क्या है ?''
- ''फ़लक आरा'', नेरे मुंह से निकला, फिर मैं रुका और बोला, ''फ़लक आरा बेटी, इसका नाम मैना है।''
 - ''वाह मैना तो यह खुद है।''
 - ''इसी लिये तो इसका नाम मैना है।''
 - ''तो मैना तो सब का नाम होता है।''
 - ''इसी लिये इसका भी नाम मैना है।''

इस तरह मैं उसके छोटे से दिमाग़ को उलझाता रहा। असल में खुद मेरा दिमाग़ उलझा हुआ था।

कई दिन तक मैं डरता हुआ ताऊस चमन में पहुंच्ता और डरा हुआ वहां से वापस आता। हर वक्त चौंका रहता। क़ैसर बाग़ में कोई मुझे जरा गौर से देखता तो जी चाहता कि भाग खड़ा होऊं। घर पर देखता कि फ़लक आरा मैना का पिंजड़ा सामने रखे उससे दुनिया जहान की बातें कर रही है। मुझे देखते ही वह बताना शुरू कर देती कि आज मैना ने उससे क्या क्या बातें की हैं। धीरे-धीरे मेरी वहशत (1) कम होने लगी, और एक दिन जब फ़लक आरा मैना की बातें बता रही

^{1.} डर

"فلك آراشنرادي"

اس پر وہ اس طرح بنی کہ میرا سارا ڈرختم ہوگیا اور دوسرے دن میں بے دھڑک طاؤس چمن میں داخل ہوا۔ شام کے وقت میں نے کی مرتبہ بیناؤ ل کو گنا گرمیح صحح نہیں گن سکا۔صفائی کے بہانے سے قفس کے سارے آئیوں کو اتارلیا، پھر بھی گنتی غلط ہوگی۔ اس کے بعد میں روز کمی نہ کمی حیلے سے دو ایک مالیوں کو طاؤس چمن میں بلاتا اور ان سے بیناؤں کی گنتی کراتا۔ ان کی بتائی ہوئی تعدادیں ایک ہوتیں کہ جمھے بنی آ جاتی تھی۔

مالیوں سے میناؤ ل کو گنوانے میں مجھے اتنا ہی مزہ لگا جتنا فلک آراکو اپنی مینا سے باتیں کرنے میں آتا ہوگا۔ اور بیر میرا روز کا معمول ہو چلاتھا کہ ایک دن بادشاہ پھر طاؤس چن میں تشریف لائے۔

ایجادی تفس کے پاس رک کر وہ درباریو ن اور داروغہ نی بخش سے باتیس کرنے گئے۔ ڈرنے کی کوئی وجہ نہیں تھی لیکن میرا دل دھڑ دھڑ کر رہا تھا۔ بادشاہ نی بخش کو رہنے کے ہاتھیوں کے بارے میں کچھ بتا رہے تھے۔ جج بچ میں وہ ایک نظر قفس پر بھی ڈال لیتے اور اس کی میناؤ ن کو ادھر سے ادھر اڑتے دیکھتے تھے۔ ایک بار انھوں نے زیادہ دیر تک میناؤں کو دیکھا، پھر نی بخش سے یو چھا۔

''ان کی تعلیم شروع کرادی؟''

"عالم پناه" داروغہ ہاتھ جوڑ کر ہوئے،" میرداؤدروز فجر کے وقت آکر سکھاتے ہیں۔"
اب بادشاہ نے اپنے مصاحبوں سے قنس کی باتیں شروع کردیں۔ اس کے بنانے میں کاریگروں نے جو جو ضعتیں دکھائی تھیں ان کا ذکر ہوا۔ پچھ کاریگروں کے نام بھی لیے علے جن میں بعض لکھنؤ کے مشہور شار تھے۔ میری گھبراہٹ اب دو رہو چکی تھی میں سوچ رہا تھا ہمارے بادشاہ اپنے نوکروں سے بھی کیے التفات کے ساتھ بات کرتے ہیں۔ اور ان کی آواز کس قدر زم ہے۔

ای وقت مجھے بادشاہ کی نرم آواز سنائی دی۔

" بھی جی بخش، آج فلک آرانہیں دکھائی دے رہی ہیں۔"

ایک دم سے جیے کسی نے میرے بدن سے سارا خون مینے لیا۔ داروغہ نے کہا۔

थी मैंने कहा:

- "मगर तुम्हारी मैना हम से तो बोलती नहीं।"
- "आप भी तो उससे नहीं बोलते, वह शिकायत कर रही थी।"
- ''अच्छा? क्या कह रही थी भला?''
- ''कह रही थी तुम्हारे अब्बा तुम को चाहते हैं, हम को नहीं चाहते।''
- ''मगर उसकी बहन तो उसको बहुत चाहती है।''
- ''कौन बहन ?"
- "फ़लक आरा शहजादी।"

इस पर वह इस तरह हंसी कि मेरा सारा डर ख़त्म हो गया और दूसरे दिन मैं बेधड़क ताऊस चमन में दाख़िल हुआ। शाम के वक़्त मैंने कई मर्तबा मैनाओं को गिना, मगर सही सही नहीं गिन सका, सफ़ाई के बहाने से क़फ़स के सारे आईनों को उतार लिया, फिर गिना, फिर भी गिनती ग़लत हो गई। उसके बाद मैं रोज किसी न किसी हीले से दो एक मालियों को ताऊस चमन में बुलाता और उन से मैनाओं की गिनती कराता। उनकी बताई हुई तादाद ऐसी होती कि मुझे हंसी आ जाती थी।

मालियों से मैनाओं को गिनाने में मुझे इतना ही मजा लगा जितना फ़लक आरा को अपनी मैना से बार्ते करने में आता होगा। और यह मेरा रोज का मामूल हो चला था कि एक दिन बादशाह फिर ताऊस चमन में तशरीफ़ लाये।

ईजादी क्रफ़स के पास रुक कर वह दरबारियों और दारोग़ा नबी बख़्श से बातें करने लगे। डरने की कोई वजह नहीं थी लेकिन मेरा दिल धड़ धड़ कर रहा था। बादशाह नबी बख़्श को रमने के हाथियों के बारे में कुछ बता रहे थे। बीच बीच में वह एक नज़र क़फ़स पर भी डाल लेते और उस की मैनाओं को इधर से उधर उड़ते देखते थे। एक बार उन्होंने ज़्यादा देर तक मैनाओं को देखा, फिर नबी बख्श से पुछा:

- ''इन को तालीम शुरू करा दी ?''
- "आलम पनाह," दारोग़ा हाथ जोड़ कर बोले "मीर दाऊद रोज फजर के बक्त आकर सिखाते हैं।"

अब बादशाह ने अपने मुसाहिबों से क़फ़स की बातें शुरू कर दीं, उसके

' ''جہال پناہ، کہیں شہنیوں میں جیپ گئی ہیں۔ ابھی تو سارے میں ارتی پھر رہی تھیں۔'' بادشاہ دھیرے سے بنے اور بولے۔

" بہم سے شرماتو نہیں رہی ہیں؟ اور انھیں و کیمور حیادار دلہن کو، کیسی چہلیں کر رہی ہیں، حیادار دلہن کو، کیسی چہلیں کر رہی ہیں، حیادار دلہن ہی تممارے لیجن رہے تو ہم تممارا نام بدل کرشوخ ادا رکھ دیں ہے۔ "
سب لوگو ں نے سر جھکا کر منہ پر رومال رکھ لیے اور بے آواز ہننے گئے۔ کوئی اور
وقت ہوتا تو میں بھی بادشاہ کو اس طرح مزے مزے کی باتیں کرتے دکھے کر نہال ہوجاتا
اور اپنے تمام جاننے والوں کے سامنے ان کا ایک ایک لفظ دہراتا، لیکن اس دفت تو میرے
کانوں میں ایک ہی آواز گوئے رہی تھی۔ " بھی نی بخش، آج فلک آرانہیں دکھائی دے
رہی ہیں۔ "

یادشاہ اب پھر ہاتھیوں کی ہاتیں کر رہے تھے اور بش قفس سے پھے ہٹ کر کھڑا ہوا تھا۔ بادشاہ کی بات س کر پہلے تو جھے ایسا محسوس ہوا تھا کہ بیں اچا تک سکڑ کر بالشت بھر کارہ ممیا ہوں، لیکن اب یہ معلوم ہورہا تھا کہ میرا بدن پھیل کر اتنا پڑا ہوا جارہا ہے کہ بیل کسی کی بھی نظروں سے خود کو چھپا نہیں پاؤں گا۔ بیس مضیاں بھینی جھنے کرسکڑنے کی کوشش کی بھی نظروں سے خود کو چھپا نہیں پاؤں گا۔ بیس مضیاں بھینی جھنے کرسکڑنے کی کوشش کر رہا تھا۔ اس کش کش بیس جھے جا بھی نہیں چلا کہ بادشاہ کب واپس مے۔ جب بیس چونکا تو طاؤس چن بیس ساٹا تھا۔ صرف قض کے اندر اڑتی ہوئی بیناؤں کے پرو س کی آوازیں آری تھیں۔

میرا بس نہیں تھا کہ اہمی اڑ کر گھر پہنے جاؤں اور شاہی مینا کو لاکر قنس میں ڈال دول۔۔

مغرب کے دقت تک کمی طرح کام ختم کر کے گھر دالیں ہوا۔ رائے بجر تو ای فکر شی رہا کہ بینا کوکس طرح چیکے سے قفس میں پہنچا دوں۔ لیکن جب گھر پہنچا اور فلک آرانے ردز کی طرح چیک چیک کر بینا کا دن بجر کا حال سانا شروع کیا تو جھے یہ فکر بھی لگ گئی کہ بینا کو تولے جاؤں گمر فلک آرا ہے کیا کہوں گا۔ اس رائ بہت دیر تک جاگا اور کروٹیس بدان رہا۔

دن چ صے سو کر اٹھا تو خیال آیا کہ کل سے طاؤس چن میں میری باری مج کی ہو

बनाने में कारीगरों ने जो जो सिन्अर्ते दिखाई थीं उनका जिक्र हुआ। कुछ कारीगरों के नाम भी लिये गये जिन में बाज लखनऊ के मशहूर सुनार थे। मेरी घबराहट अब दूर हो चूकी थी, मैं सोच रहा था हमारे बादशाह अपने नौकरों से भी कैसे इल्तफ़ात⁽¹⁾ के साथ बातें करते हैं और उनकी आवाज किस क़द्र नर्म है।

उसी वक़्त मुझे बादशाह की नर्म आवाज सुनाई दी:

''भई नबी बख्श, आज फ़लक आरा नहीं दिखाई दे रही हैं।''

एक दम से जैसे किसी ने मेरे बदन से सारा खूत खींच लिया। दारोग़ा ने कहा:

''जहां पनाह, कहीं टहनियों में छुप गई हैं। अभी तो सारे में उड़ती फिर रही थीं,''बादशाह धीरे से हंसे और बोले ?:

"हम से शरमा तो नहीं रही हैं ? और उन्हें देखो, हयादार दुल्हन को कैसी चुहलें कर रही हैं, हयादार दुल्हन, यही तुम्हारे लक्षण रहे तो हम तुम्हारा नाम बदल कर, शोखअदा, रख देंगे।"

सब लोगों ने सर झुका कर मुंह पर रूमाल रख लिये और बेआवाज हंसने लगे। कोई और वक़्त होता तो मैं भी बादशाह को इस तरह मजे मजे की बातें करते देख कर निहाल हो जाता और अपने तमाम जानने वालों के सामने उनका एक एक लफ़्ज दुहराता, लेकिन उस वक़्त तो मेरे कानों में एक ही आवाज गूंज रही थी, "भई नबी बख्श, आज फ़लक आरा नहीं दिखाई दे रही हैं।"

बादशाह अब फिर हाथियों की बातें कर रहे थे और मैं कफ़स से कुछ हट कर खड़ा हुआ था। बादशाह की बात सुन कर पहले तो मुझे ऐसा महसूस हुआ था कि मैं अचानक सुकड़ कर बालिश्त भर का रह गया हूं, लेकिन अब यह मालूम हो रहा था कि मेरा बदन फैल कर इतना बड़ा हुआ जा रहा है कि मैं किसी की भी नज़रों से खुद को खुपा नहीं पाऊंगा। मैं मुट्टियां भींच भींच कर सुकड़ने की कोशिश कर रहा था। इस कशमकश में मुझे पता भी नहीं चला कि बादशाह कब वापस गये। जब मैं चौंका तो ताऊस चमन में सन्नाटा था, सिर्फ़ क़फ़स के अंदर उड़ती हुई मैनाओं के परों की आवाजों आ रही थीं।

मेरा बस नहीं था कि अभी उड़ कर घर पहुंच जाऊं और शाही मैना को लाकर क़फ़स में डाल दूं। मग्रीरब के वक़्त तक किसी तरह काम ख़त्म करके घर 1. लगाव

جائے گی۔ گرایک ہفتے تک مینا کونفس میں پہنچانا آسان نہ ہوگا۔ جو پکھ کرنا ہے آج بی کرنا ہے۔ فلک آرا اس وقت بھی مینا ہے کمیل رہی تھی۔ دونو س میں جدائی ڈال دینے کا خیال مجھے تکلیف دے رہا تھا لیکن ای وقت ایک تدہیر میرے دماغ میں آگئے۔ میں نے منجرے کے پاس بیٹھ کر مینا کوخورے دیکھا اور فلک آرا سے کہا۔

"بني، ية مماري ميناكي ألكميس كيسي موري جي؟"

" فيك توين " فلك آران يناكى آئليس ديمية بوك كها

ود کہیں بھی نہیں تھیک جیں ۔ میلی میلی تو ہورہی جیں، اور دیکھو کنارے کنارے زردی

ممی ہے۔افوہ اسے بھی برقان ہوگیا ہے۔"

"ارقان كيا؟" فلك آرائے تحبراكر يوجها۔

"بہت بری بیاری ہوتی ہے۔ بادشاہ کے باغ کی گنتی مینا کیں اس میں مرچکی ہیں۔" فلک آرا اور بھی کمبرا کئی، بولی:

" تو مکیم صاحب سے دوالے آؤ۔"

'' عکیم صاحب چریوں کی دوائیں تعوزی دیتے ہیں،'' میں نے کہا، اسے تو نصیر الدین حیدر بادشاہ کے انجرین اسپتال میں بحرتی کرانا ہوگا۔ شاید فی بی جائے۔ اس کی جالت تو بہت خراب ہے، پھر بھی شاید..... دیکھو کہیں راستے ہی میں ندمرجائے۔''

غرض میں نے بھولی بھالی پکی کو اتنا وہلایا کہ وہ رو کر کہنے گی:

"الله! ابا اسے جلدی کے کر جاؤ۔"

"ابحی تو استال بند ہوگا۔" میں نے اسے بتایا" جب کام پر جا کیں کے تو اسے لیتے جا کیں ہے۔"

جانے كا وقت آيا تو من نے مناكو بنجرے سے تكالا فلك آرا يولى:

"أبا فجرے على من في عادً"

"وہاں چیاں پخروں ش نیس رکی جاتیں۔ان کے لیے پورا مکان منا ہوا ہے۔تم پنجرا صاف کر کے رکور جب یہ ایڈال سے اچی ہو کرآئے گی تو مزے سے اپنے پنجرے میں رہے گی۔"

वापस हुआ, रास्ते भर तो इसी फ़िक्र में रहा कि मैना को किस तरह चुपके से क़फ़स में पहुंचा दूं। लेकिन जब घर पहुंचा और फ़लक आरा ने रोज की तरह चहक चहक कर मैना का दिन भर का हाल सुनाना शुरू किया तो मुझे यह फ़िक्र भी लग गई कि मैना को तो ले जाऊं मगर फ़लक आरा से क्या कहूंगा। उस रात बहुत देर तक जागता और करवटें बदलता रहा।

दिन चढ़े सो कर उठा तो ख़्याल आया कि कल से ताउनस चमन में मेरी बारी सुबह की हो जायेगी। फिर एक हफ़्ते तक मैना को क़फ़स में पहुंचाना आसान ना होगा, जो कुछ करना है आज ही करना है। फ़लक आरा उस वक़्त भी मैना से खेल रही थी। दोनों में जुदाई डाल देने का ख़्याल मुझे तकलीफ़ दे रहा था लेकिन उसी वक़्त एक तदबीर मेरे दिमाग़ में आ गई। मैंने पिंजड़े के पास बैठ कर मैना को ग़ौर से देखा, और फ़लक आरा से कहा:

- ''बेटी, यह तुम्हारी मैना की आंखें कैसी हो रही हैं ?''
- ''ठीक तो है,'' फलक आरा ने मैना की आंखें देखते हुए कहा।
- ''कहीं भी नहीं ठीक हैं। मैली मैली तो हो रही है, और देखो किनारे किनारे जर्दी भी है, अफ़्फ़ोह इसे भी यरक़ान⁽¹⁾ हो गया है।''
 - ''अरकान क्या ?'' फ़लक आरा ने घबरा कर पूछा।
- "बहुत बुरी बीमारी होती है। बादशाह के बाग की कितनी मैनाएं इसमें मर चुकी हैं"

फ़लक आरा और भी घबरा गई, बोली:

- ''तो हकीम साहब से दवा ले आओ।''
- ''हकीम साहब चिड़ियों की दवाएं थोड़ी देते हैं।'' मैंने कहा ''इसे तो नसीरुद्दीन हैदर बादशाह के अंग्रेजी अस्पताल में भरती कराना होगा। शायद बच ही जाये। इसकी हालत तो बहुत ख़राब है, फिर भी शायद …… देखो कहीं रास्ते ही में न मर जाये।''

ग़र्ज़ मैंने भोली भाली बच्ची को इतना दहलाया कि वह रो कर कहने लगी:

- ''अल्लाह अब्बा इसे जल्दी लेकर जाओ।''
- ''अभी तो अस्पताल बंद होगा,'' मैंने उसे बताया, ''जब काम पर जायेंगे तो इसे लेते जायेंगे।''
- 1. पीलिया

فلک آرانے مینا کومیرے ہاتھ سے لیا۔ دیر تک اسے پیار کرتی رہی۔ پھر بولی: ''ابا، اس برکوئی دعا پھونک دو۔''

"رائے میں پھوکک ویں گے" میں نے کہا "لاؤ دیر ہو رہی ہے۔ اسپتال بند ہوجائے گا۔"

مینا کو اس کے ہاتھ سے لے کر میں نے کرتے کی جیب میں ڈال لیا اور جلدی سے دروازے کا ایک پٹ دروازے کا ایک پٹ کیڑے کھڑی ہوئی مجھے جاتے و کھر رہی ہے۔ لیکن میں نے چھے مؤکر نہیں دیکھا۔

قسمت نے ساتھ دیا اور طاؤس چن میں داخل ہوتے ہی موقع مل حمیا۔ مالیوں میں سے کوئی میری طرف متوجہ نہیں تھا۔ میں تفس کے اندر آ حمیا مالی اپنے اپنے کام میں گئے ہوئے سے۔ میں نے ایک بار زور سے کھانس کر گلا صاف کیا پھر بھی کمی نے میری طرف نہیں دیکھا۔ اب قفس کے ایک گنارے پر جاکر میں نے فلک مینا کو جیب سے نکالا اور بلکے سے اچھال دیا۔ اس نے پر پھٹ پھٹا کرخود کو ہوا میں نکایا، پھر ایک جھوٹے پر بھٹے تی، بھان سے اڑی ایک مچان پر پیچی، مچان سے نیچ خوط مارا اور حوض کے کنارے آ بینی وہاں سے اڑی ایک مینا کر مینا کی اس کے پاس آ بیٹھتیں اور اس طرح چہجا تیں جسے جہاں بھی وہ بیٹھتی دوسری کئی مینا کیں اس کے پاس آ بیٹھتیں اور اس طرح چہجا تیں جیسے پر چھ رہی ہوں، بہن اسنے دن، کہاں رہیں۔

جس دن طاؤس چن میں مینائیں آئی ہیں اس کے بعد ہے آج پہلا دن تھا کہ میرے دل پرکوئی بوجے نہیں تھا۔ نخی فلک آرا کو بہلانے کے لیے بہت ی باتیں میں نے رائے ہی سوچ لی تھیں اور مجھے یقین تھا کہ کئی دن وہ ای میں خوش رہے گی کہ اس کی مینا اسپتال میں اچھی ہو رہی ہے بھر اسے بعول بھال جائے گی۔ آج میں نے تغش کی ساری میناؤں کوغور ہے دیکھا اور مجھے بھی ان میں کچھ کچھ فرق نظر آیا، اورفلک مینا کو تو میں ہزاروں میناؤں میں بہیان سکتا تھا۔ اس وقت وہ سب سے الگ تھلگ ایک بہنی پر میٹھی تھی اور نہی دھرے دھرے دھررے دھررے دیکھارا۔ چپ

जाने का वक्षत आया तो मैंने मैंना को पिंजड़े से निकाला। फ़लक आरा बोली:

''अब्बा, पिंजड़े ही में ले जाओ।''

"वहां चिड़ियां पिंजड़ों में नहीं रखी जातीं। उनके लिये पूरा मकान बना हुआ है। तुम पिंजड़ा साफ कर के रखो जब यह अस्पताल से अच्छी हो कर आयेगी तो मज़े से अपने पिंजड़े में रहेगी।"

फ़लक आरा ने मैना को मेरे हाथ से ले लिया देर तक उसे प्यार करती रही, फिर बोली:

''अब्बा इस पर कोई दुआ फूंक दो।''

"रास्ते में फूंक देंगे," मैं ने कहा "लाओ देर हो रही है। अस्पताल बंद हो जायेगा।"

मैना को उसके हाथ से लेकर मैंने कुर्ते की जेब में डाल लिया और जल्दी से दरवाजे के बाहर निकल आया जानता था कि फ़लक आरा हर रोज की तरह दरवाजे का एक पट पकड़े खड़ी हुई मुझे जाते देख रही है। लेकिन मैंने पीछे मुझ कर नहीं देखा

**

किस्मत ने साथ दिया और ताऊस चमन में दाख़िल होते ही मौक़ा मिल गया। मालियों में से कोई मेरी तरफ़ मुतबज्जह⁽¹⁾ नहीं था। मैं क़फ़स के अंदर आ गया माली अपने अपने काम में लगे हुए थे। मैंने एक बार जोर से खांसकर गला साफ किया फिर भी किसी ने मेरी तरफ़ नहीं देखा। अब क़फ़स के एक किनारे पर जाकर मैं ने फ़लक मैना को जेब से निकाला और हल्के से उछाल दिया। उस ने पर फट फटा कर खुद को हवा में टिकाया, फिर एक झूले पर बैठ गई, वहां से उड़ी एक मचान पर पहुंची, मचान से नीचे ग़ोता मारा और हौज़ के किनारे आ बैठी जहां भी वह बैठती दूसरी कई मैनाऐं उस के पास आ बैठतीं और इस तरह चहचहातीं जैसे पूछ रही हों, बहन इतने दिन, कहां रहीं?

जिस दिन ताऊस चमन में मैनाऐं आयीं हैं उसके बाद से आज पहला दिन था कि मेरे दिल पर कोई बोझ नहीं था। नन्हीं फ़लक आरा को बहलाने के लिए बहुत सी बातें मैं ने रास्ते ही में सोच ली थीं और मुझे यक़ीन था कि कई दिन वह 1. ध्यान देना

چاپ ميري طرف د يھنے گل۔

''فلک آرا یاد آری ہے۔'' میں نے اس سے بوچھا۔ وہ ای طرح میری طرف دیکھتی رہی۔ میں نے کہا:

" ہم سے ناراض تو نہیں ہو؟"

ا جا تک جھے خیال آیا کہ میں بالکل بادشاہ کی طرح بول رہا ہوں۔ میں آپ بی آپ ڈرگیا اور جلدی جلدی قنس کا کام ختم کر کے باہر نکل آیا۔

(4)

گر آگر، جیسا میرا خیال تھا، جھے فلک آرا کو بہلانے میں کوئی مشکل نہیں ہوئی۔ میں نے خوب مزے لے لے کراسے بتایا کہ کس طرح اس کی بینا نے کروی دواپینے سے انکار کر دیا اور اس کے لیے میٹھی میٹھی دوا بنوائی گئی۔

" اور بھیا جب اسے مونگ کی مجھڑی کھانے کو دی گئ، " میں نے بتایا" تو اس نے کہا ہم مونگ کی مجھڑی نہیں کھاتے ، تو ڈاکٹر نے پوچھا پھر کیا کھاتی ہو۔ "

اس نے کہا ہوگا ہم تو دود ه جليبي كھاتے ہيں' فلك آرا ج ميں بول بڑى۔

" ہاں "۔ میں نے کہا، ڈاکٹر کی سمجھ میں نہیں آیا۔ یجارا اگریز تھا نا؟ ہم سے پوچھنے لگا واومسٹر کالے خال جلیم کیا ہوتا ہے۔"

فلک آرا ہنی سے لوٹ گئی۔ اس نے خالی پنجرے کو اٹھا کر سینے سے لگا لیا اور جیلیں کیا ہوتا ہے، کہہ کہ کر در یک ہنتی رہی۔ رات گئے تک میں نے اسے اسپتال اور مینا کے قصے سائے۔

جب وہ سوگئ تو میں نے اٹھ کر پنجرے کو اس کی سجاوٹوں سمیت کو تفری کے کہاڑ میں چھیادیا۔ میں جاہتا تھا فلک آراا بی مینا کو بالکل بھول جائے۔

صبح وہ سوکر اٹنی چپ چپ تھی۔ دیر کے بعد اس نے مجھ سے صرف اتنا پو چھا: ''ا ہا، ہماری مینا اچھی ہو جائے گ۔''

" إل، الحجى مو جائے گن میں نے جواب دیا،" لیکن، بیار کی زیادہ باتی نہیں

इसी में खुश रहेगी कि उस की मैना अस्पताल में अच्छी हो रही है फिर उसे भूल भाल जाएगी। आज मैं ने क़फ़स की सारी मैनाओं को ग़ौर से देखा और मुझे भी उन में कुछ कुछ फ़र्क नज़र आया, और फ़लक मैना को तो मैं हजारों मैनाओं में पहचान सकता था। उस बक़्त वह सबसे अलग थलग एक टहनी पर बैठी थी और टहनी धीरे धीरे नीचे ऊपर हो रही थी। मैं ने क़रीब जाकर उसकी चुमकारा। चुप चाप मेरी तरफ़ देखने लगी।

"फलक आरा याद आ रही है?" मैं ने उस से पूछा। वह इसी तरह मेरी तरफ़ देखती रही, मैं ने कहा: "हम से नाराज तो नहीं हो?"

अचानक मुझे ख़्याल आया कि मैं बिलकुल बादशाह की तरह बोल रहा हूं। मैं आप ही आप डर गया और जल्दी जल्दी क्रफ़स का काम ख़त्म कर के बाहर निकल आया।

(4)

घर आकर, जैसा मेरा ख़्याल था, मुझे फ़लक आरा को बहलाने में कोई मुश्किल नहीं हुई। मैं ने खूब मजे ले ले कर उसे बताया के किस तरह उस की मैना ने कड़वी दवा पीने से इन्कार कर दिया और उस के लिए मीठी-मीठी दवा बनवाई गई!

"और भय्या जब उसे मूंग की खिचड़ी खाने को दी गई," मैं ने बताया, "तो उसने कहा हम मूंग की खिचड़ी नहीं खाते, तो डाक्टर ने पूछा फिर क्या खाती हो।"

"उस ने कहा होगा हम तो दूध जलेबी खाते हैं।" फ़लक आरा बीच में बोल पड़ी।

"हां" मैं ने कहा, "डाक्टर की समझ में नहीं आया। बेचारा अंग्रेज था न? हम से पूछने लगा वाह मिस्टर काले खां, जलेबी क्या होता है।"

फ़लक आरा हंसी से लोट गई। उसने ख़ाली पिंजड़े को उठाकर सीने से लगा लिया और जलेबी क्या होता है, कह कह कर देर तक हंसती रही। रात गये तक मैं ने उसे अस्पताल और मैना के क़िस्से सुनाए।

जब वह सो गई तो मैं ने उठ कर पिंजड़े को उसकी सजावटों समेत कोठरी

كرتے بين، اس سے يارى بوھ جاتى ہے۔"

اس کے بعداس نے جھے سے بیمی نہیں ہو چھا کداس کی بینا کا پنجرا کیا ہوا میں اسے بہلانے کی ترکیبیں سوچ رہا تھا کہ کس نے دردازہ کھٹکھٹایا۔ میں ہاہر لکلا۔

میں اسے بہلانے کی تربیبیں سوچ رہا تھا کہ تن نے دردازہ متکعنایا۔ میں ہاہر لگلا۔ نئی بخش کا آجی کہ اور

داروغه ني بخش كا آدمي كمرًا تعاـ

"خریت تو ب، عرم علی؟" میں نے بوچھا۔

''داردغه صاحب نے آج سورے سے بلایا ہے'' اس نے کہا،'' معرت سلطان عالم طاؤس چمن میں تشریف لارہے ہیں۔''

" آج؟" ميس نے جران موكر يو جها، "ابھى برسول عى تو"

''جِرُياں پڑھ مُنی ہیں نا؟''محرم علی بولا''وہی سننے''

"احجماتم چلو"

میں نے جلدی کیڑے بدلے۔ ہاہر لکل کر جعراتی کی ماں سے فلک آرا کے پاس جانے کو کہا اور لیک ہوا طاوس چن پہنے گیا۔ رائے میں کی ہار میں نے فلک بینا کو فنس میں پنچا دیے پرخودکو شاہاش بھی دی۔

آج آ بجادی تفس کے سامنے چاندی کی منتش چوہوں پر سزاطلس کا مقیشی جمالروں والا چھوٹا شامیانا تنا ہوا تھا۔ واروغہ اور بہت سے طازم تفس کے پاس جمع تھے۔ ان کے خاص بوڑھے میرواؤد اسطرح الینتے ہوئے کھڑے تھے جیے وہ بادشاہ ہوں اور ہم سب ان کے غلام۔ میرواؤد کی نازک مزاجیوں اور اکڑ کے قصے طرح طرح کی رنگ آمیز ہوں اور مبالغوں کے ساتھ لکھنو بھر میں مشہور تھے لیکن سب جانتے تھے کہ پرغدوں کو پڑھانے میں ان کا جواب نہیں ہے۔

" إل ميال كالي خال، واروف في جمع و يكفة على كها. " قنس كو د يكه بعال لو، ذرا جلدى.......

یں نے بری پھرتی کے ساتھ قنس کا فرش صاف کیا، پودوں پر پانی چھڑکا، گرے پڑے پھول ہے ہے۔ پور کا میں میں اور نقارے بجنے پڑے پھول ہے۔ بھو میں داؤد کی آداز سائی دی:

के कबाड़ में छुपा दिया। मैं चाहता था फ़लक आरा अपनी मैना को बिल्कुल भूल जाए ।

सुबह वह सो कर उठी चुप चुप थी। देर के बाद उसने मुझ से सिर्फ़ इतना पूछा:

''अब्बा, हमारी मैना अच्छी हो जाएगी ?''

"हां, अच्छी हो जाएगी", मैं ने जवाब दिया, "लेकिन बेटी, बीमार की ज्यादा बातें नहीं करते हैं, इस से बीमारी बढ़ जाती है।"

इसके बाद उसने मुझसे यह भी नहीं पूछा कि उसकी मैना का पिंजड़ा क्या हुआ।

मैं उसे बहलाने की तरकीबें सोच रहा था कि किसी ने दरवाजा खटखटाया। मैं बाहर निकला। दारोग़ा नबीबख्श का आदमी खड़ा था।

ख़ैरियत तो है, मोहर्रम अली ? मैं ने पूछा।

''दारोग्ना साहब ने आज सबेरे से बुलाया है,'' उसने कहा, ''हजरत सुलताने आलम ताऊस चमन में तशरीफ ला रहे हैं।''

''आज ?'' मैं ने हैरान हो कर पूछा, ''अभी परसों ही तो……''

''चिड़ियां पढ़ गई हैं न ?'' मोहर्रम अली बोला, ''वही सुनने……''

"अच्छा तुम चलो।"

मैं ने जल्दी कपड़े बदले। बाहर निकल कर जुमेराती की मां से फ़लक आरा के पास जाने को कहा और लपकता हुआ ताऊस चमन पहुंच गया रास्ते में कई बार मैं ने फ़लक मैना को क़फ़स में पहुंचा देने पर ख़ूद को शाबाश भी दी।

आज ईजादी क़फ़स के सामने चांदी की मुनक्कश⁽¹⁾ चोबों पर सब्ज अतलस⁽²⁾ का मुक़य्यशी⁽³⁾ झालरों वाला छोटा शामियाना तना हुआ था। दारोग़ा और बहुत से मुलाजिम क़फ़स के पास जमा थे। इन के बीच में बूढ़े मीर दाऊद इस तरह एँठे हुए खड़े थे जैसे वह बादशाह हों और हम सब उनके गुलाम। मीर दाऊद की नाजुक मिजाजियों और अकड़ के क़िस्से तरह तरह की रंग आमेजियों और मुबालग़ों⁽⁴⁾ के साथ लखनऊ भर में मशहूर थे लेकिन सब जानते थे कि परिंदों को पढ़ाने में उनका जवाब नहीं है।

"हां मिया काले खां," दारोग्रा ने मुझे देखते ही कहा, "क्रफ़स को देख 1. चित्रित 2. रेश्मी कपड़ा 3. चाँदी सोने के तारों वाली 4. अतिशयोक्ति

" پھر کہتا ہوں سبق کے نیج کوئی نہ ہو لے بہیں جانور مھک جا کیں گے۔" دارو نے کو کچھ خصہ آ حمیا۔ ہولے

" میر صاحب ایک بار کہ دیا، حضرت کے سامنے کی کی مجال ہے جو چوں بھی کر جائے گرآپ ہیں کہ جب سے بھی رٹ لگائے ہیں۔"

جواب میں میر صاحب نے بڑے اطمینان کے ساتھ داروغہ کے سینے پر انگی رکھ کر پھروہی کہا:

" سبق کے ج میں کوئی نہ ہو لے نہیں جانور مفک جائیں ہے۔"

"المال جاؤمير صاحب" واروغه منه بناكر بولے" كيا مفور كى كى باتلى كررہ ہو" مير صاحب المال كى كو كہتے ہے كہ شابى جلوس دور پر نظر آنے لگا۔ ہم سب طاؤس چن كے بھائك پر دوقطار بى بناكر كورے ہوگئے ہكے دير بش جلوس بھائك پر بہنچا۔ آخ بادشاہ كے ساتھ حضور عالم اور مصاحبوں كے علاوہ بيلى گارد كے كئى اگريز افر بحى تتے حضور عالم المحين كى ايك چيز دكھانے گے۔ پھر بادشاہ نے ان سے دھرے دھيرے ہوكھ كہا اور مير داؤدكو آ كھ سے اشارہ كيا۔ مير صاحب شليم بجالائے اور بنده كرففس كے قريب آگئے۔ انھوں نے منع سے بھوسیتی كى بجائى۔ تفس ميں اڑتى ہوئى مينا كي ان كى طرف آكر جمولوں اور اڈوں پر بيٹر كئيں اور زور زور سے چہانے لكيس۔ مير صاحب نے طرف آكر جمولوں اور اڈوں پر بيٹر كئيں اور زور زور سے چہمانے لكيس۔ مير صاحب نے بھوسیس كے تھيل كے اور ایک جمیب كى آواز منع سے نكالی۔ مينا كيں ذرا دير كو چپ ہوئيں۔ پر سب کے گھے پھول سے اور ان كى آواز من ايک آواز ہوكر سائى ديں:

" سلامت شاه اختر، سليمان زبال، سلطان عالم"

ایک ایک لفظ اتنا سچا نقل رہا تھا کہ جھے کو جرت ہوگئ۔ بالکل ایسا معلوم ہورہا تھا کہ بہت می گانے والیاں ایک ساتھ ل کر مبارکبادگا رہی ہیں۔ بیناؤں نے دوبارہ میں شعر پڑھا، دم بحر کر رکیس، پھر بھاری آواز اور مردانے لیجے ہیں بولیں:

' ول كم نو طاؤس چن!"

اس پر اجریز افسروں کو اتنا مرہ آیا کہ وہ بار بار مضیاں باعد کر ہاتھ اوپ اچھالنے گئے۔ میناؤں نے پھر شعر برطا، پھر ایک اورشعر، پھر ایک اور۔ بادشاہ کچھ کچھ دم بعد مسکرا

भाल लो, ज़रा जल्दी ''

मैं ने बड़ी फुर्ती के साथ कफ़स का फ़र्श साफ़ किया, पौथों पर पानी छिड़का, गिरे पड़े फूल पत्ते समेटे और बाहर निकला ही था के जुलू ख़ाने की तरफ़ शहनाईयां और नक़्क़ारे⁽¹⁾ बजने लगे। हम सब होशियार हो कर खड़े हो गए, मुझे मीर दाऊद की आवाज सुनाई दी:

"फिर कहता हूं, सबक़ के बीच में कोई न बोले, नहीं जानवर हुशक जाएंगे।"

दारोग़ा को कुछ गुस्सा आगया, बोले:

"मीर साहब, एक बार कह दिया, हजरत के साएने किस की मजाल है जो चूं भी कर जाए, मगर आप हैं कि जब से यही रट लगाए हैं।"

जवाब में मीर साहब ने बड़े इत्मीनान के साथ दारोग़ा के सीने पर उंगली रख कर फिर वहीं कहा:

''सबक़ के बीच में कोई न बोले, नहीं जानवर हुशक जाएंगे।''

"अमां जाओ मीर साहब, "दारोग़ा मुंह बना कर बोले, "क्या मिठ्ठुओं की सी बार्ते कर रहे हो।"

मीर साहब तिलिमिला कर कुछ कहने चले थे कि शाही जुलूस दूर पर नज़र आने लगा। हम सब ताऊस चमन के फाटक पर दो क़तारें बना कर खड़े हो गए कुछ देर में जुलूस फाटक पर आ पहुंचा आज बादशाह के साथ हुजूरे आलम और मुसाहिबों के अलावा बेली गार्द के कई अंग्रेज अफ़सर भी थे। हुजूरे आलम उन्हें क़फ़स की एक -एक चीज दिखाने लगे। फिर बादशाह ने उन से धीरे-धीरे कुछ कहा और मीर दाऊद को आंख से इशारा किया। मीर साहब तसलीम (2) बजा लाए और बढ़ कर क़फ़स के क़रीब आ गए। उन्होंने मुंह से कुछ सीटी सी बजाई। क़फ़स में उड़ती हुइ मैनाएं उन की तरफ़ आकर झूलों और अड्डों पर बैठ गईं और जोर जोर से चहचहाने लगीं। मीर साहब ने कल्ले फुलाए पिचकाए और एक अजीब सी आवाज मुंह से निकाली। मैनाएं जरा देर को चुप हुई फिर सब के गले फूल गए और उन की आवाजों एक आवाज हो कर सुनाई दीं:

''सलामत शाह अख़्तर सुलेमाने जमां, सुलताने आलम।''

<u>एक एक लफ़्त इतना सच्चा</u> निकल रहा था कि मुझ को हैरत हो गई, 1. ढोल 2. झक कर सलाम करना

کر میرداؤد کی طرف دیکھتے، اور میر صاحب عجیب تماشا دکھارہے تھے۔ سینہ مجلا کرتن جاتے اور فورا بی اس قدر جھک کرتملیم کرتے کہ معلوم ہوتا تھا قلابازی کھا جا کیں گے۔

مناؤل نے ایک نیاشعر پر حاادر پھر پہلاشعر پر هناشروع کیا:

"سلامت شاه اختر، جان عالم"

''لکین ابھی شعر پورانہیں ہوا تھا کہ تفس کے پور بی جصے سے ایک تیز بچکانی آواز آئی'' ''فلک آراشنمادی ہے!''

سب مینائیں ایک دم سے دپ ہوگئیں اور میر داؤد کا منھ کھلا کا کھلا رہ گیا۔ فلک مینا ایک ٹبنی پر اکیلی میٹی تھی اور اس کا گلا چھولا ہوا تھا۔ اس نے چرکہا:

"فلك آراشفرادى ہے۔ دودھ جلبي كماتى ہے۔"

بالکل میری سنمی فلک آرا کی آواز تھی۔ میری آتھوں کے آگے اندھرا سا چھانے لگا۔ جھے خبر نہیں تھی کہ دوسرول پر ان بولوں کا کیا اثر ہوالیکن میں یہی سوج کر تھرا گیا کہ محل کی گھوڑیاں بھی دودھ جلبی کو زیادہ منے نہیں لگا تیں اور یہ ظالم مینا شنم اوی کو دودھ جلبی کھلائے دے رہی ہے، وہ بھی بادشاہ کے سامنے بچھے بچھ لوگوں کے دھیرے دھیرے بولنے کی آواز یں سائی دیں لیکن سمجھ میں نہیں آیا کہ کون کیا کہدرہا ہے اس لیے میرے کانوں میں سیبیاں نے رہی تھیں۔ اور اب ججھے ان سیٹیوں سے بھی زیادہ تیز سیش کی آواز سائی دی:

'' فلک آرا شنرادی ہے۔ دودھ جلبی کھاتی ہے۔ کالے خال کی گوری گوری بیٹی ہے۔'' پھر فلک آرا کے کھلکھلا کر ہننے اور تالیاں بجانے کی آواز، اور پھر وہی:

" کالے خال کی گوری گوری بٹی ہے۔ کالے خال کی گوری گوری بٹی ہے۔"

اپی آ کھوں کے آ مے چھائے ہوئے اندھرے میں بھی میں نے ویکھا کہ واروفہ نی بخش آ کھیں چھاڑ کو میری طرف و کھ رہے تھے۔ پھر میں نے ویکھا کہ بادشاہ نے داروفہ کو دیکھا پھر آ ہتہ آ ہت گردن محمائی اور نظریں مجھ پر جم کئیں۔ میرا بدن زور سے تھر تحرایا اور دانت بیٹھ گئے۔ مجھے ایبا معلوم ہوا کہ تفس کا سفید پھر مالا چہوتراا وپر اچھلا اور میرے سرے فکرا گیا۔

बिल्कुल ऐसा मालूम हो रहा था कि बहुत सी गाने वालियां एक साथ मिल कर मुबारकबाद गा रही हैं। मैनाओं ने दुबारा यही शेर पढ़ा, दम भर कर रुकीं, फिर भारी आवाज और मर्दाने लहजे में बोलीं:

"वैल कम ट्र ताऊस चमन"।

इस पर अंग्रेज अफ़सरों को इतना मजा आया कि वह बार बार मुद्ठियां बांध कर हाथ ऊपर उछालने लगें मैनाओं ने फिर शेर पढ़ा, फिर एक और शेर, फिर एक और। बादशाह कुछ कुछ देर बाद मुसकुरा कर मीर दाऊद की तरफ़ देखते, और मीर साहब अजीब तमाशा सा दिखा रहे थे। सीना फुला कर तन जाते और फ़ौरन ही इस क़दर झुक कर तसलीम करते कि मालूम होता था क़लाबाजी खा जाएगें।

मैनाओं ने एक नया शेर पढ़ा और फिर पहला शेर पढ़ना शुरू किया:

''सलामत शाह अखतर, जाने आलम.....''

लेकिन अभी शेर पूरा नहीं हुआ था कि क़फ़स के पूर्बी हिस्से से एक तेज बचकानी आवाज आई:

"फलक आरा शहजादी है।"

सब मैनाएं एक दम से चुप हो गईं और मीर दाऊद का मुंह खुला का खुला रह गया। फ़लक मैना एक टहनी पर अकेली बैठी थी और उस का गला फूला हुआ था। उसने फिर कहा:

''फ़लक आरा शहजादी है। दूध जलेबी खाती है।''

बिल्कुल मेरी नन्हीं फ़लक आरा की आवाज थी। मेरी आंखों के आगे अंधेरा सा छाने लगा। मुझे ख़बर नहीं थी कि दूसरों पर इन बोलों का किया असर हुआ लेकिन मैं यही सोच कर थर्रा गया कि महल की घोड़ियां भी दूध जलेबी को मुंह नहीं लगातीं, और यह जालिम मैना शहजादी को दूध जलेबी खिलाए दे रही है, वह भी बादशाह के सामने। मुझे कुछ लोगों के धीरे धीरे बोलने की आवाजों सुनाई दी लेकिन समझ में नहीं आया कि कौन क्या कह रहा है इस लिए कि मेरे कानों में सीटियां बज रही थीं। और अब मुझे इन सीटियों से भी ज्यादा तेज सीटी की आवाज सुनाई दी-:

''फ़लक आरा शहजादी है। दूध जलेबी खाती है। काले खां की गोरी गोरी

دوسرے دن ہوش آیا تو میں نصیرالدین حیدر کے اگریزی اسپتال میں لیٹا ہوا تھا۔ داروغہ نبی بخش جمک کر جمعے دیکھ رہے تھے داروغہ پر نظر پڑتے ہی جمھ کوسب کچھ یاد آگیا اور اٹھ کر بیٹھنے لگالیکن داروغہ نے میرے سینے پر ہاتھ رکھ دیا۔

"ليخ ربو، ليخ ربو،" المول نے كها،" ابسركى چوكىسى ہے؟"

"چوٹ؟" میں نے پوچھا اور سر پر ہاتھ چھیرا تو معلوم ہوائی پیٹیاں بندھی ہوئی ہیں۔ پہلے تکلیف بھی ہو رہی تھی۔لیکن اس وقت مجھے تکلیف کی پروانہیں تھی۔ میں نے دارونہ کا ہاتھ پکڑا اور کہا:

"داروغه صاحب، أب كوتتم بي عج عج بتاية وإل كيا مواتفا؟"

"سب معلوم ہو جائے گا بھائی، سب معلوم ہو جائے گا۔ پہلے اچھے تو ہو جاؤ۔"

"من بالكل امچا بول، واروغه صاحب" من في كما" آب كوتتم ب-"

" داروغه کچه دير اللتے رہے، آخر مجبور ہو محے "

"کیا پوچھتے ہومیاں کالے خال' انھوں نے کہنا شرد ع کیا، "تم تو غش کھا کے آرام پاگئے وہاں ہم لوگوں پر جو گذرگئگر پہلے سے بتاؤ، تم اس کو کس وقت پڑھا دیتے تھے؟" "کس کو؟"

" فلك آرا مينا كو، اوركس كو_"

"میں نے اسے چھنیں برحایا، داروغه صاحب، تتم سے۔"

" كر؟" أنحول يو جما" كريد بيهوده كلام اس في كهال سن ليج؟"

م كوريك بيكتاريا، آخر بولا:

"ميرے محرير"

داروند مکا یکا رہ گئے۔

"كيا كهدرب مو!"

" تب میں نے اول سے آخر پوراقعہ سنا دیا۔ دار دغہ سنائے میں آ مگئے۔ دیر تک منع سے آواز نہیں لکل سکی۔ آخر بولے:

"غضب كروياتم في كالے خال _ بادشائل برندے كى چورى! اچما اس ون حفرت

बेटी है।'' फिर फ़लक आरा के खिलखिला कर हंसने और तालियां बजाने की आवाज, और फिर वही:

"काले खां की गोरी गोरी बेटी है। काले खां की गोरी गोरी बेटी है।"

अपनी आखों के आगे छाए हुए अंधेरे में भी मैं ने देखा कि दारोग़ा नबीबख़ा आंखें फाड़ फाड़ कर मेरी तरफ़ देख रहें हैं। फिर मैं ने देखा कि बादशाह ने दारोग़ा को देखा फिर आहिस्ता आहिस्ता गर्दन घुमाई और उन की नज़रें मुझ पर जम गईं। मेरा बदन जोर से थर थराया और दांत बैठ गए। मुझे ऐसा मालूम हुआ कि क़फ़स का सफ़ेद पथरीला चबूतरा ऊपर उछला और मेरे सर से टकरा गया।

दूसरे दिन होश आया तो मैं नसीरुद्दीन हैदर के अंग्रेजी अस्पताल में लेय हुआ था और दारोग़ा नबीबख़्श झुक कर मुझे देख रहे थे दारोग़ा पर नजर पड़ते ही मुझ को सब कुछ याद आगया और मैं उठकर बैठने लगा लेकिन दारोग़ा ने मेरे सीने पर हाथ रख दिया ।

''लेटे रहो, लेटे रहो,'' उन्हों ने कहा, ''अब सर की चोट कैसी है।''

"चोद," मैंने पूछा,और सर पर हाथ फेरा तो माल्म हुआ कई पट्टियां बंधी हुई हैं। कुछ तकलीफ़ भी हो रही थी। लेकिन उस वक्त मुझे तकलीफ़ की परवाह नहीं थी। मैने दारोग़ा का हाथ पकड़ा और कहा:

''दारोग़ा साहब, आप को क़सम है, सच सच बताइये वहां क्या हुआ था।''

''सब मालूम हो जाएगा, भाई''''सब मालूम हो जाएगा पहले अच्छे तो हो जाओ''''मैं बिल्कुल अच्छा हूं, दारोग़ा साहब मैंने कहा, आप को क़सम है।''

दारोग़ा कुछ देर यलते रहे, आख़िर मजबूर हो गए।

"क्या पूछते हो मियां काले खां" उन्होंने कहना शुरू किया, "तुम तो ग्रश खा के आराम पा गए। वहां हम लोगों पर जो गुजर गई…… मगर पहले यह बताओ, तुम उस को किस वक़्त पढ़ा देते थे?"

''किस को ?''

"फ़लक आरा मैना को, और किसको।"

''मैं ने उसे कुछ नहीं पढाया, दारोग़ा साहब, कसम से।''

"फिर ?" उन्होंने पूछा "फिर यह बेहुदा कलाम उसने कहां सुन लिए ?"

نے فرمایا تھا کہ فلک آراہ ٹیش دکھائی وے رہی جیں، تو کیا اس دن بھی وہ تممارے گھر تھی؟'' بیس نے سر جمکا لیا۔

" تم نے جھے مار ڈالا" داروغہ نے کہا، " جھے کھ پانیس، بیں نے کہد دیا اہمی تو یہیں اڑتی پھر ربی تھی۔ داو بھائی تم تو ہماری بھی ٹوکری لے گئے تھے۔ اب کل جواس نے صاحبوں کے سامنے آؤ جاؤ بگنا شروع کیا تو حضرت پر سب کھ روش ہو گیا۔ اف اف اس کی کل کی ٹن ترانیاں س کر حضرت نے جو بات کی ۔ وبی بیس کہوں کہ یہ کیا زبان مبارک سے ارشاد ہوریا ہے۔"

"كيا؟" من اله كر بينه كيا، " حفرت في كيا فرمايا؟"

"فرمایا تو بس اتا کہ داروغہ صاحب ہمارے جانورل کو باہر نہ بھیجا کیجے،" داروغہ نے بتایا اور شعندی سائس بھری"داروغہ صاحب! آج تک حطرت نے نبی بخش کے سوا داروغہ نبیں کہا تھا، نہ داروغہ صاحب۔ اتنے دن کے نمک خواری کے بعد تمحارے سبب سے بھی سنا پڑا۔ ابھی تک کان کڑوے ہورہے ہیں۔"

"داروف صاحب" بی نے لجاجت کے ساتھ کہا،" اب تو تصور ہوا، جوسزا چاہے"

"امچھا خیر،" انحول نے ہاتھ اٹھا کر جمعے چپ کردایا "تو حضرت تورزید شنی کے صاحبوں کو لیے ہوئے سدھار گئے۔ یہاں طاؤس جمن بی غدر رکج گیا۔ حضور عالم ایک کو چھاڑ کھاتے ہیں ادھر میر داؤد صاحب گردن امچل رہے ہیں کہ دشمنوں نے ان کی میناؤ س کو ہشکانے کے لیے باہر کا جانور لا کے تفس میں چھوڑ دیا۔ میں کہ رہاہوں۔ باہر کا جانور نہیں، حضرت کی پہچائی ہوئی مینا ہے۔ حضور عالم سامنے کھڑے ہوئے ہیں، میر جانور نہیں، حضرت کی پہچائی ہوئی مینا ہے۔ حضور عالم سامنے کھڑے ہوئے ہیں، میر صاحب نے ان کا بھی لحاظ نہیں گیا، گئے چلانے کہ میں نے اسے نہیں پڑھایا ہے۔ میں نے اسے نہیں پڑھایا ہے۔ میں میر صاحب، وہ تو ظاہر ہے کہتم نے اسے نہیں پڑھایا ہے، کس واسطے کہ یہ تماری میناؤں سے اچھا براتی ہے۔ اب تو میر صاحب۔ کیا بتاؤں تیس سے سرتو و ہیں گرا دیا، بیادوں کے ہاتھ گھر کو ردانہ کیے گئے تو مومتی میں چھائے۔ "

मैं कुछ देर हिचकिचाता रहा आख़िर बोला:

''मेरे घर पर।''

दारोग़ा हक्का बक्का रह गए।

''क्या कह रहे हो?''

''तब मैंने उन्हें अव्वल से आख़िर पूरा क्रिस्सा सुना दिया।'' दारोग़ा सन्नाटे मैं आ गए। देर तक मुंह से आवाज नहीं निकल सकी। आख़िर बोले:

"ग़जब कर दिया तुमने काले खां। बादशाही परिंदे की चोरी! अच्छा, उस दिन जो हजरत ने फ़रमाया था कि फ़लक आरा दिखाई नहीं दे रही हैं तो क्या उस दिन भी वह तुम्हारे घर थी?"

मैं ने सर झुका लिया।

"तुमने मुझे मार डाला," दारोग़ा ने कहा, "मुझे कुछ पता नहीं, मैंने कह दिया अभी तो यहीं उड़ती फिर रही थी। वाह भाई, तुम तो हमारी भी नौकरी ले गए थे। अब कल जो उसने साहिबों के सामने आओ जाओ बकना शुरू किया तो हजरत पर सब कुछ रौशन हो गया। उफ़, उफ़, उस की कल की लन तरानियां सुन कर हजरत ने जो बात कही……वही मैं कहूं कि यह क्या जुबाने मुबारक से इरशाद हो रहा है।"

''क्या ?'' मैं उठ कर बैठ गया, ''हजरत ने क्या फरमाया ?''

''फ़रमाया तो बस इतना कि, दारोग़ा साहब, हमारे जानवरों को बाहर न भेजा कीजिए।'' दारोग़ा ने बताया और ठंडी सांस भरी, ''दारोगा साहब! आज तक हजरत ने, नबीबख़्श, के सिवा, दारोग़ा, नहीं कहा था, न कि दारोग़ा साहब, इतने दिन की नमक ख़ारी के बाद तुम्हारे सबब यह भी सुनना पड़ा, अभी तक कान कड़वे हो रहे हैं।''

''दारोग़ा साहब,'' मैंने लजाजत के साथ कहा, ''अब तो कुसूर हुआ, जो सजा चाहिए.....''

"अच्छा ख़ैर," उन्होंने हाथ उठा कर मुझे चुप करा दिया। तो हजरत तो रेजिंडेंस्टी के साहबों को लिए हुए सिधार गए, यहां ताऊस चमन में ग्रदर मच गया। हुजूरे आलम एक एक को फाड़ खाते हैं उधर मीर दाऊद साहब गर्दन उछल रहे हैं कि दुश्मनों ने उन की मैनाओं को हुशकाने के लिए बाहर का जानवर ला के

مجے میر صاحب کی کود بھاندے کیا لینا دینا تھا۔ میں نے کہا:

" داروغه صاحب، به بتایئے۔میرا کیا ہوا؟"

"بونا کیا تھا،" وہ بولے" بہال پناہ بیہ مقدمہ حضور عالم کو سون کر سدھارے تھے۔
سب پر کھلا ہوا تھا کہ بیہ کچو تمھاری بن کارستانی ہے اس علامہ چڑیا نے کوئی کر چھوڑی تھی؟
حضور عالم نے وہیں کھڑے کھڑے تمھارا فیعلہ کر دیا تھا۔ جس نے ٹو پی اتار کے ان کے
پیروں جس ڈال دی۔ خیر وہ کسی طرح شنڈے پڑے، صانت منظور کی، گرفتاری کا تھم
والی لیا، اب مقدمہ بنوا کے اظہار لیس مے۔ دیکھو کیا فیعلہ کرتے ہیں۔ جرمانہ تو ہوائی
سمجھوادیر سے

''واروغه صاحب' شی تھرا کر بولا۔''یہاں چوٹی کوڑی نہیں ہے۔ جرمانہ کہاں سے بحروں گا۔''

"اے بھائی، کیو ل پریشان ہوتے ہو" داروفہ نے کہا،" آخر ہم کس دن کے لیے ہیں۔ ؟ لیکن بات جرانے بی پرٹل جائے تب تا؟ حضور عالم کھیائے ہوئے ہیں، صاحبوں کے آگے کر کری ہوئی ہے۔ کیا پا بندی کرادیں، یا گنگا یار اتر دادیں۔"

قید خانے سے زیادہ جھے گنگا پار ہونے کے خیال سے وحشت ہوئی۔ ساری عمر الکھنؤ میں گزری تھی۔ باہر کہیں جاتا تو یاگل ہو جاتا، میں نے کہا:

"داروغه صاحب، اس سے تو اچھا ہے کہ حضور عالم مجھے توب دم کرادیں، خدا کے واسطے کوئی ترکیب تکا لیئے۔" پھر مجھے ایک خیال آیا "کیوں داروغه صاحب، بادشاه کوعرضی کصور، شاید معانی مل جائے۔"

عرضیاں بادشاہ کو پہنچتی کہاں ہیں، میرے بھائی، داروفہ شعندی سانس نے کر بولے، ''ا یکوں ایک کاغذ پہلے حضور عالم کے ملاحظے سے گذرتا ہے۔ اب وہ جس پر چاہیں آپ تھم صادر کریں جے چاہیں حضرت کی خدمت میں چیش کریں۔''

داروغداٹھ کھڑے ہوئے۔ چلتے چلتے ذرار کے اور بولے:

" محربيضرور ہے كالے خال، عرضى كى شميں سوجمى اچھى ہے۔"

"داروغ صاحب، لیکن خدا را یہاں سے نکاوائے۔" میں نے کہا، "دنہیں تودواؤل

क्रफ़स में छोड़ दिया। मैं कह रहा हूं बाहर का जानवर नहीं, हजरत की पहचानी हुई मैना है। हुजूरे आलम सामने खड़े हुए हैं, मीर साहब ने उनका भी लिहाज नहीं किया, लगे चिल्लाने कि मैंने उसे नहीं पढ़ाया है, मैंने उसे नहीं पढ़ाया है, । उनर से हुजूरे आलम ने और यह कह के उनके मिंचें लगा दीं कि मीर साहब, वह तो जाहिर हैं कि तुम ने उसे नहीं पढ़ाया है, किस वास्ते कि यह तुम्हारी मैनाओं से अच्छा बोलती है। अब तो मीर साहब। क्या बताऊं, क्रफ़स से सर तो वहीं टकरा दिया, पियादों के हाथ घर को रवाना किये गए तो गोमती में फांदे पड़ते थे। जो क्युआं रास्ते में आया……दर्शन सिंह की बाउली में तो समझो कूद ही गए थे।"

मुझे मीर साहब की कृद फांद से क्या लेना देना था। मैं ने कहा:

''दारोग़ा साहब, यह बताइये, मेरा क्या हुआ?''

"होना क्या था," वह बोले, "जहां पनांह यह मुक़द्दमा हुजूरे आलम को सौंप कर सिधारे थे। सब पर खुला हुआ था कि यह कुछ तुम्हारी ही कारस्तानी है उस अल्लामा चिड़िया ने कोई कसर छोड़ी थी? हुजूरे आलम ने वहीं खड़े खड़े तुम्हारा फ़ैसला कर दिया था। मैंने टोपी उतार के उनके पैरों में डाल दी। खैर, वह किसी तरह ठंडे पड़े, जमानत मंजूर की, गिरफ़्तारी का हुक्म वापस लिया, अब मुक़द्दमा बनवा कर इजहार लेंगे। देखो क्या फ़ैसला करते हैं, जुर्माना तो हुआ ही समझो ऊपर से है....."

''दारोग़ा साहब,'' मैं घबरा कर बोला, ''यहां फूटी कौड़ी नहीं है जुर्माना कहां से भरूंगा?''

''अरे भाई, क्यों परेशान होते हो,'' दारोग्रा ने कहा, ''आख़िर हम किस दिन के लिए हैं ? लेकिन बात जुर्माने ही पर टल जाए तब न ? हुज़ूरे आलम खिसियाए हुए हैं, साहेबों के आगे किर किरी हुई है। क्या पता बंद ही करा दें, या गंगा पार उतरवा दें।''

क़ैद ख़ाने से ज़्यादा मुझे गंगा पार होने के ख़्याल से वहश्त हुई, सारी उम्र लखनऊ में गुजरी थी, बाहर कहीं जाता तो पागल हो जाता, मैने कहा:

''दारोग्रा साहब, इस से तो अच्छा है कि हुजूरे आलम मुझे तोप दम करा दें, खुदा के वास्ते कोई तरकीब निकालिए ,'' फिर मुझे एक ख़्याल आया, ''क्यों दारोग्रा साहब, बादशाह को अर्जी लिखुं ? शायद माफ़ी मिल जाए।''

ك يدكيك مار ذاليس معيا

" کچ کہتے ہو۔ افچھا تو مچھٹی ہیں ابھی دلائے دیتا ہوں۔ تم گھر جا کر ایک دو دن آرام کرلو پھرکسی اجھے منٹی سے عرضی تکھوانا، آپ نہ لکھنے بیٹے جائے گا۔"

"شن داروض ماحب، جالل آدى، آپ لكه كريناً كام بكارول كا-؟"

"اورہم كهدكيا رہے ہيں-"

داروغہ صاحب اسپتال والول سے بات کر کے ادھر کے ادھر کے اور میں گھ دریا بعد چھٹی یائے گھر آعما۔

نعنی فلک آرا کو گود میں بٹھا کر میں دیر تک بہلاتا رہا، لیکن مجھے خبر کھونیں تھی کہ میں کیا کہدرہا ہوں اور دو کیا کہدرہی ہے۔

(5)

دوسرے ہی دن بیل خشیوں کی گر بیل نکل کھڑا ہوا۔ اس وقت تکھنو بیل ہے ایک لیے والا پڑا تھا۔ خشی کا لکا پرشاد تو بہرے ہی محلے ہیں تھے۔ تین کو بیل جات تھا کہ بادشاہ کی خدمت بیل رسائی رکھتے ہیں، ایک مرزا رجب علی صاحب، ایک خشی ظہیرالدین صاحب، ایک خشی طہیرالدین صاحب، ایک خشی امیر احمد صاحب، مرزا صاحب بڑی چیز تھے۔ ایک عالم بیل ان کے قلم کی دھوم تھی، ان سے کہنے کی تو میری ہمت نہ ہوئی، خشی ظہیرالدین کو پوچھتا پاچھتا ان کے کمر پہنچا تو معلوم ہوا، بگرام کے ہوئے ہیں۔ اب خشی امیر احمد صاحب رہ گئے۔ ان کا کمر پہنچا تو معلوم ہوا، بگرام کے ہوئے ہیں۔ اب خشی امیر احمد صاحب رہ گئے۔ ان کا مر بانے والا کوئی نہ طالبین بیمعلوم ہوا کہ وہ جعرات کے جعرات شاہ بیناصاحب کے مزار پر حاضری دیتے ہیں۔ اتفاق کی بات، اس دن جعرات ہی تھی۔ وہ بھی توچندی جعرات، مغرب کے وقت بھی بھون کے پہلو سے ہوتا ہوا ہی شاہ بینا صاحب بھی میا۔ آدمیوں کی ریل بیل تھی۔ کی طرح مزار تک پہنچا، وہاں قوالی ہوری تھی۔ خشی صاحب بی ما کا کلام گایا جارہا تھا۔ وہ خود بھی وہیں تعریف رکھتے تھے۔ جس آخیس قیمر باغ میں کی بار دکھے چکا تھا۔ ایک کوئے جس کھڑا ہو کرقوالی سننے لگا۔ رات می محفل برخاست ہوئی تو خشی صاحب الھے۔ دکھے چکا تھا۔ ایک کوئے وہ کو کوئولی۔ اب باتیں ہوری ہیں۔ خوا خدا کر کے خشی صاحب الھے۔ دکھے چکا تھا۔ ایک کوئے وہ کی لیا۔ اب باتیں ہوری ہیں۔ خوا خدا کر کے خشی صاحب الھے۔ ما حدب کو کوئول نے گھرلیا۔ اب باتیں ہوری ہیں۔ خوا خدا کر کے خشی صاحب الھے۔

"अर्जियां बादशाह को पहुंचती कहां हैं, मेरे भाई," दारोग़ा ठंडी सांस् लेकर बोले, एकों एक कागज पहले हुजूरे आलम के मुलाहिजे से गुजरता है। अब जिस पर चाहें आप हुक्म सादिर⁽¹⁾ करें, जिसे चाहें हजरत की ख़िदमत में पेश करें।"

दारोग़ा उठ खडे हुए, चलते चलते जरा रुके और बोले:

"मगर यह जरूर है काले खां, अर्जी की तुम्हें सूझी अच्छी है।"

"दारोगा साहब, लेकिन खुदारा यहां से निकलवाइये, मैं ने कहा," नहीं तो दवाओं के यह भपके मार डालें गे।

''सच कहते हो। अच्छा तो छुट्टी मैं अभी दिलाए देता हूं। तुम घर जाकर एक दो दिन आराम कर लो फिर किसी अच्छे मुन्शी से अर्जी लिखवाना, आप न लिखने बैठ जाइयेगा।''

''मैं दारोग़ा साहब, जाहिल आदमी आप लिख कर बनता काम बिगाडूंगा? ''और हम कह क्या रहे हैं।''

दारोग्रा साहब अस्पताल वालों से बात करके उधर के उधर निकल गए और में कुछ देर बाद छुटी पाके घर आ गया।

नन्हीं फ़लक आरा को गोद में बिठा कर मैं देर तक बहलाता रहा, लेकिन मुझे ख़बर कुछ नहीं थी कि मैं क्या कह रहा हूं और वह क्या कह रही है।

(5)

दूसरे ही दिन मैं मुन्शियों की फ़िक्र में निकल खड़ा हुआ। उस वक्त लखनऊ में एक से एक लिखने वाला पड़ा था। मुन्शी कालका प्रसाद तो मेरे ही मुहल्ले में थे। तीन को मैं जानता था कि बादशाह की ख़िदमत में रसाई रखते हैं एक मिर्जा रजब अली साहब, एक मुन्शी जहीरुद्दीन साहब, एक मुन्शी अमीर अहमद साहब। मिर्जा साहब बड़ी चीज थे, एक आलम में उनके क़लम की धूम थी, उन से कहने की तो मेरी हिम्मत न हुई, मुन्शी जहीरूद्दीन को पूछता पाछता उनके घर पहुंचा तो मालूम हुआ बेलग्राम गए हुए हैं। अब मुन्शी अमीर अहमद साहब रह गए। उनका घर बताने वाला कोई न मिला लेकिन यह मालूम हुआ कि वह जुमेरात के जुमेरात शाह मीना साहब के मजार पर हाजरी देते हैं। इत्तेफ़क़ की बात, उस दिन जुमेरात ही थी, वह भी नौचंदी जुमेरात, मग्रिब के वक्त मच्छी भवन के पहलू से होता हुआ मैं शाह मीना साहब पहुंच गया। आदिमयों की रेल 1. आदेश देना

یں بیچے بیچے ہولیا۔ اب منی صاحب تنج محماتے ہوئے ایک کل سے دومری، دومری سے تیس بیچے بیچے ہولیا۔ اب منی صاحب تنج محماتے کی طرح ساتھ ساتھ۔ آخر وہ معملک کر رک گئے۔ میں نے سائے آکر سلام کیا۔ انھوں نے جواب دے کر مجھے فور سے دیکھا۔

"آپ کے کرم کا متاج ہوں " میں نے کہا:

مثى صاحب جيب ميں باتھ ڈالنے گے۔ ميں نے باتھ جوڑ ليے۔ ۔

" حضور، فقيرنيس بول،"

"اميما تو پهر؟"

"فقیروں سے بھی بدتر ہوں۔آپ جا ہیں تو خاندخرائی سے فی جاؤں۔"
"ارے بندہ خدا، کول پہلیان جھوارہے ہو؟ کچر کھل کرنیس کہو گے؟"

یں نے وہیں کھڑے کھڑے اپنا قصد شروع کر دیا کرمٹی صاحب نے تعوزی ہی دیر میں مجھے روک دیا۔ ان کا مکان قریب آگیا تھا۔ وہاں لے گئے۔ میں نے کتنا کتنا کہا کہ رات بہت آگئی ہے، میں کل حاضر ہوجاؤں گا، کر انعول نے ای وقت سارا حال سنا، نکج کج میں کبھی افسوس کرتے بھی حیرت، کبھی ہنس پڑتے، کبھی ہادشاہ کی تعریف کرنے لگتے، میں نے پورا قصد سنا کر اپنا مطلب عرض کیا تو وہ پکھ سوچ میں پڑگئے، کھر ہولے۔

"سنو بھائی کالے خال، قصہ ہمارے دل کو لگ گیا۔ عرضی تو تمھاری ہم لکھ دیں گے۔ ادر جی لگا کے لکھیں کے، لیکن دہ حضرت تک پنچے تو کیوں کر پنچے؟ بیتھمارے بس کا کام نہیں، کوئی وسیلہ ہے تمھارے یاس؟"

"وسلد؟" ميس نے كہا، "منشى صاحب، ميرا تو جو كھ وسلد بيس آپ بى بيس- آپ حضرت سلطان عالم خدمت ميں

" ہاں بھائی، گاہ کا ہے ماضری تو دیتا ہوں۔ فریب بروری ہے۔ حضرت کی کہ یاد فراليتے ہيں۔"

"لو پر منی صاحب،" بی نے پکے خوش ہو کر، پکے ڈرتے ڈرتے کیا،"اگر وہ مرضی آب بی"

منثی میادب چنے کھے۔

पेल थी, किसी तरह मजार तक पहुंचा, वहां क्रव्याली हो रही थी। मुन्शी साहब ही का कलाम गाया जा रहा था। वह खुद भी वहीं तशरीफ रखते थे। मैं उन्हें कैंसर बाग़ में कई बार देख चुका था। एक कोने में खड़ा हो कर क़व्याली सुनने लगा। रात गए महफ़िल बर्ख़ास्त⁽¹⁾ हुई तो मुन्शी साहब को लोगों ने घेर लिया, अब बातें हो रही हैं, खुदा खुदा कर के मुन्शी साहब उठे, मैं पीछे -पीछे हो लिया, अब मुन्शी साहब तसबीह घुमाते हुए एक गली से दूसरी, दूसरी से तीसरी, में मुड़ते जा रहे हैं और मैं साए की तरह साथ साथ। आख़िर वह ठिठक कर रुक गए। मैं ने सामने आकर सलाम किया। उन्होंने जवाब देकर मुझे गौर से देखा।

''आप के करम का मोहताज हूँ,'' मैंने कहा।'' मन्शी साहब जेब में हाथ डालने लगे, मैंने हाथ जोड़ लिए।

''हुजूर,फ़क़ीर नहीं हूं, ''

"अच्छा तो फिर?"

''फ़क़ीर से भी बदतर हूं। आप चाहें तो ख़ाना ख़राबी से बच जाऊं।''

"अरे बन्दा-ए-खुदा, क्यों पहेलियां बुझवा रहे हो? कुछ खुल कर नहीं कहोगे?"

मैंने वहीं खड़े खड़े अपना क्रिस्सा शुरू कर दिया मगर मुन्शी साहब ने थोड़ी ही देर में मुझे रोक दिया। उनका मकान क़रीब आ गया था, वहां ले गए। मैं ने कितना कितना कहा कि रात बहुत आगई है, मैं कल हाजिर हो जाऊंगा, मगर उन्होंने उसी वक़्त सारा हाल सुना। बीच बीच में कभी अफ़सोस करते कभी हैरत, कभी हंस पड़ते, कभी बादशाह की तारीफ़ करने लगते, मैंने पूरा क़िस्सा सुनाकर अपना मतलब अर्ज़ किया तो वह कुछ सोच में पड़ गए, फिर बोले:

"सुनो भाई काले ख़ां, क़िस्सा हमारे दिल को लग गया। अर्जी तो तुम्हारी हम लिख देंगे, और जी लगा के लिखेंगे, लेकिन वह हज़रत तक पहुंचे तो क्यों कर पहुंचे ? यह तुम्हारे बस का काम नहीं, कोई वसीला⁽²⁾ है तुम्हारे पास ?"

''वसीला ?'' मैंने कहा, ''मुन्शी साहब, मेरा तो जो कुछ वसीला हैं आप ही हैं। आप हजरत सुलताने आलम ख़िदमत में.....''

"हां भाई, गाहे गाहे हाजरी तो देता हूं। ग़रीब परवरी है, हजरत की कि याद फरमा लेते हैं।"

^{1.} समाप्त होना 2. माध्यम

'' بھٹی کالے خانگر کی ہے، تم بادشائ کارخانے کو کیا جانو۔ وہاں یہ تموزی ہوتا ہے کہ'' حضرت ظل سجائی، آداب، یہ چشی لے لیجئے۔ اور حضرت نے ہاتھ بڑھا کر'' میں جمینے کمیا، بولا:

دنشی صاحب، بدیرا مطلب نیس تها، اصل بدید که سلطان عالم کوعرضی بنچوانے کے لیے میں آب کے سوا اور کمی سے نہیں کیدسکتا''

"مرضی بادشاہ تک پینی بھی تو ہزار ہاتھوں سے ہوتی ہوئی پہنچ گی۔ پھر مقدمہ تممارا حضور عالم کے حوالے ہوا ہے۔ وہ کاہے کو لیند کریں گے کہ"

منٹی صاحب رک کر دیر تک پکوسوچن رہے۔ گا بھی میں اپنے آپ سے باتی بھی کرنے لگتے تھے۔ پکولوگوں کے نام بھی لینے جاتے تھے، میاں صاحبان، مقبول الدولہ، راحت السلطان، امامین اور معلوم نہیں کون کون۔ آخر میں کہنے لگے،

"امچھا میاں کالے خال، اللہ نے چاہا تو عرض تمھاری معرت کے ملاحظے سے گذر حائے گی۔"

" آمے تمماری قسمت

میں نے مٹی صاحب کو دعائیں وے دے کر ان کی تعریفیں شروع کر دیں تو تھرا کر ہوئے: "ارے بھائی، ارے بھائی، کول گنا ہگار کرتے ہو؟ کام بنانے والا اللہ ہے۔ تو بس اہتم گھر کوسد حارد۔"

وہ اٹھ کھڑے ہوئے میں چلنے لگا تو دروازے تک پہنچانے آئے۔ میں نے رخصت ہوتے وقت کھا:

"دنشی صاحب، اس کا اجر الله آپ کو دے گا۔ غریب آدی ہوں، آپ کا حق محت"

" إ!" منتى صاحب نے زبان دائوں تلے دبالى، اس كا تو نام بحى مند سے ند لينا، اور مير ك كند مع بر باتھ ركھ فكر وى كها "إت بي ب كالے خال تممارا قصد مارے دل كو لك ميا بين "

آصف الدولد بهادر کے امام باڑے کا نوبت خانہ رات کا مجیلا پہر بجا رہا تھا،

"तो फिर मुन्शी साहब," मैने कुछ खुश हो कर, कुछ डरते डरते कहा, "अगर वह अर्जी आप ही" मुन्शी साहब हंसने लगे।

"भाई काले खां…… मगर सच है, तुम बादशाही कारख़ाने को क्या जानो। वहां यह थोड़ी होता है कि "हज़रत जिल्ले सुब्हानी, आदाब, यह चिट्ठी ले लीजिए," और हज़रत ने हाथ बढ़ा कर……"

मैं झेंप गया, बोला:

"मुन्शी साहब, यह मेरा मतलब नहीं था, असल यह है कि सुलताने आलम को अर्जी पहुंचाने के लिए मैं आपके सिवा और किसी से नहीं कह सकता।"

"अर्जी बादशाह तक पहुंची भी तो हजार हाथों से होती हुई पहुंचेगी। फिर मुक़दमा तुम्हारा हुजूरे आलम के हवाले हुआ हैं वह काहे को पसंद करेंगे कि....."

मुन्शी साहब रुक कर देर तक कुछ सोचते रहे। बीच-बीच में अपने आपसे बातें भी करने लगते थे, कुछ लोगों के नाम भी लेते जाते थे, मियां साहेबान, ' मक़बूलूदौला, राहतु स्सुल्तान, इमामीन और मालूम नहीं कौन कौन। आख़िर में कहने लगे:

''अच्छा मियां काले खां, अल्लाह ने चाहा तो अर्जी तुम्हारी हजरत के मुलाहिजे से गुजर जाएगी, आगे तुम्हारी किस्मत·····''

मैंने मुन्शी साहब को दुआ दे दे कर उनकी तारीफ़ें शुरू करदीं तो घबरा कर बोले:

"अरे भाई, अरे भाई, क्यों गुनहगार करते हो ? काम बनाने वाला अल्लाह है। तो बस अब तुम घर को सिधारो।"

वह उठ खड़े हुए मैं चलने लगा तो दरवाजे तक पहुचाने आए, मैंने रुख़सत होते वक्त कहा:

मुन्शी साहब, इसका अजर अल्लाह आप को देगा। ग्र**ीब आदमी हूं, आप** का हक्क मेहनत.....

"हां!" मुन्सी साहब ने जुबान दातों तले दबाली, "उस का तो नाम भी मुंह से न लेना," और मेरे कंधे पर हाथ रख फिर वहीं कहा "बात यह है काले खां, तुम्हारा क़िस्सा हमारे दिल को लग गया है।"

جعراتی کی اماں بے جاری میں نے سوچا میرا رستد دیکھتے دیکھتے سوگی ہوں گی۔ انھیں جگانا اچھانیس معلوم ہوا، میں تک شہر میں آوارہ گردی کرتا رہا۔

(6)

تین چار دن گذرے ہوں کے کہ کیا دیکتا ہوں داروفہ ٹی بنٹ دروازے پر کھڑے ہیں۔ میں مگم را کمیا، لیکن انھوں نے جھے بولنے کا موقع ہی نہیں دیا، کہنے گئے۔

"ارےمیاں کالے خال، جمائی تم تو قیامت لکے!"

میں اور مجی تحبرا حمیا، بولا:

" داردفه صاحب، الله مجهم كه خرشي ، كيا بوا؟"

"کیا ہوا؟" داروفہ بولے،"بیہ ہوا کہ تمماری عرضی حضرت سلطان کی خدمت میں پہلے اسلامی کی خدمت میں پہلے اس کی اس کر مقل میں اس کر تھم بھی ہوگیا۔"

"حم موكيا؟" ين في بانب موكركها،"كياتكم موا واروفه صاحب؟"

"سلطانی فیلے ہم لوگوں کو بتائے جائیں مے؟ کیا بات کرتے ہو کالے خال، لیکن

اے لکے رکھو اچھا پہلے یہ بتاؤ عرضی میں سارا حال لکھوا دیا تھا؟ بٹیا کا بن ماں کی ہونا، . مراہ میں دہ سے لے تعصیریة کے دارہ

پہاڑی مینا کے کیے محسین دق کرنا اور

''اول سے آخر تک موخی چی سے دیکھی تو نہیں لیکن ٹشی امیر احر صاحب نے کہا تھا پی لگا کرتکھو**گا۔**''

"واروفه صاحب ووالجى آپ كيا كهدرے تھے"

"الال جو كهدب تقدوه كهدب إلى"

ددنیں، وہ آپ نے کیا کہا تھا، اے لکے رکو۔"

"دوه بال" واروفركو ياد آكياه" بم كهدرب في است لكوركو كر تسيس معانى الم كل اور جمارى بناكو يناي"

आसिफुद्दौला बहादुर के इमाम बाड़े का नौबत ख़ाना रात का पिछला पहर बजा रहा था, जुमेराती की अम्मा बेचारी मैं ने सोचा मेरा रस्ता देखते देखते सो गई होगीं। उन्हें जगाना अच्छा नहीं मालूम हुआ, सुबह तक शहर में आवारा गर्दी करता रहा।

(6)

तीन चार दिन गुजरे होगें कि क्या देखता हूं दारोग़ा नबीबख़्श दरवाजे पर खड़े हैं। मैं घबरा गया, लेकिन उन्होंने मुझे बोलने का मौक़ा ही नहीं दिया,कहने लगे:

[']' <mark>अरे मियां काले खां, भाई</mark> तुम तो क़यामत निकले।''

मैं और भी घबरा गया बोला:

''दारोग़ा साहब, अल्लाह मुझे कुछ ख़बर नहीं क्या हुआ।''

"क्या हुआ ?" दारोग़ा बोले, "यह हुआ कि तुम्हारी अर्जी हजरत सुलतान की ख़िदमत में पहुंच गई और मुलाहिजे से गुजरते ही उस पर हुक्म भी हो गया।"

"हुक्म हो गया?" मैं ने बेताब हो कर कहा, "क्या हुक्म हुआ दारोगा साहब?

"सुलतानी फ्रैंसले हम लोगों को बताए जाएंगे? क्या बात करते हो कालें खां, लेकिन इसे लिख रखो..... अच्छा पहले यह बताओ, अर्जी में सारा हाल लिखवा दिया था? बिटिया का बिन मां की होना, पहाड़ी मैना के लिए तुम्हें दिक करना और....."

"अव्यल से आख़िर तक, अर्जी मैंने देखी तो नहीं लेकिन मुन्शी अमीर अहमद साहब ने कहा था जी लगा कर लिखूंगा।"

"मुन्शी अमीर अहमद साहब?" दारोग़ा ताज्जुब से बोले, उन्हें पकड़ लिया, अमां हम तुम्हें ऐसा नहीं समझते थे। वही हम कहें यह अर्जी हजरत सुलताने आलम तक क्यों कर गई।

'दारोग़ा साहब, वह अभी आप क्या कह रहे थे ?''

"अमां जो कह रहे थे वह कह रहें हैं।"

"नहीं वह आप ने क्या कहा था, इसे लिख रखो।"

"بٹیا کو بینا؟" بیس جران ہوکر بولا،" یہ کیا کہدرہے ہیں، داردفدصاحب؟"
"تم ابھی بادشاہ کے مزاج سے داقف نیس ہو" داردفہ بوسلے،" آج جو سورے
بندے علی، ان کا چربدار مجھ سے تممارا کمر پوچھنے آیا تو بیس بھانپ کیا۔ بھی تی خوش
ہوگیا۔"

لیکن میں نے دیکھا داروفہ بہت خوش نہیں ہیں۔ رکے رکے سے تھے اور معلوم ہوتا تھا کچھ اور بھی کہنا جا ہے ہیں۔ مجھے تھراہٹ ی ہونے گلی۔ میں نے کہا:

"داروفه صاحب آپ نے بمیشہ میرے سر پر ہاتھ رکھا ہے۔ اس وقت آپ خوش نہ ہوں کے تو کون ہوگا۔لیکن داروفہ صاحبکیا پچھ اور بات ہے؟"

داروف ذراكسمائ، كمريول:

"کہ نیں سکتے کالے خال، ہوسکا ہے کوئی بات نہ ہو، ہوسکا ہے بہت بڑی بات ہوجائے، مرحماری خررہے گی۔"

"داردغه صاحب، خدا کے لیے"

اب داروغه ماحب بريثان نظر آرے تھے۔

" بھائی۔" انعول نے کہا " تازہ واردات بھی س لو۔ آج نواب صاحب کے تین آدی طاؤس جن میں آئے۔"

"ارے حضور عالم، دستور معظم، وزیراعظم الدولہ نواب علی نتی خال بہادر، کہو سمجے۔"
"سمجھا۔"

"یا شاید چارآ دی سے "داروفر نے پاد کرنے کی کوشش کی،" انھیں ہے جمعے طاوس جن میں بلوایا۔ میں گیا تو دیکھا ایجادی قنس کے سامنے سے کھڑے ہوئے ہیں۔ مجمعے دیکھتے ہی ہوئے سوروں کے ساتھ ہو چھنے گئے، ان میں فلک آ را کون کی مینا ہے۔ میں بل گیا، بولا انھیں میں کہیں ہوگی، میں کوئی سب کا نام یاد رکھا گھرتا ہوں؟ ان کے بھی دماغ آسان پر تھے کہنے گئے است داروفہ ہو ادر جانور کوئیس پہوائے ؟ میں نے کہا۔ چیا ہے ہیں، ٹیس میں است داروفہ ہو ادر جانور کوئیس پہوائے ؟ میں نے کہا۔ چیا ہے ہیں، ٹیس میں آئے آپ ہو چھنے دالے کون ؟ بات بر صنے گی۔ ان میں شاید ایک سے معاجی میں آئے موجھیں کل ری تھیں، ذرا صورت دار بھی شے، انھوں نے زیادہ رمگ دکھانا شروع کیا تو

"वह, हां," दारोग़ा को याद आ गया, "हम कह रहे थे इसे लिख रखो कि तुम्हें माफ़ी मिल गई, और तुम्हारी बिटिया को मैना।

"बिटिया को मैना?" मैं हैरान हो कर बोला, "यह क्या कहरहे हैं, दारोग्रा साहब?"

"तुम अभी बादशाह के मिजाज से वाक़िफ़⁽¹⁾ नहीं हो," दारोग़ा बोले, "आज जो सबेरे बंदे अली, उनका चोबदार मुझ से तुम्हारा घर पूछने आया तो मैं भांप गया। भई जी खुश हो गया।"

लेकिन मैंने देखा दारोग़ा बहुत खुश नहीं हैं। रुके रुके से थे और मालूम होता था कुछ और भी कहना चाहते हैं। मुझे घबराहट सी होने लगी। मैंने कहा: "दारोग़ा साहब, आपने हमेशा मेरे सर पर हाथ रखा है, इस वक्त आप खुश न होंगे, तो कौन होगा। लेकिन-----दारोग़ा साहब-----क्या कुछ और बात भी है?"

दारोग़ा जरा कसमसाए, फिर बोले:

"कह नहीं सकते काले खां, हो सकता है कोई बात न हो, हो सकता है बहुत बड़ी बात हो जाए, मगर तुम्हारी ख़ैर रहेगी।"

''दारोग़ा साहब खुदा के लिए·····''

अब दारोग़ा साफ़ परेशान नज़र आरहे थे।

"भाई,'' उन्होंने कहा, "ताजा वारदात भी सुन लो। आज नवाब साहब के तीन आदमी ताऊस चमन में आए।"

"अरे हुजूरे आलम, दस्तूरे मोअरजम, वसीरे आजमुद्दौला नवाब अली नकी खां बहादर, कहो समझे।"

''समझा।''

"या शायद चार आदमी थे।" दारोग्रा ने याद करने की कोशिश की, "उन्होंने मुझे ताऊस चमन में बुलवाया। मैं गया तो देखा ईजादी क्रफ्रस के सामने तने हुए खड़े हैं। मुझे देखते ही बड़े तेवरों के साथ पूछने लगे। इन में फ़लक आरा कौन सी मैना है। मैं हिल गया, बोला इन्हीं में कहीं होगी। मैं कोई सब का नाम याद रखता फिरता हूं। उन के भी दिमाग्र आसमान पर थे, कहने लगे, इतने दिन से दारोग्रा हो और जानवर को नहीं पहचानते? मैंने कहा चिलये पहचानते हैं, नहीं बताते। आप पूछने वाले कौन? बात बढ़ने लगी। उन में एक शायद नए नए 1. परिचित

میں نے کہا صاحزادے صاحب، اپتا جو بن سنجال رکھے، پٹھان بچہ ہوں، جب تک ڈاڑھی موچیں پوری ندکل آئیں میرے سامنے آگا پیچا دکھ کر آیے گا۔'' میں نامیدی

مجھے ہٹی آگئی۔

"داروفه صاحب، بعنى آپ كى زبان سے الله كى بناه!"

"بال نیس لو" داروفہ واقعی تاؤیش آئے ہوئے تھے،" اب وہ کے چکارنے" یس نے کہا میرے شارادے ہم سلطانی خاصے کے شیروں کو نوالہ کھلاتے ہیں۔ لے بس اب چوٹی بند سیجے، نیس لوافعا کر موہنی کے کثیرے بیں پھیکوں کا پہلے، نام پوچموں کا بعد میں، شورین کرمحلات کے بہت سے آدی کل آئے، معالمہ رضح کرایا۔"

کے دیر ہم دونوں سوج ش دوب رہے، پھر ش نے کہا:

"يرى واردات بوكى، داروفه صاحب،

"واردات؟" داروفہ ہولے" داردات میرے یار ابھی تم نے سی کہاں۔ اب سنو، علات والوں میں نواب صاحب کے آدمیوں کے دوست آشا بھی تھے، وہ ان کو الگ لے گئے۔ تب جمید کھلا کہ اس دن رزیزی کے جو صاحبان طاؤس جمن میں آئے تھے، ان میں سے کی کو حماری مینا کے بے بنگام بول بھا گئے۔ اس نے نواب صاحب سے اس کی تحریف کی۔ نواب صاحب کے ب بنگام کو جو میں دریدی کی بھیا دی جائے گی۔ بی تحریف کی۔ نواب صاحب کھٹ سے دورہ کر بیٹھے کہ مینا رزیدی پہلیا دی جائے گی۔ بی

يس اتى عى ديريس فلك مناكواسيد محركا مال يصف لكا تعاريس في كبا:

"كين منا تو معرت نے ميرى بني كومنايت كى ہے۔"

" كى ب، دوست كرنواب نے بھى لو كورے ماحب بهادر سے وعدہ كيا ہے۔"

" تو كيانواب اين بادشاه كالحكم نيس ماكلس مح اوراس"

" بس بس، آھے کھ نہ کو کالے فال، حمیں خرنیں ہے یہاں کیا ہو رہا ہے۔ گر فراب صاحب بادشاہ کے نیسے پر اپنا تھم تو کیا چلا کس کے، البتہ دہ مینا کو تم سے مول ضرور لیس کے۔ دہ میں منع مالے دامون۔ اچھا ٹھیک ہے، بادشای تھے ای لیے ہوتے ہیں کے آدی آمیں کے بات کے پہنے مالے۔ لین اتا یادرکمو کالے فال، مینا اگر رزیدی

मुसाहिबी में आए थे, मूंछें निकल रहीं थी। जरा सूरत दार भी थे, उन्होंने कुछ ज्यादा रंग दिखाना शुरू किया तो मैं ने कहा साहबजादे साहब, अपना जौबन सम्भाल रिखये, पद्मन बच्चा हूं, जब तक दाढ़ी मूछें पूरी न निकल आयें मेरे सामने आगा पीछा देख कर आइयेगा।

मुझे इंसी आगई।

''दारोग़ा साहब भई आप की जबान से अल्लाह की पनाह।''

"हां नहीं तो," दारोगा साहब वाक़ई ताव में आए हुए थे, "अब वह लगे चुमकारने"। मैंने कहा मेरे शहजादे हम सुलतानी खासे के शैरों को निवाला खिलाते हैं। ले बस अब चींच बंद कीजिए, नहीं तो उठा कर मोहनी के कटहरे में फेंकूंगा पहले, नाम पूछूंगा बाद में, शोर सुन कर महलात के बहुत से आदमी निकल आए, मामला रफ़ा दफ़ा कराया।

कुछ देर बाद हम दोनों सोच में डूबे रहे, फिर मैंने कहा।

''बुरी वारदात हुई, दारोग़ा साहब।''

"वारदात?" दारोगा बोले, "वारदात मेरे यार अभी तुम ने सुनी कहां। अब सुनो महलात वालों में नवाब साहब के आदिमयों के दोस्त आशना भी थे, वह उन को अलग ले गए, तब भेद खुला कि उस दिन रेजीडेंटी के जो साहबान ताऊस चमन में आए थे, उन में से किसी को तुम्हारी मैना के बेहंगम बोल भा गए। उसने नवाब साहब से उसकी तारीफ़ की। नवाब साहब खट से वादा कर बैठे कि मैना रेजीडेंटी पहुंचा दी जाएगी। यहीं नहीं। इस के लिए ईजादी क़फ़स के नमूने का छोटा पिंजडा भी बनवा लिया है।

मैं इतनी ही देर में मैना को अपने घर का माल समझने लगा था, मैंने कहा:

- "लेकिन मैना तो, हज़रत ने मेरी बेटी को इनायत की है।"
- ''की है, दोस्त, मगर नवाब ने भी तो गोरे साहब बहादर से वादा किया है।
- ''तो क्या नवाब अपने बादशाह का हुक्म नहीं मानेंगे और इस.....''

"बस बस, आगे कुछ न कहो, काले खां, तुम्हें ख़बर नहीं यहां क्या हो रहा है। मगर ख़ैर, नवाब साहब बादशाह के फ़ैसले पर अपना हुक्म तो क्या चलाऐंगे, अलबत्ता वह मैना को तुम से मोल ज़रूर ले लेंगे, वह भी मुंह मांगें दामों। अच्छा ठीक है, बादशाही तोहफ़े इसी लिए होते हैं कि आदमी उन्हें बेच बाच के पैसे बना

بافي من تو بادشاه كو طال موكاين

" لمال ہوان کے دھنوں کو" میں نے کہا،" نواب صاحب خرید کا ڈول ڈالیس کے تو کہلادوں گا میری بٹی رامنی نہیں، اس نے بینا کو بہن بنایا ہے۔"

"اور نواب صاحب چپ ہو کر بیٹھ جا کیں۔" داروغد فوراً بولے،" کہاں رہے ہو بھائی امچھا اب جوہم کہتے ہیں ذرا دھیان سے سنو۔ چھوٹے میاں یاد ہیں؟"

م كون محموف ميال"-

" امال وی جن کے پاس تصوریں اتارنے والاولائی بکسا ہے۔ نام لوجمی ہمیں تو عرفیت یاد رہتی ہے۔"

"ا چھا وہ چھوٹے میاں؟ دارونہ احماعلی خال، 'میں نے کہا، ' اٹھیں بھول جاؤں گا؟ حسین آباد مبارک میں کام کر چکا ہوں۔'

" بس تو اگر بیناتممارے پاس پہنچ گئی تو وہ تممارے کمر آئیں گے۔ جو وہ کہیں وی کرنا۔ ذرا اس میں خلاف نہ ہو۔ اور دیکھو، پریشان نہ ہونا، تممارا بھلائی بھلا ہوگا۔ امپھا ہم چلے۔ باتی چھوٹے میاں بتائیں گے۔''

''داروف صاحب، کچھ تو بتاتے جائے'' میں نے کہا،'' جھے ابھی ہول ہورہی ہے۔'' تو سنو کالے خال، ہم نہیں چاہیے کہ بادشاہی پرندہ رزیڈنی میں جائے۔تم چاہیے ہو؟'' ''زندگی بحرنہیں۔''

" جاؤبس چين سے بيمور"

داروف رخصت ہوئے تو میں گھر میں آیا۔ طاؤس چین والے تھے کے بعد آج کہلی بارش نے اپنی فلک آرا کوفور سے دیکھا۔ وہ بہت جنک کی تھی۔ میں مجھ کیا اپنی مینا کے لیے ہٹرک ربی ہے لیکن اس کا نام لیتے ڈرتی ہے۔ جی چاہا اسے ابھی بنادوں کے تماری مینا تمارے پاس آربی ہے۔ لیکن ابھی جھے خودی تھیک ٹھیک کھونیس معلوم تھا، اس کو کیا بناتا، بس اے کورش لیے دریتک ٹہلی رہا۔

داروغہ نی بخش کا خیال سی تھا۔ دوسرے بی دن سویرے سویرے شابی چوبدار اور دوسرکاری المکار میرے دروازے پرآموجود ہوئے۔ داروغہ خود بھی ان

ले। लेकिन इतना याद रखो काले खां, मैना अगर रेजीडेंटी पहुंच गई तो बादशाह को मलाल होगा।

"मलाल हो उनके दुश्मनों को," मैंने कहा, "नवाब साहब ख़रीद का डोल डालेंगे तो कहला दूंगा मेरी बेटी राजी नहीं, उस ने मैना को बहन बनाया है।

"और नवाब साहब चुप होके बैठ जाएं।" दारोग़ा फ़ौरन बोले, "कहां रहते हो भाई? अच्छा अब जो हम कह रहे हैं, जारा ध्यान से सुनो। छोटे मियां याद हैं?"

''कौन छोटे मियां।''

''अमां वहीं जिनके पास तसवीरें उतारने वाला विलायती बक्सा है। नाम लो भाई, हमें तो उर्फियत ही याद रहती है।''

"अच्छा वह छोटे मियां, दारोग़ा अहमद अली खां," मैंने कहा, "उन्हें भूल जाऊंगा ? हुसैनाबाद मुबारक में काम कर चुका हूं।"

"बस,ं तो अगर मैना तुम्हारे पास पहुंच गई तो वह तुम्हारे घर आएंगे। जो वह कहें वही करना। जरा उसमें ख़िलाफ़ न हो। और देखो परेशान न होना, तुम्हारा भला ही भलाहोगा। अच्छा हम चले। बाक़ी छोटे मियां बताएंगे।"

"दारोगा साहब, कुछ भी तो बताते जाइये," मैं ने कहा, "मुझे अभी हौल हो रही है।""तो सुनो काले खां, हम नहीं चाहते कि बादशाही परिंदा रेजीड़ेंटी में जाए…… तुम चाहते हो?"

"जिन्दगी भर नहीं,"

''जाओ बस, चैन से बैठो।''

दारोग़ा रुख़सत हुए तो मैं घर में आया। ताऊस चमन वाले क्रिस्से के बाद आज पहली बार मैंने अपनी फ़लक आरा को ग़ौर से देखा, वह बहुत झटक गई थी। मैं समझ गया अपनी मैना के लिए हुड़क रही है लेकिन उसका नाम लेते डरती है। जी चाहा, उसे भी बता दूं कि तुम्हारी मैना तुम्हारे पास आ रही है। लेकिन अभी मुझे खुद ही ठीक ठीक नहीं मालूम था, उसको क्या बताता, बस उसे गोद में लिए देर तक टहलता रहा।

दारोग़ा नबीबख्श का ख़्याल सही था। दूसरे ही दिन सबेरे-सबेरे शाही चोबदार और दो सरकारी अहलकार मेरे दरवाजे पर आमौजूद हुए। दारोग़ा खुद भी

سے میری شاخت کر اکے ایک اہل کارنے شاہی تھم نامہ پڑھنا شروع کیا جس کامضمون کچھ اس طرح تھا۔۔۔۔۔

کالے خال ولد بوسف کومعلوم ہو کہ عرض داشت اس کی حضور بیں گذری برگاہ طاؤس چن کی بینا اسی فلک آرا کو چراکر اپنے گھر لے جانا اس کا بدموجب اقرار اس کے ثابت ہے۔ بنابریں اس کو طازمت سلطانی سے برطرف کیا حمیا گرتخواہ اس کی بحال رہے گی۔

مینا ای فلک آرا کوتعلیم دینے کے جلدو میں مینا ندکورہ سماۃ فلک آرا بیکم بنت کا لے خال کو برسبیل انعام عطا ہوئی۔ ونیز خزانہ عامرہ سے میناندکورہ کے دانے پانی کا خرج ایک اشرفی ماہانہ مقرر ہوا۔

و نیز کالے خال ولد بوسف خال کومعلوم ہو کہ چوری اس محر میں کرتے ہیں، جہال ما کنے سے ماتا نہ ہو۔

اس آخری فقرے نے جھے پانی پانی کر دیا۔ سر جھا کر رہ گیا۔ استے جس دوسرے اہل کار نے سرخ ہانات کے فلاف سے ڈھکا ہوا بجراچو بدار کے ہاتھ سے لے کر میرے ہاتھ جس دیا۔ ایک چھوٹی کی تھیلی کھول کر جھے دی اور اس کے اندر کی ہارہ اشر فیاں میرے ہاتھ جس گوا کیں۔ بتایا سے بینا کا سال بحرکا خرج ہے اور رسیدنولی کی مختصر کا دروائی کے بعد جھے مہارک ہاو دی، دارونہ نی بخش نے بھی مہارک باو دی مجر چو بدار سے کہا:

"اجهاميال بندے على جارا كام ختم بوا؟"

" کام ہمارا بھی ختم ہوا" اس نے جواب دیا" کیوں دارونے صاحب ساتھ نہ چلیے گا؟" " نہیں بھائی سوچتے ہیں حسین آباد مبارک میں حاضری وے آئیں۔"

" بال بال، ضرور جائيے" بندے على فے بوے تپاک سے کہا،" ہمارے ليے بھى دعا كر ديجے كائے"

" لو بي بھي كہنے كى بات ہے؟"

داروغ نے میری طرف دیکھا اور سر کے بلکے اشارے سے پوچھا یاد ہے؟ میں نے بھی آہتہ سے سر بلا دیا کہ یاد ہے۔

उनके साथ थे, उन से मेरी शनाख़त⁽¹⁾ कराके एक अहलकार⁽²⁾ ने शाही हुक्म नामा पढ़ना शुरू किया, जिसका मजमून कुछ इस तरह था।

काले खां बल्द यूसुफ़ खां को मालूम हो कि अर्ज दाश्त उस की हुजूर में गुजरी।

हर गाह ताऊस चमन की मैना इसमी फ्रलक आरा को चुरा कर अपने घर ले जाना उसका बमुजिब इक्नरार⁽³⁾ इसके साबित है। विनाबरी उस की मुलाजमते सुलतानी से बर-तरफ⁽⁴⁾ किया गया मगर तनख्वाह उसकी बहाल रहेगी।

मैना इसमी फलक आरा को तालीम देने के जिल्दू में मैना मजक्र्य⁽⁵⁾ मुसम्मात⁽⁶⁾ फ़लक आरा बेगम बिन्त काले खां को बरसबील⁽⁷⁾ इनाम अता हुई। य नीज ख़जानाए-आमिरा⁽⁸⁾ से मैना मजक्र्य के दाने पानी का ख़र्च एक अशरफी माहाना मुकर्रर⁽⁹⁾ हुआ।

व नीज⁽¹⁰⁾ काले खां वल्द यूसूफ़ खां को मालूम हो कि चोरी उस घर में करते हैं जहां मांगे से मिलता न हो।

इस आख़री फ़िकरे ने मुझे पानी पानी कर दिया। सर झुका कर रह गया। इतने में दूसरे अहलकार ने सुर्ख़ बानात के ग़िलाफ से ढका हुआ पिंजड़ा चोबदार के हाथ से ले कर मेरे हाथ में दिया। फिर कमर से एक छोटी सी थैली खोल कर मुझे दी और उसके अंदर की बारह अशरिफयां मेरे हाथ में गिनवाई। बताया यह मैना का साल भर का ख़र्च है और रसीद नवीसी⁽¹¹⁾ की मुख्तसर कार्रवाई के बाद मुझे मुबारकबाद दी। दारोग़ा नबी बख़्श ने भी मुबारकबाद दी, फिर चोबदार से कहा:

- ''अच्छा मियां बंदे अली, हमारा काम ख़त्प हुआ ?''
- "काम हमारा भी ख़त्म हुआ" उसने जवाब दिया, "क्यों दारोग्रा साहब, साथ न चलियेगा?"
 - ''नहीं भाई, सोचते हैं हुसैनाबाद मुबारक में हाजरी दे आवें''
- ''हां हां, जरूर जाइये'' बंदे अली ने बढ़े तपाक से कहा, ''हमारे लिये भी दुआ कर दीजियेगा।''

^{1.} पहचान 2. कारिंदे 3. स्वीकार करना 4. इटा देना 5. काशित 6. श्रीमती

^{7.} के वास्ते 8. बादशाह का ख़जाना 9. तय होना 10. भी 11. लिखना

ان لوگوں کے جانے کے بعد گھر میں آیا تو مطوم ہوتا تھا خواب میں ہوا پر ممل رہا ہوں۔ فلک آرا بھی سؤری تھی، میں نے پنجرامحن میں رکھ کراس پر سے غلاف بٹا دیا تو آئلسیں چوند ہو گئیں۔

"سونا !" مرے مند سے لکلا اور پنجرے کی خوب صورتی میری نگاموں سے اوجمل ہو گئے۔ بن اندازہ لگانے کی کوشش کرنے لگا کہ اس کی بالت کتنی ہوگی۔ ای وقت جھے فلک بنا کی ہلک ہی آواز سائی دی۔ میری طرف چی چی آتھوں سے دیکے رہی تھی۔ پھر اس نے سر اور پینچ کیا اور پر چلا کر زور سے چہانے گئی۔ بن دوڑتا ہوا کو تحری بن کمیا اور اس کا پرانا پنجرا نکال لایا۔ بینا کو اس پنجرے سے اس پنجرے بن کر کے نئے پنجرے کو کو تحری بس جمیا رہا تھا کہ باہر فلک آراکی آواز سائی دی۔

" ہاری مینا اچھی ہوگئ، ہاری مینا اچھی ہوگئا"

یں کو قری سے ہاہر آیا تو چیک چیک کر جھے بیٹر سالی۔لیکن میں دوسری قکروں میں تھا۔ "اچھا پہلے منے ہاتھ دھولو، کھر اس سے بی تھر کے باتیں کرنا"، میں نے اس سے کہا اور باہر دروازے پر جا کھڑا ہوا۔

مر کے اندر سے بینا کے چچھانے اور فلک آرا کے تعکسلانے کی آوازیں چلی آربی تخصر۔ واقعی ایسامعلوم ہوتا تھا کہ دو بیش بہت دن بعد لی بیں۔ آوازی دم بحر کورکیں، پھر سے سا۔

'' فلک آراشنرادی ہے، دود رہ جلیلی کھاتی ہے۔ کالے خال کی گوری گوری بٹی ہے۔'' پر ہنی، پر تالیوں کی آوازوں میں مجھ نہ سکا کہ یہ فلک آرائتی یا اس کی جنا۔

(7)

دن بحربمی کمریش آتا، بھی دروازے پر جاتا۔ ہر وقت بھے کمان تھا کہ واروفہ اجمد علی خاب آتا، بھی کریش آتا، بھی دروازے پر جاتا۔ ہر وقت بھے کمان تھا کہ بعد محر کمر مر آتے ہی موں کے، لیکن دروازے تک ان کے ساتھ ایک آدی اور تھا، بھی میں آجاتا۔ آخر قریب شام وہ آتے دکھائی دید کان کے ساتھ ایک آدی اور تھا، بھی دیماتی سا معلق بوتا تھا، لیکل اید ہے، مونا کرتا ہے، کمریش جادر لیٹا ہوا اور سر پر بوا

''लो, यह भी कहने की बात है?''

दारोग़ा ने मेरी तरफ़ देखा और सर के हलके इशारे से पूछा, "याद है?" मैंने भी आहिस्ता से सर हिला दिया कि याद है।

उन लोगों के जाने के बाद घर में आया तो मालूम होता था ख़्नाब में हवा पर चल रहा हूं फ़लक आरा भी सो रही थी, मैंने पिंजड़ा सेहन में रख कर उस पर से गिलाफ़ हटाया तो आंखें चाँद हो गईं।

''सोना!'' मेरे मुंह से निकला और पिंजड़े की खूबसूरती मेरी निगाहों से ओझल हो गई। मैं अंदाजा लगाने की कोशिश करने लगा कि उसकी मालियत⁽¹⁾ कितनी होगी। उसी वक़्त मुझे फ़लक मैना की हलकी सी आवाज सुनाई दी। वह मेरी तरफ़ मिची मिची आंखों से देख रही थी। फिर टप्तने सर ऊपर नीचे किया और पर चला कर जोर जोर से चहचहाने लगी। मैं दौड़ता हुआ कोठरी में गया और उसका पुराना पिंजड़ा निकाल लाया। मैना इस पिंजड़े से उस पिंजड़े में करके पिंजड़ा कोठरी में छुपा रहा था कि बाहर फ़लक आरा की आवाज सुनाई दी।

''हमारी मैना अच्छी हो गई, हमारी मैना अच्छी हो गई।''

मैं कोठरी से बाहर आया तो उसने चहक चहक कर मुझे भी यह ख़बर सुनाई। लेकिन मैं दूसरी फ़िक़ों में था।

"अच्छा पहले मुंह हाथ धो लो, फिर इससे जी भर के बार्ते करना" मैं ने उससे कहा और बाहर दरवाजे पर जा खड़ा हुआ।

घर के अंदर से मैना के चहचहाने और फ़लक आरा के खिलखिलाने की आवाजें चली आ रही थीं। वाक़ई ऐसा मालूम होता था कि दो बहनें बहुत दिन बाद मिली हैं। आबाजें दम भर को रुकीं, फिर मैं ने सुना।

''फलक आरा शहजादी है, दूध जलेबी खाती है काले खां की गोरी गोरी बेटी हैं''

फिर हंसी, फिर तालियों की आवाज में मैं समंझ न सका कि यह फलक आरा थी या उसकी मैना।

(7)

दिन भर मैं कभी घर में आता, कभी दरवाजे पर जाता। हर वक्त मुझे गुमान

ساصافہ جس کا شملہ اس نے منع پرای طرح لیبٹ لیا تھا کہ صرف۔ آتھیں اور ناک کا آدھا بانسہ کھلا رو گیا تھا۔ جمعے اس کی آتھوں کی چک سے چھے ڈرسا لگا۔ آتی دیر بی وہ وونوں دروازے پر آپنچ۔ علیک سلیک ہوئی۔ اجماعی خال نے جلدی جلدی میرا حال احوال یو چھا، پھر صافے والے آدمی کے طرف اشارہ کرکے یو چھا:

" انمیں پھانتے ہو کالے خال؟"

"مورت ديمول توشايد پيجان لول"

''نہیں، یول بی پہچانے ہو؟'' انمول نے پوچھا'' آھے بھی کہیں دیکھو کے تو پہچان لوھے؟''

"ان كے دُھائے كو پيجانوں تو بيجانوں۔"

" قاعدے کی کی اورونہ بولے، " اچھا دیکھو، یہ بادشاعی، بینا اور انعامی پنجرے کے خریدار ہیں۔ بولوکیا کہتے ہو۔؟"

مرے منوے صاف افار نکلتے نکلتے رہ کیا۔ میں نے کہا۔

"مي كيا كهون، داروغه صاحب،أآب مخارين."

" اجمالوتم نے ہمیں اپنا مخارکیا۔"

"کیا"

" تومین تمهاری ہم نے اس کے ہاتھ بیگی۔ پنجرابھی بیا۔ پیمے سوچ سمجھ کر مطے کر لیے سے " لیس مے "

داروفد نے کہا، چراس آدی سے بولے" لیجے انمیں بیعاند و بیجے۔"

آدی نے ایک روید میرے ہاتھ میں رکھ دیا اور بولا۔

"کالے فال ولد ہوسف فال، کلام پاک کی حم کھاؤ، کسی کو نہ بتاؤ ہے کہ میناتم نے کتنے کو نیچی فی جم کے البتہ بتاویا۔ مینا کے چیے کوئی پو چھے تو کہدوینا ہم پر حم پر چکی ہے۔"

یں نے حتم کھالی۔ چیوٹے میاں نے جمعہ سے کہا۔ ''حاؤ، ذرا بٹما کو بہلاکر بینااور پنجر الے آو۔''

था कि दारोग़ा अहमद अली खां आते ही होंगे लेकिन दरवाजे पर देर तक उनकी राह देखने के बाद फिर घर में आ जाता। आख़िर करीब शाम वह आते दिखाई दिये। उनके साथ एक आदमी और था, कुछ देहाती सा मालूम होता था, लुंगी बांधे, मोटा कुर्ता पहने, कमर में चादर लिपटा हुआ और सर पर बड़ा सा साफ़ा(1) जिसका शमला(2) उसने मुंह पर इसी तरह लपेट लिया था कि सिर्फ़ आंखें और नाक का आधा बांसा खुला रह गया था। मुझे उसकी आंखों की चमक से कुछ डर सा लगा। इतनी देर में वह दोनों दरवाजे पर आ पहुंचे। अलैक सलैक हुई। अहमद अली खां ने जल्दी जल्दी मेरा हाल अहवाल पूछा, फिर साफ्ने वाले आदमी की तरफ़ इशारा करके पूछा:

- ''इन्हें पहचानते हो काले खां?''
- ''सूरत देखूं तो शायद पहचान लूं!'
- "नहीं, यूंही पहचानते हो?" उन्होंने पूछा, फिर पूछा "आगे कभी कहीं देखोगे तो पहचान लोगे?"
 - ''उनके ढांटे को पहचानूं तो पहचानूं''
- "क़ायदे की कही, दारोग़ा बोले," अच्छा देखो, यह बादशाही, मैना और इनामी पिंजड़े के ख़रीदार हैं, बोलो क्या कहते हो?"

मेरे मुंह से साफ़ इंकार निकलते निकलते रह गया। मैंने कहा:

- ''मैं क्या कहं , दारोग़ा साहब, आप मुख्तार⁽³⁾ हैं।''
- ''अच्छा तो तुमने हमें अपना मुख्तार किया ?''
- ''किया''
- ''तो मैंना तुम्हारी हमने इनके हाथ बेची। पिंजड़ा भी बेचा। पैसे सोंच समझ कर तय कर लेंगे,'' दारोगा ने कहा, फिर उस आदमी से बोले ''लीजिये इन्हें बयाना दीजिये। कसम भी दीजिये''।

आदमी ने एक रुपया मेरे हाथ पर रख दिया और बोला :

"काले खां वल्द यूसुफ़ खां, कलाम पाक की क़सम खाओ किसी को नहीं बताओगे कि मैंना तुमने कितने को बेची। पिंजड़े के पैसे अलबत्ता बता देना। मैना के पैसे कोई पुछे कह देना हम पर क़सम पड चुकी है।"

मैंने क्रसम खा ली है। छोटे मियां ने मुझ से कहा:

^{1.} पगड़ी 2. पगड़ी का पुछल्ला 3. मालिक

میں گھر کے اند ر آیا فلک آرا پنجر سے کے پاس بیٹمی تھی۔ میں نے اس سے کہا ''فلک آرا، بنی اب اس کے بسیرے کا وقت ہے۔ نینزخراب کروگی تو پھر بیارہو جائے گی۔ہم اے ہوا کھلا کے لاتے ہیں۔ ڈاکڑصاحب نے کہا ہے۔''

فلک آرا جلد ی ہے اٹھ کر اند ر دالان میں چل گی۔ میں نے کو تھری سے شاہی پنجرانکلا، فلک مینا کا بھی پنجرا اٹھایا اور ہاہرآ گیا۔ داروغہ چھوٹے میاں خوش ہوکر بولے۔

'' پنجرا بدل دیا، احیما کیا، کالے خال''

انھوں نے دونوں چیزیں آ دی کو دے دیں اور بوجھا۔

" پنجرايايا؟"

'' يايا''، وه بولا۔

ميتا ياكى ؟''

"يائي"

"سدهاریے"

آ دمی دونوں پنجر ہے اٹھائے ہوئے مڑا اورروانہ ہوگیا۔ میں اس کے پیچھے لیکنے ہی کو تھا۔ کہ چھوٹے میاں نے میراہاتھ پکڑلیا۔ میں بولا۔

" داروغه صاحب مينا كے بغير ميري بيني _

" عَم كُماوً ، كالي خال ، عُم كهاؤ" أنحول في كها اورسامن اشاره كيا-

ڈ حانے والا آدی واپس آرہاتھا۔ شاہی پنجر ااس نے کر کے جا در سے میں لپیٹ کر سے رہا تھا ور ہے میں لپیٹ کر سے دیا والا پنجر اچھوٹے میا سر پر رکھ لیا تھا اور بالکل دھو بی معلوم ہورہا تھا۔ قریب آکر اس نے بینا والا پنجر اچھوٹے میا سے ہاتھ میں دے دیا۔ اور تیز قدموں سے واپس چلاگیا۔

سورج ڈوب چکا تھا۔ اور چھوٹے میا ل کا چمرہ بجھے ٹھیک سے نظر نہیں آر ہاتھا۔ انھوں نے پنجرا میرے ہاتھ میں دے دیا۔ مجھے کچھ بے چینی کی موری تھی۔ وہ بولے۔

" فیربی فیر ہے۔، کالے خال، بہ شرط مسندے مسندے ہات کر و، نہ آپ غصے میں آؤند وسرے کو غصہ دلاؤ۔ اور بھائی آج سورے سے نہ سوطانا۔ "

"سورے سے" میں نے کہا،" آج نیند کس کو آتی ہے۔ واروغہ صاحب۔"

''जाओ, जरा बिटिया को बहला कर मैंना और पिंजड़ा ले आओ।'' मैं घर के अंदर आया। फ़लक आरा पिंजड़े के पास बैठी हुई थी। मैं ने उससे कहा:

"फ़लक आरा, बेटी अब इसके बसेरे का वक़्त है। नींद ख़राब करोगी तो बीमार हो जायेगी। हम इसे हवा खिला कर लाते हैं। डाक्टर साहब ने कहा है।"

फ़लक आरा जल्दी से उठ कर अंदर दालान में चली गई। मैंने कोठरी से शाही पिंजड़ा निकाला, फ़लक मैना का भी पिंजड़ा उठाया और बाहर आ गया। दारोग़ा छोटे मियां खुश हो कर बोले:

- ''पिंजड़ा बदल दिया ? अच्छा किया, काले खां। '' उन्होंने दोनों चीजें आदमी को दे दीं और पूछा:
- ''पिंजड़ा पाया ?''
- ''पाया,'' वह बोला:
- ''मैना पाई ?''
- ''पाई''
- ''सिधारिये''

आदमी दोनों पिंजड़े उठाये हुये मुड़ा और रवाना हो गया। मैं उसके पीछे लपकने ही को था कि छोटे मियां ने मेरा हाथ पकड लिया। मैं बोला:

- ''दारोग़ा साहब मैना के बग़ैर मेरी बेटी''
- ''ग़म खाओ, काले खां, ग़म खाओ,'' उन्होंने कहा और सामने इशारा किया।

ढांटे वाला आदमी वापस आ रहा था। शाही पिंजड़ा उसने कमर के चादर में लपेट कर सर पर रख लिया था और बिल्कुल धोबी मालूम हो रहा था क़रीब आकर उसने मैना वाला पिंजड़ा छोटे मियां के हाथ में दे दिया और तेज क़दमों से वापस चला गया। सूरज डूब चुका था और छोटे मियां का चेहरा मुझे ठीक से नज़र नहीं आ रहा था। उन्हों ने पिंजड़ा मेरे हाथ में दे दिया। मुझे कुछ बेचैनी सी हो रही थी, वह बोले:

"ख़ैर ही ख़ैर है, काले खां, बशर्ते ठंडे ठंडे बात करो, न आप ग़ुस्से में आओ न दूसरे को ग़ुस्सा दिलाओ। और भाई आज सबेरे से न सो जाना।"

''ارے بھائی، کہہ جودیا تمھاری خیر ہے۔ بس شنڈے رہناپر ضرور ہے۔' وہ داپس مجے۔ میں پنجر الیے گھر میں آیا۔ اسے سحن کی آگئی میں ٹا تکتے میں نے کن آکھیوں سے دیکھا۔ فلک آرالان کے تھیے کی اوٹ سے جھا تک رہی تھی۔ میں نے جا کر اسے تخت پرلادیا۔ میناکی با تیں کرتے کرتے وہ جلدی ہی سوگی۔ میں اسے پھھ اڑھانے کے لیے اٹھا تھا کہ داروغہ نی بخش نے دھیرے سے دروازہ تھیتھیایا۔

''سب انتظام ہوگیا۔'' انھوں نے کہا،'' کچھ کہونیس، بس چلے چلو۔ بیٹااور اس ک بینا کو لے لوگھر میں کوئی اور تونہیں ہے۔''

"كوكى نبيس،" من نے كها مجھے ياد آھيا۔" بس جعراتى كى امال ہيں۔"

'' بیکون ہیں'' خیرانھیں بھی لو، ڈولی ساتھ لایا ہوں، اور ذراجلدی کرو کالے خال۔'' اور داروغہ صاحب کھر کاسامان ؟''

" تم تو البحى والهل آؤ ك_ بس بينا اور وهكس كى امال بيل ان كا سامان اللهاؤ ايك دوعدد جائي أين بحى ركه لوء"

(8)

حسین آبا و میں ست کھنڈے کے پیچے زکلوں کے ایک قطع کے نشیب ہیں چھوٹا سا محمطیٰ شاہی مکان تھا۔ وہاں ہم لوگ اترے۔ صاف ستھری جگہ تھی۔ جھاڑوولی ہوئی۔ لوثوں کھڑوں میں تازہ پانی مجراہوا، والان چوکی پر کٹو ل جل رہاتھا۔ فلک آراسوری تھی۔ میں نے اسے ایک پانگڑی پر لٹاکر مینا کا پنجراسر ہانے ٹا تک دیا۔ سامان رکھے دھرنے میں مجھ دروازہ درنیس کی۔ داروغہ میں اتا رکر کہیں چلے گئے تھے۔ ذرادیر میں وا پس آئے۔ جھے دروازہ پر لایا۔ کمرے ایک تھیلی کھول کر جھے دی اور ہولے۔

'' پنجرا بک گیا۔ رقم مجھوٹے میاں کی تحویل میں ہے۔ اوپر کے خریج کے واسطے یہ سورویے گنو۔ یا کھو پوری رقم انجی ولوادوں؟''

"د نہیں داروغہ صاحب، میں گھیراکر بولا، " میراتو اتنی علی جاندی د کھ کر دم الثا جائی۔

''सवेरे से'' मैंने कहा, ''आज नींद किसको आती है, दारोग़ा साहब।'' ''अरे भाई, कह जो दिया तम्हारी खैर है। बस ठंडे रहना पर ज़रूर है।''

वह वापस गये । मैं पिंजड़ा लिये घर में आया। उसे सेहन की अलगनी में टांगते टांगते मैंने कंखियों से देखा। फलक आरा दालान के खम्बे की ओट से झांक रही थी, मैंने जाकर उसे तख़्त पर लिटा दिया। मैना की बार्ते करते करते वह जल्दी ही सो गई। मैं उसे कुछ उढ़ाने के लिये उठा था कि दारोग़ा नबी बख़्श ने धीरे से दरवाज़ा थपथपाया।

''सब इन्तज़ाम हो गया'' उन्होंने कहा, ''कुछ कहो नहीं, बस चले चलो। बिटिया और उसकी मैना को ले लो। घर में कोई और तो नहीं है?''

''कोई नहीं है,'' मैंने कहा, मुझे याद आ गया, ''बस जुमेराती की अम्मां ।''

''यह कौन है ? ख़ैर, उन्हें भी ले लो, डोली साथ लाया हूं, और जरा जल्दी करो काले खां।''

''और दारोग़ा साहब, घर का सामान?''

''तुम तो अभी वापस आओगे। बस बिटिया, और वह किसकी अम्मां हैं, उनका सामान उठाओ। एक दो अदद चाहे अपने भी रख लो।''

(8)

हुसैनाबाद में सत खंडे के पीछे नरकूलों के एक कते⁽¹⁾ के नशेब⁽²⁾ में छोटा सा मुहम्मद अली शाही मकान था। वहां हम लोग उतरे । साफ़ सुथरी जगह थी। झाड़ू दिली हुई, लोटों घड़ों में ताजा पानी भरा हुआ, दालान में चौकी पर कंवल जल रहा था। फ़लक आरा सो रही थी। मैंने उसे एक पलंगड़ी पर लिटा कर मैंना का पिंजड़ा सरहाने टांग दिया। सामान रखने धग्ने में कुछ देर नहीं लगी। दारोग़ा हमें उतार कर कहीं चले गये। जरा देर में वापस आए। मुझे दरवाजे पर लाया। कमर से एक थैली खोल कर मुझे दी और बोले:

"पिजड़ा बिक गया, रक्तम छोटे मियां की तहवील⁽³⁾ में है। ऊपर के खर्चे के वास्ते यह सौ रूपये गिनो। या कहो पूरी रक्तम अभी दिलवा दं?"

''नहीं दारोग़ा साहब'' मैं घबरा कर बोला, ''मेरा तो इतनी ही चांदी देख कर दम उल्य जा रहा है''। दारोग़ा हंसने लगे फिर बोले

1. दुकड़े 2. ढलान 3. कब्ज़े में

داروف بنے لگے پھر ہولے:

" اور دانے یانی کی اشر فیوں کو بھول مکتے؟"

میں واقعی بھول میا تھا۔ بلکہ اسوقت مجھ کو یہ یادنہیں آرہا تھا۔ کہ میں نے اشرفیاں کیا کیں۔ داروغہ نے میری سرائیمگی دیکھی تو او چھنے گئے۔

"كيا ہوگيا بھائى"

ای وقت مجھے یا و آگیا۔ دوڑتا ہوامکان میں گیا۔ ایک بقچہ کھولاشاہی پنجرے کے غلاف میں لیٹی ہوئی اشرفیاں اٹھا کیں ادر باہر آگر داروغہ کی طرف بڑھادیں۔

'' داروغہ صاحب میں انھیں کہاں رکھوں گا۔؟'' میں نے کہا'' ان کو اسپے تحویل میں لیجے، خواہ چھوٹے میاں کے پاس رکھ دیجے۔''

" اوروں پراتنا اغتبار نہ کیا کرو، کالے خال، ' انھوں نے کہا۔

" شرمندہ ند سیجیے دارونہ صاحب میں نے کہا آپ لوگ کوئی اور ہیں۔"

" شاباش ہے تم کو" دارونہ نے کہا اور اشرفیاں کربند میں رکھ لیں۔ پھر بولے اچھا کھانا آتا ہوگا۔ کھائی کر اپنے مکان کو سدھارو، رات کو وجیں رہا کر و دن کا شمعیں افتایار ہے۔ حضورعالم کے آدمی اگر آئیس تو دل جمعی کے ساتھ ان سے بات کرنا اور دیکھو چھوٹے میاں کانام نہ آنے پائے وہ تو کہتے جیں۔ مقرر آئے، گرئے ول آدمی جیں۔ نیکن خواہی نخواہی کا تہور دکھانے سے فائدہ ؟ تم خیال رکھنا۔ شمجھووہ تمھارے گھر آئے ہی نہیں تھے۔ اجھاللہ حافظ

زیادہ رات نہیں گئی تھی کہ میں اپنے مکا ن پر پہنچ کیا۔ فلک آرا کے بغیر اچھا نہیں معلوم ہورہاتھا۔ بستر پر پڑا کر وٹیں بداتارہا۔ دل بول رہاتھا، کچھ ہونے والا ہے۔ آخر مجھ سے لیٹانہ گیا۔ اٹھ کرمکان سے باہرنگل آیا۔ دروازے کے سامنے ٹیلنے لگا۔

رات تھوڑی ادر گئی تو میں نے دیکھا دوجلتی ہوئی مطلعیں میر ے مکان کی طرف برد مربی ہیں۔ میں تیزی سے گھر میں داخل ہوااور دروازہ اندر سے بند کر کے بستر پر جالیٹا ذرا در میں دستک ہوئی۔

معلمی سے علادہ چارادر تھے۔ انھوں نے میرا نام دغیرہ دریافت کیا، رو کھے پن

''और दाने पानी की अशरिफयों को भूल गये''?

में वाक़ई भूल गया था बल्कि उस वक्त मुझ को यह याद नहीं आ रहा था कि मैंने अशर्राफयां क्या कीं ? दारोग़ा ने मेरी सरासीमगी⁽¹⁾ देखी तो पूछने लगे:

''क्या हो गया भाई ?''

उसी वक्त मुझे याद आ गया। दौड़ता हुआ मकान में गया, एक बक्चा खोला, शाही पिंजड़े के गिलाफ में लिपटी हुई अशरिफयां उठाईं और बाहर आकर दारोग़ा की तरफ़ बढ़ा दीं।

''दारोगा साहब मैं इन्हें कहां रखूंगा ?'' मैंने कहा ''इनको अपनी तहवील में लीजिये, खाह छोटे मियां के पास रखा दीजिये।''

'' औरों पर इतना एतबार न किया करो, काले खां'' उन्होंने कहा।

"शर्मिन्दा न कीजिये, दारोग़ा साहब" मैंने कहा "आप लोग कोई और हैं?"

''शाबारा है तुमको'' दारोग़ा ने कहा और अशरिफयां कमर बन्द में रख लीं, फिर बोले ''अच्छा खाना आता होगा, खा पी कर अपने मकान को सिधारो, रात को वहीं रहा करो, दिन का तुम्हें इिख्तियार है। हुजूरे आलम के आदमी अगर आएं तो दिल जमई के साथ उनसे बात करना, और देखों छोटे मियां का नाम न आने पाये। बह तो कहते हैं मुकर्रर आये, बिगाइं दिल आदमी हैं, लेकिन ख़ाही-नख़ाही तेवर दिखाने से फ़ायदा? तुम ख्याल रखना, समझों वह तुम्हारे घर आए ही नहीं थे। अच्छा, अल्लाह हाफिज!'।

ज़्यादा रात नहीं गई थी कि मैं अपने मकान पर पहुंच गया। फ़लक आरा के बग़ैर अच्छा नहीं मालूम हो रहा था। बिस्तर पर पड़ा करवटें बदलता रहा था। दिल बोल रहा था कुछ होने वाला है। आख़िर मुझ से लेटा न गया उठ कर मकान से बाहर निकल आया। दरवाज़े के सामने टहलने लगा।

रात थोड़ी और गई तो मैंने देखा दो जलती हुई मशालें मेरे मकान की तरफ़ बढ़ रही हैं, मैं तेज़ी से घर में दाख़िल हुआ और दरवाज़ा अन्दर से बन्द करके विस्तर पर जा लेटा। जरा देर में दस्तक हुई।

मशालिचयों के अलावा चार और थे। उन्होंने मेरा नाम वग़ैरा दरयाप्रत⁽³⁾ किया, रूखे पन से शाही इनाम की मुबारकबाद दी, फिर मैना को पूछा कहां है?

1. डर 2. अनचाहे 3. मालूम

ے شابی انعام کی مبار کہادی۔ پھر بینا کو بو چھا کہال ہے۔

" بك كني" من نے كہا۔

" كِي مَنى " أيك في جرت سے يوجيا"، آج كآج ؟"

" میں فقیرآ دی، بادشاہی برندے کو گھر میں کہاں رکھتا؟"

اس کے بعد ان لوگوں نے سوالوں کی بوجمار کر دی۔مشعلوں کی روشی سیدھی میرے منے پر پردری تھی۔ اور منے اور من بحال رکھے۔ اور مرسوال کافوراً جواب دیا۔

"کس نے خریدی؟"

" معلوم نبیں، وہ چبرہ چمپائے ہوئے تھا۔"

'' د يکمو مے تو پيچان لو مے''

" نہیں، وہ چبرہ چھپائے ہوئے تھا۔"

" کتنے میں پیی"

" نہیں بتاسکتا، اس نے قتم دے دی ہے۔"

" کیول"

''وہ جائے''

'' مجوئے میاں آئے تھے''

" كون سے جموفے ميال"

اس کے بعد کچھ در خاموشی رہی پھر ہو چھا کیا

" تومينا بك مئ"

" بك عن

" پیے کیا کیے ؟" ایک نے بوچھا "ہم مدارالدولہ بہادر کے آدمی ہیں۔ ذرا سوچ

سمجه کے بات کرنا پیے کیا کیے کالے خال'

"ابحى صرف بيعاندلياب-"

در کتنا؟"

- ''बिक गई'' मैंने कहा
- ''बिक गई'' एक ने हैरत से पूछा, ''आज के आज''?
- ''मैं फक़ीर आदमी, बादशाही परिंदे को घर में कहां रखता ? ''

उसके बाद उन लोगों ने सवालों की बौछार कर दी। मशालों की रौशनी सीधे मेरे मुंह पर पड़ रही थी और मेरा डर बढ़ता जा रहा था, लेकिन मैंने अपने हवास बहाल रखे और हर सवाल का फ़ौरन जवाब दिया।

- ''किसने ख़रीदी? ''
- ''मालूम नहीं, वह चेहरा छुपाए हुए था''
- ''देखोगे तो पहचान लोगे ?''
- ''नहीं, वह चेहरा छुपाए हुए था''
- "कितने में बेची?"
- "नहीं बता सकता, उसने क़सम दे दी है"
- ''क्यों ?''
- ''वह जाने''
- ''छोटे मियां आए थे ?''
- ''कौन से छोटे मियां ?''

उसके बाद कुछ देर ख़ामोशी रही, फिर पूछा गया:

- ''तो मैना बिक गई?''
- ''बिकगई''
- "पैसे क्या किये?" एक ने पूछा "हम मदारुद दौला बहादुर के आदमी हैं, जरा सोच समझ के बात करना। पैसे क्या किये, काले खां?"
 - ''अभी सिर्फ़ बयाना लिया है।''
 - ''कितना?''
 - ''एक रुपया'' मेरे मुंह से निकल गया।

फिर मुझे पसीने खूटने लगे। कौन मान सकता था कि मैंने सिर्फ़ एक रूपया बयाना लेकर सोने का पिंजड़ा और बादशाही परिंदा किसी अंजाने आदमी के हाथ में पकड़ा दिया होगा। उसी वक्त किसी ने कड़क कर कहा:

^{&#}x27;'काले खां! सोच समझ कर बात करो''

" ایک روپیا میرے من سے نکل گیا۔

پر جھے پینے چھوٹے گئے۔ کون مان سکتاتھا کہ میں نے صرف ایک روپ یہ بیعانہ لے کرسونے کا پنجر ااور بادشاہی پرند وکسی انجانے آدی کے ہاتھ میں پکڑادیا ہوگا۔ ای وقت کسی نے کڑک کر کہا۔

" كالے خال اسوج سمجھ كربات كرو"

الی آوازشی کے گلی کے کئی گھروں سے آدی باہرنکل آئے۔ میں خاموش کھڑاتھا۔ آگے والے مشعلی نے اپی مشعل اس ہاتھ سے اس ہاتھ میں لی۔مشعل کا شعلہ لبرایا اور بولنے والے کے مند پر روشن پڑی نوجوا ن آدمی تھا۔ نوجوان کیا، لڑکا کہنا جا ہے۔ پوری موجھیں بھی نہیں نکلی تھیں۔صورت اچھی تھی اس نے پھرکڑک کرکہا۔

"كالے خال، تم اس آدى كونيس بيجائے ؟"

اجا مك ميرا در مواموكيار

" چلیے بیچائے ہیں۔" میں نے کہا" مرنہیں بتاتے آپ بوچھنے والے کون؟"
وہ لوگ کھ دیرتک خاموش کھڑے جمعے گھورتے رہے۔ پھرسب ایک ساتھ مڑے
اور واپس چلے گئے محلے والے بڑھ کرمیرے قریب آگئے بوچھنے لگے" کیا ہوا۔ کیا ہوا۔"
دیمی نہیں " میں ایس میں ایس سے سے ایک ایس ایس میں میں ایس میں

" کونیں" میں نے کہا" براز مانہ آگیا ہے۔"

میں نے گھر کا دردازہ بھی اندر سے بندنیں کیا۔ بستر پر لیٹ کرسوچتا رہا۔

" بات مركم كالے خال" آخر ميں نے خود سے كہا۔

اور چ کہا۔ دوسرے دن سورے جھے گرفآ رکرلیا گیا۔ میرے گھرسے ایجادی تنس کی ایک گڑکا جمنی کثوری برآ مدہوئی تھی۔

میں بھول چکاہوں کہ میں نے قیدخانے میں کئی مت گذاری ہے۔ جھے تو ایسامعلوم ہوتا تھا۔ کہ میری ساری عمرای پنجرے میں گذری جاری ہے۔ قید بوں میں ذیادہ تر تکھنؤ کے اوباش اور اٹھائی گیر ۔ تھے۔ ان سے میر اول نہیں ملا۔ سب سے الگ تھلگ رہتا۔ فلک آرابہت یادا آتی تھی۔ کبھی تو کہیں بالکل قریب سے اس کے ملکھلانے اور فلک مینا کے چہانے کی آوازیں کا ش آ ۔ آلتیں، بڑی بے چینی ہوتی کیکن میسوج کر چھ اطمینان ہوجا تا تھا۔ کہ اپنی مینا کے ساتھ اس کا جی بہلار ہتا ہوگا۔ اور نی پھٹ اور چھوٹے میاں اس

ऐसी आवाज थी कि गली के कई घरों से आदमी बाहर निकल आये । मैं ख़ामोश खड़ा था। आगे वाले मशालची ने अपनी मशाल इस हाथ से उस हाथ में ले ली, मशाल का शोला लहराया और बोलने वाले के मुंह पर रौशनी पड़ी। नौजवान आदमी था। नौजवान क्या, लड़की कहना चाहिये। पूरी मूंछें भी नहीं निकली थीं। सूरत अच्छी थी। उसने फिर कड़क कर कहा:

''काले खां, तुम उस आदमी को नहीं पहचानते ?''

अचानक मेरा डर हवा हो गया।

"चिलिये पहचानते हैं" मैंने कहा "मगर नहीं बताते। आप पूछने वाले कौन?"

वह लोग कुछ देर तक ख़ामोश खड़े घूरते रहे। फिर सब एक साथ मुड़े और वापस चले गये। मुहल्ले वाले बढ़ कर मेरे क़रीब आ गये पूछने लगे क्या हुआ, क्या हुआ।

''कुछ नहीं'' मैंने कहा '' बुरा जमाना आ गया है''

मैंने घर का दरवाजा भी अन्दर से बन्द नहीं किया। बिस्तर पर लेट कर सोचतारहा।

''बात बिगड़ गई, काले खां'' आख़िर मैंने ख़ुद से कहा:

और सच कहा। दूसरे दिन सबेरे मुझे गिरफ़्तार कर लिया गया। मेरे घर से ईजादी क़फ़स की एक गंगा जमनी कटोरी बरआमद⁽¹⁾ हुई थी।

मैं भूल चुका हूं कि मैंने कैद खाने में कितनी मुद्दत गुजारी। मुझे तो ऐसा मालूम होता था कि मेरी सारी उम्र इसी पिंजड़े में गुजरी जा रही है। कैंदियों में ज्यादातर लखनऊ के औबाश⁽²⁾ और उठाई गीरे थे। उनसे मेरा दिल नहीं मिला। सब से अलग थलग रहता। फलक आरा बहुत याद आती थी, कभी कभी तो कहीं बिल्कुल क़रीब से उसके खिलखिलाने और फलक मैना के चहचहाने की आवाज़ें कान में आने लगतीं, बड़ी बेचैनी होती, लेकिन यह सोच कर कुछ इतमिनान हो जाता था कि अपनी मैना के साथ उसका जी बहला रहता होगा। और नबी बखश और छोटे मियां उसकी ख़बर गीरी मुझ से ज्यादा कर रहे होंगे। सब से बढ़ कर पैसे का इतमिनान था। अपनी तनख़ाह तो खैर अब क्या मिलती, लेकिन फलक मैना की माहाना एक अश्रफी और शाही पिंजड़े की क़ीमत मिलाकर मेरे लिये 1 प्राप्त होना 2 आवारा

کی خبر کیری جھے سے زیادہ کررہے ہول گے۔ سب سے بڑھ کر پینے کا اطمینان تھا۔ اپنی تخواہ تو خیراب کیا ملتی، لیکن فلک بینا کی ما ہانہ ایک اشرفی اور شابی پنجر سے کی قیمت ملاکر میر سے لیے اتنی دولت تھی کہ بھی سوچناتو سمجھ میں نہ آتا تھا۔ اسے خرج کس طرح کروں گا۔ پھر سوچنے لگتا کہ اسے خرج کرنے کی نوبت بھی آئے گی۔ یا قیدخانے بی میں گھٹ گھٹ کر مرجاوں گا۔ بڑاتی چاہتا ہے کہ کس طرح پھر ہادشاہ کوعرضی پنجو ادوں ابھی تو میرامقدمہ بی نہیں بنا تھا۔ کچھ پانہیں تھا کہ مقدمہ کب شروع ہوگا۔ اوراس کے بعد آگر قید کی سزا ملے گی تو کتنے دن کی ملے گی۔

لیکن ایک دن کچھ کے سننے بغیر اچاک ہی رہا کردیا تھا۔ مجھے خیا ل ہواکہ شایدداروند نے مثی امیراحمصاحب کو پارلیا، لیکن باہر نگنے لگا تو دیکھا میری طرح اور بھی شاید ہمی قیدی جھوڑ دیے گئے ہیں۔ بڑا شور ہورہا تھا۔ گریس ایک کنارے ہوکر باہر نگل آیا ادر سیدھاست کھنڈے کی طرف چلا۔

کچے دور تو ش اپنی وهن میں نکا چا گیا۔ پھر جھے سب کچے بدلا بدلا معلوم ہونے لگا۔
شہر پر بجیب مردنی کی جھائی ہوئی بھی۔ چوڑے راستوں پر گوروں کے فوتی دیے گشت
کرر ہے تھے۔ اور میں جس گل میں مڑتاس کے دہانے اگریزی فوتی کے دوتین سپائی سے
ہوئے کھڑے نظر آتے تھے۔ گلیوں کے اندرلوگ ٹو لیاں بنائے چیکے چیکے آپس میں باتیں کر
رہے ہیں۔ جھے کھر وہنچنے کی جلدی تھی۔ اس لیے کہیں رکا نہیں لیکن ہر طرف ایک ہی
گفتگوتھی۔ رکے بغیر بھی مجھے معلوم ہوگیا۔ کہ اور چی بادشاہی ختم ہوگی۔ سلطان عالم واجد علی
شاہ کو تخت سے اتارویا میاہے۔ وہ لکھنؤ چھوڑ کر چلے گئے ہیں۔ اور چی کی کومت اگر ہنوں کے
ہاتھ میں آگئی ہے۔ اور اس خوثی میں انھوں نے بہت سے قید یوں کو آزاد کیا ہے۔

ازآ نجملہ میں بھی تھا۔ ایا معلوم ہوا کہ ایک پنجر سے سے نکل کر دوسرے پنجرے میں آگیاہوں تی چا ہالوث کر قید خانے میں چلاجاؤں پھر فلک آرا کا خیال آیا اور میں ست کھنڈے کی سیدھی سڑک پر دوڑنے لگا۔

گر پنچاتو سب کچے پہلے کی طرح نظر آیا۔ فلک آرا پہلے تو مجھ سے پی مینی کھنی رہی پر جلدی سے گود میں بیٹے کر اپنی بینا کے نئے نئے تقے سانے گئی۔

इतनी दौलत थी कि कभी सोचता तो समझ में न आता था, उसे ख़र्च किस तरह करूंगा। फिर सोचने लगता कि उसे खर्च करने की नौबत भी आयेगी या क़ैद खाने ही में घुट घुट कर मर जाउंगा। बड़ा जी चाहता कि किसी तरह फिर बादशाह को अर्जी पहुंचा दूं। अभी तो मेरा मुक़द्दमा ही नहीं बना था। कुछ पता नहीं था कि मुकद्दमा कब शुरू होगा, और उसके बाद अगर क़ैद की सजा मिलेगी तो कितने दिन की मिलेगी।

लेकिन एक दिन कुछ कहे सुने बग़ैर अचानक ही रिहा कर दिया था। मुझे ख़्याल हुआ कि शायद दारोग़ा ने मुन्शी अमीर अहमद साहब को पकड़ लिया, लेकिन बाहर निकलने लगा तो देखा मेरी तरह और भी, शायद सभी, क़ैदी छोड़ दिये गये हैं। बड़ा शोर हो रहा था मगर मैं एक किनारे हो कर बाहर निकल आया और सीधा सतखंडे की तरफ चला।

कुछ दूर तो मैं अपनी धुन में निकला चला गया फिर मुझे सब कुछ बदला बदला मालूम होने लगा। शहर पर अजीब मुर्दनी सी छाई हुई थी। चौड़े रास्तों पर गोरों के फौजी दस्ते गश्त कर रहे थे और मैं जिस गली में मुझ्ता उसके दहाने पर अंग्रेज़ी फौज के दो तीन सिपाही तने हुए खड़े नजर आते थे। गलियों के अन्दर लोग टोलियां बनाए चुपके चुपके आपस में बातें कर रहे हैं। मुझे घर पहुंचने की जल्दी थी इस लिये कहीं रका नहीं। लेकिन हर तरफ़ एक ही गुफ़्तगू थी, रुके बग़ैर भी मुझे मालूम हो गया कि अवध की बादशाही ख़त्म हो गई। सुल्ताने आलम वाजिद अली शाह को तख़्त से उतार दिया गया है, वह लखनऊ छोड़ कर चले गये हैं। अवध की हुकूमत अंग्रेज़ों के हाथ में आ गई है और इस ख़ुशी में उन्होंने बहुत से क़ैदियों को आजाद किया है।

अज आंजुमला⁽¹⁾ मैं भी था। ऐसा मालूम हुआ कि एक पिंजड़े से निकल कर दूसरे पिंजड़े में आ गया हूं। जी चाहा लौट कर क़ैद ख़ाने में चला जाऊं फिर फ़लक आरा का ख़्याल आया और मैं सतखंडे की सीधी सड़क पर दौड़ने लगा। घर पहुंचा तो सब कुछ पहले की तरह नजर आया फ़लक आरा पहले तो मुझ से कुछ खिंची खिंची रही फिर जल्दी गोद में बैठ कर अपनी मैना के नए नए क़िस्से सुनाने लगी।

**

^{1.} उन्ही में

آزادی کے بعد اردو افسانہ کے کی کی

الکھنو میں میر اول نہ لگنا اورایک مہینے کے اندر بنارس میں آرہنا، ستاون کی لڑائی، سلطان عالم کا کلکتے میں قیدہونا، چھوٹے میاں کا اگریزوں سے نکرانا، لکھنو کا جاہ ہو نا، قیصر باغ پر گوروں کا دھاوا کرنا۔ کثیروں میں بند شاہی جانوروں کا شکار کھیلنا، ایک شیرنی کا پنے گورے شکاری کو گھائل کر کے نکل بھا گنا، گوروں کا طیش میں آکر دارونہ نی بخش کو گوگولی مارنا، بیسب دوسرے تھے ہیں۔ اور ان قصوں کے اندر بھی تھے ہیں۔

لیکن طاؤ س چمن کی فلک میناکا قصہ وہیں پرختم ہوجاتا ہے۔ جہال تنظی فلک آرامیری گود میں بیڑھ کر اس کے نئے نئے تھے سانا شروع کرتی ہے۔



लखनऊ में मेरा दिल न लगना और एक महीने के अंदर में बनारस में आ रहना, सत्तावन की लड़ाई, सुल्ताने आलम का कलकतो में क़ैद होना, छोटे मियां का अंग्रेजों से टकराना, लखनऊ का तबाह होना, क़ैसर बाग़ पर गोरों का धावा करना। कटहरों में बन्द शाही जानवरों का शिकार खेलना, एक शेरनी का अपने गोरे शिकारी को घायल करके निकल भागना, गोरों का तैश में आकर दारोग़ा नबी बख़्श को गोली मारना, यह सब दूसरे क़िस्से हैं और इन क़िस्सों के अन्दर भी क़िस्से हैं।

लेकिन ताऊस चमन की फ़लक मैना का क़िस्सा वहीं पर खत्म हो जाता है जहां नन्हीं फ़लक आरा मेरी गोद में बैठ कर उसके नये नये क़िस्से सुनाना शुरू करती है।



ذ کیه مشهدی

یدًّ انہیں مَری

المی کے پتانوا نوا پتا۔ کھڑا رہو بیٹا۔ دلے جھو۔ دلے چھو۔ دلے چھو۔

کمبخت درجنوں کے حساب سے تھے اور ایسا شور مچا رہے تھے جیسے میدان حشر میں کھڑے ہوں۔ خالف ٹیم کا ایک کھلاڑی مارلیا گیا تو اور غل مچا۔ ہو ہوہو۔ نومبر کی خنک ہوا۔ ان ساری آ واز وں کو سیٹے گھر میں داخل ہوئی۔ تو ہے پر اماں کی باریک چپاتی پھول کر غبارہ ہو اٹھی وہ اسے چٹے سے اتارتی ہوئی بڑ بڑا کیں۔ شیر کی چربی کھا رکھی ہے کم بختوں نے۔ سر دی بھی نہیں گتی کہ گھر جا کیں رات ہوگی اور سڑک پر کبڈی کھیل رہے ہیں۔ نہ اماں کوفکر نہ ایا کو۔

صنیہ بی بی بی کر کے ہس پڑی۔ سب کی فکر میں اماں بی دیوانی رہا کرتی ہیں۔ اپنے بچوں کو تو دربے میں مرغیوں کی طرح بند کر رکھا ہے۔ دوسرے بھی ان کا فلند مانہیں۔

کیا تھی تھی لگا رکھی ہے۔ وہ با قاعدہ ناراض ہوگئیں۔ ساگ پڑا ہے تو ڑنے کو۔ آج پھر کھانا کینے میں در ہوگئی۔ صغید نے ساگ کی ڈلید نزد کیک سر کائی۔ چو لیے کی آن کی خوشگوار معلوم ہوری تھی۔

اچا تک جیسے بھونچال آمیا۔ سرمیوں پر بھد بھد کرتی بدا دُور بی سے چلاتی چلی آربی تھی۔ ارے معمور سیمنو رانی ہو۔

صنیہ کو اس سفو سے بنتھے لگتے تھے۔ کتنی بار اس نے بدّ اکا تلفظ سیح کرنے کی کوشش کی تھی۔ مگر کمبخت کے منہ ہے بھی 'ف' مسیح ادا نہ ہوا۔ ویسے تو اس کا بھی مسیح نام و دّیا تھا۔ ، لیکن خود اس کے گھر دالے اسے بدّ ا کہتے تھے۔ اور اس کا مسیح نام لینے دالے تو کیا جانے

ज्किया मशहदी

बिद्दा नहीं मरी

इमली के पता, नवा नवा पता, खड़ा रहो बेटा, दल्ले छू, दल्ले छू, दल्ले छू।

कम्बख़्त दर्जनों के हिसाब से थे और ऐसा शोर मचा रहे थे जैसे मैदाने हश्र में खड़े हों। मुख़ालिफ़ टीम का एक खिलाड़ी मार लिया गया तो और ग़ुल मचा। हू हू हू— नवम्बर की खुनक हवा, उन सारी आवाज़ों को समेटे घर में दाख़िल हुई। तवे पर अम्मां की बारीक चपाती फूल कर गुबारा हो उठी वह उसे चिम्टे से उतारती हुईं बड़बड़ाईं। शेर की चरबी खा रखी है कम्बख़्तों ने। सर्दी भी नहीं लगती कि घर जाएं। रात हो गई और सड़क पर कबड्डी खेल रहे हैं। न अम्मा को फ़िक्क न अब्बा को।

सफ़िया ही-ही-ही कर के हंस पड़ी। सब की फ़िक्र में अम्मां ही दीवानी रहा करती हैं। अपने बच्चों को तो डरबे में मुर्ग़ियों की तरह बन्द कर रखा है। दूसरे भी उनका फ़लसफ़ा मानें।

क्या ठी-ठी लगा रखी है। वह बाक्राएदा नाराज हो गईं। साग पड़ा है तोड़ने को। आज फिर खाना पकने में देर हो गई। सफिया ने साग की डिलया नजदीक सरकाई। चूल्हे की आंच खुश्गवार मालूम हो रही थी।

अचानक जैसे भूंचाल आ गया, सीढ़ियों पर भद भद करती बिद्दा दूर से ही चिल्लाती चली आ रही थी। ''अरे सफ्फ्, सफ्फ् रानी हो-''

सफ़िया को इस सफ़्फू से पतंगे लगते थे। कितनी बार उसने बिद्दा का तलफ़्फ़ुज़⁽¹⁾ सही करने की कोशिश की थी। मगर कम्बख़्त के मुंह से कभी 'फ़ें सही अदा न हुआ। वैसे तो उसका भी सही नाम विद्या था, लेकिन खुद उसके घर

^{1.} उच्चारण

والے بھی محلے میں دو چار ہی تھے۔ جن میں وہ پنڈت بی بھی شامل تھے۔ جنھوں نے اس کا نام کرن کیا تھا، باقی سب کے لیے وہ بداتھی۔ سبھو سبھو کرتی اور صفیہ کا خون جلاتی بدا اب اوپر چڑھ آئی تھی۔ گول مول، مونی، گوری، تجر ہاتھ چوڑیاں اور مانگ میں چوڑا سیندور۔ وہ محض چودہ سال کی تھی۔ صفیہ ہے سال ڈیڑھ سال بڑی۔ بیاہ ہوئے سال تجر بعد چکا تھا۔ اب کی مگن میں تو نا بھی ہو جائے گا۔

"ارے اب کی گھر وندانہ ہے کا ۔۔۔؟" پھولتی سانسوں اور پاکل کی چھما چھم کے درمیان وہ کہدرہی تھی۔ کل دھن تیرس، پرسول دیوالی بس کل ہی سجاتے ہیں۔ صفیہ نے لیج کے جوش اور سرت کو دباتے ہوئے تعکصوں سے امال کی طرف دیکھا اور ہڑ ہڑا ہث میں پنے ہوئے ساگھ کچھ ڈٹھل بھی ملا دیے۔ بدا کو اپنے بڑے اور بیاہے میں پنے ہوئے ساگھ کے ماتھ کچھ ڈٹھل بھی ملا دیے۔ بدا کو اپنے بڑے اور بیاہے ہوئے ہوئے ساگھ کے مرکام میں ادیدا کرنقص نکالتی۔ اس وقت بھی وہ پسر کر بیٹھ گئی۔ اور صفیہ کے چنے ہوئے ساگ میں طے اکا دکا ڈٹھل الگ کرنے گئی۔

"ارے سبگل جائیں گے۔ ایک دورہ بھی کے تو کیا ہوا' صفیہ نے مند لٹکا کر کہا۔ " پڑا تو جائے بکری کے ہاتھ گوڑھون تو کھات ہو۔ مُلا ساگ توڑے کا تریکہ بائے" (گل تو جائیں گ بکری کے ہاتھ پر بھی جوتم کھاتی ہو، مُرساگ توڑنے کا طریقہ بھی کوئی چیز ہے) بدا اکثر صفیہ کو" بکری کے ہاتھ پیر" کھانے کے لیے چڑاتی تھی۔ اے معلوم تھا صفیہ کو یائے کا سائن بہت پہند ہے۔

امال بننے لگیں بیصفیہ تو بال کی پھو ہر ہے۔ آلو تھیلئے بیٹھتی ہے تو موٹے موٹے تھلکے اتار کر آدھے آلو پھینک دیتی ہے۔ ذرا اسے کچھ کھاؤ بدا۔ تم شکھتر بیٹی ہو۔

بدانے شرارت سے کا جل بھری آئیس مٹکا کیں۔منٹوں میں جمپا جمپ ڈلیا بھر ساگ توڑ کر امال کے آگے سر کا دیا۔ پھر اٹھ کھڑی ہوئی۔'' جیتی رہو' امال نے دعا دی۔ بیصفیہ تو ابھی گھنٹوں اتنے سے ساگ میں الجھی رہتی۔صفیہ نے دانت کچکچائے اور دل میں سوچا کہ وہ بدا کا گھروندا ریجنے ہرگز نہیں جائے گی۔ ،لیکن دوسرے دن دروازے پر سیھوکی بکار پڑتے ہی تیرکی طرح اٹھ کر بھاگی۔

چونے سے لیا پُتا دو منزلہ گھر وندا بدائے بڑے سے لب سڑک چبوترے پرسر

वाले उसे बिद्दा कहते थे, और उसका सही नाम लेने वाले तो क्या जानने वाले भी मुहल्ले में दो चार ही थे, जिन में वह पन्डित जी भी शामिल थे, जिन्होंने उस का नामकरण किया था, बाक़ी सब के लिये वह बिद्दा थी। सफ़्फू सफ़्फू करती और सफ़िया का ख़ून जलाती बिद्दा अब ऊपर चढ़ आई थी। गोल मोल, मोटी, गोरी, भर हाथ चूड़ियां और मांग में चौड़ा सेंदूर। वह महज चौदह साल की थी। सफ़िया से साल डेढ़ बरस बड़ी। ब्याह हुए साल भर हो चुका था। अब की लगन में गौना भी हो जायेगा।

"अरे अब की घरौंदा न सजे का-?"

फूलती सांसों और पायल की छमा छम के दरिमयान वह कह रही थी। कल धन तेरस, परसों दीवाली, बस कल ही सजाते हैं। सिफ़या ने लहजे के जोश और मर्सात को दबाते हुए कनिख्यों से अम्मां की तरफ़ देखा और हरबड़ाहट में चुने हुए साग के साथ कुछ डन्छल भी मिला दिये। बिद्दा को अपने बड़े और ब्याह हुए होने का शदीद एहसांस था, सिफ़या के हर काम में अदबदा कर नक्स⁽¹⁾ निकालती। उस वक़्त भी वह पसर कर बैठ गई और सिफया के चुने हुए साग में मिले इक्का दुक्का डन्छल अलग करने लगी।

"अरे सब गल जाएंगे, एक दो रह भी गए तो क्या हुआ"। सिफ़या ने मुंह लटकाकर कहा।

"चुरा तो जाए बकरी के हाथ गौड़ जौन तू खात हो। मुला साग तोड़े का तरीका बाटे" (गल तो जाएंगे। बकरी के हाथ पैर भी जो तुम खाती हो, मगर साग तोड़ने का तरीक़ा भी कोई चीज है) बिद्दा अक्सर सिफ़या को "बकरी के हाथ पैर" खाने के लिये चिढ़ाती थी। उसे मालूम था सिफ़या को पाए का सालन बहुत पसंद है।

अम्मां हंसने लगीं। यह सिफया तो बला की फूहड़ है। आलू छीलने बैठती है तो मोटे मोटे छिलके उतार कर आधे आलू फेंक देती है। जरा इसे कुछ सिखाओ बिद्दा। तुम तो सुघड़ बेटी हो।

बिद्दा ने शरारत से काजल भरी आंखें मटकाईं। मिनटों में झपा झप डलिया भर साग तोड़ कर अम्मां के आगे सरका दिया। फिर उठ कर खड़ी हुई, ''जीती

^{1.} कमी

افھائے کھڑا تھا۔ بڑے اہتمام سے صفیہ نے مختلف کوربوں میں رنگ کی پُویا کھولیں۔ بدا منی کے کھلونوں میں سے ایک تھالی نکال کر بھر تھالی پیڑے لے آئی۔ صفیہ کو پیڑے بہت پہند تھے۔ گر اسے گھروندا رنگنے کے لیے کی رشوت کی ضرورت نہیں تھی۔ ڈرائنگ کا خدا دادشوق تھا اور صلاحیت بھی۔ منٹوں میں دیوی دیوتاؤں کی تصویریں، کمل کا پچول، بلخ پرنگاتا صورج، پیڑ بودے چڑیاں سب کے سب بدا کے گھروندے پر منہ سے بول اٹھے اور ہر سال کی طرح اس سال بھی اس کا گھر وندا محلے کا سب سے شان دار گھروندا ہو گیا۔ جیے میری سے واس نے صفیہ کو لیٹا لیا اور آ کھ مار کر بولی۔ ' دیوالی ہوجائے تب چٹی تکھوانے آئی میری سے والی ہوجائے تب چٹی تکھوانے آئی میری سے ۔ اس کے میں کے ''۔

'سپھو' کے بعد صفیہ کو اس کے اس طرح آنکھ مارنے سے تینے گلتے تھے۔ جڑھ کر بولی۔ کالو سے کیوں نہیں تکھواتیں۔ اب تو وہ ساتویں میں آگیا ہے مزے سے لکھ سکتا ہے۔ اری بے سرم، بھائی سے دلہا کوچٹی تکھوائی جاتی ہے کیا ؟

ریچھی والا معاملہ بڑا ہی گڑ بڑ تھا۔ بدا کو پانچویں جماعت کے بعد اسکول سے اٹھا لیا گیا تھا۔ گھر بیٹی تو جو بڑ ما تھا وہ بھی بھول گئ۔ لڑکا میٹرک پاس تھا اور شوقین ورومانی مزاج۔ بیوی کو بڑے رئیلیے خط لکھتا اور ایسے ہی جوابوں کی امید کرتا۔ بدا کے خطوط میں دسیوں تو غلطیاں ہوتی اور ایک خط لکھنے میں گھنٹوں لگ جاتے، اس لیے وہ پلو کے کھونٹ میں خط باندھے سیدھی صفیہ کے پاس چلی آتی تھی۔ جواب آٹھویں جماعت کی طالبہ تھی اور موتیوں جیسی لکھاوٹ تھی اس کی۔

ہاں یہ بات تو ہے۔ صغید نے خود کو بڑا احتی محسوں کیا۔ بھلا کالو سے کیسے خط تکھوا یا جاسکتا ہے چھوٹا بھائی تھہرا۔ ہاں اسے چڑا یا ضرور جاسکتا ہے۔ کالو۔ بھالو۔ خالو۔

دیوالی کی چشیا اختم ہوتے ہوتے ہی کالو بھالو کے ششاہی امتحان شروع ہتے، اس لیے وہ بیٹا پہاڑے یادکررہا تھا اور دل ہی دل میں سارے ماسروں کے مرنے کی دعا کر رہا تھا۔ گھروندا رکتی صغیہ کے نوک آرٹ پر اس نے کوئی تکتہ چینی بھی نہیں کی تھی۔ اس لیے کالو، بھالو، خالو کا بھی اس نے کوئی نوٹس نہیں لیما جاہا۔

اب کی صفیہ نے ذرا تیز اور زود الرنخ آزا یا۔ کلو مطلو کے دوئی برا۔ کھانست

रहो'' अम्मां ने दुआ दी। यह सिफ़या तो अभी घंटों इतने से साग में उल्झी रहती। सिफ़या ने दांत कचकचाए और दिल में सोचा कि वह बिद्दा का घरौंदा रंगने हरिगज़ नहीं जाएगी, लेकिन दूसरे दिन दरवाजे पर सफ्फू की पुकार पड़ते ही तीर की तरह उठ कर भागी।

चूने से लिपा पुता दो मंजिला घरौँदा बिद्दा के बड़े से लबे सड़क चब्तरे पर सर उठाये खड़ा था। बड़े एहतेमाम से सिफ़या ने मुख़तिलफ़ कटारियों में रंग की पुड़ियां घोलीं। बिद्दा मिट्टी के खिलौनों में से एक थाली निकालकर भर थाली पेड़े ले आई। सिफ़या को पेड़े बहुत पसन्द थे, मगर उसे घरौँदा रंगने के लिए किसी रिश्वत की जरूरत नहीं थी। ड्राइंग का खुदादाद शौक़ था और सलाहीयत भी। मिनटों में देवी देवताओं की तसवीरें, कमल का फूल, बत्तख़, निकलता सूरज, पेड़ पौधे चिड़िया सब के सब बिद्दा के घरौँदे पर मुंह से बोल उठे और हर साल की तरह इस साल भी उस का घरौँदा मुहल्ले का सब से शानदार घरौँदा हो गया। जिये मेरी सफ्फू। उस ने सिफ़या को लिपटा लिया और आंख मार कर बोली ''दीवाली हो जाए तब चिट्टी लिखवाने आऐगे।''

''सफ्फू के बाद सफ़िया को उस के इस तरह आंख मारने से ततय्ये लगते थे। चिढ़कर बोली। कालू से क्यों नहीं लिखवातीं। अब तो वह सातवीं में आ गया है। मजे से लिख सकता है।''

''अरी बे सर्म, भाई से दुल्हा को चिट्टी लिखवाई जाती है क्या—?''

यह चिट्ठी वाला मामला बड़ा ही गड़बड़ था। बिद्दा को पांचवीं जमाअत के बाद स्कूल से उठा लिया गया था। घर बैठी तो जो पढ़ा था वह भी भूल गई। लड़का मैट्रीक पास था और शौक़ीन व रूमानी मिजाज। बीवी को बड़े रंगीले खत लिखता और ऐसे ही जवाबों की उम्मीद करता। बिद्दा के खुतृत में दिसयों तो ग़लतियां होतीं और एक ख़त लिखने में घन्टों लग जाते, इस लिए वह पल्लू के खूंट में ख़त बांधे सीधी सफ़िया के पास चली आती थी। जो अब आठवीं जमाअत की तालेबा थी और मोतियों जैसी लिखावट थी उसकी।

हां यह बात तो है। सिफ़या ने खुद को बड़ा अहमक महसूस किया। भला कालू से कैसे ख़त लिखवाया जा सकता है। छोटा भाई उहरा। हां उसे चिढ़ाया ज़रूर जा सकता है। कालू, भालू, खालू।

چھینکت جیو کرا (کلومٹلو کے دو بکرے۔ کھانس چھینک کے مر میے) کالو کی سات پشتوں میں بھی کبھی کسی نے بکرے نہیں پالے تھے پھر یہ ہے کئی کہبت محلے محلے کے لونڈوں کے منہ ہے تو قابل برداشت تھی۔ لیکن صفیہ کے منہ سے نہیں۔ اٹھارہ کا پہاڑہ بھی اٹھارہ چھکے پر آ کر اٹک گیا تھا۔ اس نے وہیں ہے بیٹھے بیٹھے موٹی می کتا ب اٹھا کرصفیہ پر پھینگی جو سیدھی اس کے سر پر آ کر گری۔ ای وقت ساڑی کے آ ٹچل سے چہرہ رگڑتی کا کی بر آ کر میں۔

"ارے کل مونبے بہتی کھینکآ ہے۔ پڑھنا کیے آئے گا" خالص فیض آبادی اودھی میں وہ چلا کیں۔ "بیتو نہیں ہوا کہ دیدی کا گروندا ہجا تا۔ چھو بے چاری ہجارتی ہے تو اسے تنگ کرتا ہے۔ " وہ بر براتی ہوئی اندر واپس ہوگئیں تو کالو نے صغیہ کی چوٹی اتنی زور سے تھینی کہ وہ چوڑ ہے۔ " رہے گھینی کہ وہ چوڑ ہے۔ ہڑ کمپ کچ گیا۔

جہاں کالور ہے وہاں کوئی بڑ کمپ نہ مجے بھلا۔ صغیہ کی جان جلتی تھی اس کی صورت دکھ کر گر بدا کے گونے کے دن اس پربوا ترس آیا تھا۔ بدا پر ہر دفت مرکھنڈے بیل کی طرح سینگ چلانے والا کالو سبک سبک کر رو رہا تھا۔ پہلی بار صغیہ کو احساس ہوا کہ گندی رگھت اور موئی موثی آتھوں والا عمر میں اس سے دو برس چھوٹا بدلڑکا کبھی ایسا بھی لگ سکتا ہے کہ اس پر بیار آسکے۔ اس نے جاکر اس کے سر پر ہاتھ رکھ دیا۔ گھنے بالوں کا ریشم جیسا کس بہت دن تک جھیلی پر یوں بی رہ گیا تھا۔ تازہ اور نیا اور ایسا بی ایک کمس تازہ رہ گیا تھا۔ تازہ اور نیا اور ایسا بی ایک کس تازہ رہ گیا تھا۔ اس نے صغیہ کی رصغیہ کے سر پر ہاتھ رکھا تھا۔ اس کی آتھیس نم تھیں۔ اکلوتی بہن بڑی شدت سے یاد آئی تھی جو گھر گر بستی میں الجمی تھی اس کی آتھیس نم تھیں۔ اکلوتی بہن بڑی شدت سے یاد آئی تھی جو گھر گر بستی میں الجمی تھی۔ دیوالی کے گھر وندے خواب وخیال ہو گئے تھے۔ اس نہ دکوئی جھڑ نے ذکو تھا نہ تھیس نے جماور کرنے کو۔ وہ با قاعدہ رو بڑا تھا۔

اللی کے پٹا۔ نوا نوا پٹا۔ ایئر اعدیا کے جمو جیٹ کے دلی ہوائی اڈے پراترتے وقت ایئر ہوسٹس کے شتہ اگریزی میں نہ جانے کہاں سے ان دیہاتی بچوں کی آوازی آکر ل گئتھیں۔ بچیس تمیں سال پرانی آوازیں۔ یہ گلی میں اب بھی گوجی ہوں گی۔ بچ یوں می شور مچاتے ہوں گے۔ شج صبح مبح صبح بوڑھے خوانچے والے کی آواز، جاڑوں کی شنڈی نخ ہوا کو

दीवाली की छुट्टियां ख़त्म होते ही कालू भालू के शशमाही (1) इमितहान पुरू पुरू थे। इस लिए वह बैठा पहाड़े याद कर रहा था और दिल ही दिल में सारे मास्टरों के मरने की दुआ कर रहा था। घराँदा रंगती सिफ़या के फ़ोक आर्ट पर उसने कोई नुकता चीनी भी नहीं की थी। इस लिए कालू, भालू, ख़ालू का भी उसने कोई नोटिस नहीं लेना चाहा।

अबकी सिफ़या ने जरा तेज और जूद असर नुसखा आजमाया। कल्लू मटल्लू की दोई बकरा— खांसत छींकत जियो निकरा (कल्लू मटल्लू के दो बकरे, खांस छींककर मर गए) कालू की सात पुश्तों में भी कभी किसी ने बकरे नहीं पाले थे फिर यह बेतुकी कहबत तो मुहल्ले के लाँडों के मुंह से तो क़ाबिले बरदाश्त थीं, लेकिन सिफ़या के मुंह से नहीं। अठारह का पहाड़ा भी अठारह छक्के पर आकर अटक गया था। उस ने वहीं से बैठे बैठे मोटी सी किताबे उठाकर सिफ़या पर फेंकी जो सीधी उस के सर पर आकर गिरी। उसी वक्त साड़ी के आंचल से चेहरा रगड़ती काकी बरआमद हुईं।

"अरे कल मूहे पोथी फेंकता है। पढ़ना कैसे आएगा" ख़ालिस फैजाबादी अवधी में वह चिल्लाई। "यह तो नहीं हुआ कि दीदी का घरौँदा सजाता। सफ्फू बेचारी सजा रही है तो उसे तंग करता है" वह बड़बड़ाती हुई अन्दर वापस हो गई तो कालू ने सिफ़या की चोटी इतनी जोर से खींची कि वह चबूतरे से गिरते गिरते बची। बिद्दा ने कालू को दो झापड़ रसीद किए। हुड़कम्प मच गया जहाँ कालू रहे वहां कोई हुड़कंप न मचे भला। सिफ़या की जान जलती थी उस की सूरत देखकर मगर बिद्दा के गौने के दिन उस पर बड़ा तरस आया था। बिद्दा पर हर वक़्त मरखण्डे बैल की तरह सींग चलाने वाला कालू सुबक सुबक कर रो रहा था। पहली बार सिफ़या को एहसास हुआ के गन्दुमी रंगत और मोटी मोटी आंखों वाला उम्र में उस से दो बरस छोटा यह लड़का कभी ऐसा भी लग सकता है कि उस पर प्यार आ सके। उसने जाकर उसके सर पर हाथ रख दिया घने बालों का रेशम जैसा लम्स बहुत दिन तक हथेली पर यूंही रह गया था। ताजा और नया और ऐसा ही एक लम्स ताजा रह गया था कालू की हथेली पर जब कई बरस बाद उस ने सिफ़या की रुख़सती पर सिफ़या के सर पर हाथ रखा था। उस की आंखें नम थीं।

^{1.} छ: माही

کائتی بچوں کو بستر سے اٹھاتی ہوگ۔ تاجا حلوا۔ مارے کھی کے نبیس کھا یا جائے گا۔ اور محلے کا کوئی بزرگ بنس کر کہتا ہوگا۔ چوٹا کہیں کا۔ ڈالڈا میں حلوا بنا تا ہے او پر سے ذرا ساتھی چپڑ دیتا ہے اور کاکی ڈھیٹ کالوکو اٹھاتے ہوئے چلاتی ہوں گی" جائؤری کے بارے ماں (جاسور کے باڑے میں) اور بدا دیوائی میں گھروندے سجاتی ہوگے۔صفیہ کے بغیر۔

المی کا پا۔ نوا نوا با۔ ولی سے لے کر گھر کے سفر کے دوران ریل گاڑی کی چھک چھک میں بھی کوئی کبڑی کھیلتا رہا۔ کھڑی سے باہر بھا گتے مناظر میں صفیہ کو وہ سے دکھائی دیتے رہے جو برسہا برس سے اس کے اردگردگھوم رہے تھے۔ٹرین نے خاک وطن کو چوما تو اس نے جلدی جلدی گردن لمی کر کے پلیث فارم کے پاس کے گل مہر کے درخت کو و بكنا جابا درخت ومي تها اور بهت برا جمتنار موكيا تها ـ كزرت موئ ماه و سال اس کے ساتھ بھلائی کرتے گزرے تھے۔ ناک اوپر کرتے ہوئے اس نے ہوا کوسونکھا ہوا میں دیوالی کی خوشبو تھی۔شہر کی سر کول پر دودھ جیسی تھیلیس اور بتاشے بھرے بڑے تھے اورمٹی کی سوندهی خوشبو والے دیے۔ ابرک پھرے ہاتھی اور سجریاں۔ ابھی بدا کہیں سے تھال بحرصیس، بتاشے اور مشائی لیے بر آمد ہوگی اور ایک بڑیا بحر پیڑے الگ سے صفیہ کے ہاتھ میں پکڑائے گی اور پھلجریوں کی روشی میں دونوں کے چیرے ایک ساتھ گلنار ہو اٹھیں ہے۔ اس کا دس سالہ بیٹا جو سال بحرکی عمر کے بعد یہاں پھرنہیں آسکا تھا۔ اس کے احماسات سے بے خبر حیرت سے سب مجھ یوں دیکھ رہا تھا، جیسے وہ میوزیم کے ایک موشے میں کمڑا ہو۔ اس کی سمجھ میں اٹیٹن پر لینے آئے ہوئے لوگ بھی نہیں آرہے تھے جو اس کے ماموں ممانی تھے اور گھر کی سیرحیاں چڑھتے وقت صغید کی آتھوں سے گلی آنسوؤں کی جیڑی بھی اس کی عقل سے برے تھی۔ می بغیر کی وجہ کے بوں روئے کیوں جا ری ہیں۔ ایسی بے دقوف تو وہ مجی نہیں تھیں۔

اتے زمانے بعد آپا آئی بھی تو آج کل۔ چموٹی بھادی کہدری تھی۔ خدا کاشکر ہے کہ لڑی کو ساتھ نہیں لائیں۔ اس کا لہد مغید کو بے چین کر گیا۔ وہ جان بوجھ کر تہوار کے زمانے جس آئی ہے۔ ہولی دیوالی دیکھنے کو آٹھیں ترس گئیں۔ مٹی کے کھلونوں کو وہ خواب میں دیکھتی ہے۔ اور رنگ کی کیکاریوں کو اور دیہاتی طرز سے سے گروندے کو جو

इकलौती बहन बड़ी शिद्दत से याद आई थी जो घर गृहस्ती में ऐसी उलझी थी कि बरसों मैके का रुख़ नहीं कर पाती थी। दीवाली के घराँदे ख्वाबों ख्याल हो गए थे। अब न कोई झगड़ने को था न मुहब्बतें निछावर करने को। वह बाक़ाएदा रो पड़ा था।

इमली के पत्ता, नवा नवा पत्ता— एयर इण्डिया के अम्बूजेट के दिल्ली हवाई अड्डे पर उतरते वक्त एयर होस्टेस की शुस्ता⁽¹⁾ अंग्रेजी में न जाने कहां से उन देहाती बच्चों की आवाजों आकर मिल गई थीं। पच्चीस तीस साल पुरानी आवाजों। यह गली में अब भी गूंजती होंगी। बच्चे यूंही शोर मचाते होंगे। सुबह सुबह बूढ़े खान्चे वाले की आवाज, जाड़ों की उण्डी यख हवा को काटती बच्चों को बिस्तर से उदाती होगी— ताजा हलवा— मारे घी के नहीं खाया जाएगा— और मुहल्ले का कोई बुजुर्ग हंस कर कहता होगा। चोट्टा कहीं का। डालडा में हलवा बनाता है अपर से जरा सा घी चुपड़ देता है और काकी ढींट कालू को उदाते हुए चिल्लाती होंगी ''जा सुअरी के बारे मा'' (जा सुवर के बाड़े में) और बिद्दा दीवाली में घराँदे सजाती होगी सफिया के बग़ैर।

इमली के पत्ता— नवा नवा पत्ता। दिल्ली से लेकर घर के सफ़र के दौरान रेल गाड़ी की छक छक में भी कोई कवड़ी खेलता रहा। खिड़की से बाहर भागते मनाजिर में सिफ़या को वह बच्चे दिखाई देते रहे जो बरस हा बरस से उस के इर्र गिर्द घूम रहे थे। ट्रेन ने खाके-वतन (2) का चूमा तो उस ने जल्दी जल्दी गरदन लम्बी करके प्लेटफ़ार्म के यास लगे गुलमोहर के दरख़्त को देखना चाहा— दरख़ा वहीं था और बहुत बड़ा छतनार हो गया था। गुजरते हुए माहोसाल उस के साथ भलाई करते गुजरे थे। नाक कपर करते हुए उस ने हवा को सूंचा। हवा में दीवाली की खुश्बू थी। शहर की सड़कों पर दूध जैसी खीलों और बताशे बिखरे पड़े थे और मिट्टी की सोंधी खुश्बू वाले दीये। अबरक फिरे हाथी और गुजरियां अभी बिद्दा कहीं से थाल भर खीलें, बताशे और मिटाई लिए बरामद होगी और एक पृड़िया भर पेड़े अलग से सिफ़या के हाथ में पकड़ाएगी और फुलझाड़ियों की रैशनी में दोनों के चेहरे एक साथ गुलनार हो उठेंगे। उस का दस साला बेटा जो साल भर की उम्र के बाद यहां फिर नहीं आ सका था। उस के एहसासात से बेखवर हैरत से सब कुछ यूं देख रहा था, जैसे वह म्युजियम के एक गोशे (3) में

^{1.} साफ् सुथरी 2. राष्ट्र भूमि 3. कोने

اتنا خوبصورت ہوا کرتا تھا۔ اور مجت کی مشماس بھری اس سیملی کو جو اس قدر جاہل تھی کہ میاں کو خط نہیں لکھ پاتی تھی۔ وہ آج کل کیوں نہ آئی۔ دیوالی تو ایبا محبت بھرا تہوار ہے روش اور میشما۔ وہ جمجے پر چلی آئی ہے اور چی ہٹا کر باہر دیکھتی ہے۔ وہ سارے پچ سڑک پر بھرے ہوئے ہیں۔ بالکل حقیقی۔ نور محمد میاں کا بحرا یوں ہی جگالی کر رہا ہے۔ کھیریل کے پنچے طاہر میاں کی مشین رواں دواں ہے۔ اور جھوٹے لال تر کاری بچوری کا تاشتہ کر کے تو ند پر ہاتھ بھیرتا ڈکار لے رہا ہے اور شام کو دھن تیرس کی خریداری کرنے داون کے انتظار میں دکا نیس بج رہی ہیں۔ اچا تک سڑک پر زور کا شور بلند ہوتا ہے۔ زور دور کی آوازیں۔ ساتھ میں گالیاں بھی۔ گلی میں بہت سے لوگ اکٹھا ہونے گئے ہیں۔ خور کی آوازیں۔ ساتھ میں گالیاں بھی۔ گلی میں بہت سے لوگ اکٹھا ہونے گئے ہیں۔ چھوٹی بھاوج اندر سے ہڑ بڑوائی ہوئی آئی ہے۔

"كيا بورما بآي ـ ـ - ؟ كيا بوا ـ - ؟"ال كا چره فق ب

پیتہ نہیں۔ بجونہیں آرہا۔ شاید بجھ لوگ اچا تک ہی الز پڑے ہیں۔ خدا خمر کرے۔ یہ ابھی تک نہیں آئے۔ باہر ہی ہیں۔ الطاف آتا ہی ہوگا۔ تم اتی فکر مند کیوں ہو۔ گلی محلے میں لوگ اکثر یوں ہی لڑ پڑتے ہیں۔

آپ کوئیں ہا کیا کہ یہاں کیا احول ہے آئ کل۔ وہ اپنے لیج میں جمنجا ہث دبانے کی کوشش کرتے ہوئے کہتی ہے۔ ای وقت کی نیچ نے آلو بم چوڑا اور وہ گر بحر الحجل پڑی۔ اس کا پندرہ سالہ بیٹا عامر بالکونی میں نکلنا چاہتا ہے تو وہ اسے پیچے تحسیت لیت ہے۔ ''می دیکھنے دیجے۔ ذرا پویش تو معلوم ہوجائے۔ صفیہ کو عامر اس لیح اچا تک بڑا ہوتا معلوم ہوتا ہے۔ بڑا اور سنجیدہ۔ چند منٹوں بعد پورا ماحول جیسے ایک اطمینان کی سانس لیتا ہے۔ پرلی کی میں بے سار کا بڑا بیٹا بہت زیادہ پی آیا تھا اور چھوٹے بھائی پر ہاتھ اٹھا بیٹا تھا۔ پھر کھر کی عورتی بھی آپس میں الجھ کی تھیں۔ صفیہ ہنے گئی۔ ایسے موقعوں پرنور محمد جاچا اپنی داڑھی ہلاتے باہر نکل آیا کرتے تھے۔ اور ڈانٹ ڈپٹ کر کے بھی سمجھا کہا کے معاملہ رفع دفع کرتے ہیں۔

اب دبک کے گریس بیٹ جاتے ہیں۔ بعادی کا لہجد تلخ تھا اور رنجیدہ بھی۔ کون سنتا ب ان پرانے دقیانوس بڈھوں کی جوامن و آشی کی باتیں کرتے اور لڑنے والوں میں مسلح

खड़ा हो।

उस की समझ में स्टेशन पर लेने आए हुए लोग भी नहीं आ रहे थे जो उस के मामू मुमानी थे और घर की सीढ़ियां चढ़ते वक़्त सिफ़या की आंखों से लगी आंसूओं की झड़ी भी उस की अक़्ल से परे थे। मम्मी बग़ैर किसी वजह के यूं रोए क्यों जा रही हैं। ऐसी बेवक़्फ़ तो वह कभी नहीं थीं।

इतने जमाने बाद आपा आई भी तो आजकल। छोटी भावज कह रही थी। खुदा का शुक्र है कि लड़की को साथ नहीं लाई। उस का लहजा सफ़िया को बेचैन कर गया। वह जानबुझ कर त्येहार के जमाने में आई है। होली दीवाली देखने को आंखें तरस गई। मिट्टी के खिलौनों को वह ख्वाब में देखती है और रंग की पिचकारियों को और देहाती तर्ज़ से सजे घराँदे को जो इतना खुबसूरत हुआ करता था और मुहब्बत की मिठास भरी उस सहेली को जो इस क़द्र जाहिल थी कि मियां को खत नहीं लिख पाती थी। वह आजकल क्यों न आती। दीवाली तो ऐसा मुहब्बत भरा त्योहार है। रौशन और मीठा। वह छन्जे पर चली आती है और चिक्र हटाकर बाहर देखती है। वह सारे बच्चे सडक पर बिखरे हुए हैं। बिल्कुल हक़ीक़ी। नुर मुहम्मद मियां का बकरा यूंही जुगाली कर रहा है। खपरेल के नीचे ताहर मियां की मशीन रवां दवां है। और छोटे लाल तरकारी कचौरी का नाश्ता करके तोन्द पर हाथ फेरता डकार ले रहा है। और शाम को धनतेरस की खरीदारी करने वालों के इंतजार में दुकानें सज रही हैं। अचानक सड़क पर जोर का शोर बुलन्द होता है। ज़ोर ज़ोर की आवाज़ें। साथ में गालियां भी। गली में बहुत से लोग इकट्ठा होने लगे हैं। छोटी भावज अन्दर से हड़बड़ाई हुई आती है। ''क्या हो रहा है आपा---? क्या हुआ---?'' उस का चेहरा फ़क़ है।

''पता नहीं, समझ में नहीं आ रहा। शायद कुछ लोग अचानक ही लड़ पड़े हैं।''

खुदा ख़ैर करे। यह अभी तक नहीं आए। बाहर ही हैं। अलताफ आता ही होगा। तुम इतनी फ़िक्रमन्द क्यों हो। गली मुहल्ले में लोग अकसर यूंही लड़ पड़ते हैं।

"आप को नहीं पता क्या कि यहां कैसा माहौल है आजकल। वह अपने लहजे में झुंझलाहट दबाने की कोशिश करते हुए कहती है। उसी वक्त किसी बच्चे ने आलू बम छोड़ा, और वह गज भर उछल पड़ी। उस का पन्द्रह साला बेटा

كرايا كرتے تھے۔ وہ اب آؤٹ ڈیٹیڈ ہیں۔

اورکا کی

کا کی کومرے تین سال ہو گئے۔

صفیہ نے شندی سانس لی گرستی کی گاڑی ڈھوتی۔ کچے کچے بچے بیدا کرتی۔ ان کے شادی بیاہ زیگی اور جاپے نمٹا تی۔ محدود آمدنی کو ربز کی طرح کھینچنے کی کوشش کرتی، اپنی صحت کی طرف سے لا پر وا۔ کا کی اور امال دونوں نہیں رہی تھیں۔ پچیلی بار صفیہ گھر آئی تو تھیں۔ اس کا یہ بیٹا جو ساتھ آیا ہے کوئی سال بھر کا تھا۔ اپنے بدا کے گاؤں سند یہ بجوایا تھا اور وہ دوسرے بی دن چلی آئی تھی۔ کڑھی ہوئی چادر میں اس کا گورا بھر پور جوان چپر ہ چاند کی طرح چک رہا تھا۔ ہم کا جینھ طرح چک رہا تھا۔ ہم کا جینھ لئے۔ ہم تہارموی لاگیں۔

چر پلو میں ہاتھ ڈال کر چاندی کا موٹا سا کڑا اس کے ہاتھ میں پہنا دیا تھا۔ پھر
کاکی آئی تھیں گھٹوں پر ہاتھ دھرے۔ ان کی آنکھوں میں موتیا بند اتر رہا تھا اور جو ژول
میں گھیا۔ میلی دھوتی کے آنچل سے کھول کر مڑا تڑا پانچ روپے کا نوٹ صفیہ کے بیٹے کو دیا
تھا۔ ان کے جانے کے بعد امال نے کہا تھا۔ بڑے لائہ تو گزر گئے۔ للائن کو ان کا بیٹا
زیادہ پسے نہیں دیتا۔ کہتا ہے بوڑھیا بلا وجہ خرچ کرتی رہتی ہے اب ان کے دیے پانچ
رک مجھو۔

یہ کالو بڑا ہو کر ایبا ٹکلا۔ چھوٹاتھا تو اما ل کے بلو سے بندھا بندھا چرتا تھا ملے تو موشالی کروں۔

امال نے شندی سانس لی تمہارے ابا کے بعد کیا میرے پاس بھی مجمی زیادہ پیے ہو پاتے ہیں۔ دو روٹی کھلا کر لاکے سجھتے ہیں کہ مال کو کسی اور چیز کی ضرورت نہیں۔ اب تم آئی ہو بچوں کے ساتھ کیا شمعیں میں خالی ہاتھ بھیج دوں؟ امال اور للا تن کے دکھ اب ایک بی تھے۔

صفیہ کے شوہر ان دنوں دئ جانے کی سوچ رہے تھے۔ ویسے بھی اچھی ملازمت میں تھے۔ اسے کی چیز کی ضرورت نہیں تھی۔لیکن ایبا کہدکر امال کا دل نہیں دکھا تا جا ہتی

आमिर बालकोनी में निकलना चाहता है तो वह उसे पीछे घसीट लेती है ''मम्मी देखने दीजिए। जरा सिचुऐशन तो मालूम हो जाए। सिफ़या को आमिर उस लम्हे अचानक बड़ा होता हुआ मालूम होता है। बड़ा और संजीदा। चन्द मिनटों बाद पूरा माहौल जैसे एक इतमीनान की सांस लेता है। परली गली में बसे सुनार का बड़ा बेटा बहुत ज्यादा पी आया था और छोटे भाई पर हाथ उठा बैठा था। फिर घर की औरतें भी आपस में उलझ गई थीं। सिफ़या हंसने लगी। ऐसे मौक़ों पर नूर मुहम्मद चाचा अपनी दाढ़ी हिलाते बाहर निकल आया करते थे और डांट डपट करके कभी समझा बुझाके मामला रफ़ा दफ़ा करते थे।

अब दुबक कर घर में बैठ जाते हैं। भावज का लहजा तल्ख् था और रंजीदा भी। कौन सुनता है इन पुराने दक्तयानूस बुढ़ों की जो अम्न-ओ-आशती की बातें करते और लड़ने वालों में सुलह कराया करते थे। वह अब आऊट डेटेड हैं।

और काकी---

काकी को मरे तीन साल हो गए। सिफ़या ने ठण्डी सांस ली। गृहस्ती की गाड़ी ढोती। कच्चे पक्के बच्चे पैदा करती। उन के शादी ब्याह ज्चकी और जापे निपटाती महदूद आमदनी को रबर की तरह खींचने की कोशिश करतीं, अपनी सेहत की तरफ़ से लापरवाह। काकी और अम्मां दोनों नहीं रही थीं। पिछली बार सिफ़या घर आई थी तो थीं। उस का यह बेटा जो साथ आया है कोई साल भर का था। उस ने बिद्दा के गांव संदेसा भिजवाया था और वह दूसरे ही दिन चली आई थी। कढ़ी हुई चादर में उस का गोरा भरपूर जवान चेहरा चाँद की तरह चमक रह था। कजरारी आंखें मटका कर उस ने सिफ़या के बेटे से कहा था। हम का चीन्हलीओ! हम तोहार मौसी लागी—फिर पल्लू में हाथ डालकर चाँदी का मोटा सा कड़ा उस के हाथ में पहना दिया था फिर काकी अर्ग्ड थीं घुटनों पर हाथ धरे। उन की आंखों में मोतिया बिन्द उतर रहा था और जोड़ों में गठिया। मैली धोती के आंचल से खोलकर मुड़ातुड़ा पांच रुपया का नोट सिफ़या के बेटे को दिया था। उनके जाने के बाद अम्मा ने कहा था। बड़े लाला तो गुजर गए। ललाइन को उन का बेटा ज्यादा पैसे नहीं देता। कहता है बुढ़िया बिला वजह खर्च करती रहती हैं। अब उन के दिए पांच रुपये तबर्रक (1) समझो।

यह कालू बड़ा होकर ऐसा निकला। छोटा था तो अम्मां के पल्लू से बन्धा बन्धा फिरता था। मिले तो गोशमाली⁽²⁾ करूं।

^{1.} पवित्र प्रसाद 2. कान ऐंद्रना

تقی۔ کی حیلے تراش کراس نے امال کو پانچ سورو بے دینے چاہے تھے کہ رکھ لیں۔ و تت کام آئیں گیاں بٹی سے بیے لوں؟ یہی ذات باتی ہے یہ وقت کام آئیں گیاں بٹی سے بیے لیاں کیا تھا۔ انحوں نے تو یہ خیال بھی جہا ؟ وہ تیری سیلی بدانے بھی ایک بارلا ائن کو ایسے بی ذلیل کیا تھا۔ انحوں نے تو یہ خیال بھی نہیں کیا کہ بیابی ہے اور اولاد والی بھی۔ تکال کر چپل دو لگائے اس کو۔ بیٹا میرا مرابھی اونچا ہے۔ دو چار دس دے کر بی وداع کردوں گی۔ بال پانچ سونہیں دے تی۔ امال کی اور لا ائن کی اقدار بھی ایک بی تھیں۔ صفیہ کی آئیسی نم ہو اٹھیں بدا اس سے تھوڑی بی بوی تھی، لیکن آئی کی مرابیہ کی ایک بی تھیں۔ اس کے تھوڑی بی بیٹین اتن کم عمری میں بیابی گئی تھی کہ صفیہ کی شادی ہونے تک اس کے بیال کئی جی ہو بھی ہو بھی ہوگی ہائیں سرال وہیں ہے بیال کئی جی ہو بھی تھے۔ اب تو وہ نائی دادی بھی ہو بھی ہوگی بائیس سرال وہیں ہے بیا یہ لوگ کہیں اور چلے گئے۔ سندیہ بجوانے پر کیا اب بھی و یہ بی دوڑی آسکے گ۔ بی ماوج سے اس نے پوچھا تو وہ صفیہ کا مندد کیسے گئی ''کون بدا — راجا رام کی بہن ؟'

وہ بھی مرحمیٰ۔ کب کی کا کی کے سامنے ہی مری تھی۔

بدا مرگی۔ یکا کیک کی نے چھونک مار کر سارے شہر کے دیے گل کر دیے۔

راجا رام کی فیملی تو محلے میں ہے نا؟ بہت دیر کی خاموثی کے بعد صفیہ نے رنجیدہ لیج میں پوچھا۔ ہے تو۔ بھاوج کا لیجہ سپاٹ تھا۔ کی سے کہلوا دینا میں آئی ہوئی ہوں۔ کالوضرور آئے گا۔ نہیں آسکا تو میں جاؤں گی۔ بھاوج کوئی جواب نہ دے کر خاموش سے کالوضرور آئے گا۔ نہیں آسکا تو میں جاؤں گی۔ بھاوج کوئی جواب نہ دے کر خاموش سے رات کے کھانے کی تیاریوں میں لگ گئ۔ گہری ہوتی شام میں دھن تیرس کا سیلہ رواں دواں تھا۔ ایک سنا ٹاصفیہ کے اندر انر نے لگا۔ بیکوئی مرنے کی عمرتھی بچاس کو بھی نہیں پہنے دواں تھا۔ ایک سنا ٹاصفیہ کے اندر انر نے لگا۔ بیکوئی مرنے کی عمرتھی بچاس کو بھی نہیں ، بیا تیں سنا نے سے ڈر کروہ عامر اور ریشمال سے باتیں کرنے گئی۔

" تم لوگ پٹانے نہیں لائے

'' پٹاخوں سے مجھے ڈرگٹا ہے پھوچھی'' ریشماں دھیرے سے کہتی ہے۔ سیکسید و موریشہ میں

« بمبي جل مئ تفي*س كي*ا بينا ؟"

سنارا شہر جل میا تھا چوپھی۔ ریشمال کے لیجے میں ایک درد تھا۔ ایک کاٹ اور

अम्मां ने ठण्डी सांस ली। तुम्हारे अब्बा के बाद क्या मेरे पास भी कभी ज्यादा पैसे हो पाते हैं। दो रोटी खिलाकर लड़के समझते हैं कि मां को किसी और चीज की जरूरत ही नहीं। अब तुम आई हो बच्चों के साथ। क्या तुम्हें मैं खाली भेज दूं? अम्मां और ललाइन के दुख अब एक ही थे।

सफ़िया के शौहर उन दिनों दुबई जाने की सोच रहे थे। वैसे भी अच्छी मुलाजमत में थे। उसे किसी चीज की जरुरत नहीं थी। लेकिन ऐसा कह कर अम्मां का दिल नहीं दुखाना चाहती थी। कई हीले तराश कर उस ने अम्मां को पांच सौ रुपये देने चाहे थे कि रख लें। वक्त बे वक्त काम आऐंगे, लेकिन अम्मां रोने लगीं। बेटी से पैसे ले लूं? यही जिल्लत बाक़ी है क्या? वह तेरी सहेली बिद्दा ने भी एक बार ललाइन को ऐसे ही जलील किया था। उन्होंने तो यह ख़्याल भी नहीं किया कि ब्याही है और औलाद वाली भी, निकालकर चप्पल दो लगाए उस को। बेटा मेरा सर अभी ऊंचा है। दोचार दस दे कर ही विदा कर दूंगी हां पांच सौ नहीं दे सकती। अम्मां की और ललाइन की अक़दार भी एक ही थीं।

सिफ़या की आंखें नम हो उठीं। बिद्दा उस से थोड़ी ही बड़ी थी, लेकिन इतनी कम उमरी में ब्याही गई थी कि सिफ़या की शादी होने तक उस के यहां कई बच्चे हो चुके थे। अब तो वह नानी दादी भी हो चुकी होगी। पता नहीं ससुराल वहीं है या यह लोग कहीं और चले गए। सनदेसा भिजवाने पर क्या अब भी वैसे ही दौड़ी आ सकेगी भावज से उस ने पूछा तो वह सिफ़या का मुंह देखने लगी। ''कौन बिद्दा—राजा राम की बहन ?''

हां वही और कौन?

वह भी मर गई, कब की। काकी के सामने ही मरी थी।

बिद्दा मर गई—यकायक⁽¹⁾ किसी ने फूंक मार कर सारे शहर के दीये गुल कर दिए।

राजा राम की फ़ेमिली तो मुहल्ले में है ना?

बहुत देर की ख़ामोशी के बाद सिफ़या ने रंजीदा लहजे में पूछा। "है तो," भावज का लहजा सपाट था। किसी से कहलवा देना मैं आई हुई हूं। कालू ज़रूर आएगा। नहीं आ सका तो मैं जाऊंगी। भावज कोई जवाब न दे कर ख़ामोशी से रात के खाने की तैयारियों में लग गईं। गहरी होती शाम में धनतेरस का मेला रवां दवां था। एक सन्नाय सिफ़या के अन्दर उतरने लगा। यह कोई मरने की उम्र थी।

^{1.} अचानक

چرے پرخوف۔

سنا ٹا صغیہ کے دل میں اور گہرا ہو گیا۔ وہ گھرا کر دو بارہ بالکونی میں آخمی۔ محلے میں چھوٹی دیا گئی۔ محلے میں چھوٹی دیوائی کے دیے جگنوؤں کی طرح جسل جسل کرنے گئے تھے۔ سڑک پر ایک چھوٹی کی لڑک کروشیا سے بنے خوان پوش سے دھکی پیشل کی تھالی لیے لپ جمعپ چلی جاری تھی۔ بنگ کے نقوش بے حد مانوس اور جانے پہانے سے تھے۔

'' یہ آپ کے کالوارے راجا رام کی بٹی ہے' ریشمال جو صفیہ کے بیچے بیچے چلی آئی تھی کہدری تھی۔ پکارو، پکارو، بلاؤ اے صفیہ نے بے چین ہو کر بیٹی سے کہا بلاؤ نا ریشمال کیا نام ہے اس کا ؟

شاید بی آئے ریشمال نے اسے پکارا۔ منجد۔ اونخو۔ منجو گھر کے چبورے تک آکر رک گئی۔ منید تیز تیز قدموں سے سیرصیاں از کر چکی منزل پرآگئ چی ہٹا کر اس نے بکی سے کہا ''اور چے ہے آؤ بیٹا۔ کرے میں تو آؤ''

لڑی بہت جمجکی ہوئی اور آئی صغیہ نے بڑھ کراسے مکلے سے لگایا۔ وہ جیران ہو کر اس اجنبی عورت کونگر تکر دیکھنے گئی۔

"اپنے بابو بی سے کہنا۔" جیتی لباس والی اس پھند عمر خوبصورت عورت نے منجو سے کہا منجو نے درمیان سے بات کاٹ دی۔" ہم انھیں پایا کہتے ہیں۔"

صغیہ ہے گی۔ اچھا بھائی اپنے پاپا ہے کہنا الطاف چاچا کی بڑی دیدی آئی ہیں تو تم
ان سے ملنے نہیں آئے۔ اور یہ بھی کہنا کہ تمھارانام تو کالوقعا تم راجا رام کب ہے ہوگئے۔
اور پت ہے۔ صغیہ نے بی کو لپٹائے لپٹائے دھیرے سے اس کے کان میں کہا۔" کالوی نہیں کالو۔ بھالو خالو' جیرانی کی جگہرائو کی کے چیرے پر مسکراہٹ کھیلنے گی۔ پھر وہ ایک دم سے بنس بڑی۔

" آپ کون ہیں؟ اس نے صغیہ سے آخر سوال کر بی دیا۔ " ہم جُہار پھوالا عیس ہو۔۔"

مفید نے اس کے سر پر بیاد سے ہاتھ چھرتے ہوئے سوچا کداس نے بدا کا تحور ا سا قرض چکا دیا ہے۔ لڑک جنتے جنتے چر جران ہوگئ۔ اس کھر جس اس کی پھوا کیے آسکتی

पचास को भी नहीं पहुंच सकी। अम्मां नहीं, काकी नहीं, बिद्दा नहीं। सन्नाटे से डर कर वह आमिर और रेशमा से बार्ते करने लगी।

- ''तुम लोग पयखे़ नहीं लाए ?''
- "पटाखों से मुझे डर लगता है फूफी" रेशमा धीरे से कहती है।
- ''कभी जल गई थी क्या बेटे?''

सारा शहर जल गया था फूफी। रेशमा के लहजे में एक दर्द था। एक काट और चेहरे पर खौफ़।

सन्नाटा सफ़िया के दिल में और गहरा हो गया। वह घबराकर दोबारा बालकोनी में आ गई। मुहल्ले में छोटी दीवाली के दीये जुगनुओं की तरह झिलमिल झिलमिल करने लगे थे। सड़क पर एक छोटी सी लड़की किरोशिया से बुने ख़्वान पोश से ढकी पीतल की थाली लिए लप झप चली जा रही थी। बच्ची के नुकुश⁽¹⁾ बेहद मानूस⁽²⁾ और जाने पहचाने से थे।

यह आप के कालू..... अरे राजा राम की बेटी है। ''रेशमा जो सिफ़या के पीछे पीछे चली आई थी कह रही थी। पुकारो, पुकारो, बुलाओ उसे । सिफ़या ने बेचैन होकर भतीजी से कहा। बलाओ ना रेशमां। क्या नाम है उसका ?

शायद ही आए। रेशमा ने उसे पुकाराः मन्जू, ओ मन्जू— मन्जू घर के चबूतरे तक आकर रुक गई। सिफ़या तेज तेज क़दमों से सीढ़ियां उतर का निचली मंजिल पर आ गई। चिक्र हटाकर उस ने बच्ची से कहा। "ऊपर चढ आओ बेटा— कमरे में तो आओ।"

लड़की बहुत झिझकती हुई ऊपर आई— सिफ़या ने बढ़कर उसे गले से लगा लिया। वह हैरान होकर उस अजनबी औरत को दुकुर दुकुर देखने लगी।

"अपने बाबू जी से कहना—" क़ीमती लिबास वाली उस पुख़्ता उमर खूबसूरत औरत ने मन्जू से कहा। मन्जू ने दरिमयान से बात काट दी "हम उन्हें पापा कहते हैं।"

सिफ़या हंसने लगी। अच्छा भाई अपने पापा से कहना, अलताफ़ चाचा की बड़ी दीदी आई हैं। तो तुम उन से मिलने क्यूँ नहीं आए। और यह भी कहना कि तुम्हारा नाम तो कालू था। तुम राजाराम कब से हो गए। और पता है— सिफ़या ने बच्ची को लिपटाए लिपटाए धीरे से उस के कान में कहा "कालू ही नहीं कालू, भालू, खालू" हैरानी की जगह लड़की के चेहरे पर मुस्कुराहट खेलने लगी। फिर

^{1.} नक्स (चिह्र) का बहुवचन 2. जाने-पहचाने

ہے، گر مبت کی مٹھاس کا ذا نقد اس کی مجھ سے پرے نہیں ہے۔ کسی کی سمجھ سے بھی نہیں ہوتا۔ واپس جاتے ہوئے وہ صنیہ کی طرف دیکھ کرمسکراتی ہے۔

الطاف كمنع كرنے كے باوجود صفيه كالو كے يهال جانے پرتلى رى دراجا رام اب يهال نبيس آتا۔ الطاف نے بتايا تھا۔ بس كميس وكھائى ديتا ہے تو دعا سلام ہو جاتا ہے۔كى بارتو محسوس ہوا ہم دونوں ہى دعا سلام سے بھى كترا رہے ہيں۔

وجـ-؟

آپا بھولی تو نہیں ہوتم۔بس بال کی کھال نکائتی ہو۔وہ کسی پارٹی میں شامل ہو گیا ہے۔ دوسال پہلے شہر میں بڑی کشیدگی ہو گئ تھی۔ اس وقت دیواروں پر نعرے لکھنے میں سنا ہے اس کا بھی ہاتھ تھا۔ کیا ضرورت ہے اس کے یہاں جانے کی۔

الطاف، تم اور راجا اسکول میں ایک ساتھ پڑھتے تھے۔ ایک دو درج آگے جیجے شاید۔ صغیہ کے لیجے میں دکھ تھا۔

ہاں نور محمد بچا کے باغ سے امرود بھی ساتھ بی چاتے تھے۔ پھر ایک بار پچا کی حصت پر چورکو دا تھا تو ہم دونوں ساتھ بی اسے پکڑنے دوڑے تھے۔

"اور محلے کی بجاتی نالیاں صاف کرنے کے لیتمارے اسکول نے شرم دان کی اسکیم بنائی تھی تو تم دونوں بھائیوں نے ساتھ ساتھ صفائی کی تھی۔" بوجمل دل کے ساتھ بات کرتی صفیہ کے چہرے پر مسکراہٹ کی لکیریں رینگنے لگی تھیں۔ نہ جانے کتنے دن تک اس نے کالوکو اس بات پر چرایا تھا۔ وہ ہاتھ چر کھینک کراڑنے والا چھوٹا اڑکا اب ایک اچھے خاصے کاروبار کا مالک ہے۔ شادی شدہ ہے اور کئی بچوں کا باپ۔ مگر ذہن میں وی تصویریں جلتی جی اس کی۔ وہ جو صفیہ کی رضتی کے وقت آئیسیں ٹیٹیا ٹیٹیا کر آنسو پی رہا تھا۔ اے کسی نے ورغلایا ہے۔ کس نے سکھایا ہے اسے بیسب؟

وہ سامنے چیوڑے پر بی بیٹھا طا تھا۔ جھانویں سے دگر دگر کر چیر صاف کرتا۔ چیوڑہ بالکل ویبا بی تھا۔ کونے میں اسکی بیٹیوں کا بنایا ہوا گھر دندا سر اٹھائے کھڑا تھا۔ شام کو اس کی منڈیروں پر رکھی دیوں کی لویں انسانی امیدوں کی طرح جگا اٹھیں گی۔ منیہ کا دل جیسے کسی نے مٹھی میں لے کر مروڑا۔ منیہ کو دیکھ کر وہ بڑ بڑا گیا تھا اور پھے دیر یونی دیکتا رہا

वह एक दम से हंस पड़ी।

''आप कौन हैं ?'' उस ने सफ़िया से आखिर सवाल कर ही दिया।

"हम तुहार फूवा लागीं हो।" सिफ़या ने उस के सर पर प्यार से हाथ फेरते हुए सोचा कि उस ने बिद्दा का थोड़ा सा क़र्ज़ चुका दिया है। लड़की हंसते हंसते फिर हैरान हो गई। इस घर में उसकी फुवा कैसे आ सकती है। मगर मुहब्बत की मिठास का जाएका उस की समझ से परे नहीं है किसी की समझ से भी नहीं होता। वापस जाते हुए वह सिफ़या की तरफ़ देखकर मुस्कुराती है।

अलताफ़ के मना करने के बावजूद सिफ़या कालू के यहां जाने पर तुली रही। राजा राम अब यहां नहीं आता। अलताफ़ ने बताया था। बस कहीं दिखाई देता है तो दुआ सलाम हो जाता है। कई बार तो महसूस हुआ हम दोनों ही दुआ सलाम से भी कतरा रहे हैं।

वजह..... ?

आपा भोली तो नहीं हो तुम। बस बाल की खाल निकालती हो। वह किसी पार्टी में शामिल हो गया है। दो साल पहले शहर में बड़ी कशीदगी⁽¹⁾ हो गई थी। उस वक्त दीवारों पर नारे लिखने में सुना है उस का भी हाथ था। क्या जरूरत है उसके यहां जाने की।

अलताफ़, तुम और राजा राम स्कूल में एक साथ पढ़ते थे। एक दो दर्जे आगे पीछे शायद। सफ़िया के लहजे में दुख था।

हां नूर मुहम्मद चचा के बाग़ से अमरूद भी साथ ही चुराते थे। फिर एक बार चचा की छत पर चोर कुदा था तो हम दोनों साथ ही उसे पकड़ने दौड़े थे।

"और मुहल्ले की बिजबिजाती नालियां साफ़ करने के लिए तुम्हारे स्कूल ने श्रम दान की स्कीम बनाई थी तो तुम दोनों भाईयों ने साथ साथ सफ़ाई की थी......'' बोझल दिल के साथ बात करती सिफ़या के चेहरे पर मुस्कुराहट की लकीरें रेंगने लगी थीं। न जाने कितने दिन तक उसने कालू को इस बात पर चिढ़ाया था। वह हाथ पैर फेंक कर लड़ने वाला छोटा लड़का अब एक अच्छे ख़ासे कारोबार का मालिक है। शादी शुदा है और कई बच्चों का बाप। मगर ज़ेहन में वही तसवीरें चलती हैं उस की। वह जो सिफ़या की रुख़्तती के वक्त आँखें टिपटिपा-टिपटिपाकर आंसू पी रहा था। उसे किसी ने वरग़लाया है। किस ने सिखाया है उसे यह सब?

^{1.} तनाव

تھا۔ بہت سے بل ان دونوں کے درمیان سے گزر مے تھے۔

چینست ہوکہ ناہیں؟ صغید نے اس میٹی بولی میں کہا جوعرصہ ہوا سنائی دیتا بند ہوگئ تھی۔ وہ بولی جو راجا رام بول سجدسکا تھا۔ دئ میں کوئی نہیں۔

پیچان رہے ہیں۔ صغیہ دیدی ہو۔ کب آکیں؟ اس کے لیجے میں جوش وسرت کا کوئی شائر نہیں تھا۔ صغیہ پر اوس ی پڑگئی۔

"معلوم تو ہوا ہوگا کہ ہم آئے ہیں مجرآئے کول نہیں؟

وہ سر تھجانے لگتا ہے۔ کار وہار پھیلا لیا ہے۔ دس جھیلے ہیں۔ فرصت نہیں ملتی۔ وہ بیوی کو آواز دیتا ہے۔''منجو کی مال''۔

سنا ہے ویے بھی آنا جانا بند کر رکھا ہے۔ بھیا سے جھڑا کیا ہے کیا؟ اس کا بھی منہ پھولا ہوا تھا۔ وہ صغید کی بات کا کوئی جواب نہیں دیتا۔ برستور جھانویں سے پیر رگڑتا رہتا ہے چر بیوی کو دوبارہ بھارتا ہے۔" تی جاہ لیے آؤ دوگائ"۔

جائے وائے چھوڑو۔ نیچ کتنے ہیں۔ کتنے بوے ہوئے۔لڑکیوں کو پڑھا رہے ہو کہ نہیں؟ چھپلی بار آئی تو تم سے طاقات نہیں ہو کی تقی۔تم باہر گئے ہوئے تھے۔تمھاری دلہن شیکے گئی ہوئی تقی۔ بدا آئی تھی اور کا کی بدا کو کیا ہوگیا تھا کالو..... بداکیے مرکش۔

راجا رام کی بوی ہاتھ میں دواسٹیل کے گلاس لیے ہوئے باہر آئی۔ساڑی کا آنجل ماتھ تک تھنچا ہوا تھا۔اس نے گلاس بیڑھی پر رکھے۔مغید کو پر نام کیا۔

اس سے پوچھ لو۔ بھی سب متائے گی۔ بیٹ جاؤ ہو۔ بدا دیدی کی سکس ہیں۔ وہ جائے لیے بغیر اٹھنے لگا۔

''دکان جانا ہے دیر ہو رہی ہے'' صغیہ نے کالوکی ہوی کی طرف دیکھا۔ نصف محق کھٹ کے اعدر اس کی آتھوں میں کوئی جذبہ ایسا نہیں تھا جے پڑھا جاسکے۔ بس ایک اجنبی لا تعلق کا احساس۔

" چائے نہیں چنی ہمیں" صغید کی آواز میں خم وضد دونوں ہیں۔" کالوہم تم سے ملنے آ سے نے اسے تھے۔ وو اٹھ کھڑی ہوئی اچا تک دروازے میں سے دوڑتی ہوئی مخوضووار ہوئی۔ اس کے بیچے ذرا بڑا ایک لڑکا تھا جو شاید اس کا ہمائی تھا۔ صغید کو دیکھ کر مخوضک کر رک می۔

वह सामने चबूतरे पर ही बैठा मिला था। झांवें से रगड़ रगड़ कर पैर साफ़ करता। चबूतरा बिल्कुल वैसा ही था। कोने में उस की बेटियों का बनाया हुआ घराँदा सर उठाए खड़ा था।शाम को उस की मुण्डेरों पर रखी दीयों की लवें इंसानी उम्मीदों की तरह जगमगा उठेंगी। सिफ़या का दिल जैसे किसी ने मुट्ठी में लेकर मरोड़ा। सिफ़या को देखकर वह हड़बड़ा गया था और कुछ देर यूंही देखता रहा था। बहुत से पल उन दोनों के दरमियान से गुजर गए थे।

चीन्हत हैं। के नाहीं-----? सिफ़या ने उस मीठी बोली में कहा जो अरसा हुआ सुनाई देना बन्द हो गई थी। वह बोली जो राजा राम बोल समझ सकता था। दुबई में कोई नहीं।

पहचान रहे हैं। सिफ़िया दीदी हो। कब आईं? उस के लहजे में जोशोमुसर्रत⁽¹⁾ का कोई शाइबा⁽²⁾ नहीं था। सिफ़या पर ओस सी पड़ गई।

''मालूम तो हुआ। होगा कि हम आए हैं फिर आए क्यों नहीं ?''

वह सर खुजाने लगता है। कारोबार फैला लिया है। दस झमेले हैं। फ़ुर्सत नहीं मिलती। वह बीवी को आवाज़ देता है। ''मन्जू की मां''

सुना है वैसे भी आना जाना बन्द कर रखा है। भैया से झगड़ा किया है क्या ? उस का भी मुंह फूला हुआ था।

वह सफ़िया की बात का कोई जवाब नहीं देता। बदसतूर झांवे से पैर रगड़ता रहता है। फिर बीवी को दोबारा पुकारता है। ''तनी चाह लीए आओ दो गिलास।''

चाय वाय छोड़ो। बच्चे कितने हैं। कितने बड़े हुए। लड़िक्यों को पढ़ा रहे हो कि नहीं? पिछली बार आई तो तुम से मुलाक़ात नहीं हो सकी थी। तुम बाहर गए हुए थे। तुम्हारी दुल्हन मैके गई थी। बिद्दा आई थी और काकी। बिद्दा को क्या हो गया था कालू.....? बिद्दा कैसे मर गई।

राजा राम की बीवी हाथ में दो स्टील के गिलास लिए हुए बाहर आई। सारी का आंचल माथे तक खिंचा हुआ था। उस ने गिलास पीढ़ी पर रखे। सफ़िया को प्रणाम किया।

इससे पूछलो, यही सब बताएगी। बैठ जाओ हो। बिद्दा दीदी की सखी हैं वह चाय लिए बग़ैर उठने लगा।

"दुकान जाना है देर हो रही है" सफ़िया ने कालू की बीवी की तरफ़ देखा।

^{1.} प्रसन्नता और आवेश 2. संदेह

ایک بل کو اس کے چرے پر حمرت کا سامیہ انجرا۔ لیکن دوسرے ہی کمعے بادلوں سے جھا تکتے سورج کی کرنون جیسی شرمیلی مسکراہٹ پورے چہرے کو روشن کر گئی۔ گول مثول چہرے کے بحرے کالوں بیس دو بے حد مانوس، تھے تھے گڑھے۔ کالی مجراری آئکھیں عین بین بدا۔

' پاپا پاپاہوال مار بھوا لاگیں۔' صفیہ کے بہت قریب آکر اس نے صفیہ کو جھوکر کہا اور اس کے چہرے کے نقوش میں بداجیے اچا تک زندہ مواضی۔



निस्म⁽¹⁾ घूंघट के अन्दर उस की आंखों में कोई जज्बा ऐसा नहीं था। जिसे पढ़ा जा सके। बस एक अजनबी लातअल्लुक़ी का एहसास।

"चाय नहीं पीनी हमें" सिफ़या की आवाज में ग्रमो गुस्सा दोनों हैं। "कालू हम तुम से मिलने आए थे।" वह उठ खड़ी हुई। अचानक दरवाज़े में से दौड़ती हुई मन्जू नमूदार⁽²⁾ हुई। उसके पीछे जरा बड़ा एक लड़का था जो शायद उस का भाई था। सिफ़या को देखकर मन्जू ठिठक कर रुक गई। एक पल को उस के चेहरे पर हैरत का साया उभरा। लेकिन दूसरे ही लम्हे बादलों से झांकते सूरज की किरनों जैसी शर्मीली मुस्कुराहट पूरे चेहरे को रौशन कर गई। गोल मटोल चेहरे के भरे भरे गालों में दो बेहद मानूस नन्हे नन्हे गडढे। काली कजरारी आंखें, ऐन मैन बिद्दा।

पापा-----पापा हो------ ई हमार फुवा लागीं। सिफ़िया के बहुत क़रीब आकर उस ने सिफ़िया को छूकर कहा और उस के चेहरे के नुक़्श में बिद्दा जैसे अचानक ज़िन्दा हो उठी।



^{1.} आधा 2. प्रकट होना

انجام كار

آج شام کو آفس سے گھر لوشتے وقت تک بھی میں نہیں سوچ سکن تھا کہ حالات جھے
اس طرح پیں کر رکھ دیں گے۔ میں جابتا تو اس سانح کو ٹال بھی سکنا تھا۔ گر آدمی کے
لیے ایبا کرسکنا بمیشہ ممکن نہیں ہوتا۔ کچھ باتی ہمارے جائے یا نہ جائے کی حدود سے
پرے ہوتی ہیں اور شاید ایسے غیر متوقع سانحات ہی کو دوسرے الفاظ میں حادث کہتے ہیں۔
جو بھی ہو، میں حالات کے غیر مرئی شانج میں جکڑا ہوا تھا اور اب اس سے نجات کی کوئی صورت دکھائی نہیں دے رہی تھی۔

آج گھر لوٹے میں مجھے در ہوئی تھی اس لیے میں لیے لیے ڈگ ہمرتا گھر کی طرف برخ میا۔ بڑھ رہا تھا۔ بھے ہوی کی پریٹانی کا بھی خیال تھا۔ دہ یقینا کھڑکی کی جھری ہے آ کھ لگائے میری راہ دکھ رہی ہوگی اور ذرا ذراسی آہٹ پر چونک چونک پڑتی ہوگی۔ سانجھ کی پرچھائیاں گھر آئی تھیں۔ میں جیسے بی گلی میں داخل ہوا، اس جانے پہچانے ماحول نے جمھے چاروں طرف سے گھر لیا۔ ٹین کی کھولیوں کے چھوں سے لگتا ہوا دھواں، ادھر ادھر بہتی بالیوں کی بدیواور ادھ نگھے ہما گے دوڑتے بچوں کا شور، کوں کے لیے، مرغیاں اور مخیں، دو ایک کھولیوں سے جوڑوں کی گالیاں بھی سائی دیں جوشاید اپنے بچوں یا چر بچوں کے بہانے پڑوسنوں کو دی جاری تھیں۔

میں جب اپنی کھولی کے سامنے پہنچا تو دیکھا کہ میرے دروازے کے سامنے گندے پانی کی نکائ کے لیے جو نالی بی تقی، اس میں شامو دادا کا ایک چھوکرا دیکی شراب کی پھھ بوتلیں چھپارہا ہے۔ جھے اپنے سر پر دیکھ کر پہلے تو وہ پچھ بو کھلایا۔ پھر سنجل کر قدرے مسکرا دیا۔ دلی شراب کی بومیرے نتنوں سے کراری تقی۔ میں نے ذرا تیز لیجے میں پوچھا۔

सलाम बिन रज्ज़ाक़

अन्जाम कार

आज शाम को ऑफ़िस से घर लौटते वक्त तक भी मैं नहीं सोच सकता था कि हालात मुझे इस तरह पीस कर रख देंगे। मैं चाहता तो उस सान्हें को टाल भी सकता था। मगर आदमी के लिए ऐसा कर सकना हमेशा मुमिकन नहीं होता। कुछ बातें हमारे चाहने या न चाहने की हुदूद से परे होती हैं और शायद ऐसे गैर-मुतवक्क़े (1) सानेहात (2) ही को दूसरे अलफाज में 'हादसा' कहते हैं। जो भी हो, मैं हालात के ग़ैर-मरई (3) शिकंजे में जकड़ा हुआ था और अब उस से निजात की कोई सूरत दिखाई नहीं दे रही थी।

आज घर लौटने में मुझे देर हो गई थी। इस लिए मैं लम्बे लम्बे डग भरता घर की तरफ़ बढ़ रहा था। मुझे बीवी की परेशानी का भी ख़्याल था। वह यक्तीनन खिड़की की झरी से आंख लगाए मेरी राह देख रही होगी और जरा जरासी आहट पर चौंक चौंक पड़ती होगी। सांझ की परछाईंयां घिर आई थीं। मैं जैसे ही गली में दाख़िल हुआ, उस जाने पहचाने माहौल ने मुझे चारो तरफ़ से घेर लिया। टीन की खोलियों के छ्जों से निकलता हुआ धुआं इधर उधर बहती नालियों की बदबू और अध नंगे भागते दौड़ते बच्चों का शोर, कुत्तों के पिल्ले, मुग्रियां और बत्तख़ें, दो एक खोलियों से औरतों की गालियां भी सुनाई दीं जो शायद अपने बच्चों या फिर बच्चों के बहाने पड़ोसिनों को दी जा रही थीं।

मैं जब अपनी खोली के सामने पहुंचा तो देखा कि मेरे दरवाजे के सामने गन्दे पानी की निकासी के लिए जो नाली बनी थी, उस में शामू दादा का एक छोकरा देशी शराब की कुछ बोतलें छुपा रहा है। मुझे अपने सर पर देख कर पहले तो वह कुछ बौखलाया। फिर संभल कर क़दरे मुसकुरा दिया। देसी शराब की बू

^{1.} आशा के विपरित 2. सानिहा (घटना) का बहुवचन घटनाएँ 3. अदृश्य

"سيكيا مور ما بي "-

وہ اطمینان سے مسکراتا ہوا بولا۔''دادانے یہ چھ بوتلیں یہاں چھپانے کو بولا ہے۔'' کل کی گندگی جب تک کل میں تھی تو کوئی بات نہیں تھی۔ گراب وہ گندگی میرے دروازے تک چیل آئی تھی اور یہ بات کسی بھی شریف آدی کے لیے ایک چیلنے تھی۔ لہذا میں جیب ندرہ سکا۔ میں نے ای تیز لیجے میں کہا۔

''یہ بوتلیں یہاں سے ہٹاؤ۔ یہ گنرتمحاری بوتلیں چھپانے کے لیے نہیں بی ہے۔'' اٹرکا تھوڑی دیر تک مجھے گھورتا رہا۔ پھر بولا۔''اپن کو نہیں معلوم۔ داوا نے یہاں چھیانے کو بولا تھا۔''

"میں کھے نہیں جانا۔ چلواٹھاؤیہاں ہے۔"

الاکے نے ہونوں بی ہونوں میں کھ برابراتے ہوئے ہوت اللی واپس اپنے میلے جمولے میں رکھ لیں۔ کم جاتے جاتے مرکز بولا۔ "ساب! جاتی (زیادہ) ہوساری وکھائے گا تو ہماری بڑے گا۔ بینہروگر ہے۔"

یں نے جواب میں پر نہیں کہا۔ اس آوارہ چھوکرے کے مندلگنا ہے کار تھا۔ وہ پہلیں لے کر چلا گیا۔ یک فغیمت تھا۔ میں اپنے کمرے کی طرف بڑھ گیا۔ میں نے محکصیوں سے ویکھا، میری اور لڑک کی گفتگون کر ارد گرد کی کھولیوں کے دروازے کھلے اور پھر جھائتی ہوئی، دلچیں اور جسس سے میری طرف دکھے رہی تھیں۔ میں نے اس طرف دھیان نہیں دیا اور اپنے کمرے کے دروازے پر پہنچ گیا۔ ہوی بھی شاید میری آواز من بھی تھی۔ وہ دروازہ کھولے کھڑی تھی۔

"کیا ہوا؟ کون تھا؟" اس نے قدرے مجراہث کے ساتھ پوچھا ہیں کرے ہیں داخل ہوگیا۔ بوی نے دروازے کے بث بھیر دیے۔

"کم بخوں کو دوسروں کی تکلیف یا عزت کا ذرا خیال نیس ، میں جوتے کی لیس کھولتے ہوئے بدیرایا۔

" كيا موا؟" بيوى كالبجه مجرايا موابي تعار

یوی تحوری در چپ ری چر بول ۔ " ش کبتی موں خدا کے لیے کوئی دوسری جگد

मेरे नथुनों से टकरा रही थी। मैंने जरा तेज लहजे में पूछा।

"यह क्या हो रहा है?"

वह इतमीनान से मुसकुराता हुआ बोला दादा ने यह छ: बोतलें यहां छुपाने को बोला है।

गली की गन्दगी जब तक गली में थी तो कोई बात नहीं थी। मगर अब वह गन्दगी मेरे दरवाजे तक फैल आई थी और यह बात किसी भी शरीफ आदमी के लिए एक चैलेंज थी। लिहाजा मैं चुप न रह सका, मैंने उसी तेज लहजे में कहा।

"यह बोतलें यहां से हटाओ, यह गटर तुम्हारी बोतलें खुपाने के लिए नहीं बनी है" लड़का थोड़ी देर तक मुझे घूरता रहा फिर बोला "अपन को नहीं मालूम दादा ने यहां खुपाने को बोला था।"

"मैं कुछ नहीं जानता, चलो उठाओ यहाँ से"।

लड़के ने होंठों ही होंठों में कुछ बड़बड़ाते हुए बोतलें वापस अपने मैले झोले में रख लीं। फिर जाते जाते मुड़कर बोला ''साब! जास्ती (ज्यादा) होसारी दिखाएगा तो भारी पड़ेगा। यह नेहरू नगर है।"

मैंने जवाब में कुछ नहीं कहा। उस आवारा छोकरे के मुंह लगना बेकार था। वह बोतलें लेकर चला गया। यही ग़नीमत था। मैं अपने कमरे की तरफ़ बढ़ गया। मैंने कनखियों से देखा, मेरी और लड़के की गुफ्तगू सुनकर इर्द गिर्द की खोलियों के दरवाज़े खुले और कुछ औरतें बाहर झांकती हुई, दिलचस्पी और तजस्सुस⁽¹⁾ से मेरी तरफ़ देख रही थीं। मैंने उस तरफ़ ध्यान नहीं दिया और अपने कमरे के दरवाज़े पर पहुंच गया। बीवी भी शायद मेरी आवाज सुन चुकी थी। वह दरवाज़े खोले खड़ी थी।

"क्या हुआ? कौन था?" उसने क़दरे घबराहट के साथ पूछा। मैं कमरे में दाख़िल हो गया। बीवी ने दरवाजे़ के पट भेड़ दिए।

''कम्बख्तों को दूसरों की तकलीफ़ या इज़्ज़त का जरा ख्याल नहीं''। मैं जूते की लैस खोलते हुए बड़बड़ाया।

''क्या हुआ ?'' बीवी का लहजा घबराया हुआ ही था।

बीवी थोड़ी देर चुप रही फिर बोली ''मैं कहती हूं खुदा के लिए कोई दूसरी

^{1.} जिज्ञासा

ڈمونڈ کیجے۔ آج ٹل پر چھنبروالی آئی بھی خواہ کواہ جھے سے الجھ پڑی تھی۔'' میں نے بُش شرث کے بٹن کھولتے ہوئے یو جھا۔''کیا ہوا تھا؟''

ہوتاکیا، یہ لوگ تو جھڑے کے لیے بہانے تلاشتے رہتے ہیں۔ سب کو نمبر سے تمن تین ہنڈے پانی ملا ہے۔ میں نے صرف دو ہنڈے لیے تھے، وہ کہنے گی تمعارے کمر میں زیادہ ممبرنہیں ہیں۔ تم صرف دو ہنڈے لو، میں نے کہا سب کو تین طبتے ہیں تو میں بھی تین بی لوں گی۔ دوکیوں لوں؟''بس ای بات پر چوھ گئی۔

میں کھاٹ پر لیٹ گما۔ میری سمجھ میں نہیں آرہا تھا کہ آخر کما کما جائے۔ انجی تین چار ماه تک کمولی بد لنے جیسی میری حالت نہیں تھی اور یہاں ایک ایک دن گزارنا مشکل ہوتا حاربا تھا۔ مجھے یہاں آئے ہوئے صرف تین مینے ہوئے تھے ہوی یہاں کے ماحول سے اس قدر بریثان ہوچکی تھی کہ روز رات کو سونے سے پہلے وہ ادھر ادھر کی باتوں کے درمیان ممر بدلنے کی بات ضرور کرتی۔ میں مجھی سمجھا کر مھی ڈانٹ کر اے ٹال دیتا۔ پیہ بات نہیں تقی کہ وہ میری مالی حالت سے واقف نہیں تھی۔ مگر وہ بھی ایک عام کمر بلوعورت کی طرح ایک اچھے ممرکی خواہش کواپنے دل ہے کسی طرح بھی الگ نہیں کر علی تھی۔ اس كى بي خوابش اس وقت مزيد شدت اختيار كرجاتى جب كل مين كوئى الزائى جمكرا يا فساد ہوجاتا۔ اس فتم کے دیکے یہاں تقریا روز عی ہوا کرتے تھے۔ بعض ادقات تو معمولی جھڑے ہے بھی خون خرابے تک نوبت آ جاتی۔ اتوار کے روزیباں کے ہنگاموں میں خصوصیت سے اضافہ موجاتا۔ ہفتے کے چھے دن تو زیادہ تر عورتیں آپس میں اوتی رہتیں۔ مجمی مجمی ال یا سنداس کی لائن میں دو جارعورتیں ایک دوسرے سے الجھ پڑتیں۔جبوٹے پڑ کر بھی کھینے جاتے۔ مرب جھڑے گال گلوج یا معمول نوج کھوٹ سے آھے نہ بردھ یاتے۔ محراتوار کا دن ہفتے بمرے جھوٹے موٹے جھکڑوں کا فیصلہ کن دن ہوتا کیوں کہاس دن ان عورتوں کے شوہروں، بیوں اور دوسرے عزیز رشتے داروں کی مجھٹی کا دن ہوتا جو موٹر ورک شاہوں، ملوں اور دیگر چھوٹے موٹے کارخانوں میں کام کرتے تھے۔ اس ون مخطر یائل کا مظے کا کاروبار بھی کلوز رہتا۔ البتہ شامو دادا کے اڈے پر خاص رونق ہوتی۔ مبع بی سے یے والوں کا تانا بندھا رہتا۔ اور لوگ نوٹا کک یاوسر، نی نی کر گلی میں اس سرے

जगह ढूंढ लीजिए। आज नल पर छ: नम्बर वाली आन्टी भी ख्वाह मख्वाह मुझ से उलझ पड़ी थी।'' मैंने बुश शर्ट के बटन खोलते हुए पूछा ''क्या हुआ था ?''

"होता क्या, यह लोग तो झगड़े के लिए बहाना तलाशते रहते हैं। सब को नम्बर से तीन तीन हुण्डे पानी मिलता है। मैंने सिर्फ़ दो हुण्डे लिए थे। वह कहने लगी, तुम्हारे घर में ज्यादा मेमबर नहीं हैं। तुम सिर्फ़ दो हुंडे लो। मैंने कहा सब को तीन मिलते हैं तो मैं भी तीन ही लूंगी। दो क्यों लूं? बस इसी बात पर चिढ़ गई"।

में खाट पर लेट गया। मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर क्या किया जाए। अभी तीन चार माह तक खोली बदलने जैसी मेरी हालत नहीं थी और यहां एक एक दिन गुजारना मुश्किल होता जा रहा था। मुझे यहां आए हुए सिर्फ़ तीन महीने हुए थे। बीवी यहां के माहौल से इस क़दर परेशान हो चुकी थी कि रोज रात को सोने से पहले वह इधर उधर की बातों के दरिमयान घर बदलने की बात ज़रूर करती। मैं कभी समझाकर, कभी डांटकर उसे टाल देता। यह बात नहीं थी कि वह मेरी माली हालत से वाक़िफ़ नहीं थी। मगर वह भी एक आम घरेलू औरत की तरह एक अच्छे घर की ख्वाहिश को अपने दिल से किसी तरह भी अलग नहीं कर सकती थी। उस की यह ख्वाहिश उस वक्त मजीद शिद्दत(1) इिद्धायार कर जाती जब गली में कोई लड़ाई झगड़ा या फ़साद हो जाता। इस क्रिस्म के दंगे यहां तक़रीबन रोज ही हुआ करते थे। बाज औक़ात तो मामुली झगड़े से भी खुन खुराबे तक नौबत आ जाती। इतवार के रोज यहां के हंगामों में खुसुसियत से इज़ाफ़ा हो जाता। हफ़्ते के छ: दिन तो ज्यादा तर औरतें आपस में लड़ती रहतीं। कभी कभी नल या संडास की लाइन में दो चार औरतें एक दूसरे से उलझ पड़ती झोटे पकड़ कर भी खींचे जाते। मगर यह झगड़े गाली गलौच या मामुली नोच खसोट से आगे ना बढ पाते। मगर इतवार का दिन हफ़्ते भर के छोटे मोटे झगड़ों का फ़ैसलाकुन⁽²⁾ दिन होता क्योंकि उस दिन उन औरतों के शौहरों, बेटों और दूसरे अजीज रिशतेदारों की छुट्टी का दिन होता जो मोटर वर्क शापों, मिलों और दीगर छोटे मोटे कारखानों में काम करते थे। उस दिन शंकर पाटिल के मटके का कारोबार भी क्लोज रहता। अलबत्ता शागू दादा के अड्डे पर खास

^{1.} तीव्रता 2. निर्णायक

ے اس سرے تک لڑکھڑاتے، گالیاں دیتے اور ہنتے تبقیم لگاتے گھوستے رہتے۔ ہفتے بھر عورتیں انھیں اپنے مجموبے رہتے۔ ہفتے بھر عورتیں انھیں اپنے مجموبے جھڑوں کی جور پورٹیں دیتی تھیں وہ انھیں رپورٹوں کی بنیاد پر کسی نہ کسی بہانے لڑائی چھیڑ دیتے۔ ہفتے بھر کا حساب چکانے کے لیے مرد اپنے اپنے ٹین اورلکڑ ہوں کے ناپختہ جھونپڑوں سے نکل آتے۔ دن بھر خوب جم کر لڑائی ہوتی۔ دویا رکا سر پھوٹا اور دد جارکو پولیس پکڑ کر لے جاتی۔ یہ براتوارکا معمول تھا۔

یہاں کے ماحول سے میں بھی کانی پریشان تھا۔ مرصرف پریشانی سے کب کوئی مسئلہ حل ہوتا ہوتا ہے۔ شہروں میں ایک صاف سقرے ماحول میں، مناسب مکان کا حاصل کرنا مجھ بھیے معمولی کلرک کے لیے کتنا مشکل ہے، اس کا سیح اندازہ بیوی کونیس ہوسکتا تھا۔ کیوں کہ وہ گانو سے پہلی دفعہ شہر آئی تھی۔

اتنے میں بیوی چائے کا بیالہ لے کر ساڑی کے بلّو سے مند پوچھتی میرے پاس آکر بینے گئی۔تھوڑی دیر تک خاموش نظروں سے میری طرف دیکھتی ربی۔ پھر بولی لیجے چائے کی لیجئے۔

مں نے جائے کا بالدافھالیا۔ وہ کہدری تھی۔

"ر پرسوں تین نمبر والی زلیخا آئی تھی۔ اس نے مجھ سے ادھار آٹا ما تگا۔ میں نے بہانہ کردیا کہ گیبوں ابھی پہائے ہیں گئے ہیں اس وقت وہ چپ چاپ چلی گئی۔ گر تب سے سنڈ اس کی لائن میں، ٹل پر مجھے دیکھتے ہی تاک چڑھا کر آٹکھیں مچکاتی ہے اور میری طرف منہ کر کے تھوکتی ہے۔ کتیا کہیں کی'۔

بوی نے منہ بناتے ہوئے تلخ لیج میں کہا۔ میری نظریں بوی کے چہرے برگڑی ہوئی تھیں۔ میں نے جائے کا محدث بحرتے ہوئے کہا" تعور اسا آٹا دے دیتا تھا"

"کیا وے دیتی ؟" اس کی آواز مزید تیکھی ہوگی۔" آپ نہیں جانے، ان لوگوں کی نہ دوئی اچھی، نہ دھنی۔ ای لین دین پر تو آئے ون یہاں جھکڑے ہوتے رہنے ہیں۔" بیوی نے جیسے کی بہت بڑے راز کا انکشاف کرنے والے انداز میں کہا۔ میں چپ تھا، وہ کہ رہی تھی۔

" آج آب نے در کر دی۔ خدا کے لیے آپ آفس سے جلد آیا کیجے۔ آپ کے

रौनक होती। सुबह ही से पीने वालों का तांता बंधा रहता। और लोग नोटांक, पावसेर, पी पीकर गली में इस सिरे से उस सिरे तक लड़खड़ाते, गालियां देते और हंसते, क़हक़हे लगाते घूमते रहते। हफ़्ते भर औरतें उन्हें अपने छोटे छोटे झगड़ों की जो रिपोंटें देती थीं वह उन्ही रिपोर्टों की बुनियाद पर किसी न किसी बहाने लड़ाई छेड़ देते। हफ़्ते भर का हिसाब चुकाने के लिए मर्द अपने अपने टीन और लकड़ियों के ना पुख़ता झोंपड़ों से निकल आते। दिन भर खूब जमकर लड़ाई होती। दोचार का सर फटता और दोचार को पुलिस पकड़कर ले जाती। यह हर इतवार का मामूल था।

यहां के माहैल से मैं भी काफ़ी परेशान था। मगर सिर्फ़ परेशानी से कब कोई मसला हल होता है। शहरों में एक साफ़ सुथरे माहौल में, मुनासिब मकान का हासिल करना मुझ जैसे मामूली कर्लक के लिए कितना मुश्किल है, इस का सही अन्दाजा बीवी को नहीं हो सकता था। क्यों कि वह गांव से पहली दफ़ा शहर आई थी।

इतने में बीवी चाय का प्याला लेकर साड़ी के पल्लू से मुंह पोंछती मेरे पास आकर बैठ गई। थोड़ी देर तक खामोश नज़रों से मेरी तरफ़ देखती रही। फिर बोली "लीजिए चाय पी लीजिए।"

मैंने चाय का प्याला उठा लिया। वह कह रही थी।

"परसों तीन नंबर वाली जुलेख़ा आई थी। उस ने मुझ से उधार आय मांगा मैंने बहाना कर दिया कि गेहूं अभी पिसाए नहीं गए हैं उस वक्त वह चुपचाप चंली गई। मगर तब से संडास की लाइन में, नल पर मुझे देखते ही नाक चढ़ाकर आंखें मचकाती है और मेरी तरफ़ मुंह करके थूकती है। कुतिया कहीं की।

बीवी ने मुंह बनाते हुए तल्ख़ लहजे में कहा। मेरी नज़रें बीवी के चेहरे पर गड़ी हुई थीं। मैंने चाय का घूँट भरते हुए कहा। ''थोड़ा सा आटा दे देना था।''

"क्या दे देती?" उस की आवाज मजीद तीखी हो गई।"आप नहीं जानते, इन लोगों की न दोस्ती अच्छी न दुश्मनी। इसी लेन देन पर तो आए दिन यहां झगड़े होते रहते हैं।" बीवी ने जैसे किसी बहुत बड़े राज का इन्किशाफ (1) करने वाले अन्दाज़ में कहा। मैं चुप था, वह कह रही थी।

^{1.} रहस्योदघाटन

آف سے لوٹنے تک میری جان سوکھتی رہتی ہے۔ یہاں بل، بل ایک جھڑا ہوتار ہتا ہے۔ آپ کے لوٹنے سے پہلے سامنے والی سکینہ اور رابو میں خوب کالی گلوج ہوئی''۔

"کیوں؟"

'' پکھنہیں، سکینہ کے نیچے نے رابو کی بطخ کو کنگر مارا تھا۔ بس ای پر دونوں میں خوب جم کرلزائی ہوئی دہ تو سکھوتائی نے دونوں کو سمجھا بجھا کر چپ کرایا۔ ورنہ نوچ کھسوٹ تک کی نوبت آگئ تھی''۔

میں سننے کو تو ہوی کی باتیں سن رہا تھا۔ گر میرا ذہن شامو دادا کے جیوکرے کے ساتھ ہوئی گفتگو میں الجھا ہوا تھا۔ کم بخت ایک تو فلط کرتے ہیں اور ٹوکو تو دھمکیاں دیتے ہیں۔ دادا ہے نا۔ قانون قاعدہ سب ان کا فلا م ہے۔ جس دان قانون کی گرفت میں آ جا کیں گے ساری داداگری دھری کی دھری رہ جائے گی۔ اچا تک ہوی ہو لتے ہو لتے چپ ہوگئے۔ وہ کچھ سننے کی کوشش کر رہی تھی۔ آ دازیں میرے دردازے پر آ کر رک گئیں۔ میں نے شامو داداکی آ دازسی، وہ کہدرہا تھا۔

' چل بے لالو! رکھ اس میں بوتلیں۔ دیکھتا ہوں کون سالا رو کتا ہے''۔

ایک لیے کومیرا دل زور سے دھڑکا۔ آخر وہی ہوا جس سے میں اب تک بچتا آیا تھا۔ میں نے بیوی کی طرف ویکھا۔ اس کا چرہ پیلا پڑ گیا تھا۔ اس نے میرا ہاتھ پکڑتے ہوئے کہا:

"جانے دیجے، رکھ لینے دیجے۔ اپنا کیا جا تاہے۔"

پیالے میں تموڑی می جائے بی تھی۔ میں نے پیالہ اس طرح فرش پر رکھ دیا۔ پھر اب سے اپنا ہاتھ دھیرے سے چھڑا تا ہوا بولا۔

" تم چپ بیشی رہو۔ گھرانے کی ضرورت نہیں۔ ہم اس طرح ان کی ہر بات بر داشت کرلیں مے تو بدلوگ ہارے سر پرسوار ہوجا کیں ہے۔ " یس کھاٹ پر سے اٹھ گیا۔ بیوی مھیائی۔ "نہیں خدا کے لیے آپ باہر مت جائے۔ آپ اکیلے کیا کرشیں مے۔ وہ بدمتاش لوگ ہیں۔"

یں نے اسے تعلی دیتے ہوئے کہا۔" پاگل ہوئی ہو۔ یس کیا جھڑا کرنے جارہا

"आज आप ने देर कर दी। खुदा के लिए आप ऑफ़िस से जल्द आया कीजिए। आप के ऑफ़िस से लौटने तक मेरी जान सूखती रहती है। यहां पल,पल एक झगड़ा होता रहता है आप के लौटने से पहले सामने वाली सकीना और राबो में खूब गाली गलौज हुई"

''क्यों ?''

"कुछ नहीं, सकीना के बच्चे ने राबो की बत्तख़ को कंकर मारा था। बस इसी पर दोनों में ख़ूब जमकर लड़ाई हुई वह तो सिखू ताई ने दोनों को समझा बुझाकर चुप कराया। वरना नोच खसोट तक की नौबत आ गई थी"

मैं सुनने को तो बीवी की बातें सुन रहा था। मगर मेरा जेहन शामू दादा के छोकरे के साथ हुई गफ़्तगू में उलझा हुआ था। कमबख्त एक तो ग़लत काम करते हैं और टोको तो धमिकयां देते हैं। दादा है ना, क़ानून क़ाइदा सब उन का ग़ुलाम है। जिस दिन क़ानून की गिरफ़्त में आ जाऐंगे सारी दादा गिरी धरी की धरी रह जाएगी। अचानक बीवी बोलते बोलते चुप हो गई। वह कुछ सुनने की कोशिश कर रही थी। आवार्जें मेरे दरवाजे पर आकर रुक गई। मैंने शामू दादा की आवाज सुनी, वह कह रहा था।

''चल बे लालू! रख इसमें बोतलें देखता हूं कौन साला रोकता है।''

एक,लम्हें को मेरा दिल जोर से धड़का। आख़िर वहीं हुआ जिस से मैं अब तंक बचता आया था। मैंने बीवी की तरफ़ देखा। उस का चेहरा पीला पड़ गया था। उस ने मेरा हाथ पकड़ते हुए कहा:

"जाने दीजिए, रख लेने दीजिए अपना क्या जाता है"

प्याले में थोड़ी सी चाय बची थी। मैंने प्याला उसी तरह फ़र्श पर रख दिया। फिर उससे अपना हाथ धीरे से छुड़ाते हुए बोला।

''तुमं चुप बैठी रहो। घबराने की जरूरत नहीं। हन इस तरह इनकी हर बात बर्दाश्त कर लेंगे तो यह लोग हमारे सर पर सवार हो जाऐंगे'' मैं खाट पर से उठ गया।

बीवी घिघयाई "नहीं खुदा के लिए आप बाहर मत जाइये, आप अकेले क्या कर सकेंगे। वह बदमाश लोग हैं।"

मैंने उसे तसल्ली देते हुए कहा "पागल हुई हो। मैं क्या झगड़ा करने जा रहा

مول۔ آخر بات کرنے میں کیا حرج ہے۔''

میں دروازہ کھول کر باہر آگیا۔ شامو دادا کمر پر دونوں ہاتھ رکھے کھڑا تھا۔ اس کے پاس اور دو چھوکر اجو پہلے بھی آیا تھا، پاس اور دو چھوکر اجو پہلے بھی آیا تھا، حجو لے سے بوتلیں نکال کر کثر میں وبا رہا تھا۔ میرے باہر نکلتے ہی وہ چاروں میری طرف د کھنے لگے۔ شاموا کی لیے تک مجھے گھورتا رہا۔ پھر چھوکر سے سے مخاطب ہوا۔

''اے سالے! سنجال کر رکھ، کوئی بوتل پھوٹ ووٹ گنی تو تیری بہن کی۔ ۔۔۔ ایک تیبی کر ڈالوںگا۔''

میں اپنے چبورے کے کنارے پرآ کر کھڑا ہوگیا۔ وہ لوگ میری طرف مڑے۔ان کی آنکھوں میں غصہ، نفرت اور حقارت کے بھاؤ اثر آئے۔ میں نے قریب پہنچ کر نہایت نرم لیج میں شامو سے کہا۔

"آپ عی شامو دادا میں؟"

" ہاں کیوں؟" شاموسی تفکھنے کتے کی طرح غرایا۔

" ويكمي يهال ان بوتلول كومت ركه ، بميس تكليف بوك،"

" تكليف موكى توكونى دوسرى جكه دهوندو اس جمونير پي ميس كيول حلي آئ

"میری بات سیحفے کی کوشش کیجھے۔ یہ چیزیں ہمیں پندنہیں ہیں۔ کسی دوسری جگہ کیوں نہیں رکھتے انھیں۔"

"بي بوللي يبين ربيل كى شمين جوكرنا ہے كراؤ"

اس کے باقی دونوں ساتھی میری طرف بڑھتے ہوئے بولے۔" بیتمہارے باپ کی مکڑے کیا؟"

اس وقت اندر ہی اندر الجتے غصے کی وجہ سے میری جو حالت ہو رہی تھی وہ بیان سے باہر ہے۔ جی میں آرہا تھا کہ ان تینوں کم بختوں کی ایک سرے سے لاشیں گرادوں۔ ممر میں جانتا تھا کہ ایس جگہوں پر اپنا ذہنی توازن کھونے کا مطلب سوائے پٹنے کے اور پھے بھی نہیں۔ میں نے لیچ کو ذرا بھاری بناتے ہوئے کہا:

" ویکھو باپ دادا کا نام لینے کی ضرورت نہیں۔ میں اب تک شرافت سے آپ

हूं, आख़िर बात करने में क्या हर्ज है।"

में दरवाजा खोलकर बाहर आ गया। शामू दादा कमर पर दोनों हाथ रखे खड़ा था। उस के पास और दो छोकरे जेबों में हाथ डाल खड़े थे। वही छोकरा जो पहले भी आया था, झोले से बोतलें निकाल कर गटर में दबा रहा था। मेरे बाहर निकलते ही वह चारों मेरी तरफ़ देखने लगे। शामू एक लम्हे तक मुझे घूरता रहा। फिर छोकरे से मुखातिब हुआ।

''ऐ साले! संभाल कर रख, कोई बोतल फूट वूट गई तो तेरी बहन की ……ऐसी तैसी कर डालूंगा।''

मैं अपने चबूतरे के किनारे पर आकर खड़ा हो गया। वह लोग मेरी तरफ़ मुड़े, उन की आंखों में गुस्सा, नफ़रत और हिक़ारत⁽¹⁾ के भाव उतर आए। मैंने क़रीब पहुंचकर निहायत नर्म लहजे में शामू से कहा।

- ''आप ही शामू दादा हैं ?''
- ''हां क्यों ?'' शामू किसी कटखन्ने कुत्ते की तरह ग़ुर्राया।
- ''देखिए यहां उन बोतलों को मत रखिए, हमें तकलीफ़ होगी''
- ''तकलीफ़ होगी तो कोई दूसरी जगह ढूंढ़ो। इस झोंपड़ पट्टी में क्यों चले आए''
- "मेरी बात समझने की कोशिश कीजिये। यह चीजें हमें पसन्द नहीं हैं किसी दूसरी जगह क्यों नहीं रखते इन्हें।"
 - ''यह बोतलें यहीं रहेंगी, तुम्हें जो करना है कर लो''

उस के बाक़ी दोनों साथी मेरी तरफ़ बढ़ते हुए बोले ''यह तुम्हारे बाप की गटर है क्या ?''

उस वक़्त अन्दर ही अन्दर उबलते गुस्से की वजह से मेरी जो हालत हो रही थी वह बयान से बाहर है। जी में आ रहा था कि उन तीनों कमबद्धों की एक सिरे से लाशें गिरा दूं। मगर मैं जानता था कि ऐसी जगहों पर अपना जेहनी तवाजुन⁽²⁾ खोने का मतलब सिवाए पिटने के और कुछ भी नहीं। मैंने लहजे को जारा भारी बनाते हुए कहा।

"देखो बाप दादा का नाम लेने की ज़रूरत नहीं। मैं अब तक शराफत से 1. घृणा 2. संतुलन

لوگوں کو سمجھا ر ہا ہوں''

''ارے تو، تو کیا کرلے گا ہمارا۔ تیری مال کی مادر سالا ایک جھاپڑ میں منی چائے گئے گا اور ہم سے ہوشیاری کرتا ہے'' شامو نے دوقدم میری طرف بڑھتے ہوئے کہا۔

گالی سن کرمیرے تن بدن میں آگ لگ گئے۔ میں نے انگل اٹھا کرکہا'' دیکھوشامو!
اپی حدے آگے مت برحو۔ ایک تو غیر قانونی کام کرتے ہواوپر سے سینہ زوری کرتے ہو۔'
''ارے حیرے قانون کی بھی مال کی ' اس '' شامو میری طرف لیکنا ہوابولا۔ اس کے ایک ساتھی نے اسے چیچے ہٹاتے ہوئے کہا۔'' مخمبرو دادا، اس سالے کو میں ٹھیک کرتا ہوں۔''

اس نے جیب سے آیک لمبا سا چاتو نکال لیا۔ کڑ، ڈ، ڈکڑ، ڈ، چاتو کھلنے کی آواز کے ساتھ ہی میر ہے جم میں سر سے چیر تک چیونیاں ریگ گئیں۔ میری انتہائی کوشش کے باوجود حالات میر ہے قابو سے باہر ہو چکے تھے۔ ایک لمحے کو میں سر سے پیر تک کانپ گیا۔ اور گرد کے جیونیڑوں سے مورتیں، مرد اور بوڑھے سب نکل آئے تھے۔ سب کے سب اس جھڑ ہے کو بری دلچی سے دیکے رہے تھے۔ شامو کے ساتھی کے چاتو نکالتے ہی دو تین مورتوں کے منہ سے جھیں نکل گئیں اور ان چینوں نے میری نس نس میں ایک کیلیابٹ ی مورتوں کے منہ سے جھیں نکل گئی اور ان چینوں نے میری نس نس میں ایک کیلیابٹ ی میردی۔ میں زندگی میں پہلی دفعہ اس تم کی چوبیش سے دوچار ہوا تھا۔ میرا سارا خصہ ایک خوف زدہ نیچ کی طرح سم کر میر سے اندر ہی دبک گیا۔ میں اب صرف ایک گھرابٹ بحرے بچیتا و سے کی طرح سے کہ کر میر سے اندر ہی دبک گیا۔ میں اب صرف ایک گھرابٹ موف وقت بھاگ کر اپنے کر سے میں جیپ سکن تھا۔ مگر اب بھا گنا بھی اتنا آسان نہیں رہ گیا مطلب تھا۔ میں ہیشہ بیشہ کے لیے ان نگاہوں میں مرجا تا۔

وہ خنڈا چاتو لیے میری طرف بڑھا اور میں بے حس دحرکت وہیں کھڑا رہا۔ میں بید نہیں کہتا کہ اس وقت اپنے بیروں کو اس بیس کہتا کہ اس وقت اپنے بیروں کو اس جگہ جمائے رکھنے میں مجھے جس کش کش اور تکلیف کا سامنا کرنا پڑ رہا تھا وہ میرا ہی دل

आप लोगों को समझा रहा हूं।''

"अरे तो, तू क्या कर लेगा हमारा। तेरी मां की मादर साला --- एक झापड़ में मिट्टी चाटने लगेगा और हम से होशयारी करता है" शामू ने दो क़दम मेरी तरफ़ बढ़ते हुए कहा।

गाली सुन कर मेरे तन बदन में आग लग गई। मैंने उँगली उठाकर कहा। "देखो शामू! अपनी हद से आगे मत बढ़ो। एक तो गैर क़ानूनी काम करते हो ऊपर से सीना जोरी करते हो"

"अरे तेरे क़ानून की भी मां की....." शामू मेरी तरफ़ लपकता हुआ बोला, उसके एक साथी ने उसे पीछे हटाते हुए कहा। "उहरो दादा, इस साले को मैं ठीक करता हूं"

उस ने जेब से एक लम्बा सा चाक़ू निकाल लिया। कड़, ड, कड़, डकड़, ड, चाक़ू खुलने की आवाज के साथ ही मेरे जिस्म में सर से पैर तक चिटियां रेंग गई। मेरी इन्तहाई कोशिश के बावजूद हालात मेरे क़ाबू से बाहर हो चुके थे। एक लम्हे को मैं सर से पैर तक कांप गया। इर्द गिर्द के झोंपड़ों से औरतें, मर्द और बूढ़े सब निकल आए थे। सब के सब इस झगड़े को बड़ी दिलचस्पी से देख रहे थे। शामू के साथी के चाक़ू निकालते ही दो तीन औरतों के मुंह से चीखें निकल गई और उन चीखों ने मेरी नस-नस में एक कपकपाहट सी भर दी। मैं जिन्दगी में पहली दफ़ा इस क़िस्म की सिचुएशन से दो चार हुआ था। मेरा सारा गुस्सा एक ख़ौफ जदा बच्चे की तरह सहम कर मेरे अन्दर ही दुबक गया। मैं अब सिर्फ़ एक घबराहट भरे पछतावे के साथ उस गुंडे के चमचमाते चाक़ू की तरफ़ देख रहा था। मैं उस वक्त भाग कर अपने कमरे में छुप सकता था। मगर अब भागना भी इतना आसान नहीं रह गया था। क्यों कि बीसियों आंखें मुझे अपनी नजर के तराजू में तौल रही थीं। भागने का मतलब था मैं हमेशा हमेशा के लिए उन निगाहों में मर जाता।

वह गुंडा चाक़ू लिए मेरी तरफ़ बढ़ा और मैं बेहिसो हरकत⁽¹⁾ वहीं खड़ा रहा। मैं यह नहीं कहता कि उस वक्त मैं बहुत बहादुरी से खड़ा था। बिल्क उस वक्त अपने पैरों को उस जगह जमाए रखने में मुझे जिस कशमकश और 1. बिना हिले इले

جانتا ہے۔ میں اپنے کمرے کے چبوترے پر کھڑا تھا۔ وہ خنڈا بالکل میرے قریب پہنچ چکا تھا۔ قریب پہنچ کا مصابہ قریب پہنچ کا تھا۔ قریب پہنچ کر وہ بھی ایک لیے کو شنگا۔ شاید اسے بھی تو قع تھی کہ میں بھاگ کر کمر سے میں گھس جاؤں گا۔ گر جب خلاف تو قع اس نے جھے ای طرح کھڑا پایا تو بجائے جمھ پر چاقو کا وار کرنے کے بجائے میری ٹانگ پکڑ کر مجھے نیچ کھٹے لینا چاہا۔ میں ایک تدم چھپے ہے گیا۔ میری ٹانگ اس کے باتھ نہ آسکی۔ استے میں چھپے سے ایک چیخ سائی دی اور کوئی آکر مجھے سے ایک چیخ سائی دی اور کوئی آکر مجھے سے لیٹ گیا۔ میں طرح رو ری تھی۔ کھٹے نکر کو کھٹے کی کوشش کرنے گئی۔ وہ بری طرح رو ری تھی۔

''حلیے آپ اندر چلیے۔ خدا کے لیے آپ اندر چلیے۔'' اس نے مجھے کمرے کی طرف تھیٹتے ہوئے کہا۔ بیوی میں اتن طاقت نہیں تھی کہ وہ مجھے اندر تھییٹ لے جاتی ۔ مگر میرا شعور بھی شاید ای میں اپنی عافیت سمجھ رہا تھا۔ بیوی نے مجھے کمرے میں و تھیل کر دروازہ اندر سے بند کرلیا اور زور زور سے بھوٹ بھوٹ کر رونے گلی۔ ایک کیے تک باہر سنا ٹا جھا یا رہا۔صرف میری بیوی کی زور زور سے رونے کی آواز سنائی دے رہی تھی۔ پھر ہاہر ہے مغلظات كا ايك طوفان المديرا۔ وه سب مجھے بے تحاشا كالياں وے رہے تھے۔ پھر ايسا بھی سنائی دیا جیسے کچھ لوگ انھیں سمجھا رہے ہوں۔ گر دو تمین منٹ تک گالیوں کا سلسلہ برا برجان رہا۔ بیوی دونوں پیر پکڑے میرے گھٹوں برسر نکائے بری طرح رورہی تھی۔ میں کھاٹ پرکس بت کی طرح چپ جاپ بیضا رہا۔ آخر مغلظات کا طوفان رکا اور پھر ایا لگنے لگا جسے بھیڑ مییٹ رہی ہو۔تھوڑی دہر بعد ماہر کھمل سنا ٹا جیما عما۔صرف رہ رہ کرکسی کھولی ے سی عورت کی کوئی تیکھی گالی اڑتی ہوئی آتی اور ایک طمانیجے کی طرح کان برگتی۔ میں پید نہیں کتنی دیر تک ای طرح دیپ جاپ بیغا رہا۔ بیوی پید نہیں کب تک مود میں سر ڈالے روتی رہی۔ اس وقت ندامت غصہ اور خوف سے میری عجیب کیفیت تھی۔ ذہن مویا ہوا میں اڑا حاربا تھا اور دل تھا کہ سننے میں سنجلتا ہی نہیں تھا۔ میری ساری کوششوں کے باوجود معاملہ کسی کانچ کے برتن کی طرح میرے ہاتھوں سے چھوٹ کر فکڑے فکڑے ہوگیا تھا ادر اس کی کرچیں میرےجسم میں اس طرح گڑ حمی تھیں کہ میرا سارا وجودلہولہان ہو گیا تھا۔ میری ساری تدبیرین ناکام بوتئین تھیں اور اب میں بہت بلندی سے گرنے والے کی بد

तकलीफ़ का सामना करना पड़ रहा था वह मेरा ही दिल जानता है। मैं अपने कमरे के चबूतरे पर खड़ा था। वह गुंडा बिल्कुल मेरे क़रीब पहुंच चुका था। क़रीब पहुंच कर वह भी एक लम्हे को ठिठका। शायद उसे भी तवक़्क़ो थी कि मैं भाग कर कमरे में घुस जाऊंगा। मगर जब ख़िलाफ़े तवक़्क़ो (1) उस ने मुझे इसी तरह खड़ा पाया तो बजाए मुझ पर चाक़ू का वार करने के मेरी टांग पकड़कर मुझे नीचे खींच लेना चाहा। मैं एक दम पीछे हट गया। मेरी टांग उस के हाथ न आ सकी। इतने में पीछे से एक चीख़ सुनाई दी और कोई आकर मुझ से लिपट गया। मैंने पलटकर देखा मेरी बीवी मेरी कमर पकड़े मुझे अन्दर खींचने की कोशिश करने लगी। वह बुरी तरह रो रही थी।

''चलिए आप अन्दर चलिए। खुदा के लिए आप अन्दर चलिए'' उसने मुझे कमरे की तरफ़ घसीटते हुए कहा। बीवी में इतनी ताक़त नहीं थी कि वह मुझे अन्दर घसीट ले जाती। मगर मेरा शक्त भी शायद इसी में अपनी आफ़ियत समझ रहा था। बीवी ने मुझे कमरे में धकेल कर दरवाजा अन्दर से बन्द कर लिया और ज़ोर ज़ोर से फुट-फुट कर रोने लगी। एक लम्हे तक बाहर सन्नाय छाया रहा। सिर्फ़ मेरी बीवी की जोर जोर से रोने की आवाज सुनाई दे रही थी। फिर बाहर से मुग़ल्लेजात⁽²⁾ का एक तूफ़ान उमंड पडा। वह सब मुझे बेतहाशा गालियां दे रहे थे। फिर ऐसा भी सुनाई दिया जैसे कुछ लोग उन्हें समझा रहे हों। मगर दो तीन मिनट तक गालियों का सिलसिला बराबर चलता रहा। बीवी दोनों पैर पकडे मेरे घुटनों पर सर टिकाए बुरी तरह रो रही थी। मैं खाट पर किसी बुत की तरह चुप चाप बैठा रहा। आखिर मुग़ल्लेजात का तुफ़ान रुका और फिर ऐसा लगने जैसे भीड़ छट रही हो। थोडी देर बाद बाहर मुकम्मल सन्नाय छा गया। सिर्फ़ रह रह कर किसी खोली से औरत की कोई तीखी गाली उडती हुई आती और एक तमाचे की तरह कान पर लगती। मैं पता नहीं कितनी देर तक इसी तरह चुपचाप बैठा रहा। बीवी पता नहीं कब तक गोद में सर डाले रोती रही। उस वक्त निदामत (3), गुस्सा और खौफ से मेरी अजीब कैंफ़ियत थी। जेहन गोया हवा में उड़ा जा रहा था। और दिल था कि सीने में संभलता ही नहीं था। मेरी सारी कोशिशों के बावजूद मामला किसी कांच के बर्तन की तरह मेरे हाथों से छूटकर दुकड़े दुकड़े हो

^{1.} आशा के विपरीत 2. गालियां 3. पछतावा

نصیب شخص کی طرح ہوا میں معلق ہاتھ پیر مارد ہا تھا۔ کسی کا رکو چھو سکنے یا کسی شوس جگہ پر پاؤں جمانے کی بے بتیجہ کوشش آخر میں نے طے کر لیا کہ میں جلد ہی ہے کھولی چھوڑ دوںگا۔ گر کھولی چھوڑ نے سے پہلے اپنی تو بین کا بدلا بھی لینا تھا۔ گر میں اکیلا کیا کر سکتا تھا۔ میں بہت دیر تک اسی بچ وتاب میں بیشا رہا۔ آج میں اپنی نظروں میں ذلیل ہوگیا تھا۔ رہ رہ کران فنڈوں کی گالیاں میرے کانوں میں گوئے رہی تھیں اور میری بے بی کا احساس بردھتا جارہا تھا اور اس بے بی کے احساس کے ساتھ ہی میرا غصہ بھی بردھتا جارہا تھا۔ بوی کی سسکیاں اب تھم چی تھیں گر اس کا سرمیری گود میں اس طرح رکھا تھا۔ میری کی سسکیاں اب تھم چی تھیں گر اس کا سرمیری گود میں اس طرح رکھا تھا۔ میں نے آہتہ سے اس کا سرائھاتے ہوئے کہا۔

''اٹھو جار پائی پر لیٹ جاؤ''

یوی ای طرح فرش پر بیٹی ساڑی کے بلوسے اپنی ناک سڑ کئے گئی۔ میں اٹھ کر بش شرک پہننے لگا۔ بیوی نے میری طرف دیکھتے ہوئے پو چھا:'' کہاں جارہے ہو؟'' میں نے کہا:'' تم آرام کرد۔ میں ابھی پولیس انٹیٹن سے آتا ہوں''

" نہیں آپ کہیں نہ جائے۔"

'' گھراؤنہیں' میں نے تعلی دیتے ہوئے کہا: '' میں اہمی دس منٹ میں آجاؤں گا۔''
'' میں اہمی دس منٹ میں آجاؤں گا۔''
'' منٹ خواہ کو اہ گھراری ہو۔ یہ لوگ سیدھے سادے لوگوں پر ای طرح دھونس جماتے
ہیں۔ کی کو مارنا اتنا آسان نہیں ہوتا۔ تم دیکھنا دس منٹ بعد پولیس ان سب کے ہمکڑیاں لگا
کے لے جائے گی۔ کسی شریف آدمی کو اس طرح پریٹان کرنا ہنی کھیل نہیں ہے۔''

" محرآپ اکیلے میں اور وہ بہت سارے میں۔ آپ اکیلے کتوں سے لڑیں گے۔" " ارے میں لڑنے کہاں جا رہا ہوں۔ پولیس میں شکایت درج کراؤں گا۔ پولس خود آن کر ان سے مجھ لے گی۔ ہم اس طرح ان کی بد معاشی کو سہتے رہیں تو جینا ودجرہوجائے گا۔ انھیں ان کی بدمعاشی کی آخر کچھ تو سزا لمنی جاہیے۔"

بوی کی آنکھوں سے پھر آنو بنے لگے۔ "جب میں یہاں رہنا بی نہیں ہے تو پھر خواہ مخواہ ان کے مند لکنے کی کیا ضرورت؟"

गया था और अब उस की किचें। मेरे जिस्म में इस तरह गड़ गई थीं कि मेरा सारा वजूद लहू लोहान हो गया था। मेरी सारी तदबीरें नाकाम हो गई थीं और अब मैं बहुत बुलन्दी से गिरने वाले किसी बदनसीब शख्स की तरह हवा में मुअल्लक़ (1) हाथ पैर मार रहा था। किसी कणार को छू सकने या किसी ठोस जगह पर पांव जमाने की बे नतीजा कोशिशा आख़र मैं ने तै कर लिया कि मैं जल्द ही यह खोली छोड़ दूंगा। मगर खोली छोड़ने से पहले अपनी तौहीन का बदला भी लेना था। मगर मैं अकेला क्या कर सकता था। मैं बहुत देर तक इसी पेचोताब में बैठा रहा। आज मैं अपनी नज़रों में जलील हो गया था। रह रह कर उन गूंडों की गालियां मेरे कानों में गूंज रही थीं और मेरी बेबसी का एहसास बढ़ता जा रहा था और उस बेबसी के एहसास के साथ ही मेरा गुस्सा भी बढ़ता जा रहा था। बीवी की सिसिकयां अब थम चुकी थीं। मगर उस का सर मेरी गोद में उसी तरह रखा था। मैंने आहिस्ता से उस का सर उठाते हुए कहा।

"उठो चारपाई पर लेट जाओ"

बीवी उसी तरह फर्श पर बैठी साड़ी के पल्लू से अपनी नाक सुड़कने लगी। मैं उठ कर बुश शर्ट पहनने लगा। बीवी ने मेरी तरफ़ देखते हुए पूछा "कहां जा रहे हो?" मैंने कहा "तुम आराम करो मैं अभी पुलिस स्टेशन से हो आता हूं"

"नहीं आप कहीं न जाइये।"

''घबराओ नहीं'' मैंने तसल्ली देते हुए कहा ''मैं अभी दस मिनट में आ जाऊंगा।''

"नहीं खुदा के लिए आप उन लोगों से न उलझिए। वह लोग बहुत बदमाश है"

"तुम ख्वाह म ख्वाह घबरा रही हो। यह लोग सीधे सादे लोगों पर इसी तरह धौंस जमाते हैं। किसी को मारना इतना आसान नहीं होता। तुम देखना दस मिनट बाद पुलिस उन सब को हथकड़ियां लगाके ले जाएगी। किसी शरीफ़ आदमी को इस तरह परेशान करना हंसी खेल नहीं है।"

"मगर आप अकेले हैं और वह बहुत सारे हैं। आप अकेले कितनों से लड़ेंगे""अरे मैं लड़ने कहां जारहा हूं। पुलिस में शिकायत दर्ज कराऊंगा। पुलिस 1. टंगा हुआ

میں نے ذرا کرا کے لیج میں کہا۔ " تم اندر سے کنڈی لگا لو۔ تم ان باتوں کونہیں سمجتیں۔ وہ لوگ جارے دروازے پر آ کر جمیں بول ذلیل کر جائیں اور ہم پولس میں شکایت تک نہ کریں۔ اس سے بڑی برولی اور کیا ہو سکتی ہے۔ آج انھوں نے دروازے پر عربی کریں۔ اس سے بڑی برولی اور کیا ہو سکتی ہے۔ آج انھوں نے دروازے پر عربی کم کریں کھر میں کھس سکتے ہیں۔ "

پھر لیجے کو تھوڑا نرم بناتے ہوئے کہا: '' تم سمجھ دار ہو۔ ہمت سے کام لو۔ میں ابھی لوث آؤںگا۔ چلو اٹھو دروازہ اندر سے بند کرد۔''

یہ کہہ کر میں باہر نکل میا۔ یوی مرے قدموں سے جلتی میرے چھیے آئی۔ میں نے دروازہ بند ہونے کے ساتھ ہی اس کی ملکی سکیوں کی آواز بھی سن عکل میں کافی اندھیرا تھا۔ پاس کی کھولیوں کے دروازے بند ہو چکے تھے۔ جاروں طرف ایک نا گوارفتم کا سنا ٹا جمایا ہوا تھا۔ میں کلی کو یار کر کے سڑک کے کنارے آگیا۔ یہاں لیب پوسٹ کی ملکجی روشی ادتگھ رہی تھی۔ میں نے مركر دائي طرف نظر دوڑائى جہال شاموكا شراب كا اڈا تھا۔ جاروں طرف ٹاٹ سے گھرے اس اڈے میں کافی روشی ہورہی تھی۔ باہر بچوں پر کچھ لوگ بیٹے یتے دکھائی دیے۔ یاس بی سے کہاب والا اپن انگیشی دیکا ئے بیٹا تھا۔ اڈے سے رہ رہ كر بلك بلك قبقبول اور كالسول كے كفكنے كى ملى جلى آوازين آر بين تعين بوليس اعيش جانے کا راستہ ای طرف سے تھا۔ تمرین اس طرف جانے کے بجائے دوسری طرف مرکیا اور ریل کی پٹری کراس کر کے بڑی سڑک برنکل آیا۔ میں دل بی دل میں بولیس اطبیشن میں انسکٹر کے سامنے کی حانے والی شکایت کا خاکہ ترتیب دینے لگا۔ میں زندگی میں پہلی دفعہ پولیس اٹیشن جارہا تھا۔ ول میں ایک طرح کی تھبراہث بھی تھی۔ تھر ان بدمعاشوں کو مزہ چکھانے کا جذبہ اس محبراہث بر کچھ ایا حادی تھا کہ پر بولیس اٹیٹن کی طرف بزھتے ہی مئے میں نے من رکھا تھا کہ وہاں شریف آ دمیوں سے کوئی سیدھے منہ بات تک نہیں کرتا۔ میں ذہن میں ایسے جملوں کو ترتیب دینے لگا جن کے ذریعے پولیس انجارج کے سامنے اپنی بے بسی اور پر بیٹانی کا واضح نقشہ تھینج سکوں اور وہ نورا متاثر ہوجائے۔ بولیس اعیش کی عمارت آمنی تھی۔ کیٹ میں داخل ہوتے وقت ایک بار پھر میرا دل زور سے دھڑ کا۔ میں عمارت کی سیرهمیاں چڑھ کر ورائڈے میں پہنچا۔ یاس بی چھی بینچ پر ایک کانشیبل

खुद आकर उन से समझ लेगी। हम इस तरह उन की बदमाशी को सहते रहेंगे तो जीना दूभर हो जाएगा। उन्हें उन की बदमाश की आख़िर कुछ तो सजा मिलनी चाहिए।"

''बीवी की आंखों से फिर आंसू बहने लगे। जब हमें यहां रहना ही नहीं है तो फिर ख़्वाह मख़्वाह उन के मुंह लगने की क्या ज़रूरत?''

मैंने जरा कड़के लहजे में कहा "तुम अन्दर से कुंडी लगा लो। तुम इन बातों को नहीं समझतीं। वह लोग हमारे दरवाज़े पर आकर हमें यूं जलील कर जाएं। और हम पुलिस में शिकायत तक न करें। इससे बड़ी बुजदिली और क्या हो सकती है। आज उन्होंने दरवाज़े पर गड़बड़ की, कल घर में भी घुस सकते हैं।"

फिर लहजे को थोड़ा नर्म बनाते हुए कहा। ''तुम समझदार हो। हिम्मत से काम लो। मैं अभी लौट आऊंगा। चलो उठो दरवाजा अन्दर से बन्द करो।''

यह कह कर मैं बाहर निकल गया। बीवी मरे क़दमों से चलती मेरे पीछे आई। मैंने दरवाज़े बन्द होने के साथ ही उस की हलकी हलकी सिसिकियों की आवाज भी सुनी। गली में काफ़ी अंधेरा था। पास की खोलियों के दरवाज़े बन्द हो चुके थे। चारों तरफ़ एक नागवार क़िस्म का सन्नाय छाया हुआ था। मैं गली को पार करके सड़क के किनारे आ गया। यहां लैम्प पोस्ट की मलगुजी रौशनी कंघ रही थी। मैंने मुड़कर दाऐ तरफ़ नज़र दौड़ाई जह:ं शामू का शराब का अड्डा था। चारों तरफ़ यट से घिरे उस अड्डे में काफ़ी रौशनी हो रही थी। बाहर बेंचों पर कुछ लोग बैठे पीते दिखाई दिए। पास ही सीख़ कबाब वाला अपनी अंगीठी दहकाए बैठा था। अड्डे से रह रह कर हलके-हलके क़हक़हों और गिलासों के खनकने की मिली जुली आवाज़े आ रही थीं। पुलिस स्टेशन जाने का रास्ता उसी तरफ़ से था। मगर मैं उस तरफ़ जाने के बजाए दूसरी तरफ़ मुड़ गया और रेल की पटरी क्रास करके बड़ी सड़क पर निकल आया। मैं दिल ही दिल में पुलिस स्टेशन में इन्सपेक्टर के सामने की जाने वाली शिकायत का ख़ाका तरतीब देने लगा। मैं जिन्दगी में पहली दफ़्त पुलिस स्टेशन जा रहा था। दिल में एक तरह की घबराहट भी थी। मगर उन बदमाशों को मज़ा चखाने का जज़्वा इस घबराहट पर कुछ ऐसा

^{1.} धुंधली

بیٹا بھیلی پرتمباکو اور چونا مسلتا نظر آیا۔ اس نے اپنی ٹوپی اتار کر بیٹی پر رکھ لی تھی اور اس کی سختی کھو پڑی بلب کی روشی میں چک رہی تھی۔ جمھ پر نظر پڑتے ہی اس نے استفہامیہ نظروں سے میری طرف و یکھا۔ میں اس کے قریب پہنچ کر ایک وقفے کے لیے رکا۔ پھر بولان مجھے ایک کم پلیٹ تکھوانی ہے'

"كبال سے آئے ہو؟" اس نے تورى چر هاكر يو جها۔

"نهروممرے"

"كيا موا؟" اس كى نظرين سرس بيرتك ميرا جائزه لے رى تھيں۔

'' وہاں کچھ غنڈوں نے مجھ پر حملہ کرنا چاہاتھا۔''

"ہم" اس نے تمباکو کو اپنے نچلے ہونٹ کے نیجے دباتے ہوئے زور سے ہنکاری جری۔ پھر ہاتھ مجھاڑ تا ہوا بولا۔" جاؤ، ادھر جاؤ" اس نے سیدھے ہاتھ کی طرف اشارہ کرتے ہوئے کہا اور دیوار سے ٹیک لگا کر بیٹھ گیا۔ بی اس طرف مڑکیا جدھر کانشیبل نے اشارہ کیا تھا۔ پھوتدم چلئے کے بعد ایک کھلا دروازہ دکھائی دیا۔ بی دروازے میں ٹھٹک گیا اور سائے کری پر بیٹھے ایک موٹے حولدار کو دیکھنے لگا۔ وہ شاید بیڈ کانشیبل تھا اور گردن جھکائے ہوئے کوئی فائل الٹ بلٹ رہا تھا۔ پاس بی ایک دوسری میز پر کوئی کلرک پچھ ٹائپ کر رہا تھا اور ایک دوسرا کانشیبل ایک طرف کری پر بیٹھا جمائیاں لے رہا تھا۔ بی ٹائپ کر رہا تھا اور ایک دوسرا کانشیبل ایک طرف کری پر بیٹھا جمائیاں لے رہا تھا۔ بی ٹائپ کر دن اٹھائی اور جمائی لینے والا کانشیبل چندھیائی آبھوں سے جھے دیکھنے لگا۔ بیڈ گانشیبل نے قائل سے گرد ن اٹھائی اور جمائی لینے والا کانشیبل چندھیائی آبھوں سے جھے دیکھنے لگا۔ بیڈ کانشیبل نے گردن ہلاکر جھے اندر آنے کی اجازت دی۔ بی اندر داخل ہوا اور میز کے کانشیبل نے گردن ہلاکر جھے اندر آنے کی اجازت دی۔ بی اندر داخل ہوا اور میز کے یاس جا کھڑا ہوا۔

[&]quot;كياتيج" ميدكانشيل نے فاكل برسے نظري الفات موس يوجها-

[&]quot;جى جى ايك كميلين لكموانى ب-"

[&]quot;کہال رہتے ہو؟"

^{&#}x27;' نهرومحمر ميں <u>.</u>''

[&]quot;كيا موا، جلدي بولو-"اس كالهجد بزا المانت آميز تعا-

हावी था कि पैर पुलिस स्टेशन की तरफ़ बढ़ते ही गए। मैंने सुन रखा था कि वहां शरीफ आदिमयों से कोई सीधे मुंह बात तक नहीं करता। मैं जेहन में ऐसे जुमलों को तरतीब देने लगा जिन के जिरये पुलिस इन्चार्ज के सामने अपनी बेबसी और परेशानी का वाजेह नक़शा खींच सकूं। और वह फ़ौरन मुतास्सिर हो जाए। पुलिस स्टेशन की इमारत आ गई थी। गेट में दाख़िल होते वक्त एक बार फिर मेरा दिल जोर से धड़का।

मैं इमारत की सीढ़ियां चढ़कर वराण्डे में पहुंचा। पास ही बिछी बेंच पर एक कांस्टेबल बैठा हथेली पर तम्बाकू और चूना मसलता नजर आया। उसने अपनी टोपी उतारकर बेंच पर रख ली थी और उस की गंजी खोपड़ी बल्ब की रौशनी में चमक रही थी। मुझपर नजर पड़ते ही उस ने इस्तप्रकामिया⁽¹⁾ नजरों से मेरी तरफ़ देखा। मैं उस के क़रीब पहुंच कर एक वक़फे के लिए रुका, फिर बोला ''मुझे एक कम्मलेंट लिखवानी है।''

- ''कहां से आए हो ?'' उसने त्योरी चढाकर पूछा।
- ''नेहरू नगर से''
- ''क्या हुआ ?'' उस की नज़रें सर से पैर तक मेरा जायजा ले रही थीं।
- ''वहां कुंछ गुंडों ने मुझ पर हमला करना चाहा था''

"हुम" उस ने तम्बाकू को अपने निचले होंठ के नीचे दबाते हुए जोर से हुंकारी भरी। फिर हाथ झाड़ता हुआ बोला। "जाओ, उधर जाओ" उसने सीधे हाथ की तरफ़ इशारा करते हुए कहा और दीवार से टेक लगाकर बैठ गया। मैं उस तरफ़ मुड़ गया जिधर कान्सटेबल ने इशारा किया था। कुछ क़दम चलने के बाद एक खुला दरवाजा दिखाई दिया। मै। दरवाजे में ठिठक गया और सामने कुर्सी पर बैठे एक मोटे हवलदार को देखने लगा। वह शायद हेड कान्सटेबल था और गर्दन झुकाए हुए कोई फ़ाइल उलट पलट रहा था। पास ही एक दूसरी मेज पर कोई क्लर्क कुछ टाईप कर रहा था और एक दूसरा कान्सटेबल एक तरफ़ कुर्सी पर बैठा जमाईयां ले रहा था। मैंने एक लमहे तवक़्क़ुफ़ वे के बाद खंखार कर कहा "में आई, कमइन?" हेड कान्सटेबल ने फाईल से गरदन उठाई और जमाई लेने वाला कान्सटेबल चुंधियाई आंखों से मुझे देखने लगा हेड कान्सटेबल ने गर्दन हिलाकर

^{1.} प्रश्नवाचक 2. विलंब

میں نے دل میں الفاظ تولیے ہوئے کہا۔''جی بات یہ ہے کہ میں نہروتکر میں پانچ نمبر بلاک میں رہتا ہواں۔ وہاں شامو دادا کا شراب کا اڈاہے۔ اس کے چھوکروں نے آج مجھ بر جاتو سے حملہ کرنا جا ہاتھا۔''

"كون؟ تم في اس جعيرا موكان ميد كانشيل في كها-

میں اس ریمارک پر بو کھلا گیا۔ میں سجھ رہاتھا شراب کے اڈے کا ذکر آتے ہی ہے اوگ ان غندوں کی غند اگردی کو سجھ جائیں گے۔ کیونکہ شامونا جائز شراب کا کارد بار کرتا تھا۔ گر اب حولدار کے تیور دیکھ کر میرا دل ڈو سبنے لگا۔ میں نے سمسی صورت بنا کر کہا۔ "جی میں نے کچونہیں کیا۔"

" پھر کیا اس کا دماغ خراب ہوگیا تھا کہ جوخواہ تخواہ تم سے جھکڑا کرنے آگیا۔" اس کے درشت کہج نے میرے رہے سے حواس بھی غائب کردیے تھے۔ پھر بھی میں نے سنجیلتے ہوئے کہا:

"جی بات میتی که وه جارے مر کے سامنے والی نالی میں شراب کی بوتلیں چھپا رہا تھا۔ میں نے منع کیا بس اس بر جو گیا۔"

"جم، به بات ہے۔ به بتاؤتم نے منع کیوں کیا؟"

"جیا۔" میں جرت سے اس کی طرف دیکھنے لگا۔" صاحب وہ میرے گھر کے سائے شراب چھپا رہا تھا۔ میں ایک شریف آدی ہوں۔ کیا جھے اس پراعتراض کرنے کا حق بھی نہیں۔"

میڈ کانشیبل نے ایک بار مجھے محور کر دیکھا اور بولا: " ارے شراب کی بوتلیں نالی میں جمیار ہاتھا نا جمعارا کیا مجڑتا تھا اس ہے۔"

بجھے اب بچ بچ عصد آگیا تھا۔ ہیں نے دل ہی دل ہیں اس موثے حولدار کو ایک موثی ہی علی دی گر ہولدار کو ایک موثی ہی گال دی گر بہ ظاہر اپنے لیج کوحتی الامکان نرم بناتے ہوئے کہا۔" گر حولدار صاحب (حرامی صاحب) وہ غنڈا آدی ہے۔ اگر ہیں اس وقت اعتراض نہ کرتا تو وہ کل میرے گھر ہیں گھس سکتا تھا اور پھر اس کا دھندا بھی تو قانونا ناجائز ہے۔"

"بس بس بم كومعلوم بــ يهال قانون مت محمارو ادحر جاؤ يبل صاحب ب

मुझे अन्दर आने की इजाजत दी। मैं अन्दर दाख़िल हुआ और मेज के पास जा खड़ा हुआ।

- ''क्या है ?'' हेड कान्सटेबल ने फ़ाइल पर से नज़रें उठाते हुए पूछा।
- ''जी……जी……मुझे एक कंप्लेट लिखवानी है।''
- ''कहां रहते हो ?''
- "नेहरूनगर"
- ''क्या हुआ, जल्दी बोलो'' उसका लहजा बड़ा अहानत आमेज था।

मैंने दिल में अलफाज़ तौलते हुए कहा। ''जी बात यह है कि मैं नहरू नगर में पांच नंबर ब्लॉक में रहता हूं। वहां शामू दादा का शराब का अड्डा है। उस के छोकरों ने आज मुझ पर चाकू से हमला करना चाहा था।''

"क्यों ? तुम ने उसे छेड़ा होगा" हेड कान्सटेबल ने कहा।

मैं इस रिमार्क पर बौखला गया। मैं समझ रहा था शराब के अड्डे का जिक्र आते ही यह लोग उन गुंडों की गुंडा गर्दी को समझ जाऐगे। क्यों कि शामू नाजायज शराब का कारोबार करता था। मगर अब हवलदार के तेवर देखकर मेरा दिल डूबने लगा। मैंने मिसमिसी सूरत बनाकर कहा। ''जी मैंने कुछ नहीं किया।''

फिर क्या उस का दिमाग़ ख़राब हो गया था जो ख़्नाह-म-ख़्नाह⁽¹⁾ तुम-से झगड़ा करने आ गया उस के दुरुश्त⁽²⁾ लहजे ने मेरे रहे सहे हवास⁽³⁾ भी ग़ायब कर दिए थे। फिर भी मैंने संभलते हुए कहा।

"जी बात यह थी कि वह हमारे घर के सामने वाली नाली में शराब की बोतलें कुषा रहा था। मैंने मना किया। बस इसी पर बिगड़ गया।"

''हुम, यह बात है। यह बताओ तुम ने मना क्यों किया।?''

"जी!" मैं हैरत से उसकी तरफ़ देखने लगा। "साहब वह मेरे घर के सामने शराब छुपा रहा था। मैं एक शरीफ आदमी हूं। क्या मुझे उस पर एतराज करने का हक भी नहीं।"

हेड कान्सटेबल ने एक बार मुझे घूरकर देखा और बोला। ''अरे शराब की बोतलें नाली में छुपा रहा था ना, तुम्हारा क्या बिगड़ता था उससे।''

यूं ही 2. कठोर 3. होश

شکایت کرو۔ وہ کے گا تو ہم کمپلین لکھ لے گا۔ "اس نے بائیں طرف ایک کیبن کے بند دروازے کے طرف ایک کیبن کے بند دروازے کے طرف اشارہ کرتے ہوئے کہا۔ پھر وہ کری میں پڑے جمائی لیتے سابی سے مخاطب ہوا۔ "جمالے راؤاس آدمی کو صاحب کے باس لے جاؤ۔ "

بھالے راؤنے ایک بار پھر منہ مجھاڑ کر جمائی کی اور پھھ بوبرداتا ہوا نامورای سے بولا: "چلو!"

وہ کری سے اٹھا اور الرکھڑاتے قدموں سے چان ہوا کیبن کی چی بٹا کر اندر چاا گیا۔
پھر چند سکنڈ بعد بی باہر نکلا اور میری طرف دیکھے بغیر بولا۔'' جاؤ'' اور خود دوبارہ ای کری کی طرف مڑگیا جہاں پہلے بیٹیا جماہیاں ہے رہا تھا۔ میں چی ہٹاکر اندر داخل ہوا۔ سامنے ایک خت چہرے اور بڑی بڑی مونچھوں والا فخص جھے گھور رہا تھا۔ میں نے تھوک نگلتے ہوئے دونوں ہاتھ جوئے دونوں ہاتھ جوزکر اسے نمکار کیا اور اس کے سامنے جا کھڑا ہوا (میرے دونوں ہاتھ نمکار کی شکل میں اب بھی جڑے ہوئے تھے) سامنے دو خالی کرسیاں پڑی تھیں۔ گر میں اس قدر نروس ہو گیا تھا کہ کری پر بیٹھنے کے بجائے، میز کے کونے سے لگ کر کھڑا ہوگیا۔

اس قدر نروس ہو گیا تھا کہ کری پر بیٹھنے کے بجائے، میز کے کونے سے لگ کر کھڑا ہوگیا۔

"کیا بات ہے؟'' اس خت چہرے والے پولیس انسکٹر نے (ہاں وہ صورت سے پولیس انسکٹر می لگا تھا) اپنی موثی آواز میں بو چھا۔

میں نے پھر اپنے ختک ہوتے گلے پر ہاتھ پھیرتے ہوئے کہا" صاحب میں ایک کمیلین لکھوانے آیا ہوں۔"

''کہاں رہتے ہو؟''اس نے بھی جھے سرسے پاؤں تک گھورتے ہوئے ہو چھا۔ ''نبروگر میں'' میں نے انتہائی زم اور التی آواز میں جواب دیا۔

"بينو" اس نے كرى كى طرف اشاره كيا۔

میں ایک کری پر بیٹے گیا اور شام کے جھڑے کی تغییات سنانے لگا۔ میری گفتگو کے دوران وہ سگریٹ سلگا کر بلکے بلکے کش لیتا رہا۔ وہ میری با تیں اتن بد ولی ہے بن رہا تھا چیے کوئی محسا بٹا ریکارڈ من رہا ہو۔ بس وہ سننے کے لیے من رہا تھا۔ جب میں چپ ہوا تو ایک لیے کواس کی تیز نگامیں میرے چیرے پرجی رہیں۔ پھراس کی آواز میرے کالوں ہے کرائی۔

मुझे अब सचमुच गुस्सा आ गया था। मैंने दिल ही दिल में उस मौटे हवलदार को एक मोटी सी गाली दी मगर बजाहिर अपने लहजे को हत्तल-इमकान⁽¹⁾ नर्म बनाते हुए कहा। मगर हवलदार साहब (इरामी साहब) वह गुंडा आदमी है अगर मैं उस वक्त एतराज्ञ न करता तो वह कल मेरे घर में घम सकता था और फिर उस का धंधा भी तो क़ानूनन नाजायज है।''

"बस बस हम को मालूम है। यहां क़ानून मत बघारो। उधर जाओ पहले साहब से शिकायत करो। वह कहेगा तो हम कंप्लेन लिख लेगा।" उस ने बाएं तरफ़ एक केबिन के बन्द दरवाज़े की तरफ़ इशारा करते हुए कहा। फिर वह कुर्सी में पड़े जमाही लेते सिपाही से मुख़ातिब हुआ। भाले राव इस आदमी को साहब के पास ले आजो।"

भाले राव ने एक बार फिर मुंह फाड़कर जमाही ली और कुछ बड़बड़ाता हुआ नागवारी से बोला ''चलो!''

वह कुर्सी से उठा और लड़खड़ाते क़दमों से चलता हुआ केबिन की चिक़ हटाकर अन्दर चला गया। फिर चन्द सैकेंड बाद ही बाहर निकला और मेरी तरफ़ देखे बग़ैर बोला ''जाओ'' और खुद दोबारा उसी कुर्सी की तरफ़ मुड़ गया जहां पहले बैठा जमाइयां ले रहा था। मैं चिक्न हटाकर अन्दर दाख़िल हुआ। सामने एक सख्त चेहरे और बड़ी बड़ी मूछों वाला शख़्स मुझे घूर रहा था। मैंने थूक निगलते हुए दोनों हाथ जोड़कर उसे नमस्कार किया और उसके सामने जा खड़ा हुआ। (मेरे दोनों हाथ नमस्कार की शकल में अब भी जुड़े हुए थे।)सामने दो खाली कुर्सियां पड़ी थीं मगर मैं इस क़द्र नरवस हो गया था कि कुर्सी पर बैठने के बजाए, मेज के कोने से लग कर खड़ा हो गया।

"क्या बात है?" उस सख्त चेहरे वाले पुलिस इन्सपैक्टर ने (हां वह सूरत से पुलिस इन्सपैक्टर ही लगता था।) अपनी मोटी आवाज में पूछा।

मैंने फिर अपने खुश्क होते गले पर हाथ फेरते हुए कहा। ''साहब मैं एक कंप्लेन्ट लिखवाने आया हूं।

"कहां रहते हो ?" उसने भी मुझे सर से पांव तक घूरते हुए पूछा।

"नेहरू नगर में" मैंने इन्तहाई नर्म और मुल्तजी⁽²⁾ आवाज में जवाब

^{1.} यथासम्भव े 2. प्रार्थना करने वाली

"امچما توابتم كيا جائي مو؟"

"جی!" بی اس کے سوال کا مطلب نہیں سجھ سکا تھا۔ اس لیے صرف جی کرکے رہ میا۔ انگر نے شاید میرے لیج میں چھپے استجاب کو جمانپ لیا تھا۔ اس نے فورا ووسرا سوال کیا۔

"كياكام كرتے ہو؟"

"جى صاحب من عى وارد من كلرك مول "

" مر مل كون كون هي؟-"

" بى مى اور مىرى بوى _"

"شايد نے آئے ہو؟"

''جی ہاں، چوسات مہینے ہوئے ہیں''

"اچھا دیکھو واقعی تمھارے ساتھ زیادتی ہوئی ہے اور مجھے اس کا بڑا افسوس ہے۔

انسکٹر کے ان جلوں سے میری ڈھارس بندھی اور میرا حوصلہ بھی بڑھا۔ ہیں نے درمیان میں جلدی سے کہا۔"مرااگر آپ جائیں تو۔"

انسکر کوشاید برااس طرح درمیان بس ٹوکنا برا لگا۔اس نے قدر سے خت کیج بس کہا:

" پہلے ہماری بات تو سنو!"

"يىسرا" يسسم كرايك دم سے چپ ہوگيا۔

'دیکھو! ہم ابھی تممارے ساتھ دو چار سپائی روانہ کر سکتے ہیں اور ساتھ بی اس کے آدمیوں کی مشکیس کسواکر یہاں بلاسکتے ہیں۔ گرسوچ اس سے کیا ہوگا۔ وہ دوسرے بی دن منانت پر چھوٹ جائے گا اور پھر تممیس وہیں رہنا ہے ادر وہ ہے فنڈا آدی چھوٹ کے بعد وہ انتخاباً کی کھر کھی کرسکتا ہے۔ کیاتم میں اتنی طاقت ہے کہ اس سے کھراسکو؟''

د محرسر! قانون

اس نے باتھ اٹھا کر جھے چپ کرادیا اور سگریٹ کی را کھ ایش ٹرے بی جمازتا ہوا ہولا: "قانون کی بات مت کرو۔ قانون ہم کو بھی معلوم ہے۔ لیستھاری کمپلین پر ایکشن الے سکتی ہے۔ گرچویس کھنٹے تھاری حفاظت کی گارٹی نہیں دے سکتی۔"

दिया।''बैठो'' उस ने कुर्सी की तरफ़ इशारा किया।

मैं एक कुर्सी पर बैठ गया और शाम के झगड़े की तफ़सीलात सुनाने लगा। मेरी गुफ़्तगू के दौरान वह सिगरेट सुलगाकर हलके-हलके कश लेता रहा मेरी बातें इतनी बे दिली से सुन रहा था जैसे कोई घिसा पिटा रिकार्ड सुन रहा हो। बस वह सुनने के लिए सुन रहा था। जब मैं चुप हुआ तो एक लमहे को उसकी तेज निगाहें मेरे चेहरे पर जमी रहीं। फिर उस की आवाज मेरे कानों से टकराई।

- "अच्छा तो अब तुम क्या चाहते हो ?"
- "जी!" मैं उस के सवाल का मतलब नहीं समझ सका था। इसलिए सिर्फ़ जी करके रह गया। इन्सपैक्टर ने शायद मेरे लहजे में छुपे इस्तेजाब⁽¹⁾ को भांप लिया था। उसने फौरन दूसरा सवाल किया।
 - ''क्या काम करते हो ?''
 - ''जी साहब मैं 'सी' वार्ड में कलर्क हूं''
 - ''घर में कौन कौन है?''
 - ''जी, मैं और मेरी बीवी''
 - ''शायद नए आए हो ?''
 - ''जी हां, छ: सात महीने हुए''
- "अच्छा देखो वाक़ई तुम्हारे साथ ज्यादती हुई है और मुझे इस का बड़ा अफ़सोस है मगर....."

इन्सपैक्टर के उन जुमलों से मेरी ढाढ़स बंधी और मेरा हौसला भी बढ़ा। मैंने दरिमयान में जल्दी से कहा। ''सर! अगर आप चाहें तो.....''

इन्सपैक्टर को शायद मेरा इस तरह दरिमयान में टोकना बुरा लगा। उसने क़दरे सख्त लहजे में कहा।

- ''पहले हमारी बात तो सुनो!''
- ''जी सर!'' मैं सहम कर एकदम से चुप हो गया।
- "देखो! हम अभी तुम्हारे साथ दो चार सिपाही रवाना कर सकते हैं और साथ ही उस के आदिमयों की मशकें कसवा कर यहां बुलवा सकते हैं। मगर सोचो उस से क्या होगा। वह दूसरे ही दिन जमानत पर छूट जाएगा और फिर तुम्हें 1 आक्टर्य

میں گردن جمائے جب جاپ بیٹا رہا۔ انسکو نے دوسری سگریٹ سلگاتے ہوئے کیا:

"دیکھو! تم سیدھے سادے آ دمی معلوم ہوتے ہو۔ ہوسکے تو وہ جکہ چھوڑ دو، اور اگر وہیں رہنا جاہج ہوتو پھر ان خنڈوں سے مل کرر ہو۔"

" محرس او و ناجائز شراب كا دهندا كرتا ب كيا بوليس اس كا دهندا بندنيس كراستى؟" (جمح فوراً احساس بواكه جمع بيسوال نيس بوجهنا جايئة تقا) ايك بل ك لي المهائز كى المحصول على طعم الر آياراس في محصور كرديكها بهر تعييم آواز على بولا: "بوليس خوب جانتى ب كدا س كيا كرنا جاسي اوركيانيس ماموكا دهندا بند بوف سه سارے كالے دهند بند بوجا كي كرا مي ايدانيس ب-"

جی میں آیا کہد دوں۔ کالے دھندے توبندنیں ہوں گے۔ گر شامو سے سلنے والا ہفتہ ضرور بند ہوجائے گااورتم یکی نہیں چاہتے۔ گر ایسا کچھ کہنا اپنے آپ کو اندھے کویں میں گرانے جیسا ہی تھا۔ کیونکہ اگر یہ سامنے بیٹھا ہوا انسیکڑ ناراض ہوجائے تو النا جھے اندر کرسکتا ہے۔ میں نے کتنی ہی دفعہ شامو کے اڈے پر پولیس والوں کو کو کا کولا پیتے اور سخ کرسکتا ہے۔ میں نے کتنی ہی دفعہ تو وہ باہر بیٹھا ہوا ہیڈ کانٹیبل بھی دکھائی دیا تھا۔ یہ میری ہی مجول تھی کہ میں یہاں دوڑا چلا آیا تھا۔ جھے بچ بچ یہاں نہیں آنا چاہیے تھا۔ ان حرام خوروں سے منعنی کی تو تع رکھنا، کبوں سے سخاوت کی امید رکھنے جیسا ہی تھا۔ مجھے ہیں گرتے ہوئے کہا۔

"و کیمو! اب بھی تم کمیلین تکموانا چاہتے ہوتو باہر جاکر کمیلین تکموا دینا۔ ایک کانشیبل تمحارے ساتھ جائے گا اور شامو کو بہال بلالائے گا۔ اب تم جائے ہو'' اتنا کہدکر اس نے میز پر رکمی تمنی بجائی۔ حجث ایک حولدار اندر داخل ہوا۔ انسیکٹر نے رعب دار آواز میں کہا۔
"دیکھو یہ کوئی کمیلین لاج کرنا چاہتے ہیں۔ پایڈے سے کہوان کی کمیلین لکھ لے اور بھالے راؤ کوان کے ساتھ بھیج دے۔"

"لیسمر الله عولدار نے سر جما کر کہا۔ مجر میری طرف موکر بولا۔" چلو۔" میں حولدار کے چیچے باہر نکل آیا۔ حولدار نے ای موٹے کا تشییل کو مخاطب کرتے

वहीं रहना है और वह है गुंडा आदमी। छूटने के बाद वह इन्तेक़ामन (1) कुछ भी कर सकता है। क्या तुम में इतनी ताक़त है कि उससे टकरा सको?''

"मगर सर! क्रानून:....."

उसने हाथ उठाकर मुझे चुप करा दिया और सिगरेट की राख ऐशट्रे में झाड़ता हुआ बोला।

''क़ानून की बात मत करो। क़ानून हमको भी मालूम है। पुलिस तुम्हारी कंप्लेन पर एक्शन ले सकती है। मगर चौबीस घन्टे तुम्हारी हिफ़ाजत की गारन्टी नहीं दे सकती।'' मैं गर्दन झुकाए चुपचाप बैठा रहा। इन्सपैक्टर ने दूसरी सिगरेट सुलगाते हुए कहा।

--देखो! तुम सीधे सादे आदमी मालूम होते हो। हो सके तो वह जगह छोड़ दो, और अगर वहीं रहना चाहते हो तो फिर उन गुंडों से मिल कर रहो।''

"मगर सर! वह नाजायज शराब का धंधा करता है क्या पुलिस उस का धंधा बन्द नहीं करा सकती?" (मुझे फ़ौरन एहसास हुआ कि मुझे यह सवाल नहीं पूछना चाहिए था।) एक पल के लिए इन्सपैक्टर की आंखों में गुस्सा उतर आया। उसने मुझे घूर कर देखा फिर गंभीर आवाज में बोला। "पुलिस खूब जानती है कि उसे क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए। शामू का धंधा बन्द होने से सारे काले धंधे बन्द हो जाऐगे, ऐसा नहीं है।"

जी में आया कह दूँ- काले धंधे तो बंद नहीं होगें। मगर शामू से मिलने वाला हफ़्ता जरूर बंद हो जायेगा और तुम यही नहीं चाहते। मगर ऐसा कुछ कहना अपने आप को अंधे कुएं में गिराने जैसा ही था। क्योंकि अगर यह सामने बैठा हुआ इन्सपैक्टर नाराज हो जाये तो उलटा मुझे अन्दर करा सकता है। मैंने कितनी ही दफ़्त शामू के अड्डे पर पुलिस वालों को कोका कोला पीते और सीख़ कबाब उझते देखा था। एक दो दफ़्त वह बाहर बैठा हुआ हेड कांसटेबल भी दिखाई दिया था। यह मेरी ही भूल थी कि मैं यहां दौड़ा चला आया था। मुझे सचमुच यहां नहीं आना चाहिए था। इन हरामखोरो से मुंसिफ़ी⁽²⁾ की तवक्को⁽³⁾ रखना, कंजूस से सख़ावत⁽⁴⁾ की उम्मीद रखने जैसा ही था। मुझे यूं गुम सुम बैठा देख कर इन्सपेक्टर ने सिगरेट को ऐश में रगडते हुए कहा।

^{1.} बदले में 2. न्याय 3. आशा 4. दान शीलता

ہوئے کھا:

"پایٹرے صاحب! بڑے صاحب نے اس آدمی کی کمپلین لاج کرنے کو کہا ہے۔" پایٹرے نے خشونت آمیز نظروں سے میری طرف دیکھا۔ چڑ چڑاہٹ اور بیزاری اس کے چہرے سے صاف پڑھی جا سکتی تھی۔ اک لمجے کو اس کی اور میری نظریں طیس۔ میں نے دھیرے سے کہا:

" ونہیں مجھے کوئی کمیلین نہیں تکھوانی ہے۔"

ا تنا کہد کر میں تیزی سے دروازے کے باہرنکل گیا۔ اپنے بیچے میں نے پانڈے کی آواز کی جوشاید بھالے راؤ سے کہدر ہا تھا۔

'' ذرا ان کا حلیہ تو دیکھو۔ دم تو کچھ بھی نہیں اور چلے ہیں دادا لوگوں سے کر لینے۔' میں تیز تیز قدم افعا تا ہوا پولیس اٹیٹن کے باہر نکل آیا۔ کلائی کی گھڑی دیکھی، دس نج رہے تھے۔ دکا نیں قریب قریب بند ہو چکی تھیں۔ صرف، نداشار، ہول کھلا تھا اور پان والے کی دکان پر کچھ لوگ کھڑے نظر آ رہے تھے۔ میں نے جیب سے دس پھیے کا ایک سکہ نکالا اور یان والے سے ایک بنا ماسگریٹ فرید کر باس ہی جلتے ہوئے چراغ سے اسے ساگایا۔

میرے قدم پھراپ محلے کی طرف اٹھ گئے۔ یس اس وقت بالکل خالی الذہن ہوگیا تھا۔ نہ جھے شامو پرخصہ آرہا تھا نہ پایٹرے حولدار پر نہ پولیس انسکٹر پر۔ جھے وہ تیوں ایک جیسے ہی گئے۔ انسکٹر کی باتوں نے جھے جنجوڑ کر رکھ دیا تھا۔ جھے لگ رہا تھا، جپائی، انسان اور شرافت سب کتابی باتیں ہیں۔ حقیق زندگی ہے اس کا دورکا بھی واسطہ نہیں۔ اس دنیا میں شریف اور ایمان دار آ دی کولوگ ای طرح نفرت و حقارت کی نظر ہے دیکھتے ہیں جس طرح کسی زمانے ہیں بہتن، شدرلوگوں کو دیکھتے تھے۔ ہیں ریلوے پٹری کراس کر کے ظرح کسی زمانے ہیں برہمن، شدرلوگوں کو دیکھتے تھے۔ ہیں ریلوے پٹری کراس کر کے پہلی سڑک پر آ گیا تھا۔ نالیوں ہے اٹھنے والے بد ہو کے بھبکوں نے میرا استقبال کیا۔ ہیں پھر این میں داخل ہو چکا تھا۔ سامنے شامو کے اڈے پر و لی بی چہل پہل تھی۔ سے پھر این حکے ہیں داخل ہو چکا تھا۔ سامنے شامو کے اڈے پر و لی بی چہل پہل تھی۔ سے گالیاں فضا ہیں تیرتی بھر رہی تھیں۔

میں ایک بل کے لیے شکار پر ایے گر کی طرف مڑنے کے بجائے شامو کے

''देखो! अब भी तुम कम्पलेन लिखाना चाहते हो तो बाहर जा कर कम्पलेन लिखा देना। एक कान्सेटबल तुम्हारे साथ जायेगा और शामू को यहां बुला लायेगा। अब तुम जा सकते हो।'' इतना कह कर उस ने मेज पर रखी घंटी बजायी। झट एक हवलदार अन्दर दाखिल हुआ। इन्सपैक्टर ने रौब दार आवाज में कहा।

"देखो यह कोई कम्पलेन लाज करना चहाते हैं। पांडे से कहो इन की कम्पलेन लिख ले और भाले राव को इन के साथ भेज दे।"

''यस----सर---।'' हवलदार ने सर झुका कर कहा फिर मेरी तरफ़ मुड़ कर बोला''चलो''

मैं हवलदार के पीछे बाहर निकल आया। हवलदार ने उसी मोटे कान्सटेबल को मुख़ातिब करते हुए कहा।

"पांडे साहब! बड़े साहब ने इस आदमी की कम्पलेन लाज करने को कहा है।"

पांडे ने खुशूनत⁽¹⁾ आमेज नजरों से मेरी तरफ़ देखा। चिड़चिड़ाहट और बेजारी उस के चेहरे से साफ़ पढ़ी जा सकती थी। एक लम्हे को उस की और मेरी नजरे मिलीं मैंने धीरे से कहा।

''नहीं मुझे कोई कम्पलेन नहीं लिखवानी है।''

इतना कह कर मैं तेज़ी से दरवाज़े के बाहर निकल गया। अपने पीछे मैं ने पांडे की आवाज सुनी जो शायद भाले राव से कह रहा था।

''जरा इन का हुलिया तो देखो। दम तो कुछ भी नहीं और चले है दादा लोगों से टक्कर लेने।''

मैं तेज तेज क़दम उठाता हुआ पुलिस स्टेशन के बाहर निकल आया। कलाई की घड़ी देखी, दस बज रहे थे। दुकानें क़रीब क़रीब बंद हो चुकी थीं। सिर्फ़ न्यू स्टार होटल खुला था। और पान वाले की दुकान पर कुछ लोग खड़े नज़र आ रहे थे। मैं ने जेब से दस पैसे का एक सिक्का निकला और पान वाले से एक पनामा सिगरेट ख़रीद कर पास ही जलते हुए चिराग़ से उसे सुलगाया।

मेरे क़दम फिर अपने मुहल्ले की तरफ़ उठ गये। मैं इस वक़्त बिलकुल खाली जहन हो गया था। न मुझे शामू पर गुस्सा आ रहा था। न पांडें हवलदार पर 1. कडाई

اڈے کی طرف بڑھ کیا۔ قریب پینے کر میں نے اڈے کا جائزہ لیا۔ ۔ یائج دس آدمی بچوں ر بیٹے، سے کباب چکھتے، شراب کے محون لے رہے تھے۔ سوڈا واٹر کی بوتلیں اور شراب کے گلاس ان کے سامنے رکھے تھے۔ دلی شراب کی تیز پو میر بے نتمنوں سے ٹکرائی دو چھوکرے یہنے والو ل کوسروکر رہے تھے۔ ان میں ایک وہی تھا، جس نے مجھ پر جاتو اٹھایا تھا۔ میں جیسے ہی روشی میں آیا۔ اس کی نظر مجھ پر بڑی۔ ایک معے کے لیے وہ چونکا پھر انے ہاتھ میں دلی سوڈے کی بوتل دوسرے چھوکرے کے ہاتھ میں تھاتا ہوا دھیمی آواز میں کچھ بولا۔ اس چھوکرے نے بھی بلٹ کر مجھے دیکھا اور پھر لیک کر اندر کے کمرے میں جلا كيار بحص بر جاقو اشاف والا ابني كمر بر دونول باتهدر كم اى طرح كمرا بجه كمور ربا تفار میں دھیرے دھیرے چلتا ہوا قریب کی ایک جینچ پر جاکر بیٹھ گیا۔ اتنے میں شامولنگی اور بنیان سنے باہر نکلا۔ اس کے ساتھ دو مچھوکرے اور بھی تھے۔ شامو کے تیور اچھے نہیں تھے۔ "كون بريا" اس في تيكي لهج مين مجه برجاتو الفاف والله جهوكرت س بوچھا۔ پھراس کے جواب دینے سے پہلے ہی اس کی نظر بھھ پر بڑگی ادر دہ بھی ایک لمح كے ليے منك كيا۔ ميرى نظري اس كے چرے برگرى ہوئى تھيں۔ اس نے ان جموروں ہے کچھ کہا۔ جسے میں نہیں بن سکا۔ پھر وہ دھیرے دھیرے جلتا ہوا میرے قریب آ کر کھڑا ہوگیا۔ دوسرے چھوکرے چند قدم کے فاصلے سے مجھے نیم دائرے کی شکل میں گھیرے کھڑے ہو گئے۔ شراب یہنے والے دوسرے گا بک بھی اب بہی بہی باتیں کرنے ک بحائے ہماری طرف و مکھنے گئے تھے۔ ثاید وہ بھی سمجھ کئے تھے کہ اب یہاں کچھ ہونے والا ہے میں ای طرح بین پر بیٹا شامو کی طرف د کھے رہا تھا۔ شامو نے اپنی لنگی ادر چر ماتے ہوئے کڑے لیج میں یو جھا:

"اب کیا ہے؟"

معاً اس کی اور میری نظریں ملیں۔ اس کی آنکھوں سے چنگاریاں نکل رہی تھیں۔ میں نے نہایت برسکون کیچے میں جواب دیا۔

" يا وُ سير موتمي اور ايك سادا سود الـ"

شامو کے ہاتھ سے لنگی کے چھور چھوٹ گئے اور وہ چرت سے میری طرف دیکھنے لگا۔

न पुलिस इन्सपैक्टर पर मुझे वह तीनों एक जैसे ही लगे। इन्सपैक्टर की बातों ने मुझे झिंझोंड़कर रख दिया था। मुझे लग रहा था। सच्चाई, इन्साफ्र, और शराफ़त सब किताबी बातें है। हक़ीक़ी जिन्दगी से इन का दूर का भी वास्ता नहीं। इस दुनिया में शरीफ़ और ईमानदार आदमी को लोग इसी तरह नफ़रत व हिक़ारत की नज़र से देखते हैं। जिस तरह किसी जमाने में ब्राह्मण, शुद्र लोगों को देखते थे। मैं रेलवे पटरी क्रांस करके पतली सड़क पर आ गया था। नालियों से उठने वाले बदबू के भवकों ने मेरा इस्तेक़बाल (1) किया। मैं फिर अपने मुहल्ले में दाख़िल हो चुका था। सामने शामू के अड्डे पर वैसी ही चहल पहल थी। सीख़ कबाब वाले की अंगीठी बराबर दहक रही थी और गिलासों को ग्ननक और पीने वालों की बहकी बहकी गालियां फ़िज़ा में तैरती फिर रही थीं।

मैं एक पल के लिये ठिठका। फिर अपने घर की तरफ़ मुड़ने के बजाये शामू के अड्डे की तरफ़ बढ़ गया। करीब पहुंच कर मैं ने अड्डे का जायजा लिया। पांच दस आदमी बेंचो पर बैठै सीख़ कबाब चखते, शराब के घूंट ले रहे थे। सोड़ा वाटर की बोतलें और शराब के गिलास उन के सामने रखे थे। देसी शराब की तेज़ बू मेरे नथुनों से टकराई। दो छोकरे पीने वालों को सर्व कर रहे थे। उनमें एक वही था, जिसने मुझपर चाक़ू उद्यया था। मैं जैसे ही रौशनी में आया। उसकी नजर मुझपर पड़ी। एक लम्हे के लिए वह चौंका फिर अपने हाथ में दबी सोड़े की बोतल दूसरे छोकरे के हाथ में थमाता हुआ धीमी आवाज़ में कुछ बोला। उस छोकरे ने भी पलटकर मुझे देखा और फिर लपककर अन्दर के कमरे में चला गया। मुझ पर चाक़ू उद्यने वाला अपनी कमर पर दोनों हाथ रखे उसी तरह खड़ा मुझे घूर रहा था। मैं धीरे-धीरे चलता हुआ क़रीब की एक बेंच पर जाकर बैठ गया। इतने में शामू लुंगी और बनियान पहने बाहर निकला। उसके साथ दो छोकरे और भी थे। शामू के तेवर अच्छे नहीं थे।

"कौन है रे!" उसने तीखे लहजे में मुझपर चाकू उठाने वाले छोकरे से पूछा। फिर उसके जवाब देने से पहले ही उसकी नजर मुझपर पड़ गई और वह भी एक लम्हे के लिए ठिठक गया। मेरी नजरें उसके चेहरे पर गड़ी हुई थीं। उसने उन छोकरों से कुछ कहा। जिसे मैं नहीं सुन सका। फिर वह धीरे-धीरे चलता

१. स्वागत

یم دائرے کی شکل میں کھڑے اس کے چھوکر ہے بھی جیران نظروں سے ایک دوسرے کی طرف و کھنے گئے۔ ان کے لیے میرا بید دوبیة شاید قطعی فیر متوقع تھا۔ دہ سب پھر کی مور تیوں کی طرف و کھے رہے جس وحرکت کھڑے میری طرف و کھ رہے تھے۔ ان کی آگھوں میں اس وقت ایک عجیب متم کی پریشانی جھلک رہی تھی۔ چند ٹانیوں کے لیے بی کیوں نہ ہو، اس وقت دہ جھے بہت ہے بس نظر آئے اور ان کی اس ہے بی کو و کھو کر جھے اندر سے بڑی داحت کا احساس ہوا۔ چند سینڈ تک کوئی کچو نہ بولا۔ میں نے ای تفہر سے ہوئے کہا۔

"اور ایک پلیك بعنی موئی کلی بحی دینا-"



हुआ मेरे क़रीब आकर खड़ा हो गया। दूसरे छोकरे चन्द क़दम के फ़ासले से मुझे नीम दायरे की शक्ल में घेरे खड़े हो गए। शराब पीने वाले दूसरे ग्राहक भी अब बहकी बहकी बार्ते करने के बजाये हमारी तरफ़ देखने लगे थे। शायद वह भी समझ गए थे कि अब कुछ होने वाला है। मैं उसी तरह बेंच पर बैठा शामू की तरफ़ देख रहा था। शामू ने अपनी लुंगी ऊपर चढ़ाते हुए कड़े लहजे में पूछा।

''अब क्या है?''

मअन उसकी और मेरी नज़रें मिलीं। उसकी आंखों से चिंगारियां निकल रही थीं। मैंने निहायत पुरसुकून लहजे में जवाब दिया।

''पाव सेर मौसम्बी और एक सादा सोडा''

शामू के हाथ से लुंगी के छोर छूट गये और वह हैरत से मेरी तरफ़ देखने लगा।

नीम-दायरे⁽¹⁾ की शक्ल में खड़े उसके छोकरे भी हैरान नजरों से एक दूसरे की तरफ़ देखने लगे। उन के लिए मेरा यह रवैया शायद क़तई ग़ैर मुतवक़्क़ा था। वह सब पत्थर की मूर्तियों की तरह बेहिसोहरकत खड़े मेरी तरफ़ देख रहे थे। उन की आंखों में उस वक़्त एक अजीब क़िस्म की परेशानी झलक रही थी। चन्द सानियों⁽²⁾ के लिए ही क्यों न हो, उस वक़्त वह मुझे बहुत बेबस नजर आए और उन की उस बे बसी को देखकर मुझे अन्दर से बड़ी राहत का एहसास हुआ। चन्द सेकेंड तक कोई कुछ न बोला। मैंने उसी ठहरे हुए लहजे में आगे कहा।

''और एक प्लेट भुनी हुई कलेजी भी देना''



" این کمال میت کوکاعرها دینے کا پیرانیس لیتا، باتی برکام کا پیرا ہے فاروق بھائی ان کوسمجما دو۔"

چائے پیتے ہوئے چونک کر میں نے اس کی طرف دیکھا۔ چرے دہ کریہ ٹیل گتا تھا۔ مسلسل پان چہاتے چہاتے اس کے دانت سر چکے تھے۔ پرسہا برس کی شراب نوثی کے اثر سے چرہ آگ بمبحوکا سا اور سوجا سوجا سا لگا تھا۔ پھر بھی اندازہ ہوتا تھا کہ جوائی میں اثر سے چرہ آگ بمبحوکا سا اور سوجا سوجا سا لگا تھا۔ پھر بھی اندازہ ہوتا تھا کہ جوائی میں کو فاصا برد بار رہا ہوگا، کپڑوں سے نفاست فا ہر تھی۔ سونے کی اگوٹی، کلائی پر بیش قیمی کھڑی، چہرے سے چالائی چی تھی۔ اندازم مین کے سیانوں جیسا۔ ہر دو جملوں کے بعد ایک سوکھا قہتہ۔ عمر پہان سے پھر اوپر بی ہوگ۔ لیکن یہ جملہ سننے کے بعد وہ گذا ساہوئی ہم جس میں بیٹے چائے پی رہے تھے، اس کا مالک، سامنے کری پر پر چڑھائے تیمہ پاؤ کھاتا اومیز عمر فض، چائے کی بے رونق بیالیاں، ان پر بھنگی کھیاں سب انتہائی نا تا بل برداشت معلوم ہوئے۔ وہاں سے بھاگ جانے کو تی چاہالیوں پیر جے رہے کیوں نا قابلی برداشت معلوم ہوئے۔ وہاں سے بھاگ جانے کو تی چاہالیوں پر جے رہے کیوں کہ حربے کو ل کے جن سے کم فیس۔ مکان کی ضرورت ہو، دکان خریدنی یا بچنی ہو، یا پاسپورٹ بخانا ہو۔ کہن ایسے کام چگی مصالحت کروائی ہو۔ طلاق دلوائی ہو، معالم سلحمانا ہو یا پھر الجمانا ہو۔ رئیں ایسے کام چگی بجاتے می کر دیتا ہے۔ بچ بچھوٹو جن بھی ایسے کام آئی سہولت کے ساتھ نہیں کرسکا۔ بیات تیس کر سے بیام کر رہے ہیں، رئیس بھائی، میرے دوست نے بونمی کیسکو۔ دارت نے بونمی کو خیال سے بوجھا۔

***الے کب سے بیکام کر رہے ہیں، رئیس بھائی، میرے دوست نے بونمی گھالو طاری دیکھے کے خیال سے بوجھا۔

***الے کام آئی سیالی کی میں دوست نے بونمیا۔

***الے کے خیال سے بوجھا۔

***الے کیس دوست نے بوجھا۔

***الے کیس دوست نے بوجھا۔

"م لوگ پیدا بحی نہیں ہوئے ہوے۔"رکیس ہنا۔"اس وقت سے میں بدکام

हक़

''अपन ख़ाली मय्यत को कांधा देने का पैसा नहीं लेता, बाक़ी हर काम का पैसा है फारूक़ भाई इनको समझा दो।''

चाय पीते हुए चौंक कर मैं ने उस की तरफ़ देखा। चेहरे से तो वह करीह नहीं लगता था। मुसलसल पान चबाते चबाते उस के दांत सड़ चुके थे। बरसहा बरस की शराब नोशी के असर से चेहरा आग भभका सा और सूजा -सूजा सा लगता था। फिर भी अन्दाजा होता था कि जवानी मैं वह खासा खुबरू रहा होगा कपड़ो से नफ़ासत जाहिर थी। सोने की अंगूठी कलाई पर बेशक़ीमत घड़ी, चेहरे से चालाकी टपकती थी। गुफ्तग् का अन्दाज बम्बई के सियानों जैसा -हर दो जुमलों के बाद एक सूखा क़हक़हा - उम्र 50 से कुछ ऊपर ही होगी। लेकिन यह जुमले सुनने के बाद वह गन्दा सा होटल हम जिसमे बैठे चाय पी रहे थे, उसका मालिक सामने कुर्सी पर पैर चढाये क्रीमा पाव खाता अधेड उम्र शख्स, चाय की बेरौनक प्यालियों. उन पर भिनकती मिक्खियां सब इन्तहाई नाकाबिले बरदाश्त मालूम हुए। वहां से भाग जाने को जी चाहा लेकिन पैर जमे रहे क्योंकि मेरे दोस्त फ़ारूक़ ने मुझे यक्नीन दिलाया था। कि दांतो में खिलाल करता यह शख्स अलादीन के जिन से कम नहीं। मकान की ज़रूरत हो, दुकान ख़रीदनी या बेचनी हो,या पासपोर्ट बनवाना हो, मसालेहत⁽¹⁾ करवानी हो, तलाक़ दिलवानी हो, मामला सुलझाना हो या फिर उलझाना हो, रईस ऐसे काम चुटकी बजाते ही कर देता है। सच पूछिये तो जिन भी ऐसे काम इतनी सहूलियत के साथ नहीं कर सकता।

''आप कब से यह काम कर रहे हैं, रईस भाई,'' मेरे दोस्त ने यूं ही ग्रफ़्तगू

^{1.} मेल जोल

کررہا ہوں۔''

لهجه سوكها اور سپاث تو تها ليكن اس ميس طنز كا شائبه نه تها۔ وه ايك ساده سپائى بيان كر رہا تھا۔

جھے اچھولگا، میں ایسے جواب کا متوقع نہ تھا۔ کھانس کے بہانے میں نے جھک کر منہ چھپانے کی کوشش کی،فاروق نے پیرد باکر سنبطنے کا اشارہ کیا اور میں نے ہلی کو دباتے ہوئے چبرے پر سنجیدگی طاری کرلی۔وہ کہدر ہاتھا۔

''انیس سو بچپن میں میں اپنی بہلی ہوی کے ساتھ کرا جی چلا گیا تھا۔ ہیں سال کا بھی نہ تھا۔ وہاں جاکر چائے کی دکان شروع کی۔ بہت اچھا دھندا تھا۔ پچاس ساٹھ روپ روز کما لیتا تھا۔ بچہ تو تھا نہیں ٹھاٹھ سے زندگی گزرتی تھی لیکن سالی ممبئی بہت یاد آتی تھی۔ مبئی بھی ہوی سے کم نہیں ۔ اس کی عادت لگ گئی تو سمجھو آ دی گیا کام سے۔ ایک دن اپنی بیوی کو بولا۔ چلومبئی واپس چلتے ہیں۔ ادھر میرا من نہیں لگتا۔ اس کے بھائی بہن سکے سمعندی بھی ساتھ سے کرا جی میں۔ وہ کیوں تیار ہوتی۔ میں نے اس سے کہا۔ دیکھ امینہ ابھی تو جوان ہے دوسری شادی کر سکتی ہے۔ اپنی چائے کی دکان ہے اچھی چلتی ہے۔ تیرے بھائی دکان سنجال سکتے ہیں تھے کوئی تکلیف نہیں ہوگی۔ میں ممبئی واپس چلا جاتا ہوں۔ نزرگی رہی، قدرت کومنظور ہوا تو پھر ملیس کے۔ وہ بہت روئی دھوئی بہت گڑ گڑ ائی۔ میرے ہاتھ پیر جوڑے اس کے بھائیوں نے بھی سمجھایا۔ پر میرا دل تو ممبئی واپ چلا جاتا ہوں۔ سوتے جا گئے مبئی آئھوں کے آگے گھوتی تھی۔ بھی دیکتا میں میرین ورابع پر چل رہا ہوں۔ بھی جو پائی پر ریت میں لیٹا ہوں۔ بھی جنڈی بازار میں اپنے دوستوں کے ساتھ ہوں۔ بھی غذاتی ہورہا ہے۔ نیند میں بھی مبئی بلاتی تھی۔ ایک دن چیکے سے نکلا اور کھو کھرا پار کے ہاس واپس مبئی آ میا۔ '

ادهرآ کرمیرے کو بہت سکون ملا۔ وہی پرانی لائف چالو ہوگی۔ میج کومٹنی شو۔ شام کو کمبھی وی ٹی اشیشن پر فاؤنشین چین بیچا۔ مجمی سڑک پر بلاسٹک کے تعلونے، اڑی جوڑی، تین پین کی اڑی، ربر کا سانپ، سب دھندا ابن نے کیا۔ وہ کھاس میں چھی ڈالتے ہیں تا۔

जारी रखने के ख्याल से पूछा।

"तुम लोग पैदा भी नहीं हुए होंगे" रईस हंसा "उस वक्त से मैँ यह काम कर रहा हूं।"

लहजा सूखा और सपाट तो था। लेकिन उसमें तंज्र⁽¹⁾ का शायबा⁽²⁾ न था। वह एक सादा सच्चाई बयान कर रहा था। बस।

मुझे उच्छू लगा, मैं ऐसे जवाब का मोतवक्क़ा⁽³⁾ न था। खांसी के बहाने मैंने झुक कर मुंह छिपाने की कोशिश की, फ़ारूक़ ने पैर दबा कर संभलने का इशारा किया और मैंने हंसी को दबाते हुए चेहरे पर संजीदगी तारी कर ली । वह कह रहा था ।

"उन्नीस सौ पचपन में अपनी पहली बीवी के साथ कराची चला गया था। बीस साल का भी न था। वहां जाकर चाय की दुकान शुरू करी। बहुत अच्छा धंधा था। पचास साठ रूपये रोज कमा लेता था। बच्चा तो था नहीं ठाठ से जिन्दगी गुजरती थी। लेकिन साली बम्बई बहुत याद आती थी। बम्बई भी बीवी से कम नहीं। इसकी आदत लग गई तो समझो आदमी गया काम से। एक दिन अपनी बीवी को बोला चलो बम्बर्ड वापस चलते हैं। इधर मेरा मन नहीं लगता। उसके भाई बहन सगे संबंधी साथ थे कराची में वह क्यों तैयार होती, । मैंने उससे कहा देख अमीना अभी तू जवान है, दूसरी शादी कर सकती है। अपनी चाय की दुकान है। अच्छी चलती है, तेरे भाई दुकान संभाल सकते हैं। तुझे कोई तकलीफ़ नहीं होगी। मैं वापस बम्बई जाता हं जिन्दगी रही, और क़ुदरत को मंजुर हुआ तो फिर मिलेंगे। वह बहुत रोई धोई। बहुत गिडगिडाई। मेरे हाथ पैर पकडे उसके भाइयों ने भी समझाया। पर मेरा दिल तो बम्बई में अटका था, उठते बैठते, सोते जागते बम्बई आंखों में घूमती थी। कभी देखता में मेरिन ड्राइव पर चल रहा हूं। कभी चौपाटी पर रेत में लेटा हूं, कभी भिंडी बाज़ार पर अपने दोस्तों के साथ हंसी मजाक़ हो रहा है। नींद में भी बम्बई बुलाती थी। एक दिन चुपके से निकला और खोखरा पार के रस्ते वापस बम्बई आ गया।

"इधर आकर मेरे को बहुत सुकून मिला। वही पुरानी लाइफ़ चालू हो गई। सुबह को मैटनी शो। शाम को कभी वी. टी. स्टेशन पर फाउन्टेन पेन बेचा। कभी

^{1.} कटाक्ष 2. सन्देह 3. आशा

کی چٹی میں ایک کا' دو کا پانچ کا نوٹ ہوتا ہے۔ باتی سب خال ہوتی ہے۔ چار آنے میں کوئی بھی چٹی میں ایک کا' دو کا پانچ کا نوٹ ہوتا ہے۔ بیرا آئڈیا تھا۔ سب سے پہلے میں نے اند میر ی اثنیٹن پر شروع کیا۔ ٹی وی آیا تو سب سے پہلے میں نے ہستم مل کمپاؤٹر میں اتوار کوفلم دکھانا چالو کیا۔ بڑے آدی کا چار آنہ، نیچ کا دو آند۔ عورتیں اور بچہ بہت آتے سے۔ پورا کمپاؤٹر بحر جاتا تھا۔''

جھے البھن ہوری تھی۔اس کی باتیں سننے کا جی تو جاہ رہا تھا لیکن میرے کام کی اب تک کوئی بات بی نہ ہوئی تھی۔ مجھے کمرہ کرائے پر چاہیے تھا۔ بال بچوں کو وطن سے لاتا تھا۔میرا دل کہیں اور تھا۔

"آپ نے شادی نہیں کی 'فاروق نے یو مجھا۔

" اس کی لجی اسٹوری ہے۔ بالکل فلم کے ما قل۔ ایک ون نازسنیما پر کلٹ کی لائن میں کھڑاتھا۔ بہت لجی لائن تھی۔ ایک لڑکی آئی میرے پاس بولی۔ میرا نکٹ نکالیس کے آپ ؟ میں بولا کیوں نہیں۔ لڑکی تاک نقٹے کی بہت اچھی تھی۔ رنگ گورا پان۔ آنگ اکھا آپ اور اسپرنگ میں تو مست ہوگیا۔ نکٹ نکالا تو اس کی سیٹ میرے بازو میں ہی آئی۔ میں اس کے ساتھ بہت شرافت کے ساتھ جیفا۔ میرے لیے وہ انٹرویل میں آئس کریم میں اس کے ساتھ بہت شرافت کے ساتھ جیفا۔ میرے لیے وہ انٹرویل میں آئس کریم لیک سین میر کے ہو۔ میں نے کہا اس میں انگاش میڈ کی سے آٹھویں تک پڑھا ہوں۔ آپ روز پیچر ڈیکھتے ہیں ؟ میں نے کہا ہاں میں ہرروز میٹنی شود کیمنا ہوں۔ وہ ہنی بولی میں بھی روز میٹنی شود کیمنی ہوں۔ کل آپ کون ک فلم رکھیں گے۔ میں نے چانس لیا۔ کل امپریل میں "جال" و کھنے کا ارادہ ہے، دیو آئد کی۔ ہم تو میں شاید جال ہی تھی، دوسرے دن ہم دونوں نے امپریل میں ساتھ میں فلم دیکھی۔ پھر تو معاملہ جمتا ہی چلا گیا۔ دونوں کا شوق ایک، ٹمپر ایک۔ جمھے دہ پند، میں فلم دیکھی۔ پھر تو معاملہ جمتا ہی چلا گیا۔ دونوں کا شوق ایک، ٹمپر ایک۔ جمھے دہ پند، اس کو میں پند۔ ہم لوگ شادی کرکے ساتھ رہنے گئے ناگیاڑے پر۔"

نیل والاتیسری بار میز صاف کرنے کے لیے آیا تو رئیس بھڑک اٹھا۔'' کیوں بے نیا آیا ہے کیا۔ یہ تیسری بارٹیل صاف کرتے میں دکھے رہاں ہوں۔''

" جانے دو رئیس بھائی" گلے والے نے معاملہ شنڈا کرنے کے لیے کہا"نیا چھو کرا

सड़क पर प्लास्टिक के खिलौने, अड़ी जोड़ी, तीन पत्ते की अड़ी, रबड़ का सांप, सब धंधा अपन ने किया। वह घास में चिट्ठी डालते हैं ना। किसी चिट्ठी में एक का, दो का या पांच का नोट होता है। बाकी सब खाली होती है। चार आने में कोई भी चिट्ठी उठाओ। फिर जैसी जिसकी किस्मत। यह मेरा आइडिया था। सब से पहले मैंने अंधेरी स्टेशन पर शुरू किया। टी. वी. आया तो सब से पहले मैंने हस्ती मिल कम्पाउंड में इतवार की फ़िल्म दिखाना चालू किया। बड़े आदमी का चार आना बच्चे का दो आना, औरतें और बच्चे बहुत आते थे। पूरा कम्पाउंड भर जाता था।"

मुझे उल्झन हो रही थी। उसकी बातें सुनने को जी तो चाह रहा था लेकिन मेरे काम की अब तक कोई बात ही न हुई थी। मुझे कमरा किराये पर चाहिये था, बाल बच्चों को वतन से लाना था। मेरा दिल कहीं और था।

"आप ने शादी नहीं की," फ़ारूक़ ने पूछा।

"इस की लम्बी स्टोरी है। बिल्कुल फ़िल्म के माफ़िक़⁽¹⁾। एक दिन नाज सिनेमा पर टिकट की लाइन में खड़ा था बहुत लम्बी लाइन थी। एक लड़की आई मेरे पास, बोली मेरा टिकट निकालेंगे आप? मैं बोला क्यों नहीं, लड़की नाक नक़्शे की बहुत अच्छी थी। रंग गोरापान, आंग अखा स्पंज, और स्प्रिंग में तो मस्त हो गया। टिकट निकाला तो उसकी सीट मेरे बाजू में ही आई। मैं उसके साथ बहुत शराफत में बैठा। मेरे लिये वह इंटरवल में आईस क्रीम लेकर आई। मैं बोला यैक्यू। खुश हो गई। बोली पढ़े लिखे मालूम होते हो। मैंने कहा इंगिलश मीडियम से आठवीं तक पढ़ा हूं। आप रोज पिक्चर देखते हैं? मैंने कहा हां मैं हर रोज़ मैटनी शो देखता हूं। वह हंसी। बोली मैं भी डेली मैटनी शो देखती हूं। कल आप कौन सी फ़िल्म देखेंगे। मैंने चांस लिया, कल इम्पेरियल में जाल देखने का इरादा है, देवानंद की अभी ठीक से याद नहीं शायद जाल, ही थीं दूसरे दिन हम दोनों ने इम्पेरियल में साथ में फ़िल्म देखी। फिर तो मामला जमता ही चला गया दोनों का शौक़ एक टेम्पर एक, मुझे वह पसंद, उसको मैं पसंद। हम लोग शादी करके साथ साथ रहने लगे नागपाड़े पर।"

टेबुल वाला तीसरी बार मेज साफ़ करने के लिये आया तो रईस भड़क 1. अनुरूप

ہے۔اس کو ابھی مجھ نبیں کون برانا گرا کب ہے کون نیا"

رکیس کا بھڑ کنا میری سجھ میں نہیں آیا۔ فاروق نے بتایا کہ بدگا کب کو ایک طرح کا اشارہ ہے میل خالی کرو۔ بہت وقت ہوگیا۔

فاروق بھائی نے موقع غنیمت جان کر تمن جائے کا آرڈر دیا۔ اور رکیس کا عصہ جماک کی طرح بیٹر کیا۔

" مل جائے گا" رکیس نے بے پروائی سے کہا۔" آپ مجھ سے ددجار دن کے بعد ملیس۔رئیس کے پاس آئے توسمجھوکام ہوگیا۔"

ہم اپنی بات کہ چک تو دوسرے کام یاد آئے۔ ہم نے سوچا کداب چائے پی کرجلدی سے سکیں۔ چائے چنے گئے تو رئیس نے پھر یاد دلایا اپن کھالی میت کو کا ندھا فری دیتا ہے۔ "درکیس بھائی یہ کارڈ رکھے۔ ہم تو آپ نے ملیس کے بی ۔ لیکن آپ آگر ہمیں فون کردیں تو ہم فورا آجا کیں گے۔"

جائے کے پیمے فاروق نے اوا کیے۔رئیس نے تکلفا بھی منع نہیں کیا بلکہ اس طرح عافل ہوگیا۔ کویا جیس بھیات ہی نہ ہو۔

واقتی اس نے دودن میں کام کردیا۔ کرہ مختر تھا۔ بلڈ کے بھی چھوٹی بی تھی۔اس لیے کراید دار کم تھے پردوی پڑھے کھے معلوم ہوتے تھے۔ دردازوں پر ناموں کی تختیاں کی تختیاں جی تھیں جن پرناموں کے آگے بی۔ اے، ایم۔ اے، ایل۔ ایل۔ ایل۔ بی۔ وغیرہ کندہ تھے۔ ڈپازٹ کم تھا۔ کرایہ بھی میری حیثیت کے مطابق۔ جو اس وقت بھی زیادہ نہ تھی۔ ڈپازٹ کم تھا۔ کرایہ بھی میری حیثیت کے مطابق۔ جو اس وقت بھی زیادہ نہ تھی۔ میں رئیس کی سوچھ ہو جو کا قائل ہوگیا۔

کرے سے ہول پر آئے۔ چائے پیتے ہوئے یں نے شکریہ ادا کیا اور ان کی ہرمندی کی داد دی تو ایک سوکھا قبتہ لگا کر کہا۔" ہمائی یکی تو مندے کی اصل بات ہے۔ آپ می سوچ آدی رئیس کے پاس می کول آتا ہے۔ جو آدی ایک بار رئیس کے پاس آگا دہ چر دومرے کے پاس میں جاتا ہیلئے ہے۔ این آدی کو دیکھتے می سجھ جاتا

उद्य। "क्यों बे नया आया है क्या। यह तीसरी बार टेबुल साफ करते मैं देख रहा हूं।"

"जाने दो रईस भाई," गल्ले वाले ने मामला ठंडा करने के लिये कहा, "नया छोकरा है, उस को अभी समझ नहीं कौन पुराना ग्राहक है कौन नया।"

रईस का भड़कना मेरी समझ में नहीं आया। फ़ारूक़ ने बताया कि यह ग्राहक को एक तरह का इशारा है कि टेबुल खाली करो। बहुत वक्नत हो गया है।

फ़्रारूक ने मौक़ा ग़नीमत जान कर तीन चाय का आर्डर दिया। और रईस का गुस्सा झाग की तरह बैठ गया।

"रईस भाई इनको एक कमरा चाहिये।" इससे क़ब्ल कि रईस भाई अपनी प्यारी कहानी सुनाएं फ़ारूक़ ने जल्दी से कहा।

"मिल जायेगा," रईस ने बेपरवाई से कहा, "आप मुझ से दो चार दिन बाद मिलें, रईस के पास आये तो समझो काम हो गया।"

हम अपनी बात कह चुके तो दूसरे काम याद आये, हमने सोचा अब जल्दी से चाय पी कर सटकें।

चाय पीने लगे तो रईस ने फिर याद दिलाया कि अपन खाली मय्यत को कांधा फ्री देता है।

''रईस भाई यह कार्ड रखिये। हमतो आप से मिलेंगे ही। लेकिन आप अगर हमें फ़ोन कर दें तो हम फ़ौरन आ जाएगे।

चाय के पैसे फ़ारूक़ ने अदा किये। रईस ने तकल्लुफ़न⁽¹⁾ भी मना नहीं किया। बल्कि इस तरह ग्राफिल⁽²⁾ हो गया गोया हमें पहचानता ही न हो।

वाक़ई उसने दो दिन में काम कर दिया। कमरा मुख्तसर था। बिल्डिंग भी छोटी ही थी। इस लिये किरायादार कम थे। पड़ोसी पढ़े लिखे मालूम होते थे। दरवाजों पर नामों की तिख्तयां लगी थीं, जिनपर नामों के आगे बी. ए, एम. ए, एल. एल. बी. बग़ैरा कंदा थे, डिपाजिट कम था। किराया भी मेरी हैसियत के मुताबिक। जो उस वक़्त कुछ ज्यादा न थी। मैं रईस की सूझ बूझ का क़ायल (3) हो गया।

कमरे ते सेटल पर आये। चाय पीते हुए मैंने शुक्रिया अदा किया और उनकी 1. संकोच मैं 2. बे परवाह 3. मान लेना

ہ اس کو کیا چاہیے۔ وہ کتا پیا دے سکتا ہے۔ آپ کو پوچو کر اگر ہم نے آپ کا کام کیا ہوتا تو اس میں کون می کمال کی بات ہے! یہ تو کوئی بھی کرسکتا ہے۔ کرسکتا ہے کہ نہیں؟"

ہم نے اثبات میں سربلا دیا۔

اس نے مائے کا محونث لیا۔ یحد دراس کا لطف لیتا رہا چر بات شروع کی۔

"آپ کومعلوم ہے جب میں کراچی سے دالی آیا۔ سالی پلس میرے پیچے پر گئ۔ ایک آدی نے میرے کو پتا تایا۔ اس آدی کوئل تیرا کام ہوجائے گا''۔

اس نے پھر چائے کا محونٹ لیا اور لگا جینے دافعات کی کڑیاں جما رہا ہو۔ پھر ایک محونٹ لیا، ہم خاموثی سے اس کا چرو تکتے رہے۔ کام ہوجائے کے بعدہمیں یہ آدی اور دلیسے معلوم ہونے لگا تھا اور اس کی زندگی کی کہائی بھی۔

" " پھر اس آدی سے آپ سے رئیس بھائی" فاروق نے کہانی کو آگے بوھانے کی کوشش کی۔

اس نے ایک بوے سے محون میں جائے کا کپ خالی کیااور ایک لمبی می ہوں گی۔ کویا تمام باتیں ذہن میں جم کئیں ہوں۔سگریٹ سلکا کر دو تین لمبے کش لیے۔

"میں اس آدی سے ملا۔ اس کواپی مشکل بیان کی۔" رئیس نے بات شروع کی۔
"وو آدی میرے کو بولا، میں آپ کو آئیڈیا دے سکتا ہوں۔ آپ جار پانچ سال ممبئ
میں آسانی سے روسکو گے۔ میں نے کہا ٹھیک ہے۔ بعد میں سوچیں گے۔"

"اس آدى نے آپ كوكيا آئيڈيا ديا؟ يس نے يو جمار

"اس نے کہا آئیڈیے کا پیاس روپ لوں گا۔ اس ٹائم پیاس روپ بہت تھا۔لیکن میں بولا ٹھیک ہے۔ دس دس کے پانچ نوٹ من کر اس کے ہاتھ پر رکھا۔"

رئیس نے چکی مار کرسگریث کی را کہ جمازی ادر سکرایا۔

"اس کا آعد یا ہمی کمال کا تھا۔ پہلے میں سمجھا بے وقوف بنا رہا ہے اس کے آئیدیے کے مطابق آیک فط قادر بھائی سے کلھا کر جو مجندی بازار پوسٹ آفس کے باہر خط کھتا تھا۔ راٹن ڈیار میدے کو بھیج دیا کہ میں اپنے خاندان کوادهر کرائی پہنچانے کیا تھا کیوں کہ دو لوگ جاتا ہوں۔ اور میری شہریت کیوں کہ دو لوگ جاتا جا جا جا جا جا جاتا ہوں۔ اور میری شہریت

हुनरमंदी की दाद दी तो एक सूखा क़हक़हा लगा कर कहा।

"भाई यही तो धंधे की असल बात है। आप ही सोचो आदमी रईस के पास ही क्यों आता है जो आदमी एक बार रईस के पास आ गया वह फिर दूसरे के पास नहीं जा सकता। यह अपना चेलैंज है। अपन आदमी को देखते हीं समझ जाता है, कि उस को क्या चाहिए, वह कितना पैसा दे सकता है आप को पूछ कर अगर हमने आप का काम किया तो इस में कौन सी कमाल की बात है। यह तो कोई भी कर सकता है, कर सकता है कि नहीं?"

हमने असबात में सर हिलाया।

उस ने चाय का घूंट लिया, कुछ देर उस का लुत्फ़ ⁽¹⁾ लेता रहा फिर बात शुरूकी।

''आप को मालूम है जब मैं कराची से वापस आया। साली पुलिस मेरे पीछे पड़ गयी। एक आदमी ने मेरे को पता बताया। उस आदमी को मिल तेरा काम हो जाएगा।

उस ने फिर चाय का घूंट लिया और सोचने लगा जैसे वाक्रेआत⁽²⁾ की कड़ियां जमा रहा हो। फिर एक घूंट भरा, हम खामोशी से उस का चेहरा तकते रहे। काम हो जाने के बाद हमें यह आदमी और दिलचस्प मालूम होने लगा था और उस की ज़िन्दगी की कहानी भी।

"फिर उस आदमी से आप मिले रईस भाई," फ़्नारूक़ ने कहानी को आगे बढ़ाने की कोशिश की।

उस ने एक बड़े से घूंट में चाय का कप खाली किया और एक लम्बी सी हूं की गोया तमाम बातें जहन में जम गई हो सिगरेट सुलगा कर दो तीन लम्बे कश लिये।

''मैं उस आदमी से मिला, उस को अपनी मुश्किल बयान किया।'' रईस ने बात शुरू की,

''वह आदमी मेरे को बोला, मैं आप को आइडिया दे सकता हूं। आप चार पांच साल आसानी से रह सकोगे। मैंने कहा ठीक है, बाद में सोचेगें।''

''उस आदमी ने आप को क्या आइडिया दिया ?'' मैं ने पूछा।

^{1.} आनन्द 2. वाकेआ (घटना) का बहुवचन घटनाएँ

۔ ہند ستان کی بی ہے۔''

" پھر کیا ہوا؟"

" ہوتا کیا۔ تمن مبینے بعدچشی واپس آئی کہ بیکام جارے ڈپار مینٹ کا نہیں ہے۔ " دم پھر"؟

" كهر ميں نے الحوكيشن منسر كو چشى ڈال دى"

"ايجيش منشركو"؟

" يمي تو آئيذيا تھا۔ ہوم مشرى كے علاوہ ميں نے سب كوچشى بھيجى"۔ رئيس نے الك سوكھا قبتبد لگايا۔ وہ كہيں سے تين مبينے كے بعد كہيں سے تين مبينے كے بعد كي اللہ سوكھا قبتبد لگايا۔ وہ كہيں ہوئى خط كے ساتھ نتھى كر كے واپس بھيج ديا كہ بيكام ہمارے دار فيد كانبيں" دارفيد كانبيں"

" فاكل اب اتنى موثى بوگنى ہے"

اس نے ہاتھ کے اشارہ سے ضخامت بتائی۔

"اورشهریت"؟ میں نے یو جھا۔

" كيس سال موكة _ اس معامله كو" اس في ايك اورسوكها قبقهد لكايا

اب دو جار مہینے اورلگیس کے۔ اب تو سب سے پہچان ہوگی ہے۔ برے اضر سے بھی ملا۔ بواتا ہے۔ آرام سے رہو۔ آپ کا کام ہوجائے گا۔''

کرے کا انظام ہوتے ہی میں نے یوی کو وطن سے بلا لیا۔ بن باس ختم ہوا اسے بھی کرہ پند آیا۔ اگلا مہینا رجب کا تھا گھر گھر کونڈے ہونے گئے۔ میری بیوی نے بھی کھیر اور پوریاں بنا کیں۔ ہم نے پڑوسیوں کو بلایا رئیس کو بھی دعوت دی۔ بہت خوش ہوا۔ ایک دعوتیں اسے بہت کم ملی تھیں۔ کام پڑتا تو رئیس یاد آتا پھر لوگ بحول جاتے۔ سامنے سے بغیر بچپانے گزر جاتے۔ وہ اپنی بیوی اور بچوں کے ساتھ آیا۔ اس کی بیوی واقعی خوبصورت تھی۔ رئیس سے خاصی کم عمر۔ چالیس سے کم ہی ہوگی۔ غالبًا اس کے بعد وہ کئی بار ہمارے گھر آئی۔

''उस ने कहा आइंडिया का पचास रूपये लूंगा। उस टाइम पचास रूपये बहुत था। लेकिन मैं बोला ठीक है। दस दस के पांच नोट गिन कर उस के हाथ पर रखा।

रईस ने चुटकी मजा कर सिगरेट की राख झाड़ी और मुस्कुराया।

"उस का आइडिया भी कमाल का था। पहले में समझा बेवक्रूफ़ बना रहा है। उस के आइडिये के मुताबिक़ एक ख़त क़ादिर भाई से लिखा कर जो भिंडीबाज़ार पोस्ट आफिस के बाहर ख़त लिखता था। राशन डिपार्ट मेन्ट को भेज दिया कि मैं अपने ख़ानदान को उधर कराची पहुंचाने गया था क्योंकि वह लोग वहां जाना चाहते थे लेकिन मैं हिन्दुस्तान में ही रहना चाहता हूं। और मेरी शहरियत हिन्दुस्तान की है।"

''फिर क्या हुआ?''

''होता क्या। तीन महीने बाद चिट्ठी वापस आ गई कि यह काम हमारे डिपार्ट मेन्ट का नहीं है।''

"फिर?"

''फिर मैंने एज्केशन मिनिस्टर को चिट्ठी डाल दी।''

''एजूकेशन मिनिस्टर को ?''

"यही तो आइडिया था। होम मिनिस्ट्री के अलावा मैंने सब को चिट्ठी भेजी।" रईस ने एक सूखा कहकहा लगाया। "कहीं से तीन महीने के बाद, कहीं से छह महीने के बाद किसी ने साल भर के बाद छपी हुई खत के साथ नथ्थी कर के वापस कर दिया कि यह काम हमारे डिपार्ट मेंन्ट का काम नहीं है।"

''वह फाइल अब इतनी मोटी होगई है।''

उसने हाथ के इशारे से जखामत⁽¹⁾ बताई।

''और शहरियत ?'' मैं ने पूछा,

"पच्चीस साल हो गए। इस मामले को।" उस ने एक और सूखा क्रहक़हा लगाया, "अब दो चार महीने और लंगेगें। अब तो सब से पहचान हो गई है। बड़े अफसर से भी मिला। बोलता है, आराम से रहो। आपका काम हो जाएगा।"

कमरे का बनदो-बस्त होते ही मैंने बीवी को वतन से बुला लिया। बन बास 1. मोटाई

وہ ہول جس میں رئیس کی بیشک تھی ای راستہ پر تھا جاتے ہوئے جمعے جس پر سے گزرنا برتا تھااس لیے اکثر علیک سلیک ہوتی۔ دو ایک بار اس نے مجھے جائے کے لیے کہا تو بل بھی خلاف تو تع خود ہی ادا کیا۔

"اپناایک اصول ہے"اس نے کہا" جب آدی اسنے کام سے آتا ہے تو چائے ای کو يلاني مايے - جب مل مائے باتا مول تو پيما خود دينا مول "

کونڈول کی دعوت کے بعد رئیس کے ساتھ ایک طرح سے گھریلو مراسم قائم ہو گئے۔ ایک دن میں اس کے ساتھ ہوٹل میں جائے لی رہا تھا۔ فاروق بھی ساتھ تھا۔ ایک یاری آیا۔ آپس میں دو منٹ تک میشی میشی گالیوں کا تبادلہ ہوتا رہا، کویا دوتی کی تجدید ہو رى بور كچه كالبال تو جارے سجد ميں بي نبيس آئيں۔

"اجمارتم" يارتير علاك من به ماكة ح مرى يادكي آنى؟"

کیوں میں تیرے کوائیے ہی ملنے کونہیں آ سکتا کیا ؟''

"سالے میں تیرے کوخوب مجمتا ہوں۔ تو بتا کام کیا ہے؟"

ایک برابلم بے یار' وہ سجیدہ ہوگیا ''لیکن تو پہلے جائے منگا، پھر تیرے کو بتا تا ہول'' مس سمجا اب رئیس اپنا اصول بتائے گا۔لیکن اس نے فورا جائے کا آرڈر دیا اس سے اندازه مواكه دونول مين كافي بارانه موكاي

"إل اب بتاكيا بات ب؟" عائے بينے ك بعدركيس في كبا-

"ياروه ميرى لؤك فرح بنا؟"

"وو جوبک میں کام کرتی ہے"رکیس نے یو جھا۔

" إل - وبى - اوهر نا كياز - بي كوئى مسلمان الركا ب- اس سے شادى كرنے كو

مثلق ہے'

رستم نے سنجیدگی سے کہا۔

"تو يرابلم كياب"-

"توجرااس كافيلى باكركيس فيلى ب- جاديدنام باس كاجاديد فيخ الرك

खुत्म हुआ उसे भी कमरा पसन्द आया। अगला महीना रजब का था। घर घर कून्डे होने लगे। मेरी बीवी ने भी खीर और पूरियां बनाई। हमने पड़ोसियों को बुलाया। रईस को भी दावत दी। बहुत खुश हुआ। ऐसी दावतें उसे कम ही मिलती थीं। काम पड़ता तो रईस याद आता। फिर लोग भूल जाते। सामने से बग़ैर पहचाने गुजर जाते। वह अपने बीवी और बच्चों के साथ आया। उसकी बीवी वाक़ई खूबसूरत थी। रईस से खासी कम उम्र। चालीस से कम ही होगी। ग़ालेबन (1) उसके बाद वह कई बार हमारे घर आई।

वह होटल जिस में रईस की बैठक थी उसी रास्ते पर था अपने कमरे पर जाते हुए मुझे जिस पर से गुजरना पड़ता था इस लिए अक्सर अलैक सलैक होती। दो एक बार उस ने मुझे चाय के लिए कहा तो बिल भी ख़िलाफ़े-तवक़्क़ों (2) खुद ही अदा किया।

"अपना एक उसूल है" उस ने कहा "जब आदमी अपने काम से आता है तो चाय उसी को पिलानी चाहिए। जब मैं चाय पिलाता हूं तो पैसा खुद देता हूं"।

कृन्हों की दावत के बाद रईस के साथ एक तरह से घरेलू मरासिम⁽³⁾ क़ायम हो गए।

एक दिन मैं उस के साथ होटल में चाय पीरहा था। फ़ारूक़ भी साथ था एक पारसी आया। आपस में दो मिनट तक मीठी मीठी गालियों का तबादला होता रहा, गोया दोस्ती की तजदीद⁽⁴⁾ हो रही हो। कुछ गालियां तो हमारी समझ में ही नहीं आई।

"अच्छा रुस्तम, यार तेरे कबाट में लुल यह बता के आज मेरी याद कैसे आई?"

"क्यों, मैं तेरे को ऐसे मिलने को नई आ सकता क्या?"

"साले मैं तेरे को खुब समझ ता हूं। तु बता काम क्या है?"

"एक प्राबलम है यार," वह संजीदा होगया "लेकिन तू पहले चाय मंगा फिर तेरे को बता ता हूं।" मैं समझा अब रईस उसे अपना उसूल बताएगा। लेकिन उस ने फ़ौरन चाय का आर्डर दिया उस से अंदाजा हुआ कि दोनो में काफ़ी याराना होगा।

^{1.} सम्भवत: 2. आशा के विपरीत 3. सम्बन्ध 4. नवीनी करण

کو میں طا ہوں۔ اچھا لڑکا ہے ایم۔ اے پاس ہے۔ اجو کیٹیڈ ہے۔ ڈیسنٹ ہے۔ لیکن تو جرافیلی کا بتاک'

"کیا پا کروں ؟"رئیس نے کہا "اس کی فیلی میں کوئی لاکی کو جلایا ولایا تو نہیں ؟"
رئیس نے سوکھا قبتہدلگایا۔

" گانڈے مجاک مت کر۔" رستم گر حمیا۔ ذرا دیکو فیلی بروبر ہے کہ نیس۔ شادی کے بعد وہ لوگ فرح کو برقع تو نہیں ڈالیس گے۔ اور ڈکرے ایک لفوا اور ہے۔ جس کے لیے میں خاص تیرے یاس آیا ہوں"۔

"ووكيا"

"تیرے کومعلوم ہے۔ بیمسلمان میں افوا بہت ہے کہ سالا تین باراؤ کے نے طلاق طلاق، طلاق بول دیا سب معاملہ کھلاس۔ بیمیرے کوئیس منگنا۔ میری فرح تو بے چاری مرجاوے کی تا"۔

" تو اس میں میں کیا کرسکتا ہوں۔ تیرے کو ڈرلگتا ہے تو مت کر شادی" رئیس نے کیا۔

''وو میں فرح کو بہت سمجایا۔لیکن نہیں مانتی۔ بولتی ہے شادی کروں گی تو اس تھے'' میں میری بیوی کو بولا تو فکر مت کر۔ میرا دوست ہے۔ وہ آینڈیا دے گا اپن کو ممین کا پرانا جاول ہے۔سانے لوگ میں بھی اس کے سریکا لمنا مشکل ہے۔''

"وو تو ٹھیک ہے۔ لین رسم تیرے کومعلوم ہے۔ یہ دھندے کی بات ہے اور اپن۔"
"سالے تو یہ میرے کو مت سکھا"۔ رسم نے چ کر جیب سے سوسو کے کی اوٹ تکا لے۔
اوٹ تکا لے۔

"به ڈاکلاگ تو میرے کو کیا ساتا ہے کہ تو کھالی میت کو کا ندھا وینے کا پیمانہیں ایتا۔ سالے تو مرے گا نا تو میں تیری میت کو بھی بنا پیما کندھا دینے والانہیں"
"لیتا۔ سالے تو مرے کو کتنا پیما مگلا ہے۔ سو، دوسو، یا چی سو"۔

رحم فے لوٹ میز بر ڈال دیے۔

- "हां अब बता, क्या बात है?" चाय पीने के बाद रईस ने कहा।
- ''यार वह मेरी लड़की फ़रहा है ना ?''
- "वह जो बैंक में काम करती है" रईस ने पूछा,
- "हां वही— इधर नागपाड़े पर कोई मुसलमान लड़का है। उस से शादी करने को मांगती है।" रुस्तम ने संजीदगी से कहा
 - ''तो प्रोबलम क्या है''
- "तू जरा इसका फ़्रीमली पता कर। कैसी फ़्रीमली है। जावेद नाम है उसका, जावेद शेख़। लड़के को मैं मिला हूं— अच्छा लड़का है। एम.ए पास ऐजुकेटेड है। डिसेन्ट है। लेकिन तू जरा फ़्रीमली का पता कर"
- "क्या पता कहेँ?" रईस ने कहा "उसकी फ़ैमिली में कोई लड़की को जलाया क्लाया तो नहीं? रईस ने सूखा क़हक़हा लगाया।
- ''गांडे मजाक मत कर'' रुस्तम बिगड़ गया। जरा देख फैमिली बरोबर है कि नहीं। शादी के बाद वह लोग फ़रहा को बुरक़ा तो नहीं डालेंगे और ड़करे एक लफड़ा और है जिसके लिये मैं ख़ास तेरे पास आया हूँ।
 - ''वह क्या''
- तेरे को मालूम है यह मुसलमान में लफड़ा बहुत है कि साला तीन बार लड़के ने तलाक़, तलाक़, तलाक़ बोल दिया। सब मामला ख़ल्लास। यह मेरे को नई मांगता। मेरी फ़रहा तो बेचारी मर जाएगी ना''
- "तो इसमें मैं क्या कर सकता हूँ तेरेको डर लगता है तो मत कर शादी," रईस ने कहा।
- "वह मैं फ़रहा को बहुत समझाया लेकिन नहीं मानती। बोलती है शादी करूँगी तो उसीच" मैं मेरी बीवी को बोला कि तू फ़िक्र मत कर मेरा दोस्त है। वह आइडिया देगा अपन को बम्बई का पुराना चावल है सियाने लोग में भी उसके सरीका मिलना मुश्किल है"
- "वह तो ठीक है लेकिन रुस्तम तेरे को मालूम है। यह धंधे की बात है। और अपन---"
- "साले तू यह मेरे को मत सिखा। रुस्तम ने चिढ़कर जेब से सौ-सौ के कई नोट निकाले। यह डायलॉग तू मेरे को क्या सुनाता है कि तू खाली मय्यत को कांधा देने का पैसा नहीं लेता साले तू मरेगा ना तो मैं तेरी मय्यत को भी बिना पैसे

رئیس نے ایک نوٹ لے کر باقی سارے واپس کر دیے۔

"تو تو یار کھالی پلی گرم ہوتا ہے"۔ رئیس نے حسب عادت ایک سوکھا قبتبدلگا کر کہا:

"باصول كى بات ب_اصول كى بناكوكى دهندا بوتا بكيا؟"

رسم مطمئن ہوگیا جیے اے ای جواب کی تو تع تھی۔

" فھیک ہے۔ تو بھر بول کیا کروں"

"يارتمورا نايم تو وے سوچنے كے ليے"۔

" تیرے کو ٹائم کی کیا جرورت۔ ایسے دس پانچ آینڈیا تو تیرے مسلک میں فالتو یزے رہتے۔ ہے کوئیں ؟"

"اچھاایک کام کر" رئیس ہنا" تو بھی کیا یاد کرے گا۔ تو لڑے سے بات کر۔

شادی کو کتنا ٹائم ہے؟"

''ابھی دو تین مہینہ تو ہوئے گا''

"تو اس كو بول كورث ميں نوٹس وال دے۔ شادى جيما جابتا ہے كرے اس كى ريت رسم كے ما كك ليكن كورث ميں مائن كرنا ريت رسم كے ما كك ليكن كورث ميں ايك دن پہلے اس كو ميرج رجش ميں سائن كرنا بات كا"۔

"ايها بوسكما ہے؟"

'بالكل، سونكي''

"بہ تونے سرس آیئڈ یا دیا مانتا ہوں تیرے کو"

فاردق اس لڑے کو جان تھا۔ اس نے بعد میں مجھے بتایا اس کے گمر والے تو تبلینی جماعت میں ہیں۔ تین ماہ بعد شادی ہوئی تو فاروق اس میں شریک ہوا۔ اس نے بتایا کہ وہاں ندتصوریں کھینی نظمی گانے بجے۔ رستم بہت لال پیلا ہو رہا تھا لیکن اس کی بیوی اور دوستو ل نے اسے سنبالا۔ رکیس بھی وہاں موجود تھا۔ اس نے رستم کو خوب آکس کریم کھلائی۔ بریانی دیکھ کر اس کا سارا خصد تم ہوگیا۔ برقع لڑے کو بھی پند نہ تھا نہ بی لڑکے کے باپ کو اس پر اصرار تھا۔ اس سے بھی رستم کو تبل ہوئی۔ جھے سات ماہ بعد فاروق سے

कंधा देने वाला नहीं।"

''ले तेरेको कितना पैसा मंगता। सौ, दो सौ, पांच सौ,'' रुस्तम ने नोट मेज पर डाल दिये।

रईस ने एक नोट लेकर बाक़ी वापस कर दिये

"तू तो यार खाली पीली गर्म होता है" रईस ने हसबे आदत एक सूखा क़हक़हा लगा कर कहा। "यह उसूल की बात है उसूल के बिना कोई धंधा होता है क्या?"

- ''रुस्तम मुतमइन हो गया जैसे उसे इसी जबाव की तवक़्क़ो⁽¹⁾ थी—
- ''ठीक है तो फिर बोल क्या करूँ—''

यार थोड़ा सोचने के लिए टाइम तो दे

- "तेरे को टाइम की क्या जरूरत। ऐसे दस पांच तो आइडिया तेरे मस्तक में फ़ालत पड़े रहते—हैं कि नहीं?"
- "अच्छा एक काम कर रईस हंसा।" तू भी क्या याद करेगा। तू लड़के से बात कर। "शादी को कितना याइम है ?"
 - ''अभी दो तीन महीना तो होएगा''
- ''तू उस को बोल कोर्ट में नोटिस डाल दे। शादी जैसा चाहता है करे उस के रीत रसम के माफ़िक⁽²⁾। लेकिन कोर्ट में एक दिन पहले उसको मेरैज रजिस्टर में सायन करना पड़ेगा''
 - ''ऐसा हो सकता है ?''
 - ''बिल्कुल सौ टके।''
 - ''यह तूने सरस आईडिया दिया मानता हुं तेरे को, ''

फ़ारुक़ उस लड़के को जानता था, उस ने बाद में मुझे बताया कि उस के घर वाले तो तबलीग़ी जमाअत में हैं, तीन माह बाद शादी हुई तो फ़ारूक़ उस में शरीक हुआ। उस ने बताया कि वहां न तसवीरें खींची गईं न फ़िल्मी गीत बजे। रुस्तम बहुत लाल पीला हो रहा था लेकिन उसकी बीवी ने और दोस्तों ने सम्भाला। रईस भी वहां मौजूद था, उस ने रुस्तम को खूब आईसक्रीम खिलाई। बिरयानी देख कर उस का सारा गुस्सा ठंडा हो गया, बुरक़ा लड़के को भी पसंद न था न ही लड़के के

^{1.} उम्मीद 2. अनुरूप

پنة چلا كه نندول اور بھاوجوں كے ساتھ وہ لڑى بھى تبلينى اجتاعات ميں باقاعدگى سے شريك ہونے كى ہے۔'

ایک شام گر لوٹ رہا تھا کہ ہوٹل سے کچھ دور آ کے نکل آنے کے بعد احساس ہوا کہ رئیس اپنی مخصوص نشست پرنہیں ہے۔ خیال آیا کہ کی گا کہ کے ساتھ گیا ہوگا۔ اگلے دن بھی وہ نظر نہیں آیا تو میں نے گلے والے سے پوچھا۔ اس نے بتایا کہ رئیس وس پندرہ ون سے غائب ہے۔

" کیول ؟" میں نے بوجھا۔

آب کو پہتنہیں اس کی عورت نے طلاق لے لی؟

"طلاق؟"

" إلى وه عورت طلاق ليتى بيتو اس كوكيا كبت بين نا؟"

ددخلع،،

'' ہاں ہاں وہی''

"کیوں؟"

'' يه تو مجھے بھی نہيں معلوم ؟''

میں نے سوچا رئیس کے گھر چلا جاؤں۔ پھر خیال آیا کہ مبئی کے لوگ دوسروں کی دخل اندازی پندنہیں کرتے۔ عادت کے مطابق جب بھی وہاں سے گزرتا۔ نظر ای مخصوص میز پر بڑتی لیکن وہ نظر نہیں آیا۔ فاروق نے ایک دن بتا یا کہ زمس نے دوسری شادی کرلی ہے اور وہ بھی اسینے سے کانی کم عرفحض ہے۔

ایک ڈیڑھ ماہ بعد ایک دن مجر وہ اٹن میز پر جما ہوا نظر آیا اور جس اس کی طرف بڑھ کیا۔ رئیس نے خود چائے منگوائی۔ چائے پینے کے بعد جس نے افسوس ظاہر کیا۔

"بہت دکھ ہوا" میں نے کہا

"جہتائے گ" رئیس نے بظاہر بڑی لاپردائی سے کہا۔"نی چالیس سال کی۔ وہ چہیں سال کا۔ کتنے دن رکھ گا۔ جس دن دل بحر جائے گا چموڑ دے گا".

बाप को उस पर इसरार था। इस से भी रुस्तम को तमल्ली हुई, छ: सात. माह बाद फारूक से पता चला कि ननदों और भावजों के साथ वह लड़की भी तबलीग़ी⁽¹⁾ इजतमाआत⁽²⁾ में बाक़ाइदगी⁽³⁾ से शरीक होने लगी है।

एक शाम घर लौट रहा था कि होटल से कुछ दूर आगे निकल आने के बाद एहसास हुआ कि रईस अपनी महफूज⁽⁴⁾ नशिस्त⁽⁵⁾ पर नहीं है, ख्याल आया कि किसी ग्राहक के साथ गया होगा, अगले दिन भी नजर नहीं आया तो मैंने गल्ले वाले से पूछा। उस ने बताया के दस पंद्रह दिन से ग्रायब है।

- ''क्यों ?'' मैंने पूछा,
- ''आप को पता नहीं ? उस की औरत ने तलाक़ ले ली, ''
- ''तलाक ?''
- ''हां, वह औरत तलाक़ लेती है तो उसे क्या कहते है ना?''
- ''खुला,''
- ''हां हां वही।''
- ''क्यों ?''
- ''यह तो मुझे नहीं मालूम?''

मैंने सोचा रईस कि घर चला जाऊं, फिर ख़्याल आया कि बम्बई के लोग दूसरों की दख़ल अंदाज़ी पसंद नहीं करते। आदत के मुताबिक जब भी वहां से गुज़रता नज़र उसी मख़सूस मेज पर पड़ती। लेकिन वह नज़र नहीं आया, फ़ारूक़ ने एक दिन बताया कि नर्गिस ने दूसरी शादी करली है और वह भी अपने से काफ़ी कम उग्न शख़्स से।

एक डेढ़ माह बाद-एक दिन फिर वह मेज पर जमा हुआ नजर आया और मैं उस की तरफ़ बढ़ गया, रईस ने खुद चाय मंगवाली। चाय पीने के बाद मैंने अफ़सोस का इज़हार किया।

"बहुत दुख हुआ।" मैंने कहा।

''पळतायगी,'' रईस ने बजाहिर बडी लापरवाही से कहा, ''यह चालीस

एक गिरोह जो इस्लाम के प्रचार का काम करता है
 प्रोग्राम
 पाबंदी से

^{4.} सुरक्षित 5. सीट

"وه ہے کون"میں نے یو حما۔

"اعمرى مين ريدى ميد كارمين كاباكره باسكا"

چند ماہ بعد رئیس نے بھی دوسری شادی کرلی۔عورت بچاس سال کی تھی لیکن بظاہر پینتالیس سال سے زیادہ کی نہیں گئتی تھی۔ یہ مجھے رئیس نے بتایا۔

ممبئ میں شب و روز اتن تیزی ہے گزرتے ہیں کہ احساس نہیں ہوتا۔ گیارہ مینے کے لیے کرایے پرمکان لیا تھا۔ اس کا وقت ختم ہونے میں بس چند دن رہ گئے تھے جس کا کمرہ تھا اس نے جھے کمرہ خالی کرنے کا نوٹس دے دیا۔ میں رئیس کے پاس گیا۔ رئیس نے آلی دی کہ فکر نہ کرو۔ میں اس سے بات کرتا ہوں''

دو دن بعد اس نے بچھے بتایا کہ وہ فخص دراصل ڈپازٹ اور بڑھانا چاہتا ہے۔ مجھے کمرہ پہند آیا تھا۔ پڑوسیوں سے بھی گھر پلولٹم کے تعلقات ہو گئے تھے میں نے اضافہ قبول کرلیا اور پھرا گھر بھیل ہوگیا۔ زندگی پھرای ڈگر پر چل پڑی جیسی چل رہی تھی۔

ایک شام بوی نے بتایا کرسارے محلّم میں رئیس پرتھوتھو ہورہی ہے۔

'' کیوں'' میں نے بوجھا

" زخمس واليس آگفي"

"واليس آگى اركيس نے اسے ركھ ليا كمري؟" يس نے جرت سے يوچھا۔

"ای لیے تو تھوتھو ہوری ہے"

" بيتو واقعى بے غيرتى ہے"

اس کے بعد میں کی بار ہوٹل کے پاس سے گزرا۔ لیکن اس سے بات کرنے کا بی نہیں جابا۔ بعد میں کی بھی ایک حد ہوتی ہے۔ آخر میں میں نے سوچ بی لیا کدریس سے بس رمی تعلقات بی ٹھیک ہیں۔ ایک دن رئیس بی نے جھے آواز دی۔

"كيا بماكى بم اتن يرائ بوكن"-

من بربراميا

" دنیس نیس رئیس بھائی میں نے سی کی آپ کوئیس و یکھا"۔

साल की, वह छब्बीस साल का। कितने दिन रखेगा। जिस दिन दिल भर जाएगा छोड़ देगा।"

- ''वह है कौन?'' मैंने पूछा।
- ''अंधेरी में रेडीमेड गारमेंट का बाकडा है उस का''

चंद माह बाद रईस ने भी दूसरी शादी करली। औरत पंचास साल की थी लेकिन बजाहिर्⁽¹⁾ पेंन्तालिस साल से ज्यादा की नहीं लगती थी। यह मुझे रईस ने बताया।

बम्बई में शबो-रोज़ इतनी तेज़ी से गुज़रते है कि एहसास नहीं होता। ग्यारह महीने के लिए किराए पर मकान लिया था। उस का वक़्त ख़त्म होने में बस चंद दिन रह गए थे जिस का कमरा था उसने मुझे कमरा ख़ाली करने का नोटिस दे दिया। मैं रईस के पास गया, रईस ने तसल्ली दी कि फ़िक्र न करो। मैं उस से बात करता हूं।

दो दिन बाद उस ने मुझे बताया कि, वह शख्स दर असल डिपाजिट की रक्तम और किराया बढ़ाना चाहता है। मुझे कमरा पसंद आया था पड़ोसियों से भी घरेलू क्रिस्म के ताअल्लुकात हो गए थे। मैंने इजाफ़ा क़बूल कर लिया था और फिर एँगीमैन्ट हो गया जिन्दगी फिर उसी डगर पर चल पड़ी जैसे चल रही थी,

एक शाम बीवी ने बताया कि सारे मुहल्ले में रईर, पर थू थू हो रही है।

- "क्यों," मैंने पूछा।
- ''नर्गिस वापस आगई।''
- ''वापस आगई। रईस ने उसे रख लिया घर पर ?'' मैंने हैरत से पूछा,
- ''इसी लिए तो थू थू हो रही है।''
- ''यह तो वाक़ई बेग्रैरती है।''

उस के बाद मैं कई बार होटल के पास से गुजरा। उस से बात करने को जी नहीं चाहा, बेग़ैरती की भी एक हद होती है। आख़िर मैंने सोच लिया कि रईस से बस रसमी तअल्लुक़ात ही ठीक हैं। एक दिन रईस ही ने मुझेआवाज दी।

"क्या भाई, हम इतने पराए हो गये।"

में हड्बड़ा गया।

1. देखने में

'' ہاں بھائی''اس نے شنڈی سانس بھری'' اپنے ہی دن خراب ہیں۔لوگ تو پہچانے کو تیار نہیں۔کم از کم آپ نے پہچانا تو''

رکیس نے چائے منگوائی ہم دونوں نے خاموثی سے چائے ختم کی آخر اس نے خاموثی توڑی۔

'' آپ بھی ناراض ہیں مجھ پر، کیوں؟''

میں خاموش رہا۔

"سب ناراض ہیں۔ جن کی میرے سامنے منھ کھولنے کی ہمت نہ تھی آج جھھ پرحرام کاری کا الزام لگا رہے ہیں۔ آپ کیا سوچتے ہیں؟ کیا واقعی میں ایسا ہوں؟"

ميري سجه مين نبيس آيا آخر كيا كهول-

''آپ بھی یفین نہیں کرتے نہ'' رئیس کی آواز بحرآ گئی۔''اللہ پاک کی قتم کھا تا ہوں جو میں نے اس کو ہاتھ بھی لگایا ہو۔نہیں تو میرا منھ مرتے وفت سور کا ہو جاوے میں آپ کو کیا بولا تھا وہ چیبیں سال کا وہ چالیں سال کی۔ کتنے دن رکھے گا وہ ؟ میری بات سے نگل کہنیں۔میرے کوتو پہلے ہی معلوم تھا کہ یہ ہونے والا ہے''

وہ تو ٹھیک ہے رکیس بھائی'' میں نے کہا۔لیکن آپ نے اسے دوبارہ گھر میں کیے رکھ لیا''

"آپ کومعلوم ہے۔ دو کتنی بیار ہے؟" رئیس نے کہا" روز پہاس روپیا میں ڈاکڑ کی فیس دیتا ہوں۔ ایک حالت میں کیا اس کو دھکے مار کر گھر سے نکال دوں؟ آپ بی سوچیں بھائی اس مورت نے پہیس برس میری خدمت کی ہے۔ میرے دکھ سکھ میں شریک رہی ہے۔ پہیس سالہ زندگی کو ہم دونوں نے ساتھ میں جیا۔ میرے بچوں کی ماں ہے دو۔ آدی ایک کچنی سال کام کرتا ہے تو کچنی اس کو پراویڈنٹ فنڈ دیتی ہے۔ گریجو پی دیتی ہے۔ آخر اس محریح پی دیتی ہے۔ آخر اس مورت کا بھی تو کوئی تی بنا آدی فنڈ میں جی کھے ہیں۔ مورت کا بھی تو کوئی تی بنا ہے کہ نیس میرے پر؟ آپ بی بولو۔ آپ تو پڑھے لکھے ہیں۔ اس کا واتھا گھے گا؟ میں اس کو بول

''नहीं नहीं रईस भाई, मैं ने सच मुच आप को नहीं देखा''

"हां भाई," उस ने उन्हीं सांस भरी, "अपने ही दिन ख़राब हैं। लोग तो पहचानने को तैयार नहीं। कम से आप ने कम पहचाना तो।"

रईस ने चाय मंगवाई। हम दोनों ने ख़ामोशी से चाय ख़त्म की। आख़िर उसी ने ख़ामोशी तोड़ी।

''आप भी नाराज हैं मुझ पर, क्यों ?''

में खामोश रहा।

''सब नाराज हैं जिनकी मेरे सामने मुँह खोलने की हिम्मत न थी आज मुझपर हरामकारी⁽¹⁾ का इल्जाम लगा रहें हैं आप क्या सोचते हैं ? क्या वाक़ई मैं ऐसा हूं।''

मेरी समझ में नहीं आया आख़िर क्या कहूँ।

"आप भी यक्नीन नहीं करते न," रईस की आवाज भर्रा गयी, "अल्लाह पाक की कसम खाता हूँ जो मैंने उसको हाथ लगाया हो तो मरते वक्नत मेरा मुँह सूअर का हो जावे। मैं आप को क्या बोला था? वह छब्बीस साल का यह चालीस साल की। कितने दिन रखेगा वह? मेरी बात सच निकली कि नहीं। मेरे को तो पहले मालूम था कि यह होने वाला है।

वह तो ठीक है रईस भाई। मैंने कहा। "आप ने उसे दुबारा घर में कैसे रख लिया।

"आपको मालूम है वह कितनी बीमार है?" रईस ने कहा "रोज पचास रूपये मैं डॉक्टर की फ़ीस देता हूँ ऐसी हालत में मैं क्या उसको धक्के मार कर निकाल दूं? आप ही सोचिये भाई उस औरत ने मेरी पच्चीस बरस ख़िदमत की। मेरे दुख सुख में शरीक रही है। पच्चीस साल जिन्दगी को हम दोनों ने साथ में जिया। मेरे बच्चो की मॉ है वह। आदमी एक कम्पनी में भी पच्चीस साल काम करता है तो कम्पनी उसको प्रोविडेन्ट फ्रन्ड देती है ग्रेचिवटी देती है। जितना आदमी फन्ड में जमा करता है उसका डबल कर देती है। आख़िर उस औरत का भी तो कोई हक बनता है कि नहीं मेरे पर? आप ही बोलो आप तो पढ़े-लिखे हैं ऐसी हालात में कया मैं उसे सड़क पर छोड़ दूं, क्या यह आप को अच्छा 1. ग़लत काम (क्कर्म)

دیا ہوں۔ تو بے فکر رو۔ دنیا کچو بھی بولے۔ ادھر جالی میں سوجانا۔ میں ہوں میری بیوی ہے۔ تیری دوا دارد کے لیے بھنا خرج ہوگا میں دول گا۔ ہاں تو اچھی ہوجائے پھر تیری مرضی جدھر جی جائے چلی جانا۔ نہیں تو دوسرا روم دلا دول گا تیرے کو۔ تیراحق ہے میرے پر۔ ہاں جو بات ظام ہوگئی خلاص ہوگئی۔ میں تھوک کر دائیں جائے والانہیں۔ ایک ہار تو میرے کھر سے چلی گئی۔ اب وہ بات پھر سے نہیں ہو عتی ۔ نہیں ہو عتی نا ؟''

رئیس نے مجھ سے سوال کیا۔

میں جیرت سے اس کا چمرہ و کھنے لگا۔ میرا سراینے آپ اثبات میں بل کیا۔

"ركيس بعائى، ايك جائ اورمتكواكي ؟" ميس في كها-

اس کا چبرہ خوثی سے کھل اٹھا۔

" بال بال كيول نبيل" ـ

ال حائے کے میے میں دول گا''میں نے کہا۔

نہیں اس جائے کے یہے بھی میں دوں گا'' رکیس نے کہا۔

اس کے بعد وہ دیر تک بنس بنس کر باتیں کرتا رہا اور بیں سنتا رہا۔



लगेगा? मैं उसको बोल दिया हूँ तू बेफ्रिक्र रह दुनियां मुछ भी बोले, इधर चाली में सोना। मैं हूं मेरी बीनी है। तेरी दवा दारू के लिए जितना खर्च होगा मैं दूंगा। हां तू अच्छी हो जाए फिर तेरी मर्जी जिधर जी चाहे चली जाना। नहीं तो दूसरा रूम दिला दूंगा तेरे को। तेरा हक़ है मेरे पर। हां जो बात ख़लास हो गई ख़लास हो गई। मैं थूककर वापस चाटने वाला नहीं। एक बार तू मेरे घर से चली गई। अब वह बात फिर से नहीं हो सकती, नहीं हो सकती ना?"

रईस ने मुझ से सवाल किया।

मैं हैरत से उस का चेहरा देखने लगा। मेरा सर अपने आप अस्बात⁽¹⁾ में हिल गया,

''रईस भाई, एक चाय और मंगवाएं ?'' मैं ने कहा। उस का चेहरा खुशी से खिल उठा।

''हां हां क्यों नहीं''

''इस चाय के पैसे मैं दूँगा। मैंने कहा।

''नहीं इस चाय के पैसे भी मैं दूँगा'' रईस ने कहा।

उस के बाद वह देर तक हंस हंस कर बातें करता रहा और मैं सुनता रहा।



^{1.} स्वीकृति

على امام نقوى

ڈونگرواڑی کے گدھ

اس انہونی پہ دونوں سششدر رہ گئے۔ غیر ارادی طور پر انھوں نے اسٹریچر زمین پر رکھا۔ جیرت سے لاش کو دیکھا گھر ایک دوسرے کو، آنکھوں ہی آنکھوں میں ایک دوسرے سے بہت سے سوالات کیے، کافی دیر تک ان کی آنکھوں کے ڈھیلے گھوشتے رہے اور جب وہ متھے تو لاعلمی کے طور پر دونوں کے کندھے ایچے۔ بیک وقت دونوں نے گلے کی رگوں پر زور دے کر جڑوں کو دائیں بائیس کھینچا اور پھر ان کی نظروں نے ڈوگرواڑی کے گھنے درخوں کا طواف شروع کیا۔

دور، دورتک ایک بھی گدھ کا پہ نہ تھا۔ اور یہ بالکل پہلی مرتبہ، ہواتھا۔ دو گھنٹہ پہلے اطلاعی تھنٹی بجی تھی، پندرہ منٹ بعد ہی دو نمبر بگلی کے خدام لاش ان دونوں کے بپرد کر رہے تھے، لاش کو بادلی کی حدود میں لینے کے بعد دونوں نے کو اڑ بند کیے تھے پھر دروازے کی کھڑکی کھول کر آنے والوں سے متوفی کے قرابت داروں کی بابت معلوم کرنے کے بعد فیروز بھائینہ نے یو جھا تھا۔

ساب لوگ بخشش آپیا-؟

جواب میں خادم نے مسراتے ہوئے دس دس کے دونوٹ بھاٹینہ کی طرف بوھادیے سے اس نے فورانی ایک نوٹ ڈکھے کی جیب میں ڈالا اور دوسرا اپنے ساتھی ہر مزکی طرف بوھاتے ہوئے کھڑکی کی بند کردی۔

اے کھدا است ہر مزنے سراٹھا کر بلندوبالا درختوں کی کھنی شاخوں سے جھا تکتے آسان کی طرف دیکھا پھر آنکھوں سے بھائینہ کو اشارہ کیا، دونوں جھکے، اسٹر پچر اٹھایا اور باؤلی کی طرف چل بڑے۔ طرف چل بڑے۔

فیروز چلتے چلتے ہر مزنے اپنے ساتھی کو مخاطب کیا۔

डोंगरवाड़ी के गिद्ध

इस अनहोनी पे दोनों शशदर⁽¹⁾ रह गए। ग़ैर इरादी तौर पर उन्होंने स्ट्रेचर जमीन पर रखा। हैरत से लाश को देखा फिर एक दूसरे को,आंखों ही आंखों में एक दूसरे से बहुत से सवालात किए, काफ़ी देर तक उन के आखों के ढेले घूमते रहे और जब वह थमे तो ला-इल्मी⁽²⁾ के तौर पर दोनों के कंधे उचके। बयक वक्त दोनों ने गले की रगों पर जोर देकर जबड़ों को दाऐ बाऐ खींचा और फिर उन की नज़रों ने डोंगरवाड़ी के घने दरख़ों का तवाफ⁽³⁾ शुरू किया।

दूर दूर तक एक भी गिद्ध का पता न था! और यह बिल्कुल पहली मर्तबा हुआ था। दो घंटा पहले इत्तेलाई (4) घंटी बजी थी, पन्द्रह मिनट बाद ही दो नंबर बगली के खुद्दाम (5) लाश उन दोनों के सुपुर्द कर रहे थे, लाश को बाउली की हुदूद (6) में लेने के बाद दोनों ने किवाड़ बन्द किए थे फिर दरवाज़े की खिड़की खोलकर आने वालों से मुतवफ़्की (7) के क़राबतदारों (8) की बाबत मालूम करने के बाद फिरोज़ भाटिना ने पूछा था।

साब लोग बखशीश आपिया---?

जवाब में ख़ादिम ने मुस्कराते हुए दस दस के दो नोट भाटिना की तरफ़ बढ़ा दिए थे उसने फ़ौरन ही एक नोट डगले की जेब में डाला और दूसरा अपने साथी हर्मज़ की तरफ़ बढ़ाते हुए खिड़की बन्द कर दी।

ऐ खुदा! हर्मज़ ने सर उठाकर बुलन्दोबाला दरक्तों की घनी शाखों से झांकते आसमान की तरफ़ देखा फिर आंखों से भाटिना को इशारा किया, दोनों झुके, स्ट्रेचर उठाया और बाउली की तरफ़ चल पड़े।

फ़िरोज चलते चलते हर्मज ने अपने साथी को मुख़ातिब किया।

^{1.} चिकत 2. बेख़बरी 3. फेरा लगाना 4. सूचना देने वाली 5. नौकर 6. सीमा 7 मरने वाला 8 रिश्तेदारों

این کسے تلک بہ کام کریں گے۔ چل چل ملح نادی خاکر (چل چل ۔ د ماغ کی دبی نہ کر)۔ بار۔این کا واسلے، میں کام رو گئیلا ہے؟ سوں وجار چھے۔ (کیا خیال ہے)۔

كچه ين نتمى - مول كالى يوفيون (كچونين، من صرف يوجدر با مون -)-

مم زرتشت کی اس نے آسان کی طرف سر اٹھاکر قتم کھائی، وو بل دونوں خاموش رہے۔ پھر بھائینہ بولا۔

د كمير برمز! بارى بنجايت ابن كو بالا . آبر ونصيف سالو كموثوبتو(ابنا نصيب سالا كونا تعلى سمجما كياانجمي تو، بتا؟

اللي استورى جمع بيا كيم جاس فرق ني ، يرسي بولول - الجمي اين كهال كيا ایک دم سالا کھال کیا، اور پھران کی باتوں کا سلسلہ ادھورا رہ کیا تھا۔ باؤلی آگئ تھی۔ ہرمز کے پیرکی ایک بی تحوکر سے بادل کا درواز و کھل کیا تھا اور دوسرے ہی بل دونوں لاش کے سر ہانے اور یائتی کمڑے تھے۔ وہی میں لیا لاش کاچیرہ باکل سفید تھا۔ ہرمز نے لاش کا س بانہ اک ذرا سا بلند کیا۔ بھائینہ نے کفن تھینج لیا۔ پھر باری باری دونوں نے لاش کے پیر چھوئے، ہاتھوں کو آتھوں اور سنے سے لگایا اور کھڑے ہوگئے۔ستریش کی خاطریس ایک رومال کستی ہے لاش کی کمریر ہائدھ دیا تھا جے انہوں نے جوں کا توں رہنے دیا تھااور پھروہ دونوں لوٹ مے تھے۔این کرے میں پنج کر دونوں میز کے آس پاس کرسیوں پر بیٹھ مے، تعوری دیر بعد ہرمز نے شراب کی بوال میز یہ رکھ لی تھی اور دونوں اپنا اپنا گلاس بھر رہے تھے۔ پتریل کا ایک کلوا مندیس رکھنے کے بعد فیروز بھائینہ بولا۔

يول_

سول لائف جھے (کیا زندگی ہے؟)۔

کیم تھیا (کیا ہوا)۔

بگلی _ ایکوو چار تل مالا اور

बोल

अपन कब तलक यह काम करेंगे।

चल चल, मगज ना दही खाकर (चल चल, दिमाग़ की दही न कर)

यार, अपन का वासते, यही काम रह गईला है?

सौं वि चार छे ,(क्या ख्याल है)

कुछ पन नथ्यी। हूं खाली पुछों छींयों (कुछ नही, मैं सिर्फ़ पूछ रहा हूं)

हालिस्ट

क्रसम जरतुश्त⁽¹⁾ की..... उसने आसमान की तरफ़ सर उठाकर क्रसम खाई, दो पल दोनों खामोश रहे फिर भाटिना बोला।

देख हर्मज्ञ—! पारसी पंचायत अपन को पाला, आपरू नसीब सालो खोटो हतो (अपना नसीब साला खोटा था) समझा क्या अभी तू, बता ?

एकच स्टोरी छे बप्पा कुछ जासती फर्क नई, पर सच्ची बोलूं। अभी अपन कंटाल गया। एक दम साला कंटाल गया। और फिर उनकी बातों का सिलसिला अधूरा रह गया था। बाउली आ गई थी। हमंज्ञ के पैर की एक ही द्येकर से बाउली का दरवाजा खुल गया था और दूसरे ही पल दोनों लाश के सिराहने और पायंती खड़े थे। दही में लिपा लाश का चेहरा बिल्कुल सफ़ेद था। हमंज्ञ ने लाश का सिरहाना एक जरा सा बुलन्द किया। भाटिना ने कफ़न खींच लिया। फिर बारी बारी दोनों ने लाश के पैर छुए, हाथों को आंखों और सीने से लगाया और खड़े हो गए। सत्रपोशी (2) की खातिर बस एक रूमाल कसती से लाश की कमर पे बांध दिया गया था। जिसे उन्होंने जूं का तूं रहने दिया था और फिर वो दोनों लीट गये थे। अपने कमरे में पहुंच कर दोनों मेज के आस पास कुर्सियों पर बैठ गये। थोड़ी देर बाद हर्मज ने शराब की बोतल मेज पर रख ली थी। और दोनों अपना अपना गिलास भर रहे थे। पतरैल का एक टुकड़ा मुँह में रखने के बाद फिरोज भाटिना बोला।

हर्मज

बोल

सुं लाइफ छे (क्या जिंदगी हैं?

और केम थिया (क्या हुआ) बगली एक--- दो--- चार----

^{1.} पारिसयों का खुदा 2. गुप्तांगों को ढकना

101-9

بال اور _

اور کیا ۔

اور متوں، متو(اور میت میت)۔

ہوں، مجمونتی (میں سمجمانہیں)۔

جوتو۔ یاری نالائف (د کھوتو یاری کی زندگی)۔

لائف _

آستو(ہاں)۔

كيا موا؟_

اے نی جوانی سپر فاسٹ انے برحا ہو مال گاڑی مافق بطے کمرد بولے بیا۔ کمرد

يو لے:

می ایک دم کمرا۔

پھر وہ دونوں کانی دیر تک کمر وکمروکی گردان کرتے رہے چیے رہے۔ کچھ دیر بعد وہ سبک رہے تھے۔ کوئی محند بھر بعد پھر بیل بچی تھی۔ اب بنگی نبر چارے لاش آنے والی تھی۔ والم کھدائے زرتشت نے شراب کا انتظام کیا)۔ ہاڈری۔ چل چل۔

دونوں باؤلی کے صدردروازے کی طرف بوسے تھے۔ ایک مرتبہ گھر دروازہ کھلا تھا۔
خالی اسر پی باہر رکھ دیا گیا تھا اور کچھ ویر بعد بنگی نمبر چارکی لاش ان کی تحویل بیل تھی۔
آنے والے خدام میں ہے ایک نے گھر ایک مرتبہ دس دس کے دونوٹ ان کی طرف
بدھادیے تھے۔ جنمیں اس مرتبہ آگے بوھ کر ہرمز نے وصول کیا۔ دروازہ بند کیا گیا۔
اسر پی افرایا گیا اور دونوں بارکی طرف بوصف گھے۔

- 71

يول_

ایک دیوس آپر وہمی ایم ای جاونی (ایک دن ہم بھی ای طرح جاکیں کے نا)۔ چلتے چلتے ہر مزرک کیا۔ گردن محما کر اس نے فیردز بھائینہ کو دیکھا۔ پھر کسی قدر درشت کیجے میں اس سے لو جھا۔

बैल---साला--और

हां और

और क्या

और मय्यतो, मैय्यतो---(और मैय्यत)

हों, समझियो नथ्थी (मैं समझा नहीं)

जोतु, पारसी नालाईफ़ (देख तो पारसी की जिंदगी)

लाईफ़

आस्तो (हां)

क्या हुआ ?

ऐनी जवानी सुपर फास्ट अने बुढ़ापु माल गाड़ी माफिक़ चले।

खरद बोले बप्पा, खरद बोले।

सच्ची एक दम खरा।

फिर वह दोनों काफ़ी देर तक खरद खरद की गरदान करते रहे पीते रहे, कुछ देर बाद वह सुबुक रहे थे, कोई घण्टा भर बाद फिर बेल बजी थी, अब बगली नम्बर चार से लाश आने वाली थी।

वाह खुदाए जरतुस्तन। दारोना बंदोबस्त कीदा (खुदाए जरतुस्त ने शराब का इंतजाम किया)

हादडी-- चल चल।

दोनों बाउली के सदर दरवाज़े की तरफ़ बढ़े थे, एक मर्तबा फिर दरवाज़ा खुला था, ख़ाली स्ट्रेचर बाहर रख दिया गया था और कुछ देर बाद बगली नम्बर चार की लाश उनकी तहवील⁽¹⁾ में थी। आने वाले खुद्दाम में से एक ने फिर एक मर्तबा दस दस के दो नोट उनकी तरफ़ बढ़ा दिए थें जिन्हें इस मर्तबा आगे बढ़कर हर्मज ने वसूल किया, दरवाज़ा बंद किया गया, स्ट्रेचर उठाया गया और दोनों बाड़ी की तरफ़ बढ़ने लगे।

हर्मज

बोल

एक दिवस आपरू भी एम एच जावनी (एक दिन हम भी इसी तरह जाएँगे

ना)

^{1.} कुब्जे

آسوال تے کیم کیدا (بیسوال تم نے کول کیا)۔ مردا تو سب نا پڑھے (مرنا تو سب کو پڑے گا)۔

کراچ ہولے اپن مارا وجارا منامر دانا نتھی (یج کہا! لیکن میرا ارادہ ابھی مرنے کانہیں)۔

وحار- ؟ سول كيم پيا-

چپ کر سالا۔ ہم نوگ ایھلالائف ماجو یاسوں؟ لاش، لاش، لاش، انے پکشی۔ جاسی ماجاتی وہ سالا ستارا روڈ نادار، و نوسادر والادی دی روپ کا نوٹ ہوں پوچھوں لائف اے نو، نام جھے؟ (چپ کر سالا۔ ہم لوگوں نے اتنی زندگی میں کیا دیکھا۔ لاش۔ لاش اور گھھ۔ زیادہ وہ سالا ستارا روڈ والا دارو۔ نوسادر والا۔ دی دی روپیہ کا نوٹ، میں پوچھتا ہوں۔ زندگی ای کا نام ہے؟)۔

"بول با_آج مصح جون (بول بمائي يمي ب زندگ)_

''سوں کہوں، ہوں تو اٹیلا جانوں۔ آوے تو جادا پڑشے! ہوں جاؤں تو مارا ٹھکانا یجوکوئی آوے تو جائے(کیا کہوں۔ میں جانتا ہوں آئے گی تو جانا پڑیکا میں جاؤں گا تو میری جگہ کوئی آجائے گا تو)۔

چپ سالا بهینحرامی وُتَر برمز چخ پزاتها۔

بوم نہ مار بیا۔ جیون نادات چھوڑ۔ میت ہاتھ ماجھے(جی نہ بھائی۔ زندگی کی بات چھوڑ کہ میت ہاتھ میں ہے) اور چمر وہ دونوں خاموثی سے ہاؤل تک پنچے سے اور جب ہاؤلی کا دردازہ کھلا تو ۔۔۔۔۔

اس انہونی ہے دونوں بی سششدر رہ گئے۔ غیر ادادی طور پر انھوں نے اسریچر زمین پر رکھا۔ جیرت سے لاش کو دیکھا چر ایک دوسرے کو۔ آنکھوں بی آنکھوں میں دونوں نے ایک دوسرے سے سوالات کیے۔ کافی دیرتک ان کی آنکھوں کے ڈھیلے گھوشتے رہے۔ اور جب دہ تھے تو لاعلی کے طور پر دونوں کے کندھے ایکے اور چر ان کی نظروں نے ڈوچر داڑی کے گذرہ ان کی نظروں نے ڈوچر داڑی کے درختوں کا طواف شروع کیا۔ دور دورتک ایک بھی گدرہ کا پید شرقا۔ اور یہ بالکل بہلی مرتبہ ہوا تھا۔ گدرہ کا اب شے ادر لاشیں موجود۔ ورنہ ہوتا تو یہ آیا

चलते चलते हर्मज रुक गया, गर्दन घुमा कर उसने फ़िरोज भाटिना को देखा फिर किसी क़द्र दुरूश्त⁽¹⁾ लहजे में उससे पूछा:

आसवां तुमें केम कैदा (यह सवाल तुम ने क्यों किया)

मरदा तो सब ना मड शै (मरना तो सब को पड़ेगा)

खराच बोले-ॲपन मारा विचार अमना मरदाना नथ्यी (सच कहा! लेकिन मेरा इरादा अभी मर्स्नों का नहीं)

विचार-? म्रं कहे बप्पा

चुप कर साला। हम लोग एटला लाईफ माजो यःसों -? लाश, लाश, अने पक्शी। जास्त्रौं मा जास्ती वह साला सितारा रोड ना दारो - नोसा दर वाला - दस दस रूपे का नोट. हूं पूछों ... लाईफ ऐ नो, नाम छे? (चुप कर साला हम लोगों ने इतनी ज़िंदगी में क्या देखा. लाश, लाश, लाश और गिद्ध- ज्यादा से ज्यादा वह साला सितारा रोड वाला दारो। नौसादर वाला। दस दस रूपया का नोट, मैं पूछता हूं। ज़िंदगी इसी का नाम है?)

जवाब में फ़िरोज़ कुछ न बोला। वह तो बस हर्मज़ को देख रहा था.

''बोल बप्पा, आच छे जीवन (बोल भाई यही है ज़िंदगी)''

"सूं कहूं, हूं तो अटेला जानूं, आवे तो जावा पड़शे! हूं जाऊं तो मारा ठिकाना बीजू कोई आवे तो जाए तो (क्या कहूं मैं तो जानता हूं आएगी तो जाना पड़ेगा। मैं जाऊंगा तो मेरी जगह कोई आ जाएगा तो....)

चुप साला **बही**न हरामी डक्कर हर्मज चीख़ा था।

बोम न मार बप्पा, जीवन ना दात छोड़ मय्यत राथ माछे (चीख़ न भाई, जिंदगी की बात छोड़ कि मय्यत हाथ में है) और फिर वह दोनों ख़ामोशी से बाउली तक पहुंचे थे और जब बाउली का दरवाजा खूला तो....

इस अन्होंनी पे वह दोनों ही शश्दर रह गए, ग़ैर इरादी तौर पर उन्होंने स्ट्रेचर जमीन पे रखा। हैरत से लाश को देखा फिर एक दूसरे को। आंखों ही आंखों में दोनों ने एक दूसरे से सवालात किये। काफ़ी देर तक उनकी आंखों के ढेले घूमते रहे। और जब वह थमे तो लाइल्मी के तौर पर दोनों के कंधे उचके और फिर उनकी नज़रों ने डोंगरवाड़ी के घने दरख़ों का तवाफ़ शुरू किया। दूर दूर तक एक भी गिद्ध का पता न था।

^{1.} कर्कश

تھا کہ لاش پیچی، ہرمز اور فیروز باؤلی سے لوٹے، ہیں پیس منٹوں ہیں لاش گدھوں کے معدوں میں نتقل ہوئی۔ انھوں نے گدھ کولو شخ دیکھا تو باؤلی پہ پیچی کر ایسڈ سے ڈھانچے بہت نیچ بہت بیچ بہت نیچ بہت بہت نیچ بہت نیچ

مو : جار جھے۔ کیتباد نے کمی آؤں (کیا خیال ہے کیتباد سے کہدآؤں)۔

بال، جا!

اس نے اپنے کرے میں پہنچ کر ہنگا می تھٹی کے سوئج پر انگل رکھ دی۔ ڈوگر واڑی کے دفتر میں دیوار پہنسب سرخ بلب جلنے لگا بجھنے لگا۔ کلرک جیران ہوکر دفتر سے نگلے۔ اور بلب تو بگلیوں کے بھی جلنے لگا بجھنے دار سند دار گھو متے ہوئے کتے سہم کر ادھر ادھر دبک گئے۔ نئی آنے والی لاشوں کے سوگوار رشتہ دار مضطرب ہوکر بگلیوں سے نکل آئے ہر طرف ایک سوال تھا۔ کیا ہوا؟ کیقباد دوڑا دوڑا گیا اور پھر آسان کی طرف دیکھتا ہوا بلٹا! سب نے اسے گھیرلیا۔ سول تھیوکا شور بلند ہوا۔ جواب میں کیقاد نے اعلان کیا۔

مرده على محدًا

كده على محة؟

مره ط مع؟

محركائے كو؟

كجه توين موكنكا!

محركها بوئے گا؟

یاری بنجایت کے سکریٹری نے کیقباد کا فون ریسیو کیا تھا اور اس کی پیشانی پرسلوثوں

और यह बिल्कुल पहली मर्तबा हुआ था, गिद्ध गायब थे और लाशें मौजूद। वर्ना होता तो यह आया था कि लाश पहुंची, हर्मज फ़िरोज़ बाउली से लौटे, बीस पचीस मिनटों में लाश गिद्धों के मेदों 'में मुन्तक़िल 'हई। उन्होंने गिद्धों को लौटते देखा तो बाउली पे पहुंच कर एसीड से ढांचे पर छिड़काव किया और ढांचा सफ़्फ़ '3' बनकर बाउली की गहराइयों में उतरता चला गया, नीचे बहुत नीचे जाने कहां। कभी यूं भी होता, कोई लाश ही न आती, उस रोज गिद्धों की ख़ातिर पंचायत बकरा ख़रीद कर हर्मज और भाटिना के सुपुर्द कर देती, मबादा (4) गिद्ध भूख से मजबूर होकर उड़ जाएं। लेकिन यह तो बिल्कुल ही अन्होनी बात हुई, लाशें मौजूद थीं और गिद्ध ग़ायब! वह दोनों फटी फटी आंखों से एक दूसरे को देखते रहे। काफ़ी देर इसी आलम में खड़े रहने के बाद उन्होंने दूसरी लाश भी बाउली के जाल पे रख दी फिर एक दूसरे की तरफ़ सवालिया नज़रों से देखा।

सो विचार छे। केकबाद ने कही आऊं (क्या ख़्याल है कैकबाद से कह आऊं) हां, जा !

उसने अपने कमरे में पहुंच कर हंगामी घंटी के स्विच पर उंगली रख दी, डॉगरवाड़ी के दफ़्तर में दीवार पे नस्ब⁽⁵⁾ सुर्ख़ बल्ब जलने लगा बुझने लगा। क्लर्क हैरान होकर दफ़्तर से निकले, और बल्ब तो बगलियों के भी जलने लगे थे। दस्तूरों ने तिलावत रोक दीं बगलियों में घूमते हुए कुत्ते सहम कर इधर उधर दुबक गए। नई आने वाली लाशों के सोगवार रिश्तेदार मुजतिरब⁽⁶⁾ होकर बगलियों से निकल आए। हर तरफ़ एक सवाल था, क्या हुआ? केक़बाद दौड़ा दौड़ा गया और फिर आसमान की तरफ़ देखता हुआ पलटा! सबने उसे घेर लिया, सूं थयूका शोर बुलंद हुआ, जवाब में केक़बाद ने एलान किया।

गि2 चले गए !

गिद्ध चले गए?

गिद्ध चले गए?

मगर काए को ?

कुछ तो पन होएंगा!

मगर क्या होएगा?

^{1.} पेटों 2. स्थानान्तरित 3. पावडर 4. ईश्वर न करे कि ऐसा हो, 5. गड़ा हुआ 6. व्याकुल

کا جال امجرآیا تھا۔ساری بات سن کر اس نے ریسیو رکریڈل پر رکھنے کے بعد انٹرکام پہ ڈائرکٹر کو اطلاع دی۔فورا بی ارجنٹ میٹنگ کال کی گئی۔ بورڈ آف ڈائرکٹرز کے سامنے مسلد پیش ہوا۔لیکن سوال تو اپنی جگہ قائم تھا۔

مره کہاں گئے؟

كياكها كده يل محيد الله المشرك ليج من ملك سي تحرى آميزش تعي-

ہاں ہمارے گدھ چلے گئے! پاری پنچایت کے چریئن نے ایک ایک لفظ پر زور دستے ہوئے تھدین کی۔ پھر بڑی توجہ سے پولیس کمشنر کی بات سنتا رہا۔ اس کے چہرے پر ایک رنگ آرہا تھا۔ ایک جارہا تھا۔ کافی دیر تک وہ بات سنتا رہا۔ پھر دوسری طرف سے سلم منقطع ہوجانے پر اس نے بھی ریسیور کریڈل پر رکھ دیا۔ دوسرے تمام ڈائر کٹر زاس کی طرف سوالیہ نظروں سے دیکھ رہے تھے۔ اس نے اپی اور پولیس کمشنر کی گفتگوکا خلاصہ بیان کیا۔ ہر مخص تعور ا تھوڑا تھوڑا اظمینان اور خاصی پریشانیاں سمیٹ کر میٹنگ ہال سے واپس آیا۔ سکریٹری نے ڈوگر واڑی فون کیا۔ کیقباد نے تمام محترم دستوروں تک اور حاضرین تک چہر مین اور پولیس کمشنر کی گفتگو کا خلاصہ بیان کیا۔ وستوروں سے بات بھی کے خدام کے ذرایعہ فیروز بھائینہ اور ہرمز تک پنچی، بھائینہ نے تمام بات غور سے بات بھی کے خدام کے ذرایعہ فیروز بھائینہ اور ہرمز تک پنچی، بھائینہ نے تمام بات غور سے نی۔ پھر آرہا تھا۔ نہ کوے شے۔ نہ چیلیں و کیکھے درختوں کی کھر کیوں سے آسان صاف نظر آرہا تھا۔ نہ کوے شے۔ نہ چیلیں اور نہی کرھے۔

اور پھروہ دونوں ہی چونک پڑے۔ اطلاع آھنٹی نے رہی تھی، گل نمبر سے لاش آرہی متی۔ ایک مرتبہ پھر وہ دروازے پہکڑے تھے۔ لاش آ کہ ایک مرتبہ پھر وہ دروازے پہکھڑے تھے۔ لاش آئی اس بار خادم نے پہاس بھا سے دونوٹ بھائینہ کی طرف بڑھا دیے۔ لاش اندر کر لینے کے بعد بھائینہ نے منہ بناتے ہوئے مرمز کومخاطب کیا۔

-7%

بول ميا۔

سب ماری آج اچ کیوں مرتا؟

مر مرئے اس کے سوال کا کوئی جواب نہ دیا۔ وہ آسان کی طرف دیکھ رہا تھا۔ ایک تو کپٹی نتھی۔ انے لاش اوپر لاش آوے (ایک تو گدھ نہیں پھر لاش پہ لاش آر بی ہے)۔

पारसी पंचायत के सेक्रेट्री ने केक्नबाद का फोन रिसीव किया था और उसकी पेशानी पर सिल्वटों का जाल उभर आया था। सारी बात सुन कर उसने रिसीवर क्रेडिल पर रखने के बाद इंटरकाम पे डाइरेक्टर को इत्तेला दी, फौरन ही अरजेंट मीटिंग काल की गई। बोर्ड आफ डाइरेक्टरज़ के सामने मसला पेश हुआ। लेकिन सवाल तो अपनी जगह क़ायम था।

गिद्ध कहां गए?

क्या कहा गिद्ध चले गए? पुलिस कमिश्नर के लहजे में हल्के से तहय्युर⁽¹⁾ की आमेजिश⁽²⁾ थी।

हां हमारे गिद्ध चले गए। पारसी पंचायत के चेयरमैन ने एक-एक लफ्ज पर जोर देते हुऐ तसदीक़ (3) की। फिर बड़ी तकजह से पुलिस किमश्नर की बात सुनता रहा। उसके चेहरे पर एक रंग आ रहा था। एक जा रहा था। काफ़ी देर तक वह बात सुनता रहा। फिर दूसरी तरफ़ से सिलिसला मुन्क़ता (4) हो जाने पर उसने भी रिसिवर क्रेडिल पे रख दिया। दूसरे तमाम डाइरेक्टर्ज़ उस की तरफ़ सवालिया नज़रों से देख रहे थे। उस ने अपनी और पुलिस किमश्नर की गुफ़तगू का खुलासा बयान किया। हर शख़्स थोड़ा-थोड़ा इत्मीनान और खासी परेशानियों समेटकर मीटिंग हाल से चापस आया। सेक्रेट्री ने डोंगर वाड़ी फोन किया। केक़बाद ने तमाम मोहतरम दस्तूरों तक और हाजरीन (5) तक चेयरमैन और पुलिस किमश्नर की गुफ़तगू का खुलासा बयान किया। दस्तूरों से बात बगली के खुद्दाम के ज़रिए फिरोज भाटिना और हर्मज तक पहुंची, भाटिना ने तमाम बात ग़ौर से सुनी। फिर आसमान की तरफ़ देखने लगा। घने दरख़्तों की खिड़िकयों से आसमान साफ़ नज़र आ रहा था। ना कैवे थे। न चीलें और न ही गिद्ध!

और फिर दोनों ही चौंक पड़े। इत्तेलाई घंटी बज रही थी, बगली नंबर तीन से लाश आ रही थी। एक मर्तबा फिर वह दरवाजे पे खड़े थे। लाश आई, इस बार ख़ादिम ने पचास-पचास के दो नोट भाटिना की तरफ़ बढ़ा दिया। लाश अन्दर कर लेने के बाद भाटिना ने मुंह बनाते हुए हर्मज़ को मुख़ातिब किया।

हर्मज

बोल बप्पा

^{1.} हैरत 2. मिलावट 3. पुष्टि 4. कटजाना 5. उपस्थित गण हाजिर (उपस्थित) गण का बहुवचन

ين نکمني عميا کدهر؟

پولیس کمشنر بوالا۔ بدا کپٹی، کھڑی۔ روی وار پیٹھ نے سوموار پیٹے ما چھے سامائے (کس لیے)۔

ار ہے وہ سالا ہندو مسلمان بھڑی عُنو۔ادھر رائث ہوا۔سالا وہ لوگ ہیرس وین جلادیا۔ ایمبولینس کو انگار لگا یا۔ رستہ اوپر لاش اچ لاش جھے اور اپنا گدھ ادھر مجا مارتا۔ اور وہ پولیا۔سالا رستہ صاف ہوئنگا تو گدھ آپو آپ واپس آئینگا۔

رسته صاف بھی ہوئینگا تو کیاگدھ واپس آئینگا..... بداغریا سالا ادھرتو روز رائٹ ہوتا۔ روز انگارلگتا۔ روز مانس مرتا۔ فرفر کیا سالاگدھ واپس آئینگا۔



सब पारसी आज इच क्यों मरता?

हर्मज ने उस के सवाल का कोई जवाब न दिया। वह आसमान की तरफ़ देख रहा था।

एक तो पक्शी नथी। अने लाश उपर लाश आवे (एक तो गिद्ध नहीं फिर लाश पे लाश आ रही है।) पन पक्शी गया किधर ?

पुलिस कमिश्नर बोला। बिद्दा पक्शी, खिड्की। रविवार पीठ अने सोमवार पीठ मा छे

सामाटे (किस लिए)

अरे वह साला हिंदू-मुसलमान भिड़ी गयो। उधर राइट हुआ। साला वह लोग हैरिस वेन जलादिया। एम्बूलेन्स को अंगार लगाया। रस्ता उपर लाश इच लाश छे और अपना गिद्ध उधर मजा मारता। और वह पुलिस कमिश्नर बोलता साला रस्ता साफ होऐंगा तो गिद्ध आपु आप वापस आऐंगा।

रस्ता साफ भी होऐंगा तो क्या.....गिद्ध वापस आऐंगा..... यह इण्डिया..... साला इधर तो रोज राइट होता। रोज अंगार लगता। रोज मानस मरता।फिर.....फिर क्या साला.......गिद्ध वापस आऐंगा।



کابلی والا کی واپسی

كالى والے كے ہونك لرز ___

"ا چما صاحب، اب میں چلولوقت کم ہے۔ کچھ سامان بھی خریدنا ہے۔ مج جار بچکے کی گاڑی ہے۔"

"بال خان"

جیے میں نیند سے جاگا۔ کوئی درد ناک خواب دیکھتے دیکھتے چونکا۔

"اب كب آؤم خان؟"

میں نے اس کے دونوں ہاتھوں کو اپنے ہاتھوں میں تھام کر اپنے سینے سے لگاتے ہوئے کہا۔

ایک انجانے دکھ سے اس کی آکھیں جرآ کیں۔ اس نے ایک لمباگرم سانس چیوڈ کر کہا:

" پیدنہیں صاحب ایس برس کے بعد گھر اوٹ رہا ہوں پلٹ کر دیکھوتو ہے عرصہ کچے بھی نہیں معلوم ہوتا! آھے دیکھوتو ایک نا قابل عبور پہاڑی راستہ! اب تو شاید ہی واپسی ہو۔"

یہ کہتے کہتے اس کا گلا رندھ کیا اور وہ اپنے وجود کی گہرائیوں میں آئے ہوئے زائے ہے اس کے اللہ اللہ اللہ اللہ ال

"صاحب! جاتے جاتے مجمع وہ تصویریں پھر دکھادیجیے۔ جوتصویریں آپ جیل میں مجمعہ دکھانے کے لیے اکثر لا یا کرتے تھے۔ ایک عرصے کے بعد گھر جا رہا ہوں، چاہتا ہوں کہ دکھانے کے راحل کی برجموٹی بڑی یاد تازہ ہوجائے اور اپنے ملک سے برسوں کی دوری کی بنا پر جو

काबुली वाला की वापसी

काबुली वाले के होंठ लर्जे।

"अच्छा साहब, अब मैं चलूं..... वक्त कम है, कुछ सामान भी ख़रीदना है। सुबह चार बजे की गाड़ी है।"

''हांखान''

जैसे मैं नींद से जागा। कोई दर्दनाक ख़्वाब देखते देखते चौंका।

''अब कब आओगे खान?''

मैंने उस के दोनों हाथों को अपने हाथों में थाम कर अपने सीने से लगाते हुए कहा।

एक अन्जाने दुख से उसकी आंखें भर आईं। उस ने एक लंबा गर्म सांस छोड़कर कहा।

"पता नहीं साहब इक्कीस बरस के बाद घर लौट रहा हूं..... पलटकर देखो तो ये अर्सा कुछ भी नहीं मालूम हाता। आगे देखो तो एक नाक़ाबिले – ऊब्र⁽¹⁾ पहाड़ी रास्ता!........अब तो शायद ही वापसी हो''

यह कहते-कहते उस का गला रुंध गया और वह अपने वजूद की गहराईयों में आए हुए जलजले से लरजने लगा। कुछ देर की खामोशी के बाद जैसे उसे अचानक याद आया।

''साहब! जाते जाते मुझे वह तसवीरें फिर दिखा दीजिए। जो तसवीरें आप जेल में मुझे दिखाने के लिए अक्सर लाया करते थे। एक अरसे के बाद घर जा रहा हूं, चाहता हूं कि वतन की हर छोटी बड़ी याद ताजा हो जाए और अपने मुल्क से बसों की दूरी की बिना पर जो अजनबियत का पुरख़ौफ़ एहसास पैदा हो गया है मेरे दिल में…… वह डर भी दूर हो।''

^{1.} जिन्हें पार करना संभव न हो

اجنبیت کا پرخوف احساس پیداہوگیا ہے۔ میرے دل میں وہ ڈربھی دور ہو۔'' میں نے اثبات میں گردن ہلائی اور بک شلف سے کتاب نکال کر اس کے آگے رکھ دی۔

میں سال بہت ہوتے ہیں اور قیمی بھی بہت ہوتے ہیں۔ اپنی بیتی ہوئی زندگ سے ہم ان کی اہمیت کا اندازہ کر کتے ہیں۔ خان کی زندگی جیل کی دیواروں کے ج میں کن مقی۔ میں جب بھی اس سے طنے کے لیے جا یا کرتا۔ ، یہ کتاب اس کی دلجوئی کے لیے، اپنے ساتھ ضرور لے جاتا تھا۔ وہ کتاب کے اوراق التنااور اپنی یادوں کے تہہ خانوں میں اتر جایا کرتا۔ پھر وہ آج کے رحمت سے کل کے نوعم رحمت کو یوں ملاتا کو یا وہ جداجدا شخصیتیں ہوں اور ایک دوسرے سے اجنبی ہوں۔

'' یہ ہے میرا مدرسہ فجر کی نماز کے بعد مولوی صاحب ہمیں عربی پڑھایا کرتے تھے۔'' ''لاا له الله محمد الرسول الله'' عیں دہراتا،

"لا الله الا الله محمد الرسول الله يجرعيد الرزاق وبراتا،

"لا الله الا الشعمر الرسول الشه يعيد القادر وبراتا ..

ہماری آ واز مجد ہے گی خانقاہ کے در پچوں سے نکلتی اور کوہ دمام اور ہندوکش کی وادیوں میں ڈوب جاتی تھی۔ مولوی صاحب کی آ واز پاٹ دارتھی۔ ان کے چہرے کو دکھیے کر جھے جال آباد کا وہ خطہ یاد آ جاتا کہ جہاں کی زمین سوکھ کر ترش چکی تھی۔ ان کی آئھیں دو برد نے برد ی گرھوں میں بیٹی ہوئی تھیں۔ لبی سفید داڑھی باریک مونچیں، سر پر عمامہ، لمبا کرتا، کسا ہوا کمر بند، کنوں سے اونچی شلوار اور زری کا کمائی دار جوتا، وہ خانقاہ میں بلا معاوضہ قرآن کا درس دیا کرتے تھے۔ پر روزی کمانے کے لیے روس کی سرحد پر کئے والے بازار میں سے گھوڑ نے خرید تے اور آئھیں شہر میں لاکر بھیا کرتے تھے۔ ان کا کہنا تھا کہ تجارت بوں کروکہ جیسے ہمارے رسول نے کی تھی۔ یعنی نفع اتنا بی کماؤ کہ جتنا آبے میں نمک پڑتا ہے۔

صاحب میں بھی انامال بہت کم نفع پر بیچنا ہوں۔مولوی صاحب کی بات مجھے اب تک یاد ہے۔

मैंने असबात⁽¹⁾ में गर्दन हिलाई और बुक शेल्फ़ से किताब निकाल कर उस के आगे रख दी।

बीस साल बहुत होते हैं और क़ीमती भी होते बहुत हैं। अपनी बीती हुई जिन्दगी से हम उन की अहमियत का अन्दाजा कर सकते हैं। ख़ान की जिन्दगी जेल की दीवारों के बीच में कटी थी मैं जब भी उससे मिलने के लिए जाया करता, यह किताब उस की दिल जोई के लिए अपने साथ जरूर ले जाता था। वह किताब के औराक़ उलटता और अपनी यादों के तह ख़ानों में उतर जाया करता। फिर वह आज के रहमत से कल के नौ उम्र रहमत को यूं मिलाता गोया वह जुदा-जुदाशिक्सियतें हों और एक दूसरे से अजनबी हों।

''यह है मेरा मदरसा, फ़जर की नमाज के बाद मोलवी साहब हमें अरबी पढ़ाया करते थे।''

''ला इलाह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह''⁽²⁾मॅं दुहराता।

''ला इलाह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह''.....फिर अब्दुर्रज्जाक दुहराता।

"ला इलाह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह" अब्दुल क़ादिर दुहराता। हमारी आवाज मस्जिद से लगी ख़ानक़ाह 3 के दरी वों 4 से निकलती और कोहे दमाम और हिंदूकश की वादियों में डूब जाती थी। मोलवी साहब की आवाज पाटदार थी। उन के चेहरे को देख कर मुझे जलालाबाद का वह ख़िता (5) याद आ जाता कि जहां की जमीन सूख कर तड़ख चुकी थी। उन की आंखें दो बड़े-बड़े गढ़ों में बैठी हुई थीं। लंबी सफ़ेद दाढ़ी बारीक मूंछें, सर पर एमामा, लंबा कुर्ता, कसा हुआ कमरबन्द टख़ों से ऊँची शलवार और जरी का कमानी दार जूता, वह ख़ानक़ाह में बिला-मुआवजा (6) क़ुरआन का दर्स 7) दिया करते थे। पर रोजी कमाने के लिए रूस की सरहद पर लगने वाले बाजार में से घोड़े ख़रीदते और उन्हें शहर में लाकर बेचा करते थे। उन का कहना था कि तिजारत यूं करो कि जैसे हमारे रसूल ने की थी। यानी नफ़ा इतना ही कमाओ कि जितना आटे में नमक पड़ता है।

साहब मैं भी अपना माल बहुत कम नफ्न पर बेचता हूं। मोलवी साहब की

^{1.} स्वीकृति 2. इस्लाम का कलमा 3. आश्रम 4. खिड्कियों 5. इलाका

^{6.} बिना फीस के 7. तालीम

مجمعے یہ بیجھنے میں دیر نہ لگتی کہ یہ بات نوعمر رحمت سے نہیں کی گئ ہے، ہلکہ یہ بات کا بلی والے نے مجھ سے کی ہے۔

"وہ دن تو ہمارے لیے بری تفریح کا ہوتا کہ جس دن مولوی صاحب اپنے گھر میں اون رنگا کرتے تھے۔ انھوں نے اپنے مکان کے پچھواڑے پھروں کو جوڑکر ایک حوض سابنالیا تھا۔ اس حوض میں وہ اخروٹ کی کوئی ہوئی چھال اور رنگ، پانی میں حل کرتے، پھر وہ اسے نیچ سے لکڑی لگا کر تپاتے تھے۔ جب یہ آمیزہ اہل اہل کر خوب گاڑھا ہوجاتا تو وہ اس میں اون چھوڑا کرتے تھے۔ کیا رنگ چڑھتا تھا اون پر!"

وه کہتا:

'' دیکھیے یہ ای خانقاہ کا دروازہ ہے۔ فریم کے اطراف کا پلستر جمر چکا ہے۔ لیکن پھر بھی فریم اپنی جگہ پر قائم ہے۔ لکڑی کے کام میں بار کی نہیں، نقش نہیں، کوئی ابھار نہیں۔ لیکن یا ئیداری ہے۔ سادگی ہے اس لیے دیکھنے میں بھلا لگتا ہے۔ دور دور سے عورتیں

ا فی منتس ما کینے یہاں آتی ہیں۔ اس کے دیتے سے بندھے ہوئے ہر ڈور سے ایک ایک مراد منسوب ہے۔"

اس کتاب میں بے شار تصویری تھیں۔ کابلی والا ورق النے چلا جاتا اور اس کا سلسلہ کلام بھی جاری رہتا۔

یہ ہے عبدالرحمان سقہ۔ چاندی کے پیالوں میں دھوپ میں جھلتے ہوئے مسافروں کو پانی بلایا کرتا ۔۔۔۔۔گرمیوں میں بہاڑیاں تپ جاتیں تو وہاں سے ہوا بگولوں کی شکل میں

बात मुझे अब तक याद है।

मुझे यह समझने में देर न लगती कि यह बात नौ उम्र रहमत से नहीं कही गई है, बंल्कि यह बात काबुली वाले ने मुझ से कही है।

"वह दिन तो हमारे लिए बड़ी तफ़रीह का होता कि जिस दिन मोलवी साहब अपने घर में उन रंगा करते थे। उन्होंने अपने मकान के पिछवाड़े पत्थरों को जोड़कर एक हौज सा बना लिया था। उस हौज में वह अखरोट की कुटी हुई छल और रंग, पानी में हल करते, फिर वह उसे नीचे से लकड़ी लगाकर तपाते थे। जब यह आमेजा उबल उबल कर खूब गाढ़ा हो जाता तो वह उस में उन छोड़ा करते थे। क्या रंग चढता उन पर!"

वह कहता:

"देख रहे हैं आम इस रूमी दरवाजे को! पत्थरों की सिलें एक दूसरे पर रखी हुई यूं नजर आ रही हैं के जैसे उन कि बीच कोई मसाला ही न लगाया गया हो। आप चाहें तो एक एक करके इन्हें उठाकर अलग रख सकते हैं..... लेकिन नहीं........ यह सिलें पिछले डेढ़ हजार बरस से यूंही रखी हुई हैं। न तो बर्फानी हवाओं का असर होता है इन पर, न सहरा⁽¹⁾ के गरम झक्कड़ों का! यह देखिए ना यह कमान सतरह सिलों को जोड़-जोड़ कर बनाई गई है और हर दो सिलों के दरमियान में खांचे हैं, लेकिन मजाल नहीं के एक भी सिल अपनी जगह से सरक जाए।"

वह यह भी कहता:

"देखिये यह उसी ख़ानक़ाह का दरवाजा है। फ्रेम के अतराफ़⁽²⁾ का पलस्तर झड़ चुका है, लेकिन फिर भी फ्रेम अपनी जगह पर क़ायम है, लकड़ी के काम में बारीकी नहीं, नक्श नहीं, कोई उभार नहीं. लेकिन पाएदारी⁽³⁾ है, सादगी है इसी लिए देखने में भला लगता है, दूर दूर से औरतें अपनी मन्ततें मांगने यहां आती हैं, उस के दस्ते से बंधे हुए हर डोरे से एक एक मुराद मंसूब है।

उस किताब में बे शुमार तस्वीरें थीं, काबुली वाला वर्क्⁴ उल्टे चला जाता और उसका सिलसिला-ए-कलाम भी जारी रहता।

"यह है अब्दुर्रहमान सक्क़ा, चांदी के प्याला में धूप में झुलसते हुए मुसाफ़िरों को पानी पिलाया करता …… गर्मियों में पहाड़ियां तप जातीं तो वहां से 1. मरूस्थल 2. चारों ओर 3. टिकाऊपन 4. पृष्ठ

ہارے شہر میں داخل ہوا کرتی تھی۔ گھر سے نکلنا جان جو کھوں کا کام ہوتا۔ ایسی تیش میں عبد الرحمان کی آواز" پانی لے لو پانی۔ ویر مرائش کے جیشے کا شنڈا پانی.....'' ''اس کا بانی واقعی کلیج کو شنڈک پہنچا تا اور جسم کو تراوٹ بخشا تھا۔''

کابلی والے کی ان تمام ہاتوں کو میں کیوں کرسیٹوں؟ ہیں سال کے عرصے پر تھیلے ہوئے واقعات! بعض اوقات رحمت ایک ہی تصویر کے کئی کئی ورڈن چیش کرتا۔ جھے لگتا کہ مقام تو ایک ہی ہوسکتا ہے۔ عارت بھی ایک ہی ہوگا۔ راستہ بھی ایک ہی ہوگا۔ لیکن موسم بدل جاتے ہیں اور ان کے ساتھ دل کی کیفیتیں بھی! دن رات میں اور رات ون کے قالب میں اثر جاتی ہے۔ ان بدلتی ہوئی رتوں اور اس لحمہ کچھلتے ہوئے وقت کے درمیان میں کتنے رنگ، کتنی خوشہوئیں، کتنے نغے ہم دیکھتے، محسوس کرتے اور ساکر تے ور ساکر ہیں۔ یہ تمام احساس ہارے ذہن کے تہہ خانوں میں اثر کر روپوش ہوجاتے ہیں، لیکن جب بھی ہم اس کیفیت سے ملتی جاتی جاتی کیفیت سے دوجار ہوتے ہیں تو وہ تمام رنگ، وہ تمام رنگ وہ تمام رنگ وہ تمام رنگ ہوجاتے ہیں، لیکن جب بھی ہم اس کیفیت سے ملتی جاتی کیفیت سے دوجار ہوتے ہیں تو وہ تمام رنگ وہ تمام رنگ ہوجاتے ہیں دو تو بین کے گھونسلوں سے خوش رنگ بوجواتی ہیں۔

کالی والا بھی جھے سے پہاڑوں پر ہے ہوئے گاؤں کا ذکر کرتا۔ پہاڑوں پر بی قائم مدرسوں میں تختیاں لکھتے اور خدا کی حمد و ٹنا کرتے بچوں کا ذکر کرتا۔ اور یہ واقعہ ہے کہ کوہ بابا، بند بیاباں، سفید کوہ، کوہ دمام، ہندوش اور کوہ سلیمان پر چھوٹی چھوٹی گئی بستیاں آباد ہیں کہ جن پر اس جدید دور کا سایہ تک نہیں پڑا اور وہاں کے بای اب بھی قدیم روایتوں اور یاریندرسموں کے سہارے اپنی زندگی گزارا کرتے ہیں۔

وہ کی دوست محمد خال، ہمایوں، احمد عاشق خال، شاہ محمود، فتح خال، کامران، شیر علی اور یعقوب خال کا ذکر کرتا کہ جو بلند وبالا پہاڑیوں پر جڑی یوٹیوں کی تلاش میں جایا کرتے تنے، یا پہاڑوں پر سے نمک حاصل کرتے اور پھر گاؤں میں آکر اسے تیمک کے طور پر تقییم کردیا کرتے تھے۔ انہی سے منسوب کا بلی والا بچھے وہ دافتے بھی سناتا کہ کس طرح احمد شاہ نے ایک حملہ آور شیر کو اپنے لئے کی واحد ضرب سے ادر مواکر دیا تھا ادر کسی موقعے پر شیر علی نے ایک کوڑیا نے تاگ کو اپنی مضیوں میں پکڑ کر دوکھوں میں تقییم کر دیا تھا۔

हवा बगोलों की शक्ल में हमारे शहर में दाख़िल हुआ करती थी, घर से निकलना जान जोखों का काम होता, ऐसी तिपश⁽¹⁾ में अब्दुर्रहमान की आवाज पानी ले लो पानी, पीर मराकश के चश्मे⁽²⁾ का ठंडा पानी......''

''उसका पानी वाक़ई कलेजे को ठंडक पहुंचाता और जिस्म को तरावट बख्रता था''

काबुली वाले की उन तमाम बातों को मैं क्यों कर समेटूं? बीस साल के असें पर फैले हुए वाक्रेआत बाज-औक्रात⁽³⁾ रहमत एक ही तस्वीर के कई कई वरजन पेश करता, मुझे लगता कि मक्राम तो एक ही हो सकता है, इमारत भी एक ही होगा, लेकिन मौसम बदल जाते हैं और उनके साथ साथ दिल की कैफ्रियतें भी! दिन रात में और रात दिन के क्रालिब में उतर जाती है, इन बदलती हुई क्तों और इस लम्हा पिघलते हुए वक्त के दरिमयान में कितने रंग, कितनी खुश्बूएं, कितने नग्में हम देखते, महसूस करते और सुना करते हैं, यह तमाम एहसास हमारे जहन के तह खानों में उतर कर रूपोश हो जाते हैं, लेकिन जब कभी हम इस कैफ्रियत से मिलती जुलती कैफ्रियत से दो चार होते है तो वह तमाम रंग, वह तमाम खुशबूएं और वह तमाम नग्रमे धीरे धीरे हमारे जहन के घोसंलों खुशरंग⁽⁴⁾ परिंदों की तरह बरआमद होने लगते हैं और पुरानी यादें ताजा हो जाती हैं।

काबुली वाला कभी मुझ से पहाड़ों पर बसे हुए गाँव का जिक्र करता, पहाड़ों पर ही क़ायम मदरसों में तिष्क्रियां लिखते और खुदा की हम्दो-सना⁽⁵⁾ करते बच्चों का जिक्र करता, और यह वाक्या है कि कोह बाबा, बंद बयाबां, ⁽⁶⁾ सफ़ेद कोह, कोहे दमाम, हिंदू कन्न और कोह सुलैमान पर छोटी छोटी कई बस्तियां आबाद हैं कि जिन पर इस जदीद दौर का साया तक नहीं पड़ा और वहां के बासी अब भी क़दीम-रिवायतों ⁽⁷⁾ और पारीना (8) रस्मों के सहारे अपनी जिन्दगी गुजारा करते हैं।

वह किसी दोस्त मुहम्मद खां, हुमायूं, अहमद शाह, आशिक खां, शाह महमूद फतेह खां, कामरान, शेर अली और याकूब खां का जिक्र करता कि जो बुलंदो बाला पहाड़ियों पर जड़ी बूटियों की तलाश में जाया करते थे, या पहाड़ों पर से 1. गर्मी 2. झरने 3. कभी कभी 4. अच्छे रंग 5. प्रशंसा 6. सुनसान इलाक़ा 7. पुराने रिवाज 8. प्राचीन

کاشتکاری کی صعوبتیں، مردول کو راتوں ہل وفنانے کے پراسرار واقعات، کاروال کے گزرنے کا سحر انگیز بیان وہ یول کرتا گویا ہر منظمراس کی آنکھول بیل تصویر بن چکاہو۔ وہ وہال کے بازارول، وستکارول اور عاشقول کا بھی فوکر کرتا۔

جھے تو روزنامی لکھنا چاہے تھا۔ تب کہیں جاکر میں اس قابل ہوتا کہ اس یادداشت کے سہارے آپ کو وہ تمام واقعات تفصیل سے سنا تا۔ اور یہ بھی درست نہیں ہے کہ وہ باتمیں میرے ذہن سے محو ہوچی ہوں۔ پہنہ نہیں، کب کوئی لحد کی واقعے کو ازسر نو یاد کرادے اور میں رحمت ہی کی تڑپ اور گئن سے ان باتوں کو آپ کے گوش گزار کرسکوں۔ ''خان، یہ کتاب تم اپنے ساتھ کیوں نہیں لے جاتے،''آں؟ نہیں صاحب اے لے جاکر کیا کروں گا؟ اب تو میں خود ہی وہاں چنچے دالا ہوں۔ ای فضا میں سانس لوں گا۔ لے جاکر کیا کروں گا۔ انہی پہاڑوں میں گھوموں گا۔ وہی نغے سنوں گا۔ نہیں، جھے اس کتاب کی ضرورت نہیں۔ ویسے صاحب! میرے لیے یہ اتنی مقدس ہے کہ جتنا مقدس ہے میرے لیے میرے ایک میرے ایے میرے ایک میں میرے ایک میرے ایک میں استیاط سے رکھیں نہ جانے کب یہ کس سے کہ میرے ایک میرے ایک کام

رحمت نے اے آئھوں سے لگایا ادر کری سے اٹھ کھڑا ہوا۔ بڑے احرّام سے اس نے وہ کتاب میرے دل میں خیال آیا کہ وہ کتاب میرے کھلے ہوئے ہاتھوں میں رکھ دی۔ ای لمح میرے دل میں خیال آیا کہ اب میں اس کی نئی جلد بنواؤں کا اور اسے جزدان میں لیپٹ بک شیلف میں رکھوں گا۔ مجھے کیا چھ تھا کہ یہ کتاب رحمت کے ان خواہوں کا مسکن ہے کہ جن کی تحمیل کی خاطر آج وہ اسے وطن جارہا ہے۔

ہم ایک دوبرے سے بغل گیر ہوئے۔ اس نے آئکھیں پونچھیں اور پھر مکان کی دہلیز سے باہر نکل آیا۔ میں بھی اس کے بیچھے ہولیا۔ کچھے فاصلے تک اس کے ساتھ ساتھ چاتا رہا۔ پھر رک مما۔

آخر جدائی کے لمحوں کو میں کب تک ٹال سکتا تھا۔

خان نے موکر ہاتھ بلایا اور تیزی سے آ کے برے کیا۔ تعلقات کے ریثی بندھنوں

नमक हासिल करते और फिर गाँव में आकर उसे तबर्रक े के तौर पर तक्सीम कर दिया करते थे। उन्हीं से मंसूब काबुली वाला मुझे वह वाक्रए भी सुनाता कि किस तरह अहमद शाह ने एक हमलाआवरशेर को अपने लठ की वाहिद⁽¹⁾ ज़र्ब⁽²⁾ से अधमुआ कर दिया था और किसी मौक़े पर शेर अली ने एक कोड़ियाले नाग को अपनी मुठ्ठियों में पकड़ कर दो टुकड़ों में तक्सीम कर दिया था।

काश्तकारी⁽³⁾ की सकबतें,⁽⁴⁾ मुरदों को रातों में दफ़नाने के पुरअसरार⁽⁵⁾ वाक़ेआत, कारवां के गुजरने का सहर अंगेज बयान वह यूं करता गोया हर मंजर उसकी आंखों में तस्वीर बन चुका हो, वह वहां के बाजारों, दस्तकारियों और आशिक़ों का भी जिक्र करता।

मुझे तो रोजनामचा लिखना चाहिये था। तब कहीं जाकर मैं इस क़ाबिल होता कि इस याददाश्त के सहारे आप को वह तमाम वाक़ेआत तफ़सील से सुनाता। और यह भी दुरूस्त नहीं है कि वह बातें मेरे जेहन से मह्व हो चुकी हों। पता नहीं, कब कोई लम्हा किसी वाक़ेआ को अज सरे नौ याद करा दे और मैं रहमत ही की तड़प और लगन से इन बातों को आप के गोशगुजार⁽⁶⁾ कर सकूं।

"ख़ान, यह किताब तुम अपने साथ क्यों नहीं ले जाते," आं ? नहीं साहब इसे ले जाकर क्या करूंगा ? अब तो मैं ख़ुद ही वहां पहुंचने वाला हूं। उसी फ़िजा में सांस लूंगा, अपने लोगों में रहूंगा, उन्हीं पहाड़ों में घूमूंगा, वही नग्में सुनूंगा, नहीं, मुझे इस किताब की जरूरत नहीं, वैसे साहब ! मेरे लिये यह इतनी ही मुक़द्दस⁽⁷⁾ है कि जितना मुक़द्दस है मेरे लिये क़ुरआन और यह मेरे लिए इतनी ही मुतबर्रक के जितनी मुतबर्रक है मेरे लिए सीरतुन्नबी। इसे आप अपने पास एहितयात से ग्खें। न जाने कब यह किसी के काम आ जाए।

रहमत ने उसे आँखों से लगाया और कुर्सी से उठ खड़ा हुआ । बड़े एहतेराम से उस ने वह किताब मेरे फैले हुए हाथों में रख दी। उसी लम्हे मेरे दिल में ख़्याल आया कि अब में इसकी नई जिल्द बनवाऊंगा और उसे जुज़दान (9) में लपेट कर बुक शेल्फ़ में रखूंगा। मुझे क्या पता था कि यह किताब रहमत के ख़्वाबों का मसकन (10) है कि जिन की तक्मील (11) की ख़ातिर वह अपने वतन जा रहा है।

^{1.} एक 2. चोट 3. खेती 4. मुश्किलें 5. रहस्यमय 6. सुनाना 7. पवित्र 8. मुबारक 9. **क़ुरआन क्य** कवर 10. निवास 11. पूरा होना

ے اپنے آپ کو رہائی دلانے میں اسے دشواری ہورہی تھی۔

آخری بار جب میں نے اسے خوب غور سے دیکھا تو مجھے اچا تک محسوس ہوا کہ عمر اس کی چیٹھ پر اپنا بھاری بوجھ ڈال چک ہے!

میرے سینے میں درد کا لا وا اہل پڑا۔ ہیں برس پہلے بدلمبا تر نگا پٹھان میری بچی کو گور میں اٹھائے ہوئے کہ کو مشت ی کور میں اٹھائے ہوئے جب میرے گھر میں داخل ہوا تھا تو مجھے اے دیکھ کر وحشت ی ہوئی تھی ادر مجھے اپنی بکی کا وجود خطرے میں نظر آیا تھا۔

ليكن آج....!

وہ موکی پرندے کی طرح رخصت ہور ہاتھا۔ اینے دلیں کو، کہ جہاں فرحت بھی تھی اور جاہت بھی دلنوازی بھی تھی اور راحت بھی اور جہاں کا موسم خوشکوار تھا۔

کائل کے بازار میں جب بس جاکرری تو کوئی شورنہیں اٹھا! کوئی کی کو لیے نہیں لیکا! کس نے کسی کونہیں بکارا! نہ قہوہ بیچنے والے کی آواز آئی! نہ کسی چائے والے کی بکار سائی دی! کوئی آواز تھی تو صرف.....

سر كون ير دهمكت بونون كي!!

كالى والابس كى كمركى سے سرتكائے سور ما تھا۔

"اے!" كى نے اسے شہوكا ديا۔

رحت کراہ اٹھا۔ ایک فوتی رائفل کے دیتے سے اسے ددیارہ ٹھوکا دیئے جارہاتھا۔ رحت نے دونوں ہاتھ کے اشارے سے اسے روکا۔

"ياسيورث" فوتى في تحكمانه ليح من كها-

کا بلی والے نے اپ جمولے سے پاسپورٹ نکال کراس کے حوالے کردیا۔ "مندوستان سے آئے ہو؟" سوال پھتو میں کیا گیا۔

"بال"

فوی کے رویے نے اسے دکھی کردیا تھا۔ یہ کیا، میرے ساتھ الیا بھیاندسلوک! "میرے ساتھ آؤ۔" یہ کمہ کرفوتی بس جس سے تیزی سے اثر پڑا۔

"میرا سامان" رحت نے بس کے کیریئر پر رکھے اپنے سامان کی طرف اشارہ کیا۔ اس فوتی نے اینے ساتھی سے کسی غیرزبان میں بات کی۔ دوسرے نے اثبات میں

हम एक दूसरे से बग़ल गीर हुए। उस ने आँखें पोंछी और फिर मकान की दहलीज से बाहर निकल आया। मैं भी इस के पीछे हो लिया। कुछ फ़ासले तक इस के साथ साथ चलता रहा फिर रुक गया।

आख़िर जुदाई के लम्हों को मैं कब तक यल सकता था।

ख़ान ने मुड़ कर हाथ हिलाया और तेजी से आगे बढ़ गया। तअल्लुकत के रेशमी बन्धनों से अपने आप को रिहाई दिलाने में उसे दुश्वारी हो रही थी। आख़िरी बार जब मैं ने उसे ख़ूब ग़ौर से देखा तो मुझे अचानक महसूस हुआ कि उम्र इस की पीठ पर भारी बोझ डाल चुकी है!

मेरे सीने में दर्द का लावा उबल पड़ा। बीस बरस पहले यह लम्बा तड़ंगा पठान मेरी बच्ची को गोद में उठाये हुए जब मेरे घर में दाख़िल हुआ था तो मुझे उसे देख कर वहशत सी हुई थी और मुझे अपनी बच्ची का वजूद ख़तरे में नजर आया था

लेकिन आज.....!

वह मौसमी परिन्दे की तरह रुख़्सत हो रहा था। अपने देश को कि जहां फ़रहत भी थी और चाहत भी, दिलनवाजी भी थी और राहत भी और जहां का मौसम खुशगवार था

काबुल के बाजार में जब रहमत की बस जा कर रुकी तो कोई शोर नहीं उठा! कोई किसी को लेने नहीं लपका! किसी ने किसी को नहीं पुकारा! न क़हवा बेचने वाले की आवाज! न किसी चाये वाले की पुकार सुनाई दी! कोई आवाज थी तो सिर्फ.

सहकों पर धमकते बूटों की!!

काबुली वाला बस की खिड़की से सर टिकाये सो रहा था।

''ऐ!'' किसी ने उसे छोका दिया।

रहमत कराह कर उठा। एक फ्रौजी राईफल के दस्ते से उसे दुबारा छोका देने जा रहा था। रहमत ने दोनो हाथों के इशारे से उसे रोका।

''पासपोर्ट'' फ़ौजी ने तहक्कुमाना⁽¹⁾ लहजे में कहा।

काबुली वाले ने अपने झोले में से पासपोर्ट निकाल कर उसके हवाले कर दिया।

^{1.} हुक्म जताने वाला

مرون بلائی _ کالمی والا اب تک مجونیس پار با تھا کہ بیسب کیا مور ہا ہے۔

ارے بھائی جھے اپنا سامان تو لینے دو۔تم اپنی بی ہائے جارہ ہو۔ میں کوئی چور اچھا نہیں موں اور نہ بی اسمگار مون۔''

" بكواس بندكرو جوكها جاربا ہے اس برعمل كرو-"

یہ کہہ کر اس فوجی نے راکفل کے دستے سے اس کے شانوں پر دوسرا طہوکا دیا۔ آہ خان اپنا شانہ تھام کر کراہا۔ اس کے جی میں آیا کہ راکفل چھین کے اور محما کر ایسا ہاتھ مارے اس کے ماتھے پر کہ کھویڑی ریزہ ریزہ ہوکر بکھر جائے۔

لیکن اس کے کانوں میں بوٹوں کی دھک کے ساتھ ساتھ اجنبی زبان میں دیے جارے فوجی احکامات بھی گونج رہے تھے۔

اب وہ فوجی کے پیچھے چلا جارہا تھا اور مینٹل نوٹس لینے لگا تھا۔ سڑک اب پختہ ہوچی ہے۔ لیپ پوسٹ قائم کردیے گئے ہیں۔ قلمی پوسٹ، اشتہارات اس نے گائی دی۔ دنیا میں سب سے زیادہ پڑھ آگر اسے تھی تو ان اشتہارات سے تھی۔ جمور نے، گمراہ کن اشتہارات، جو اپنے مال کا وصف بڑھا چڑھا کر پیش کرتے ہیں۔ اس میں وہ وہ خومیاں میان کرتے ہیں۔ اس میں وجود بی ٹیس ہوتا۔ سالا کوئی تو ہوکہ جو اپنے مال کا تھوڑا ساکھوٹ بھی تادے۔

پولیس اشیشن ہال وہی ہے۔ ممارت کو لیپ بوت کر، نئی روح، پھونک دی گئی ہے۔ اس میں! پھر کی بنی ہونک پہنے میں ہے۔ اس میں! پھر کی بنی ہوئی پہنے ممارت کمی چوڑی! لیکن مید کیا؟ بیس پھیس برس پہلے میہ اتنی وسیح تو ند تھی۔ اور اب!

كيا مير ب ديس مين اشخ جرم مونے لكے بين؟

دہ کی راہ دار ہوں سے ہوتے ہوئے کی کمروں کے سامنے سے گزرتے ، عمارت کے بالکل آخری جصے میں پہنچ گئے جہاں صرف ایک کمرہ تھا اور دوباوردی فوجی پہرے پر تعیات تھے۔ تعینات تھے۔

خان کوان کی تحویل میں دے کر بیفوتی دستک دے کراس کرے کے اندر چلا کیا۔ کچھ دیر بعد واپس ہوا۔ اشارے ہے اس نے خان کو اندر آنے کو کہا۔ سب سے پہلی بات

''हिन्दुस्तान से आए हो ?'' सवाल पश्तु में किया गया। ''हां''

फ़्रौजी के रवैये ने उसे दुखी कर दिया था, यह क्या, मेरे साथ ऐसा बहीमाना⁽¹⁾ सुलूक!

''मेरे साथ आओ'' यह कह कर फ़ौजी बस में से तेज़ी से उतर पड़ा।

''मेरा सामान'' रहमत ने बस के कैरियर पर रखे अपने सामान की तरफ़ इशारा किया।

उस फ़्रोजी ने अपने साथी से किसी ग़ैर जुबान में बात की, दूसरे ने असबात में गर्दन हिलाई।

काबुली वाला अब तक समझ नहीं पा रहा था कि यह सब क्या हो रहा है। "अरे भाई मुझे अपना सामान तो लेने दो। तुम अपनी ही हांकते जा रहे हो।

''बकवास बंद करो.····· जो कहा जा रहा है उस पर अमल करो''

मैं कोई चोर उचक्का नहीं हूं और ना ही स्मगलर हूं।"

यह कह कर उस फ्रीजी ने राइफ़ल के दस्ते से उस के शाने पर दूसरा ठोका दिया। आह..... खान अपना शाना थाम कर कराहा। उस के जी में आया कि राइफ़ल छीन ले और घुमाकर ऐसा हाथ मारे उस के माथे पर कि खोपड़ी रेजा रेजा होकर बिखर जाए।

लेकिन उस के कानों में बूटों की धमक के साथ साथ अजनबी जबान में दिए जा रहे फ़्रीजी अहकामात भी गूंज रहे थे।

अब वह फ़्रोंजी के पीछे पीछे चला जा रहा था और मेंटल नोटिस लेने लगा था। सड़क अब पुख़्ता हो चुकी है। लैम्प पोस्ट क़ायम कर दिए गए हैं फ़िल्मी पोस्टा, इश्तेहारात..... उस ने गाली दी। दुनिया में सब से ज्यादा चिढ़ अगर उसे थी तो इन इश्तेहारात से थी। झूठे, गुमराहकुन इश्तेहारात, जो अपने माल का वस्फ़⁽²⁾ बढ़ा चढ़ाकर पेश करते हैं उस में वह वह ख़ूबियां बयान करते हैं कि जिन का सिरे से उस में वजूद ही नहीं होता। साला कोई तो हो कि जो अपने माल का थोड़ा सा खोट भी बता दे।

पुलिस स्टेशन हां वही है। इमारत को लीप पोत कर, नई रूह, फूंक दी गई है उस में। पत्थर की बनी हुई पुख़्ता इमारत लंबी चौड़ी! लेकिन यह क्या?

1. बेरहम 2. गुण

جو خان نے نوٹ کی وہ یہ تھی کہ کمرہ بہت بڑا تھا۔ اس کا فرنیچر اعلیٰ اور قیمی تھا۔ دوسری بات جو اس نے نوٹ کی دہ میتی کہ کھڑ کیوں پر دبیز پردے تھیلے ہوئے تھے۔ باہر والے کو اندر کی کسی بات کا ندتو علم ہوسکی تھا، نداحساس۔ تیسری بات جو اس نے نوٹ کی وہ یہ تھی کہ جو تھی میبل کے چیھے اونچی کری پر جیٹھا ہوا تھا وہ اس کے ملک کا باشندہ نہیں تھا۔

" بیٹھو۔" اس نے خالی کری کی طرف اشار ہ کرتے ہوئے کہا۔

ذرای جوک محسوں کرتے ہوئے خان کری پر بیٹے گیا۔ وہ سوچنے لگا، بیٹنف مجھ سے کیا ہو چھے گا؟ ان سوالات کے پیچے اس کا کیا مقعد ہوگا؟ آخر بیٹنف کون ہے؟ غیر مکلی ہے تو پشتو کیے جانتا ہے؟ بیسوج کراہے الجھن کی ہونے گئی۔

رحت اس سے پہلے بھی کئی موقعوں پر الی بی الجعنوں کا شکار ہوا تھا۔ یہ الجعنیں ہی تھیں کہ جو اسے ٹینس رکھتی تھیں اور اس کے اعصاب پر بوجھ ڈالتی تھیں۔

" کتنے عرصے بعد لوٹے ہو؟" اس نے رحت کے پاسپورٹ کو اللتے پلٹتے ہوئے مجھا۔

''اکیس برس بعد' خان اسکلے سوال کے لیے اپنے آپ کو تیار کرنے لگا۔ ''اکیس برس بعد؟ استنے برسوں تک کیا کرتے رہے؟'' سوال میں ہمدردی کا پہلو نمایاں تھا۔

"سوکھامیوہ" خان کو اپنی خلطی کا احساس ہوا۔ سوکھا میدہ بیچنے کی غرض ہے وہ یہاں سے ہند ستان گیا تھا۔ پھر جو حادثہ پیش آیا؟ جس کے بیتیج میں اسے عمر قید کی مزافی۔ کیا میں اس کاذکرکردوں؟ تو پھر میرا شارخو نیوں اور قاتلوں میں نہ کرنے گیے؟

"باں باں کہو رک کیوں گئے؟" اس کے لیج سے شفقت اب بھی فیک ری تھی۔ خان نے جست باندھی اور بغیر کسی ہی بہا ہث کے سارا واقعہ سنا دیا۔ میوے کی فردنت پھر خریدار کامیوے کی خریداری سے کمر جانا بعد جمت کے طیش میں آکر خان کا اسے چھرا مارد بنا

''اور پھر جھے ہیں سال کی سزا ہوگئ۔'' یہ کہتے کہتے خان کی آواز بلند ہوگئ۔ در "

बीस पच्चीस बरस पहले यह इतनी वसी तो न थी। और अब!

क्या मेरे देस में इतने जुर्म होने लगे हैं?

वह कई राह दारियों से होते हुए कई कमरों के सामने से गुजरते ,इमारत के बिल्कुल आख़िरी हिस्से में पहुंच गए जहां सिर्फ़ एक कमरा था और दो बावर्दी फ़ौजी पहरे पर तैनात थे।

ख़ान को उन की तहवील में देकर यह फ़ौजी दस्तक देकर उस कमरे के अन्दर चला गया। कुछ देर बाद वापस हुआ। इशारे से उस ने ख़ान को अन्दर आने को कहा। सब से पहली बात जो ख़ान ने नोट की वह यह थी कि कमरा बहुत बड़ा था। उस का फर्नीचर आला और क़ीमती था। दूसरी बात जो उस ने नोट की वह यह थी कि खिड़िकयों पर दबीज (1) पर्दे फैले हुए थे। बाहर वाले को अन्दर की किसी बात का न तो इल्म हो सकता था, न एहसास। तीसरी बात जो उस ने नोट की वह यह थी कि जो शख़्स टेबुल के पीछे ऊंची कुर्सी पर बैटा हुआ था वह उस के मुल्क का बाशिन्दा नहीं था।

''बैंखे'' उस ने ख़ाली कुर्सी की तरफ़ इशारा करते हुए कहा।

जरा सी झिझक महसूस करते हुए खान कुर्सी पर बैठ गया। वह सोचने लगा, यह शख़्स मुझ से क्या पूछेगा? उन सवालात के पीछे उस का क्या मक़सद होगा? आख़िर यह शख़्स कौन है? ग़ैर मुल्की है तो पश्तू कैसे जानता है? यह सोच कर उसे उलझन सी होने लगी।

रहमत उस से पहले भी कई मौक़ों पर ऐसी ही उलझनों का शिकार हुआ था। यह उलझनें ही थीं कि जो उसे टेन्स में रखती थीं। और उस के आसाब⁽²⁾ पर बोझ डालती थीं।

''कितने अर्से बाद लौटे हो ?'' उस ने रहमत के पासपोर्ट को उलटते पलटते हुए पूछा।

''इक्कीस बरस बाद'' ख़ान अगले सवाल के लिए अपने आप को तैयार करने लगा।

''इक्कीस बरस बाद ? इतने बरसों तक क्या करते रहे ?'' सवाल में हमदर्दी का पहलू नुमायां था।

''सूखा मेवा······'' ख़ान को अपनी ग़लती का एहसास हुआ। सूखा 1. मोटे 2. पुट्जें

''اچھا یہ بتاؤتم نے اس دوران میں اپنے گھر کوئی خط لکھا؟'' ''جما''

"بال" اس نے مامی محری۔

دوست رمضان خان کو، اپنے محالی کو، اپنی بٹی کو، وہ یاد کرنے لگا.....اور اپنے

"دلین مارے دریافت کرنے پر انحول نے بتایا کہ انھیں محمارا کوئی خطانیں طا۔"

" فبيل طاربيكي بوسكا ب؟"

"ان کی جانب سے شمیں کوئی عط ملا؟"

« دنبیں۔' خان بریشان ہو کیا۔

"اورسنو، تممارا دوست رمضان اب يهال پرئيس ہے۔ وہ كراچى جاچكا ہے۔ تقريباً سات برس موئے۔ وہال وہ فيكسى جلاتا ہے۔"

" فیسی جلاتا ہے؟ کرا چی ش ہے؟" خان کو جیسے اس کی بات کا یقین فیس آیا۔

اس کے وقی افق پر رمضان کی ہوئی وحدلی تصویر امجر آئی۔ رمضان اب بہال نہیں ہے۔ کراچی میں فیکسی جلاتا ہے۔ استعین شہر میں، جہال لوگ چمرا لے کرسینوں پر چڑھ بیٹے ہیں اور بات بات میں مال بہنوں کو یاد کرتے ہیں۔ اور وقت بے وقت علاقائی تعصب، رنگ فسل کا فرق اور فرقوں کے اعلی اور اوئی ہونے کا ذکر کرتے ہیں رمضان وہاں کیے تی یاتا ہوگا؟

"لیکن صاحب آپ کو بی ساری با تی کیے معلوم ہوئیں؟ اور بی فلطی نہیں کررہا ہوں تو آپ غیر مکی ہیں؟"

وہ سکرایا اور میل پر رکمی ہوئی فائل خان کے سامنے اچھال دی۔

ويعتمعارى تاريخ ب

"ميري تاريخ؟"

"بال تمعاری سٹری، اس میں سب کچھ درج ہےتمعارے پچاچھ یار خان مظفرآیاد کے موضع کردھی سیدال سے شیر کائل میں کب وارد ہوئے؟

मेवा बेचने की गर्ज से वह यहां से हिन्दुस्तान गया था। फिर जो हादसा पेश आया? जिस के नतीजे में उसे उम्र क़ैंद की सजा मिली। क्या मैं उस का जिक्र कर दूं तो फिर यह मेरा शुमार ख़ूनियों और क़ातिलों में न करने लगे?

''हां हां कहो----- रुक क्यों गए?'' उस के लहजा से शफ़क़त⁽¹⁾ अब भी टपक रही थी।

ख़ान ने हिम्मत बांधी और बग़ैर किसी हिचकिचाहट के सारा वाक़ेआ सुना दिया। मेवे की फ़रोख़्त⁽²⁾...... फिर ख़रीदार का मेवे की ख़रीदारी से मुकर जाना..... बाद हुज्जत के तैश में आकर खान का उसे छुरा मार देना......

"और फिर मुझे बीस साल की सजा होगई" यह कहते कहते ख़ान की आवाज बुलन्द होगई।

''ओह……''

''अच्छा यह बताओ तुम ने इस दौरान में अपने घर कोई खत लिखा ?''

''खत''

''हां'' उस ने हामी भरी।

''कई लिखे, अपनी बीवी को, अपने भाई को, अपनी बेटी को।'' वह याद करने लगा------- ''और अपने दोस्त रमजान खान को।''

"लेकिन हमारे दर्याप्रत करने पर उन्होंने बताया कि उन्हें तुम्हारा कोई ख़त नहीं मिला।"

''नहीं मिला, यह कैसे हो सकता है?''

''उन की जानिब से तुम्हें कोई खत मिला?''

''नहीं'' खान परेशान हो गया।

''और सुनो, तुम्हारा दोस्त रमजान अब यहां पर नहीं है। वह कराची जा चुका है। तक़रीबन सात बरस हुए। वहां वह टैक्सी चलाता है।''

उस के जहनीउमुक़ पर रमजान की बड़ी धुंधली तस्वीर उभर आई। रमजान यहां नहीं है, कराची में टैक्सी चलाता है। उस संगीन शहर में जहां लोग छुरा लेकर सीनों पर चढ़ बैठते हैं और बात बात में मां बहनों को याद करते हैं। और वक्त बे वक्त इलाक़ाई-तअस्सुब, (3) रंगो नस्ल का फ़र्क़ और फ़िरक़ों (4) के आला और अदना (5) होने का जिक्र करते हैं रमजान वहां कैसे जी पाता 1, प्यार 2, बेचना 3, क्षेत्रवाद 4, गिरोहों 5 क्षेत्रय

ان کی سر پرسی میں تمحارا میاہ دلاورخان کی بٹی نینب سے کب ہوا؟ دوسری جنگ عظیم کے دوران تمحارے چیا کا مورد فی کاروبار کیوں کر شپ ہوا؟اور پھرتم اپنی قسمت آزمانے ہندستان کب محے؟

یہاں تعمارے کون کون سے رشتے دار ہیں اور کن کن کا انتقال ہو چکا ہے؟" "انتقال؟" خان نے ہاتھ بردھا کر اسے رکنے کا اشارہ کیا۔

"انقال؟ كس كا انقال موا بى؟ تاية يرى بوى، يرى بني، يرا بعالى فريت يولى، يرا بعالى فريت يولى، عرا بعالى

"السسس فيرت سے بيں۔ جبتم النے كر جاؤ كو تسميں سب بد جل جائے گا۔"

مجمد دير بعدوه بولا:

"اجهابية بناؤ كر تحسيل يهال كس كام س بعيجا كيا هي؟"

"اکام ہے؟"

"بالليانت على خان في-"

دوہیں جناب میں کی کام سے نہیں آیا ہوں یہاں، اور لیانت علی خان سے میرے مراسم بڑے پرانے ہیں۔ ہم دونوں نے اکھے بی کابل چھوڑا تھا۔ اب وہ دتی میں کی جگہ طازم ہے۔ وہ جھ سے کیا کام لے گا۔ میں تو اپنی بیدی، اپنی پکی اور اپنے بھائیوں سے طفے آیا ہوں۔ ان کے ساتھ اپنی زندگی کے بیچ کچھے دن گزارنے آیا ہوں۔ آپ کو ساید میرے متعلق غلوانی ہوئی ہے جناب! میں بہت معمولی آدی ہوں'

رحمت نے اپنے تیک ہے باتیں تو بدی زعرہ دلی اور برے خوش کوار انداز میں کہیں الیکن دلی طور پر دہ رنجیدہ ہو چکا تھا۔ اسے فکر ہونے گئی تھی کہ کسی انجانی غلطی کی سزا ندل جائے اسے۔ بہ ظاہر مثین اور سجیدہ نظر آنے والے اس چوڑے چکا مخص سے اب وہ خوف محسوں کرنے لگا تھا۔

"ا مجاب بتاؤ كرتم كمى ال ك دفتر بحى محك مو؟" خان ك ليے ال ك سوالات نا قابل برداشت موت جارب تھـ

होगा?

''लेकिन साहब आप को यह सारी बातें कैसे मालूम हुईं ? और मैं ग़लती नहीं कर रहा हूं तो आप गैर मुल्की हैं ?''

वह मुस्कुराया और टेबुल पर रखी हुई फाइल ख़ान के सामने उछाल दी। ''यह तुम्हारी तारीख है''

"मेरी"

''हां तुम्हारी हिस्ट्री, इस में सब कुछ दर्ज है…… तुम्हारे चचा मोहम्मद यार ख़ान मुजफ़्फ़रबाद के मौजा गढ़ी सैय्यदां से शहर काबुल में कब वारिद⁽¹⁾ हुए ?

उन की सरपरस्ती में तुम्हारा ब्याह दिलावर खां की बेटी जैनब से कब हुआ ?

दूसरी जंगे अज़ीम के दौरान तुम्हारे चचा का मौरूसी⁽²⁾ कारोबार क्यों कर ठप हुआ ?

और फिर तुम अपनी क़िस्मत आजमाने हिन्दुस्तान कब गए?

यहां तुम्हारे कौन कौन से रिश्ते दार हैं और किन किन का इन्तक़ाल हो चुका है?

- ''इन्तक़ाल''? खां ने हाथ बढ़ा कर उसे रुकने का इशारा किया।
- ''इन्तक़ाल ? किसका इन्तक़ाल हुआ है ? बताईये …… मेरी बीवी, मेरी बेटी, मेरा भाई ख़ैरियत से तो हैं ना ?''
- ''हां ····· सब ख़ैरियत से हैं, जब तुम अपने घर जाओगे तो तुम्हें सब पता चल जाएगा।

कुछ देर बाद वह बोला।

- ''अच्छा यह बताओ कि तुम्हें यहां किस काम से भेजा गया है ?''
- ''काम से ?''
- ''हां लियाकृत अली खां ने''
- ''नहीं जनाब मैं किसी काम से नहीं आया हूं यहां, और लियाक़त अली खां से मेरे मरासिम⁽³⁾ बड़े पुराने हैं, हम दोनों ने इकट्ठे ही काबुल छोड़ा था। अब वह दिल्ली में किसी जगह मुलाजिम है। वह मुझ से क्या काम लेगा। मैं तो अपनी बीवी, अपनी बच्ची और अपने भाईयों से मिलने आया हूं, उनके साथ 1. आये 2. बाप-दादा का 3. सम्बन्ध

اے محسوس ہورہا تھا کہ وہ بخار میں تپ رہا ہے اور کوئی لاؤڈ اسپیکر اس کے کا نول سے لگائے چخ رہا ہے۔

"بس جناب بس سجيحيد كل كے ليے بھى كچھ افغار كھيے اور اس وقت جھے اپنے گھر جانے ديجيد آپ كيوں مجھ برشك كررہے ہيں؟"

'' میں وہی رصت ہوں کہ جس کی زندگی کا ایک طویل حصہ اس سرز مین پر گزراہے۔ یہ میرا وطن اور میری امنگوں کا گہوارہ ہے۔''

یہ کر رحمت کری سے اٹھا۔ کری الٹ گئی۔ رحمت پر اب اتن ہیب طاری ہو چک تھی کہ اسے خیال بھی نہ آیا کہ وہ الٹی ہوئی کری کو سیدھا کردے۔ وہ لڑ کھڑاتے ہوئے قدموں سے کمرے سے باہر چلا آیا۔

آفیسر نے میبل کے داہنے کونے پر نصب بٹن د بایا۔

دوباوردی فوجی کمرے میں داخل ہوئے۔

"اس برنظر رکھواور کل ۱۰ بجے بہاں چر سیننے کی ہدایت دے دو۔"

وہ اپنی ایڑیاں بجا کر جسموں کی طرح بلنے اور لیے لیے ڈگ بجرتے ہوئے کرے سے ماہر نکل مجے۔

ان کے جاتے ہی کمرہ ایک وران مقبرے میں بدل گیا۔

رحت کو اپنا مکان تلاش کرنے میں وشواری ہورہی تھی۔ اس ہیں برس کے عرصے میں سب کچھ بدل چکا تھا۔ ماحول بھی اور منظر بھی۔ درخت اکھاڑ دیے گئے تھے۔ اور ان کی جگہ ٹیلی فون، ٹیلی گراف اور لیمپول کے بوسٹ کھڑے کر دیے گئے تھے۔ کچ کچ مکان ڈھا دیے گئے تھے۔ دور دور تک کوئی حصہ کھا نظر نہ آتا تھا۔ شانہ لگائے مکانوں کا ایک سلسلہ ساتھا۔

دوچار جگہوں پر بوچھتا بچھارتا آخر کار رحت اپنے مکان کے دروازے پر پہنچ گیا۔ اپنوں سے ملنے کی بے چینی کے سبب اسے سانس لینے میں دشواری ہونے گی۔ میں برس پہلے کے تمام واقعات اس کی نظر میں گھوشنے لگے۔ اسے وہ خط یاد آیا جو ہند ستان پہنچتے ہی اسے اپنے بھائی کی جانب سے ملاتھا۔

अपनी जिन्दगी के बचे खुचे दिन गुजारने आया हूं, आप को आप को शायद मेरे मृतअल्लिक ग़लत फ़हमी हुई है जनाव! मैं बहुत मामूली आदमी हूं'

रहमत ने अपने तई यह बातें तो बड़ी जिन्दा दिली और बड़े खुशगबार अंदाज में कहीं, लेकिन दिली तौर पर वह रंजीदा⁽¹⁾ हो चुका था, उसे फ़िक्र होने लगी थी कि किसी अंजानी ग़लती की सजा न मिल जाए उसे, बजाहिर मतीन⁽²⁾ और संजीदा नजर आने वाले उस चौड़े चकले शख़्स से अब वह ख़ौफ़ महसूस करने लगा था।

''अच्छा यह बताओं कि तुम कभी उसके दफ़्तर भी गए हो?'' ख़ान के लिए उसके सवालात नाक़ाबिले बरदाश्त होते जा रहे थे।

उसे महसूस हो रहा था कि वह बुख़ार में तप रहा है और कोई लाउडस्पीकर उसके कानों से लगाए चीख़ रहा है।

''बस जनाब बस कीजिये, कल के लिये भी कुछ उठा रखिये और इस वक्त मुझे अपने घर जाने दीजिये, आप क्यों मुझ पर शक कर रहे हैं?

''मैं वही रहमत हूं कि जिस की जिन्दगी का एक तवील हिस्सा इस सरजमीन पर गुजरा है

''यह मेरा वतन और मेरी उमंगों का गहवारा है''

यह कह कर रहमत कुर्सी से उठा, कुर्सी उलट गई, रहमत पर अब इतनी हैबत तारी हो चुकी थी कि उसे ख़्याल भी न आया कि वह उल्टी हुई कुर्सी को सीधा कर दे, वह लड़खड़ाते हुए क़दमों से बाहर चला आया।

आफ़्रिसर ने टेबुल के दाहिने कोने पर नस्ब बटन दबाया, दो बावर्दी फ़्रौजी कमरे में दाख़िल हुए।

"इस पर नजर रखो, और कल दस बजे फिर यहां पहुंचने की हिदायत दे दो।"

वह अपनी एड़ियां बजा कर मुजस्समों⁽³⁾ की तरह पलटे और लम्बे लम्बे डग भरते हुए कमरे से बाहर निकल गए।

उनके जाते ही कमरा एक वीरान मक़बरे में बदल गया।

रहमत को अपना मकान तलाश करने में दुश्वारी हो रही थी। इस बीस बरस के अरसे में सब कुछ बदल चुका था। माहौल भी और मंजर भी। दरख़्त उखाड़ 1. दुखी 2. गंभीर 3.मूर्तियाँ

אונו ציגי!

الله تعالى كرم تحمارے بال جائدى لاكى پدا ہوئى ہے۔ ہمانى خربت سے ہى اور محمارے بال جائدى لاكى پدا ہوئى ہے۔ ہمانى خربت سے ہى اور محمارے سلط میں بے حد فكر مند رہتی ہیں۔ تم نے اپنے ہونے والے لاكے يا لاكى كے جو دو جار نام ہمیں متائے تھے، ہم نے انہى میں سے ایک نام تحمارى بينى كا منتخب كياہے۔ ارجند بانو، اپنا احوال بر تفسيل ہمیں كھ بھيجنا

این جذبات برقاب پاتے ہوئے رصت نے دروازے سے لگتی ہوئی زنجیر کھنگھٹادی۔ ''کون؟''

کوئی زنانہ آواز اعدے آئی۔

"من ہول"

رصت سوچنے لگا یہ میری بیٹی کی آواز تو نہیں؟ اپنے گھر میں کوئی اجنبی آواز کیے گو نے اور کیے گوئے اور کیے گوئے اس کی آواز کو میں کیوں کر پہچانوں؟ لیکن رصت کے کان میں جیمے کوئی سرگوشیوں میں کہدرہا تھا: یہ تیری بیٹی کی آواز ہے۔ ارجمند بانو کی آواز۔

د میںمیں کون؟''

رحت کومسوس موا کہ اب آواز دروازے کے بہت قریب سے آئی ہے۔ بے افتیارانہ طور پر رحمت کے منہ سے لکا۔

"من مول ميري بني، من مول: تيرا باب رحت"

مویا آسان شق موگیا۔ رحت کو ایک مسرت آمیز پکار سنائی دی۔''اب.....با۔'' مال او طور بر روائی کے ساز سید ہو ماگئی

والہانہ طور پر وہ اس کے سینے سے چے گئے۔

"ابا کتنی ویر کردی تم نے آنے علی!کتنی ویر کردی تم نے آنے علی!کتنی ویر کردی تم نے آنے علی!کتنی ویر کردی تم نے آنے علی !!"

رمت اس كرر باتد بهرے جاتا تھا اور آنسواس كى داڑھى يى جذب ہوتے على جاتا تھا ور آنسواس كى داڑھى يى جذب ہوتے

کے بعد دیگرے اس کی ملاقات اپنے رشتہ داروں اور دوستوں سے موئی۔ ہیں

दिये गये थे और उनकी जगह टेलीफोन, टेलीग्राफ और लैम्पों के पोस्ट खड़े कर दिये गये थे। कच्चे पक्के मकान ढा दिये गये और उनकी जगह कंक्रीट के मकअब तामीर कर दिये गये थे। दूर दूर तक कोई हिस्सा खुला नज़र न आता था। शाने से शाना लगाए मकानों का एक सिलसिला सा था।

दो चार जगहों पर पूछता पछारता आख़िरकार रहमत अपने मकान के दरवाजे पर पहुंच गया। अपनों से मिलने की बेचैनी के सबब उससे सांस लेने में दुश्वारी होने लगी। बीस बाईस बरस पहले के तमाम वाक़ेआत उसकी नज़रों में घूमने लगे। उसे वह ख़त याद आया जो हिंदुस्तान पहुंचते ही उसे अपने भाई की जानिब से मिला था:

बिरादरे अजीज(1)!

अल्लाह ताला के करम से तुम्हारे हां चांद सी लड़की पैदा हुई है, भाभी ख़ैरियत से हैं और तुम्हारे सिलसिले में बेहद फ़िक्रमंद रहती हैं। तुमने अपने होने वाले लड़के यां लड़की के जो दो चार नाम हमें बताए थे हमने उन्हीं में से एक नाम तुम्हारी बेटो को मुन्तख़ब⁽²⁾ किया है। अरजुमंद बानो, अपना अहवाल ब-तफ़सील⁽³⁾ हमें लिख भेजना।

अपने जन्मात पर काबू पाते हुए रहमत ने दरवाजे से लटकती हुई जंजीर खटखटा दी।

''कौन?''

कोई जनाना आवाज अंदर से आई।

''मैं हूं''

रहमत सोचने लगा यह मेरी बेटी की आवाज तो नहीं ? अपने घर में कोई अजनबी आवाज कैसे गूंजे ? अब वह जवान हो चुकी होगी। जाहिर है उसकी आवाज को मैं क्यों कर पहचानूं ? लेकिन रहमत के कान में जैसे कोई सरगोशियों में कह रहा था। यह तेरी बेटी की आवाज है, अरजुमंद बानो की आवाज।

"मैं.... कौन ?"

रहमत को महसूस हुआ कि अब आवाज दरवाजे के बहुत क़रीब से आई है, बे-इक़्तेयाराना⁽⁴⁾ तौर पर रहमत के मुंह से निकला।

^{1.} प्रिय 2. चुना हुआ 3. हाल का बहुवचन हालात 4. सहसा

برس کے عرصے میں وہ اپنے بے شار عزیزوں کو کھوچکا تھا۔ کوئی ہمیشہ کے لیے اس جہاں سے کوچ کر مگیا تھا تو کس نے تلاش معاش میں اپنا وطن چھوڑ دیا تھا۔ کوئی لام پر تھا! تو کوئی قید میں!!

مغرب کی نماز کے بعد کھانا کھا یا گیا۔ برادری کے کم وبیش پیاس ساتھ آدمی جمع تھے۔ وہ تمام اس کی خیریت دریافت کرتے رہے اور اس کے وطن واپس ہونے پر اپنی مسرت ظاہر کرتے رہے۔ روٹیال اس کی بیٹی، بھائی اور پاس پڑوس کی عورتوں نے سینکیس۔آب گوشت زینب نے یکایا، مرنے شیر خان نے بھونے۔

ان کی باتوں سے رحمت نے اندازہ لگا یا کہ اب الی دعوتمی عنقا ہو چکی ہیں۔ بڑی مشکلوں سے چیزیں دستیاب ہوتی ہیں۔ راش پر اناج اور مٹی کا تیل ملتا ہے۔ شکر کی بڑی قلات ہے۔ دیے سروں میں اسے یہ بھی بتا دیا گیا کہ سیاسی فضا نا سازگار ہے۔ رات میں دروازے پر دستک دی جاتی ہے۔ پھر وہ شخص غائب ہو جاتا ہے یا اطلاع ملتی ہے کہ فلال فلال جگہ پر وہ قید کر دیا گیا ہے۔

آدهی رات کے قریب اس نے زینب کو چھوا۔

" كبيئا ال نے دهيرے سے كہا۔

" دشمس مجھ سے کوئی شکایت تو نہیں۔" رحت نے اس کے بالوں میں اپنی انگلیاں

نینب کے سامنے گویا اکیس برس کی تمام صعوبتیں اپنے بیار اور مدتوق چہرے سے ظاہر ہوئیں۔ اس نے ایک ایک کو گنا، ہر ایک کو پہچانا، لیکن رحمت کے ہاتھوں کو اپنے سینے پر تھام کر انھیں فراموش کردیا۔

"کیسی شکایت ؟اگر ہو بھی تو آپ ہے! کیسی باتیں کررہے ہیں آپ!" بوی دیر تک خاموثی چھائی ربی ان دونوں کو مسوس ہوتا رہا کہ اب وہ نہیں بلکہ ان کی رومیں ایک دوسرے سے مخاطب ہیں اور ان کے جسم ایک دوسرے کو اپنی خوشبوؤں، اپنے لمس، اپنے انداز اور اپنی تیش سے پہیان رہے ہیں۔

فجر کی نماز کے لیے جب رحت کو جگا یا حمیا تو اس نے دیکھا کہ ارجند بانو نے اس

"मैं हूं मेरी बेटी, मैं हूं: तेरा बाप रहमत"

गोया आसमान शक हो गया, रहमत को एक मर्सात-आमेज पुकार सुनाई दी। "अब …… बा" वालिहाना तौर पर वह उसके सीने से चिमट गई।

"अब्बा कितनी देर कर दी तुमने आने में! कितनी देर कर दी तुमने आने में!!" रहमत उसके सर पर हाथ फेरे जाता था और आंसू उसकी दाढ़ी में जज़्ब होते चले जाते, थे।

यकेबाद-दीगरे⁽²⁾ उसकी मुलाक़ात अपने रिश्तेदारों और दोस्तों से हुई। बीस बरस के अर्से में वह अपने बेशुमार अजीजों को खो चुका था, कोई हमेशा के लिये इस जहां से कूच कर गया था तो किसी ने तलाशे मआश में अपना वतन छोड़ दिया था। कोई लाम पर था, तो कोई क़ैद में।

मग़रिब की नमाज के बाद खाना खाया गया, बिरादरी के कमो बेश पचास साठ आदमी जमा थे, वह तमाम इसकी ख़ैरियत दरयाप्रत करते रहे। और उसके वतन वापस होने पर अपनी मसर्रत जाहिर करते रहे। रोटियां उसकी बेटी, भाभी और पास पड़ोस की औरतों ने सेकीं। आबे-गोश्त⁽³⁾ जैनब ने पकाया, मुर्गे शेर ख़ां ने भूने।

उनकी बातों से रहमत ने अंदाजा लगाया कि अब ऐसी दावतें अनका⁽⁴⁾ हो चुकी हैं। बड़ी मुश्किलों से चीजें दिस्तयाब⁽⁵⁾ होती हैं। राशन पर अनाज और मिट्टी का तेल मिलता है, शकर की बड़ी किल्लत⁽⁶⁾ है, दबे सुरों में उसे यह भी बताया गया कि सियासी फ्रिजा नासाजगार है। रात में दरवाजे पर दस्तक दी जाती है। फिर वह शख्स ग़ायब हो जाता है। या इत्तेला मिलती है कि फलां फलां जगह पर वह क़ैद कर दिया गया है।

आधी रात के क़रीब उसने जैनब को छुआ।

"कहिये" उसने धीरे से कहा।

''तुम्हें मुझ से कोई शिकायत तो नहीं'' रहमत ने उसके बालों में अपनी उंगलियां फेरीं।

जैनब के सामने गोया इक्कीस बरस की तमाम सऊबतें अपने बीमार और मदक्कूक⁽⁷⁾ चेहरे से जाहिर हुईं, उसने एक एक को गिना, हर एक को पहचाना,

- 1. प्रेम पूर्वक 2. एक के बाद दूसरा 3. गोश्त का सूप (Soop) 4. ग़ायब
- 5. हासिल होना 6. कमी 7. क्षय रोगी

کے لیے پانی گرم کررکھا ہے۔ نیا جوڑا کھوٹی پر لٹک رہا ہے۔ کھڑاویں عسل خانے کے باہر رکھی ہوئی جی اور آنگیٹھی پر رکھی کیتلی میں سے قبوہ کی خوشبو منتشر ہو رہی ہے۔ ناشتے کے بعد رحمت نے حقے کا کش لیا، ایک نظر زینب پر ڈالی جو قبوہ کا فخان ہاتھ میں تھا ہے نہ جانے کیا سوچ رہی تھی۔ پھرا پی بٹی کو اس نے دیکھا۔ وہ چٹائی کی تیلیوں میں اپنے ناخن بعضائے کچھ سوچ رہی تھی۔ رحمت کو یاد آیا کہ اس نے کلکتہ کے میوزیم میں نور جہاں کی تصویر دیکھی تھی اور اب اے محسوں ہور ہا تھا کہ وہ تصویر فریم سے نگل کر اس چہار دیواری میں چلی آئی ہے۔

وہ اپنے آپ کو دنیا کا بردا خوش قسمت آدمی سمجھ رہا تھا۔ وہ سوج رہا تھا کہ جیسے اس کا طویل سفر مکمل ہوگیا ہے۔ وہ تحضن راستوں، پہاڑیوں، دریاؤں اور واد بول کو عبور کرتا اپنی منزل پر پہنچ چکا ہے۔ اس نے بھر حقے کا کش لیا۔ خشہ اور اعلیٰ تمباکو کا خوشبو دار دھواں سارے میں پھیل گیا۔

رحت کی بلکیں سرور سے بوجھل ہوئیں اور پھر جھک مئیں۔

ای لمے دروازے بردستک ہوئی۔

ارجند نے پوچھا:

"کون؟"

باہرے آواز آئی:

''يوليس''

او گھٹا ہوا رحمت ہر بردا کر یوں ہوش میں آیا گویا ہراروں بھینوں نے اس کے گھر پر حملہ کر دیا ہو۔

آ دھے مھننے کے بعد وہ اس مین اور سنجیرہ افسر کے سامنے ای کری پر بوا مودب بیٹا تھا۔

" کیسے ہو خان؟"

"اچھا ہوں جناب" فان نے بھیکی مسراہٹ کے ساتھ کہا۔

'' یہ جوڑاتم پر بہت کچ رہا ہے، ہند ستان سے لائے ہو؟''

लेकिन रहमत के हाथों को अपने सीने पर थाम कर उन्हें फ़रामोश कर दिया। "कैसी शिकायत? अगर हो भी तो आप से ! कैमी बातें कर रहें है आप!"

बड़ी देर तक खामोशी छाई रही, उन दोनों को महसूस होता रहा कि अब वह नहीं बल्कि उन की रूहें एक दूसरे से मुख़ातिब हैं। और उनके जिस्म एक दूसरे को अपनी खुशबूओं, अपने लम्स, (1) अपने अंदाज और अपनी तिपश से पहचान रहे हैं।

फ़जर की नमाज के लिए जब रहमत को जगाया गया तो उसने देखा कि अरजुमंद बानो ने उसके लिये पानी गरम कर रखा है। नया जोड़ा खूंटी पर लटक रहा है। खड़ावें गुसुल खाने के बाहर रखी हुई हैं। और अंगीठी पर रखी केतली में से क़हवा की खुश्बू मुंतशिर⁽²⁾ हो रही है। नाश्ते के बाद रहमत ने हुक्क़े का कश लिया, एक नजर जैनब पर डाली, जो क़हवा का फिंजान हाथ में थामे ना जाने क्या सोच रही थी। फिर अपनी बेटी को उसने देखा वह चटाई की तीलियों में अपने नाखून फंसाए कुछ सोच रही थी। रहमत को याद आया कि उसने कलकता के म्यूजियम में नूर जहां की तस्वीर देखी थी, और अब उसे महसूस हो रहा था कि वह तस्वीर फ्रेम से निकल कर इस चार दीवारी में चली आई है।

वह अपने आप को दुनिया का बड़ा खुश क़िस्मत आदमी समझ रहा था। वह सोच रहा था कि जैसे इसका तबील सफ़र मुकम्मल हो गया है वह कठिन रास्तों, पहाड़ियों, दरियाओं और वादियों को उबूर करता अपनी मंजिल पर पहुंच चुका है, उसने फिर हुक्क़े का कश लिया, ख़स्ता और आला तम्बाकू का खुशबूदार धुवां सारे में फैल गया।

रहमत की पलकें सुरूर से बोझल हुईं और फिर झुक गईं । उसी लम्हे दरवाजे पर दस्तक हुई, अरजुमंद बानो ने पूछ ''कौन ?'' बाहर से आवाज आई : ''पुलिस''

ऊंघता हुआ रहमत हड़बड़ा कर यूं होश में आया गोया हजारों भैंसों ने उसके घर पर हमला कर दिया हो।

आधे घंटे के बाद वह उस मतीन और संजीदा अफ़सर के सामने उसी कुर्सी

1. स्पर्श 2. बिखरना 3. अदब के साथ

"نبيس جناب" وه اني مخل كي واسكوث ير باتحد محير كر بولا:

"میری بنیانے ساہے۔"

"اچھااے تحمارا سائز کیے معلوم ہوا؟ یہ جوڑا تو ٹھیک تمہارے ہی ناپ کا ہے۔"
"جناب، وہ اپنی مال سے میرا قد اور میرا ہاڑ پوچھتی، پھر میرا تصور کرتی اور اپنے دھمان سے کیڑے ستی۔"

" کیے مکن ہے؟" افسر نے خوش گوار انداز میں یو جھا۔

''مکن ہے جناب۔ جب لگن تھی ہواور کام میں کوئی غرض پوشیدہ نہ ہوتو غیب سے امداد نصیب ہوجاتی ہے۔''

" يهال كيا بردگرام بي تحمارا؟"

"پروگرام؟"

" الى، يعنى كرتم يهال كيا كرو مي؟"

"کیا کرسکتا ہوں میں یہاں جناب، سوائے یاد اللی کے۔ اس جسم میں صرف بذیاں ہی ہُدیاں ہو آتی رہ گئ ہیں۔ ساری قوت عمر نجوز چکل ہے۔"

"اچھا خان، اب یہ بناؤ کہ لیافت علی خان نے شمعیں یہاں کس کام سے بھیجا ہے؟"
"جناب میں آپ کوکل ہی بنا چکا ہوں کہ میرا اور لیافت کا محض ووستانہ رشتہ ہے، ہم
ولمنی کا تعلق ہے، ہم نے ایک دوسرے سے اس کے علاوہ نہ کبھی کوئی غرض رکھی تنی نہ رکھی
ہے۔"

"فان تم ہم سے کچے چھپارہ ہو۔خوب سوچ لو۔ننائج تمبارے حق بل برے ثابت ہوں گارت ہوں گئے تمبارے حق بل برے ثابت ہوں گل میں ہوں گئے نہ دول لیکن تم اپنے وطن کل می لوٹے ہو، اس لیے جھے تنسیس یہال رد کتے ہوئے افسوس ہوتا ہے۔ اب تم جا کتے ہو۔"

رحت اس رات اپ بستر پر پڑا کروٹیں بدلنا رہا۔ اس کے کانوں میں افسر کے الفاظ کو نجے دے اور اس کی آنکھوں کی سرد چاندنی سے وہ جملتا رہا۔ یہ افسر میرے پیچے کیوں بڑ کیا ہے اسے جمع پر کیوں اعتبار نہیں؟ اسے جمع پر کیوں شہر ہے؟ کیا میں اس سے چھ پر کیوں شہر ہے؟ کیا میں اس سے چھ چھ پر کیوں شہر ہے؟ کیا میں اس سے چھ چھ پار ما ہوں؟ نہیں کھ جمی نہیں۔ کیا میں نے اس کی شان میں کوئی گتافی کی

पर बड़ा मुअद्दब बैठा था।

- ''कैसे हो खान?''
- ''अच्छा हुं जनाव'' खान ने फीकी मुस्कुराहट के साथ कहा :
- ''यह ओड़ा तुम पर बहुत जच रहा है, हिंदुस्तान से लाए हो ?''
- ''नहीं जनाब'' वह अपनी मखुमल की वास्कोट पर हाथ फेर कर बोला:
- "मेरी बिटिया ने सिया है"
- ''अच्छा ····· उसे तुम्हारा साइज कैसे मालूम हुआ? यह जोड़ा तो ठीक तुम्हारे ही नाप का है''
- ''जनाब वह अपनी मां से मेरा क़द और मेरा हाड़ पूछती, फिर मेरा तसव्युर⁽¹⁾ करती और अपने ध्यान से कपड़े सीती''
 - ''यह कैसे मुमकिन है'' अफ़सर ने खुश्गवार अंदाज में पूछा।
- "मुमिकन है जनाब, जब लगन सच्ची हो और काम में कोई ग्रर्ज⁽²⁾ पोशीदा⁽³⁾ ना हो तो ग़ैब⁽⁴⁾ से इमदाद⁽⁵⁾ नसीब हो जाती है"
 - ''यहां क्या प्रोग्राम है तुम्हारा ?''
 - ''प्रोग्राम?''
 - ''हां, यानी कि तुम यहां क्या करोगे ?''
- ''क्या कर सकता हूं मैं यहां जनाब, सिवाये यादे इलाही के, इस जिस्म में सिर्फ़ हिड्डयां ही हिड्डयां बाक़ी रह गई हैं, सारी कुट्यत उम्र निचोड़ चुकी है''
- ''अच्छा ख़ान, अब यह बताओं कि लियाक़त अली खां ने तुम्हें यहां किस काम से भेजा है?''
- ''जनाब मैं आप को कल ही बता चुका हूं कि मेरा और लियाक़त का महज दोस्ताना रिश्ता है, हम वतनी का ताल्लुक़ है, हमने एक दूसरे से इसके अलावा न कभी कोई ग्रर्ज रखी थी न रखी है।
- "ख़ान तुम हम से कुछ ख़ुपा रहे हो, ख़ूब सोच लो, नताइज तुम्हारे हक में बुरे साबित होंगे, मैं चाहूं तो तुम्हें इस कमरे से बाहर निकलने न दूं लेकिन तुम अपने वतन कल ही लौटे हो, इस लिए मुझे तुम्हें यहां रोकते हुए अफ़सोस होता है, अब तुम जा सकते हो"

रहमत उस रात अपने बिस्तर पर पड़ा करवटें बदलता रहा, उसके कानों में

^{1.} कल्पना 2. मतलब 3. खुपा हुआ 4. आदृष्ट परोक्ष 5. मदद का बहुवचन

ہے؟ نہیں، میں تو اسے صاحب اور جناب ہی کہہ کر مخاطب کرتا رہا۔ اسے یاد آیا کہ جو کری ہڑ براہٹ میں اس سے الث گئی تھی وہ اسے کھڑی کیے بنا ہی کرے سے نکل گیا تھا۔ رحمت کو اب یہ واقعی گتا خانہ حرکت معلوم ہوئی۔ کمرے سے نکلنے سے پہلے اس نے اس افسر سے اجازت بھی نہیں لی تھی اور نہ اسے رمستی سلام کیا تھا۔ خدا کرے کہ اب وہ جھے طلب نہ کرے۔ اس کے باوجود سر راہ اگر میری اس سے ملاقات ہوگئی تو میں ضرور اپنی اس خلعی کی اس سے معانی ما تک لول گا۔

تسلی دیتے ہوئے وہ اپنے آپ کو سمجھانے لگا۔ غیر مکی لوگ ہیں، آج آئے ہیں، کل چلے جاکیں گے، اضیں ہم سے کیالینا دینا۔ انگریزوں کی طرح تھوڑی ہی جم کرر ہیں گے۔ اور پھرخود حفاظتی کی تدبیر یں تو ہر کسی کو کرنی پڑتی ہیں۔ جھ سے باز پرس ممکن ہے ای کی ایک کڑی ہو۔لیکن انگل سوچ نے ان تسکین بخش خیالات کی بساط الث دی۔ اسے یاد آیا، اس روز کہا جارہا تھا۔

"سیای فضا ناسازگار ہے رات میں کسی کا بھی دروازہ کھٹکھٹا یا جاتا ہے۔ یا تو وہ نابود ہو جاتا ہے یا خبر ملتی ہے کہ فلال فلال جیل میں قید کردیا حمیا ہے۔"

نادانستہ طور پر اس کے منہ سے آ و نکل میں۔

"كيابات بآپ كالمبعت و محك بي "نبن ني رتويش ليج من بوجهار

"اول بال كمر كى بندكردو مجمع شندك محسوس بورى ب-"

"كمركى توبند ب مفهر ي من آپ كوايك اور لحاف ارهاتى مول "

نمن نے دوسرالحاف اے اڑ مادیا۔

يمر يديداني:

"بیموئی بدروهیں بھی تک کرتی ہیں، اچھے بھلے انسان کو، آپ چاروں قل پڑھ کر کے سویا کریں۔"

وه خود سورة الحمد كا ورد كرنے كلى۔

جرک نماز اس نے خافتاہ سے کی معجد میں اداک، نماز کے بعد وہ خافقاہ میں داخل ہوا۔ فاتحد دی، دعاما تی مولوی صاحب کے ساتھ ساتھ چندلڑکے خافتاہ میں داخل ہوئے۔

अफ़सर के अलफ़्रज़ गूंजते रहे और उसकी आंखों की सर्द चांदनी से वह झुलसता रहा, यह अफ़सर मेरे पीछे क्यों पड़ गया है? इसे मुझ पर क्यों एतबार नहीं? इसे मुझ पर क्यों शुबहा है? क्या मैं इस से कुछ छुपा रहा हूं? नहीं कुछ भी नहीं, क्या मैं ने इस की शान में कोई गुस्ताख़ी की है? नहीं, मैं तो उसे साहब और जनाब ही कह कर मुख़ातिब करता रहा। उसे याद आया कि जो कुर्सी हड़बड़ाहट में उससे उलट गई थी वह उसे खड़ी किये बिना ही कमरे से निकल गया था, रहमत को अब यह वाक़ई 10 गुस्ताख़ाना है रकत मालूम हुई, कमरे से निकलने से पहले उसने अफ़सर से इजाज़त भी नहीं ली थी और न उसे रुख़्तती सलाम किया था, खुदा करे कि अब वह मुझे तलब न करे, उसके बावजूद सरे राह अगर मेरी उससे मुलाक़ात हो गई तो मैं जरूर अपनी इस ग़लती की उससे माफ़ी मांग लूंगा।

तसल्ली देते हुए वह अपने आप को समझाने लगा, ग्रैर मुलकी लोग हैं, आज आए है, कल चले जायेंगे उन्हें हम से क्या लेना देना अंग्रेजो की तरह थोड़े ही जम कर रहेंगे और फिर खुद हिफ़्तजती की तदबीरें तो हर किसी को करनी. पड़ती है मुझ से बाज पुर्स मुमिकन है इसी की एक कड़ी हो लेकिन अगली सोच ने इन तसकीन बख़्श ख़्यालात की बिसात उलट दी उसे याद आया उस रोज कहा जा रहा था

''सियासी फ़जा ना साजगार है रात मैं किसी का भी दरवाजा खटखटाया जाता है या तो वह नाबूद हो जाता है या ख़बर मिलती है कि फ़लां फलां जेल में क़ैद कर दिया गया है'' ना-इ्।निस्ता⁽³⁾ तौर पर उस के मुंह से आह निकल गई।

''क्या बात है आप की तबीयत तो ठीक है? जैनब ने पुर-तशवीश⁽⁴⁾ लहजे में पूछा

''ऊहां खिड़की बन्द कर दो मुझे ठंडक महसूस हो रही है''

''खिड़की तो बन्द है उहरिये मैं आपको एक और लिहाफ़ उढ़ाती हूं'' जैनब ने दूसरा लिहाफ़ उसे उढ़ा दिया ।

फिर बडबडाई :

''यह मुई बदरुहें भी तंग करती हैं, अच्छे भले इंसान को आप चारों क़ुल

^{1.} वास्तव में 2. बे अदब 3. अनजाने में 4. चिंतापूर्ण

انھوں نے اس اجنبی کو جیرت سے دیکھا۔ رحت نے اٹھیں سلام کیا۔ بچوں کے سروں پر ہاتھ پھیرا، پھر ایک کونے میں جا کر بیٹو گیا۔

خوف اس کے ذہن سے رفع ہو چکا تھا۔ اسے یہاں پہنچ کر بردا سکون ملا تھا۔ دہ اسی بھین کی یاد وں میں کھو گیا۔ جب وہ خانقاہ سے نکلا تو سورج پہاڑوں کے مقب سے امجر آیا تھا۔ آسان پر سرخی آمیز سنہری سیال بھرا ہوا تھا۔ درختوں پر پرئدے چھھا رہے تھے۔ جب وہ پہاڑوں کی ست آ کے بڑھا تو اس کے قدم عمقی پر ککمی تحریر نے جکر دیے۔ فاری رسم الخط میں جلی حرفوں میں کھا تھا و اس کے قدم عوف میں اس ممنوعہ علاقے میں داخلے پر یابندی کے احکامات درج تھے۔

اپنے ہمائی کے گھر ناشتہ کرتے ہوئے اسے معلوم ہوا کہ کیر تعداد میں غیر کمکی فوتی وہاں پڑاؤ ڈالے ہوئے ہیں۔ کی بارکیس منائی گئ ہیں اور کسی صورت میں ان کے فوری انخلا کے امکانات نظر نہیں آتے "برادر جمعاری واپسی ناخو محکوار موقع پر ہوئی ہے۔ اللہ برا ہے، یہ فضب بھی ٹل جائے گا۔"

رحمت بدی در سے ای کھکش میں تھا کہ دہ اپنے بھائی سے اس باز پرس کا ذکر کرے یا نہ کرے یا نہرے کرے اور کی دائر کرے یا نہ کرے یا نہرے کرے یا نہ کرے یا نہ کرے یا کہ اور اگر کی برے سرکاری عہدے پر ہوگا تو ممکن ہے کہ دہ اس غیر کمکی افسر کو رحمت کے نیک سیرت ہونے کی ضائت دے یائے۔

لیکن رصت نے بھائی کو زحت دینے سے اپنے آپ کو باز رکھا۔ بغل کیر ہوکر جب دہ اسپنے گھر پہنچا تو اس نے دوبادردی ساہیوں کو اپنا منتظر پایا۔

دو تھنے کے جاں سوز انتظار کے بعد اس افسر کے کمرے میں اس کی طلبی ہوئی۔ پولیس اسٹیٹن کے مہیب آسا ماحول اور عمارت کی تھینی نے اسے اندر ہی اندر سکیڑ سمیٹ دیا تھا۔

کرے میں دافل ہوتے ہی رحت نے اس افر کو بڑے احرّام سے سلام کیا۔ اس وقت تک کری پرنہیں بیٹھا جب تک کہ اس افسر نے اسے بیٹھنے کا اشارہ نہ کیا۔ "مفور اجازت ویں تو ایک بات عرض کروں۔" رحت نے باتھ دل بررکھتے ہوئے

पढ़ कर के सोया करें।"

वह खुद सुरा-अलहम्द का विर्द करने लगी।

फ़जर की नमाज उसने ख़ानक़ाह से लगी मस्जिद में अदा की, नमाज के बाद वह ख़ानक़ाह में दाख़िल हुआ। फ़ातिहा दी, दुआ मांगी, मौलवी साहब कै साथ चंद लड़के ख़ानक़ाह में दाख़िल हुए, उन्हों ने इस अजनबी को हैरत से देखा। रहमत ने उन्हें सलाम किया, बच्चों के सरों पर हाथ फेरा, फिर एक कोनं में जाकर बैठ गया।

ख़ौफ़ उसके जेहन से रफ़ा हो चुका था। उसे यहां पहुंच कर बड़ा सुकून मिला था। वह अपने बचपन की यादों में खो गया। जब वह ख़ानक़ाह से निकला तो सूरज पहाड़ों के अक़ब से उभर आया था। आसमान पर सुख़ीं आमेज सुनहरी सैय्याल बिखरा हुआ था। दरख़ों पर परिंदे चहचहा रहे थे। जब वह पहाड़ों की सम्त आगे बढ़ा तो उसके क़दम तख़्ती पर लिखी तहरीर ने जकड़ दिये। फारसी रस्मुल-ख़त⁽¹⁾ में जली⁽²⁾ हरफ़ों में लिखा था ''लश्कर'' और ख़फी⁽³⁾ हरफ़ों में इस ममनुआ⁽⁴⁾ इलाक़े में दाख़िले पर पाबंदी के अहकामात दर्ज थे।

अपने भाई के घर नाश्ता करते हुए उसे मालूम हुआ कि कसीर⁽⁵⁾ तादाद में ग़ैर मुल्की फ़्रौजी वहां पड़ाव डाले हुए हैं। पक्की बैरकें बनाई गई हैं। और किसी सूरत में उनके फौरी इन्ख़ला⁽⁶⁾ के इमकानात⁽⁷⁾ नजर नहीं आते, ''बिरादर, तुम्हारी वापसी ना खुश्गवार मौक़े पर हुई है। अल्लाह बड़ा है, यह ग़जब भी टल जाएगा।''

रहमत बड़ी देर से इस कशमकश में था कि वह अपने भाई से उस बाज-पुर्स⁽⁸⁾ का जिक्र करे या न करे। करे तो भाई उसकी क्या मदद कर सकता है? उसका कोई वाक़िफ़-कार⁽⁹⁾ अगर किसी बड़े सरकारी ओहदे पर होगा तो मुमिकन है कि वह इस ग़ैर मुल्की अफ़सर को रहमत के नेक-सीरत⁽¹⁰⁾ होने की जमानत दे पाये।

लेकिन रहमत ने भाई को जहमत देने से अपने आप को बाज़ रखा। बग़लगीर होकर जब वह अपने घर पहुंचा तो उसने दो बावरीं सिपाहियों को अपना मुंतज़िर पाया।

^{1.} लिपी 2. मोटे 3. पतले 4. वर्जित 5.अत्यधिक 6. प्लायन 7. इम्कान (सम्भावना) का बहुवचन 8. पूछ ताछ 9. परिचित 10. सत्प्रकृति

کہا۔ افسر نے اثبات میں گردن ہلائی۔

''جتاب عالی، نادانتگی میں مجھ سے ایک تلطی سرزد ہوئی ہے۔ میں اس کی معافی عالی ، نادانتگی میں اس کی معافی عابتا ہوں''

" يبي كهتم آج جياؤني كي طرف محيّ تعيه"

نہیں جناب، یہ بات نہیں۔ میں قو عہلی ہوا ادھر کونکل ممیا تھا۔ میں تو کچھ اور کہنے جار ہا تھا۔''

"لاِلقت على خان كاسنديستم في اين بمالى كو بينجاديا-"

''نہیں جناب، لیافت نے مجھے کوئی سندیہ اپنے بھائی کے لیے نہیں ویا تھا میں تو''

رحت کے گلے میں گرہ پڑنے گی۔ اس نے اپنے سوکھے ہوئے ہونوں پر زبان پھیری۔ اس کا دماغ تیزی سے سوچ رہاتھا یہ کیا میں تو اپنی ایک معمولی ی غلطی کی معافی طلب کرنے لگاتھا، اس نے دو الزام سیای نوعیت کے جھے پر اور تھوپ دیے۔ اسے کیوں کرمعلوم ہوا کہ میں آج چھاؤنی کی طرف جانکا تھا، اور اپنے بھائی سے ملاقات کا علم بھی یہ رکھتا ہے۔ کیا اس نے اپنے آدی سائے کی طرح میرے پیچے لگار کھے ہیں؟ اور تو کوئی ذریعے نہیں ہوسکتا اس کے پاس۔ میرعزرائیل کی طرح میرے تعاقب میں ہے۔ اس کے ذریعے نہیں ہوسکتا اس کے پاس۔ میروزرائیل کی طرح میرے تعاقب میں ہے۔ اس کے ذریعے میں ہوسکتا ہوں؟ حق کوئی ہی میرے کام آسکتی ہے۔

" حضور، معاف یجیے گا، ذرا ذہن بھک گیا تھا آپ کی باتوں ہے۔ دراصل میں یہ عرض کرنا چاہتا تھا کہ اس روز نادانت طور پر یہ کری الث کی تھی کی بات تو یہ ہے صاحب کہ میں بوکھلا گیا تھا اور ای بوکھلا ہٹ میں مجھ سے یہ نادانی بھی ہوئی کہ میں نے نہ اسے سیدھا کیااور نہ آپ سے رخصت ما گی، بلکہ بے اتمیازی سے چلا گیا۔ صاحب میں نے اس قصور پر بہت فور کیا۔ اپنے آپ کولعنت ملامت کی۔ میں واقعی آپ کی دل آزاری کا قصور وار ہوں۔ گتاخ ہوں، بے ادب ہوں، آپ مجھے معاف فرما کیں۔ مجھے بخش دیں، یہ کہتے کہتے رحمت نے ہاتھ جوڑ لیے اور غیرا رادی طور پر اس کی آٹھوں سے آنسو دواں ہوگئے۔ افسر کری ہر جمول رہا تھا۔ اس کی پشت کا بوجھ کری ہر تھااور کری مجھیل دو

दो घंटे के जांसोज़ इंतिज़ार के बाद उस अफसर के कमरे में उसकी तलबी हुई। पुलिस स्टेशन के मुहीब-आसा माहौल और इमारत की संगीनी ने उसे अंदर ही अंदर सुकेड़ समेट दिया था।

कमरे में दाख़िल होते ही रहमत ने उस अफसर को बड़े एहतेराम से सलाम किया। उस वक़्त तक कुर्सी पर नहीं बैठा जब तक कि उस अफसर ने उसे बैठने का इशारा न किया।

''हुजूर इजाजत दें तो एक बात अर्ज करूं'' रहमत ने दिल पर हाथ रखते हुए कहा।

अफसर ने असबात में गर्दन हिलाई।

''जनाबे आली, नादानिस्तगी में मुझे से एक ग़लती सरज़द हुई है मैं उसकी माफ़ी चाहता हूं,''

''यही कि तुम आज छावनी की तरफ़ गए थे।''

नहीं जनाब, यह बात नहीं मैं तो टहलता हुआ उधर को निकल गया था। मैं तो कुछ और कहने जा रहा था·····'

''लियाक़त अली खां का संदेसा तुम ने अपने भाई को पहुंचा दिया।''

''नही जनाब, लियाक़त ने मुझे कोई संदेसा अपने भाई के लिए नहीं दिया था, मैं तो हुज़ूर..... ''

रहमत के गले में गिरह पड़ने लगी। उसने अपने सूखे हुए होंठों पर जबान फेरी। उसका दिमाग़ तेजी से सोंच रहा था। यह क्या में तो अपनी एक मामूली सी ग़लती की माफ़ी तलब करने लगा था, उसने दो इल्ज़ाम सियासी नौईयत⁽¹⁾ के मुझ पर और थोप दिये। उसे क्योंकर मालूम हुआ कि मैं आज छावनी की तरफ़ जा निकला था, और अपने भाई से मुलाक़ात का इल्म भी यह रखता है। क्या इसने अपने आदमी साये की तरह मेरे पीछे लगा रखे हैं? और तो कोई ज़िरया नहीं हो सकता उसके पास। यह इज़राईल की तरह मेरे ताअक़ुब⁽²⁾ में है। इस के जेहन से मैं यह शुबहात⁽³⁾ कैसे दूर कर सकता हूं? हक़ गोई ही मेरे काम आ सकती है।

"हुजूर, माफ़ कीजिएगा, जरा जेहन भटक गया था आप की बातों से दरअसल में यह अर्ज करना चाहता था कि उस रोज़ नादानिसता तौर पर यह कुर्सी 1. प्रकार 2. पीछा करना 3. शुबह (शक) का बृहुवचन

ٹاگوں پر کھڑی تھی۔ اپنے کولہوں کے لیور پر بید اپنا ہو جھ آ کے چھھے کیے چلا جارہا تھا۔ پکھ سوچ کر اس نے ٹیمل میں نصب بٹن دہا یا۔ وہی باوردی جوان کمرے میں فوجی سلام کرتا داخل ہوا۔ اس نے غیر زبان میں کہا:

''ایک دوروز میں بیاثوث جائے گا۔ فکر کی بات نہیں اب اسے کھر جانے دو'' پھر اس نے رحمت کو پشتو میں مخاطب کیا۔

"ابتم جاسكتے ہو۔"

رحت کو توالی ہے جب گھر کی طرف چلا تو اسے احساس ہوا کہ اپنے وطن واپس ہونے کے بجائے وہ کسی اجنبی جگہ پہنچا ہوا ہے۔ یہ اس کاوطن کیے ہوسکتا ہے؟ یہ کونے کونے پر کھڑے باوردی سابی! یہ گل کو چوں میں نہلتی جیپیں! یہ سر کوں پر مٹر گشت کرتے فوجی ٹرک! یہ راشن کی قطاری! یہ خوفزدہ چہرے! یہ ایک دوسرے سے سر کوشیاں کرتے نوبی لوگ! یہ قدم قدم پر بہرے! یہ زہر ناک فضا کیا اس کے اپنے شہر کی ہے؟ نہیں یہ تو کوئی دیار غیر ہے، یہ میرا وطن نہیں ہوسکتا۔ اچا تک اس کی نظر ایک بہت بڑے اشتہار پر پڑی۔ اس نے اسے فور سے دیکھا، سنہری بالیاں، درائتی، ہتھوڑا، سرخی۔ بل مجر کے لیے بخور اس نے اسے فور سے دیکھا، سنہری بالیاں، درائتی کا بالہ اس کی گردن میں تھا اور بتھوڑا سر پر۔ یوں ان دونوں کی ضربوں سے وہ لیولہان ہوگیا، سرخی سارے میں پھیل گئ۔ اس کی شخوڑا سر پر۔ یوں ان دونوں کی ضربوں سے وہ لیولہان ہوگیا، سرخی سارے میں پھیل گئ۔ ایک گھنٹے کے بعد اسے ہوش آیا تو اس نے اپنے بستر کے گرد زینب، ارجمند، ایک گھنٹے کے بعد اسے ہوش آیا تو اس نے اپنے بستر کے گرد زینب، ارجمند، بلقیس، شاہ بانو، داؤد، الیاس اور حینہ کو کھڑا پایا۔ ان کے چہوں سے فکر متر شح تھی اور سے نگی، سے خیا

وہ دونوں کہنیوں کے سہارے بشکل اٹھا۔ ارجمند نے اس کی پشت سے بھیے لگادیے اور دہ ان کے سہارے بیٹھ گیا۔ اس نے سمحوں کے چہروں کو پڑھا پھرمسکرایا۔ "تم سب بوں فکر مندنظر آر ہے ہوکہ جیسے میرا وقت آخر آپہنچا۔ ذرا سا چکر آگیا تھا۔ مجھے معلوم ہے میں میں راستے میں بیٹھ گیا تھا۔"

پھراس نے اپنے آپ سے کہا۔''نہیں میں تو گر پڑا تھا۔''

چروہ کھے دریے بعد بولا۔ "رات میں ٹھیک سے نینونیس آئی تھی، مکن ہے دن میں

उलट गई थी सच्ची बात तो यह है साहब कि मैं बौखला गया था और उसी बौखलाहट में मुझ से यह नादानी भी हुई कि मैं ने न उसे सीधा किया और न आप से रुख़सत मांगी , बिल्क बे इमितयाजी से चला गया। साहब मैंने इस क़ुसूर पर बहुत गौर किया। अपने आप को लानत मलामत की। मैं वाक़ई आप की दिल-आजारी⁽¹⁾ का क़ुसूरवार हूँ। गुस्ताख़ हूँ बे अदब हूँ, आप मुझे माफ़ फ़रमायें मुझे बख़्त दें यह कहते कहते रहमत ने हाथ जोड़ लिए और गैर इरादी तौर पर उस की आँखो से आँसू रवां हो गए।

अफसर कुर्सी पर झूल रहा था उसकी पुश्त का बोझ कुर्सी पर था और कुर्सी पिछली दो टांगो पर खड़ी थी। अपने कूल्हों के लीवर पर यह अपना बोझ आगे मैंछि किये चला जा रहा था। कुछ सोच कर उस ने टेबुल में नस्ब बटन दबाया। वही बा वर्दी जवान कमरे में फ्रौजी सलाम करता दाख़िल हुआ उसने ग़ैर जाबान में कहा:

"एक दो रोज में यह टूट जाए गा फ़िक्र की बात नहीं अब इसे घर जाने दो"फिर उसने रहमत को पुश्तो में मुख़ातिब किया।

''अब तुम जा सकते हो i''

रहमत कोतवाली से जब घर की तरफ़ चला तो उसे एहसास हुआ कि अपने वतन वापस होने के बजाए वह किसी अजनबी जगह पहुँचा हुआ है। यह उस का वतन कैसे हो सकता है? यह कोने कोने पर खड़े बावदी सिपाही! यह गली कूचों में टहलती जीपें! यह सड़कों पर मटरपशत⁽²⁾ करते क्रीजी ट्रक! यह राशन की कृतारें! यह ख़ौफ़ज़दह चेहरे! यह एक दूसरे से सरगोशियां करते लोग! यह क़दम क़दम पर पहरे! यह जहरनाक⁽³⁾ फिजा क्या उस के अपने शहर की है? नहीं यह तो कोई दयारे ग़ैर है। यह मेरा वतन नहीं हो सकता। अचानक उस की नज़र एक बहुत बड़े इश्तेहार पर पड़ी। उस ने उसे ग़ौर से देखा, सुनहरी बालियां, दरांती, हथौड़ा, सुखीं। पल भर के लिए उसे अपनी शबीह⁽⁴⁾ उन सुनहरी बालियों की जगह यूं नज़र आई कि दरांती का हाला उस की गर्दन में था और हथौड़ा सर पर। यूं उन दोनों की ज़बों से वह लहुलुहान हो गया। सुखीं सारे में फैल गई।

एक घन्टे के बाद उसे होश आया तो उसने अपने बिस्तर के गिर्द जैनब, अर्जुमन्द, बिल्क़ीस, शाहबानो, दाऊद, इलियास और हसीना को खड़ा पाया। उन

^{1.} दिल दुखाना 2. यूंही घूमना फिरना 3. जहर मैं लिप्त 4. छाया

آگنی ہو....

"اب کوئی فکر کی بات نہیں۔ جھے تعور اساقبوہ مل جائے تو" اس نے ارجند کی طرف دیکھا، پھر نینب سے مخاطب ہوا۔

"تم ذرا حقه مجر دینا<u>"</u>

آوهی رات جب گزریکی تواس نے زینب کو جگایا۔ دھیرے دھیرے سارا ماجرا کہد
سایا۔ اے تاکید کی کہ ارجند کی شادی کی محنت کش نوجوان سے کرنا پڑھے لکھے بجھدار
آدی سے۔ دولت مند سے ہرگز مت کرنا۔ بھائی سے جمت نہ کرنا۔ کیونکہ دبی سرپرست
اور خبر گیری کرنے والا ہے۔ پاس پڑوس والوں سے اپنوں کی شکایت نہ کرنا، کہ یجی کا تا
پووی کرتے ہیں اور پھٹے ہیں پاؤں ڈالتے ہیں۔ میری فکر قطعی نہ کرنا، ہیں جہاں بھی
رہوںگا، خیر خبریت سے رہوںگا۔ اپنے حالات سے مطلع کرتا رہوںگا۔ اور جوں بی
بہاں سے بلا ٹلی حاضر ہوجاؤں گا۔ اللہ بڑا کریم ہے، اس کی ہر بات میں مصلحت پوشیدہ
ہے۔ تم نے زندگی مجر مبر کیا، میری جدائی کے کڑے کوس کائتی رہیں، اب پھر ویبا ہی
مرحلہ در چیش ہے۔''

نینب اپنی ہیکیاں روک ری تھی اور اس کے آنبوؤں سے رحمت کا گریبان تر تھا۔
مج کی سیر کے بعد جب میں گھر لوٹا تو اپنے دروازے پر میں نے ایک فض کو کمبل
اوڑھے اکروں میٹا پایا۔ مجھے حیرت ہوئی کہ یہ کون فض ہے جو سویرے سویرے آپنیا
ہے۔ میرے قریب جنیج ہے پہلے تی وہ فض کھڑا ہوگیا۔ دھول میں اٹا ہوا، بوسیدہ لباس
میں ملبوس، حکن اور فیندے شال رحمت،

"ارے سرے رے سے کہ آئے؟۔"

من نے اے کے لگاتے ہوئے کہا:

"کمر مے بھی یانہیں؟ بال بچ تو ٹھیک ہے نا؟"

'' ہاں صاحب سب ٹھیک ہیں۔ بٹیا جوان ہو بھی ہے۔ ہوی ذرا بوڑھی ہوگی ہے۔ بعائی کے گرود بیٹے پیدا ہوئے ہیں۔ اس کا کاروبار ٹھیک ٹھاک چل رہا ہے اور'' میں نے بیچے تالے میں کنی ڈال کر دروازہ کھولا۔ طازم کو جگا کر اسے جائے اور

के चेहरों से फ़िक्र मुतरश्शह थी और आंखों से ग्रम!

वह दोनों कोहनियों के सहारे बमुश्किल उठा। अर्जुमन्द ने उस की पुश्त से तिकए लगा दिए और वह उन के सहारे बैठ गया। उसने सभों के चेहरों को पढ़ा फिर मुस्कुराया।

"तुम सब यूं फ़िक्कमन्द नजर आ रहे हो कि जैसे मेरा वक्ते आख़िर आ पहुंचा। जरा सा चक्कर आ गया था मुझे मालूम है मैं..... मैं रास्ते में बैठ गया था।"

फिर उसने अपने आप से कहा, ''नहीं मैं तो गिर पड़ा था।''

फिर वह कुछ देर के बाद बोला। रात में ठीक से नींद नहीं आई थी।, मुम्मिकन है दिन में आगई हो

अब कोई फ़िक्र की बात नहीं। मुझे थोड़ा सा क़हवा मिल जाए तो'' उसने अर्जुमन्द की तरफ़ देखा, फिर जैनब से मुख़ातिब हुआ।

''तुम जरा हुक्क़ा भर देना।''

आधी रात जब गुजर चुकी तो उसने जैनब को जगाया। धीरे धीरे सारा माजरा कह सुनाया। उसे ताकीद⁽¹⁾ की कि अर्जुमन्द की शादी किसी मेहनतकश⁽²⁾ नौजवान से करना पढ़े लिखे समझदार आदमी से। दौलतमन्द से हरगिज मत करना। भाई से हुज्जत न करना। क्यों कि वही सरपरस्त और ख़बरगीरी करने वाला है। पास पड़ोस वालों से अपनों की शिकायत न करना, कि यही काना फूसी करते हैं और फटे में पांव डालते हैं। मेरी फ़िक्र कर्तई न करना, मैं जहां भी रहूंगा, ख़ैर ख़ैरियत से रहूंगा। अपने हालात से मुत्तला करता रहूंगा। और जूं ही यहां से बला टली, हाजिर हो जाउंगा। अल्लाह बड़ा करीम है, उस की हर बात में मसलेहत⁽³⁾ पोशीदा है। तुम ने जिन्दगी भर सब्न किया, मेरी जुदाई के कड़े कोस काटती रहीं, अब फिर वैसा ही मरहला⁽⁴⁾ दरपेश⁽⁵⁾ है।

ज़ैनब अपनी हिचकियां रोक रही थी और उस के आंसुओं से रहमत का गिरेबान तर था।

सुबह की सैर के बाद जब मैं घर लौटा तो अपने दरवाज़े पर मैंने एक शख़्स को कम्बल ओढ़े उकडूँ बैठा पाया। मुझे हैरत हुई कि यह कौन शख़्स है जो सवेरे

^{1.} चेतावनी 2. मेहनती 3. हित 4. मंजिल 5. किसी कार्य या समस्या की उपस्थिति

ناشتہ تیار کرنے کی ہدایت دی۔ عسل خانے میں جا کر خان کے عسل کا خود انتظام کیا اور پھر جا کر میں نے میٹی کے کمرے میں جھا تکا۔

ووائي بي كوسينے سے چمٹائے سورى تقى۔

خان نے نہا وحوکر میرے ساتھ ناشتہ کیا۔

مرایا احوال سانے لگا۔

''اور صاحب آخری پہر میں اپنی بیدی کو روتا ہوا چھوڑ کر اپنے وطن سے بھاگ لکلا۔ پہاڑوں اور گھاٹیوں کو پھلائگا، درہ خیبر سے گزرتا، سرصدی چوکیوں پر فوجیوں اور افسران کی منت ساجت کرتا، ان کے ہاتھ یاؤں پڑتا، یہاں پہنیا ہوں۔''

یں جمورے دل سے اسے تملی دینے کی کوشش کرنے لگا۔ میری سجھ میں نہیں آتا تھا کہ اس سے کیا کھوں؟ کیسے کھوں؟ کیوں کر کھوں؟

من نے اپنا ہاتھ بدھا کراس کا ہاتھ تھا اور بولا:

"دیکھو رحمت تمحاری رحمتی کے بعد سے میں دکی دکی سا ہوگیا تھا۔ کول؟ جھے معلوم نیں۔ اب تم آئے ہو تو میر سے دل کا ہوجد بلکا ہواہے۔ پد نیس تحمارا میرا کیا سمبندھ ہے؟ تم کون اور میں کون؟ مکن ہے بھوان نے تمعیں میری عکمت کے لیے بھوا ہوا در یہ بھی مکن ہے کہاسیے جیون کے آخری دن ساتھ ساتھ گزارتا بی ہمارا مقدر ہو! کھر تحمارا ہے، تم میل رہو۔ میں اکیلے جیتے جیتے اکا کیا ہوں۔"

" پائی مے مع آپ سے باتیں کررے ہیں؟"

یہ کہتے گئے اٹی اٹی کو کود میں اٹھائے کرے میں داعل ہوئی۔

"رحت بیکل می اینے سرال سے آئی ہے۔"

"اربي كالى والا تم ؟"

منی کی یا چیس کمل محکس، اور کالی والے نے بدھ کراہے کوویس افعالیا....

کالی والا جھے سے پہلے اخبار دیکھنے کا عادی ہوچکا ہے۔اب وہ جھے سے سیاس سائل بر جادار خیال بھی کرتا ہے اور روزانہ ہوچتا ہے۔

"صاحب میرے اخبار میں تو خبر نہیں جھی، مکن ہے آپ کے اخبار میں جھی ہو۔"

सवेरे आ पहुंचा है। मेरे क़रीब पहुंचने से पहले ही वह शख़्स खड़ा हो गया। धूल में अटा हुआ, बोसीदा⁽¹⁾ लिबास में मलबूस, थकन और नींद से निखल रहमत।

''अरेरे रे..... तुम कब आए?''

मैंने उसे गले लगाते हुए कहा।

"धर गए भी या नहीं ? बालबच्चे तो ठीक हैं ना ?"

"हां साहब सब ठीक हैं। बिटिया जवान होचुकी है। बीवी जरा बूढ़ी हो गई है। भाई के घर दो बेटे पैदा हुए हैं। उस का कारोबार ठीक ठाक चल रहा है और....."

मैंने नीचे ताले में कुंजी डाल कर दरवाजा खोला। मुलाजिम को जगाकर उसे चाय और नाश्ता तैयार करने की हिदायत दी। गुस्लख़ाने में जाकर ख़ान के गुस्ल का खुद इंतिजाम किया और फिर जाकर मैंने मीनी के कमरे में झांका।

वह अपनी बेटी को सीने से चिमटाए सो रही थी।

खान ने नहा धोकर मेरे साथ नाश्ता किया।

फिर अपना अहवाल सुनाने लगा।

''और साहब आख़री पहर में अपनी बीवी को रोता हुआ छोड़ कर अपने वतन से भाग निकला। पहाड़ों और घाटियों को फलांगता, दर्राए ख़ैबर से गुजरता, सरहदी चौकियों पर फौजियों और अफसरान की मिन्नत समाजत करता, उन के हाथ पांव पड़ता, यहां पहुंचा हूं।''

मैं बिखरे दिल से उसे तसल्ली देने की कोशिश करने लगा। मेरी समझ में नहीं आता था कि उससे क्या कहूं ? कैसे कहूं ? क्यों कर कहूं ?

"मैंने अपना हाथ बढ़ाकर उसका हाथ थामा और बोला देखो रहमत तुम्हारी रुख़ती के बाद से मैं दुखी दुखी सा हो गया था। क्यों? मुझे मालूम नहीं, अब तुम आए हो तो मेरे दिल का बोझ हल्का हुआ है। पता नहीं तुम्हारा मेरा क्या संबन्ध है? तुम कौन और मैं कौन? मुमिकन है भगवान ने तुम्हें मेरी संगत के लिए भेजा हो और यह भी मुमिकन है कि अपने जीवन के आख़री दिन साथ साथ गुज़ारना ही हमारा मुक़हर हो! घर तुम्हारा है, तुम यहीं रहो। मैं अकेले जीते जितता गया हूं।"

^{1.} **सड़ा**~गला

میں انجانے میں یو چھ بیٹھنا۔

''کون سی خبر خان؟''

كابلي والانكبيمر ليج ميس كهتا:

"اپنے دلیں کیوہاں کے موسم کی۔"

مِن كبتا:

دونہیں رحت اخبار میں وہاں کی کوئی خبر نہیں! مکن ہے کہ وہاں کا موسم اب بھی ناخوشگوار ہو۔''

کی دن سے رحمت وہ معقر کتاب اپنے ساتھ رکھنے لگا ہے۔ کویا وہ کوئی عیسائی راہب ہواور بیاس کی بائیل! ایک طبی کمزوری می پیدا ہوگئ ہے، اس میں اوہ بیٹے بیٹے سوجاتا ہے۔ نیند میں اس کی اٹھیال کتاب سے کھیلا کرتی ہیں، جیسے وہ کوئی ساز ہو، جس کی تاروں کو چھوکر اسے سریاد آجاتے ہوں۔ کبھی کھار اس کے سوئے ہوئے لیوں پر مسکراہٹ می مسکراہٹ میں جاتی ہوئی دل آویز نغمہ یاد آھیا ہو۔

میں سوچنا ہوں کہ زندگی باوجود اپنی پیچید گیوں اور الجھادوں کے بختیوں اور ناکا میوں کے، کس قدر بر فریب اور بر کا رہے! با مراد اور بامعنی ہے!



''पिता जी यह सुबह सुबह आप किस से बार्ते कर रहे हैं ?'' यह कहते कहते मीनी अपनी बच्ची को गोद में उठाए कमरे में दाख़िल हुई। ''रहमत यह कल ही अपने ससुराल से आई है''

''अरे काबुली वाला तुम ?''

मीनी की बांछें खिल गईं और काबुली वाले ने बढ़कर उसे गोद में उठा लिया।

काबुली वाला मुझ से पहले अख़बार देखने का आदी होचुका है। अब वह मुझ से सियासी मसाएल पर तबादलेख्याल⁽¹⁾ भी करता है और रोजाना पूछता है।

"साहब मेरे अख़बार में तो खबर नहीं छपी, मुमिकन है आप के अख़बार में छपी हो।"

में अनजाने में पूछ बैठता:

''कौन सी खुबर खान ?''

काबली वाला गंभीर लहजे में कहता:

''अपने देस की वहां के मौसम की''

में कहता:

"नहीं रहमत अख़बार में वहां की कोई ख़बर नहीं! मुमिकन है कि वहां का मौसम अब भी नाखशगवार हो।"

कई दिन से रहमत वह मुसव्वर⁽²⁾ किताब अपने साथ रखने लगा है। गोया वह कोई ईसाई राहिब हो और यह उस की बाइबिल! एक तबई⁽³⁾ कमजोरी सी पैदा हो गई है, उस में! वह बैठे बैठे सोजाता है। नींद में उस की उंगलियां किताब से खेला करती हैं, जैसे वह कोई साज हो, जिस के तारों को छूकर उसे सुर याद आ जाते हों। कभी कभार उस के सोए हुए लबों पर मुस्कुराहट सी फैल जाती है, गोया उसे कोई दिलआवेज-नगमा⁽⁴⁾ याद आगया हो में सोचता हूँ कि जिन्दगी बावजूद अपनी पेचीदगियों और उलझावों के, सिख्तयों और नाकामियों के, किस क़द्र पुरफ़रेब⁽⁵⁾ और पुरकार है! बामुराद और बामानी है!



^{1.} विचार विमर्श 2. चित्रकार 3. शारीरिक 4. दिल को खींचने वाला नगमा 5. छलपूर्ण

آدمي

کھڑی کے نیچے انھیں گزرتا ہوا دیکھتا رہا۔ پھر یکا کیک کھڑی زور سے بندگ ۔ مڑ کے پیچھے کا بٹن آن کیا۔ پھر پیچھے کا بٹن آف کیا۔ میز کے پاس کری پہ ٹک کر دھیمے سے بولا۔

" آج تو کل ہے بھی زیادہ ہیں۔ روز برصے جارہ ہیں۔"

سرفراز نے ہھیلیوں پر سے سر اٹھایا اور انوار کو دیکھا۔'' تم نے تو دو ہی دن دیکھا ہے تا! میں تو بہت دن سے دیکھ رہا ہوں کھڑ کی بند رکھوں تو تھٹن ہوتی ہے کھول دوں تو دل اورزیادہ تھبراتا ہے۔لگتا ہے جیسے سب ادھر ہی آرہے ہول'' سرفراز چپ ہوگیا۔

پرایک کمے کے بعد بولا۔

" آج تم سے اتنے برسوں کے بعد ملاقات ہوئی تھی تو دل کتنا خوش تھا کہ پھر یہ وگ..."

میں نے مسس سنر کا واقعہ بھی تو بتایا تھا۔ میں بھی صرف دو ہی دن سے تھوڑ ہے ہی دکھے رہا ہوں اوھرگاؤں میں بھی آج کل بھی عالم ہے کچھا ندازہ ہی نہیں ہو یا تاکیا ہوگا۔'' سرفراز نے جاہت بحری نظروں سے اپنے بچپن کے ساتھی انوار کو دیکھا جس سے آج بندرہ سال بعد طاقات ہوئی تھی۔

دونوں کی بہت ساری یادیں ایک ی تخص

جب وہ بہت جمونا ساتھا تبھی اپنے خالو کے گھر پڑھنے بھیج دیا کمیا تھا۔ خالو کا گھر ایک بوے دیا کیا تھا۔ خالو کا گھر ایک بوے دیمیات بین تھا جہاں سے دومیل کے فاصلے پر بے قصبے بین انٹر کالج تھا وہیں پہلے ہی دن ایک ہم عمر لڑکے نے بہت بے تکلفی کے ساتھ اس کی ریو لے کراپی آرٹ کی کائی پر غبارے تما بھول مٹا کر ایک لیپ ٹما بیٹی بنا کر اس کی ریو دالیس کردی تھی۔ حاضری

आदमी

खिड़की के नीचे उन्हें गुजरता हुआ देखता रहा। फिर यकायक खिड़की जोर से बन्द की। मुड़ कर पंखे का बटन ऑन किया। फिर पखे का बटन ऑफ किया। मेज के पास कुर्सी पे टिक कर धीमे से बोला। "आज तो कल से भी ज्यादा हैं। रोज बढ़ते जा रहे हैं।"

सरफ़राज ने हथेलियों पर से सर उठाया और अनवार को देखा। ''तुम ने तो दो ही दिन देखा है ना! मैं तो बहुत दिन से देख रहा हूं। खिड़की बन्द रखूं तो घुटन होती है। खोल दूं तो दिल और ज्यादा घबराता है। लगता है जैसे सब इधर ही आ रहे हों'' सरफ़राज चुप हो गया।

फिर एक लम्हे के बाद बोला।

''आज तुम से इतने बरसों के बाद मुलाक़ात हुई थी तो दिल कितना खुश था कि फिर यह लोग······''

''मैंने तुम्हें सफ़र का वाक़ेया भी तो बताया था। मैं भी सिर्फ़ दो ही दिन से थोड़े ही देख रहा हूं। उधर गांवों में भी आज कल यही आलम है। कुछ अंदाजा ही नहीं हो पाता क्या होगा।''

सरफ़राज ने चाहत भरी नज़रों से अपने बचपन के साथी अनवार को देखा जिस से आज पंद्रह साल बाद मुलाक़ात हुई थी।

दोनों की बहुत सारी यादें एक सी थीं।

जब वह बहुत छोटा सा था तभी अपने ख़ालू के घर पढ़ने भेज दिया गया था। ख़ालू का घर एक बड़े देहात में था जहां से दो मील के फ़ासले पर बसे क़स्बे में इण्टर कालेज थां वहीं पहले ही दिन एक हम उम्र लड़के ने बहुत बे-तकल्लुफ़ी⁽¹⁾ के साथ उस की रबड़ ले कर अपनी आर्ट की कापी पर गुब्बारे

^{1.} नि:सं**कोच**

کے وقت اس کانام ہوا تھا۔

" سيد انوارعلي"

"حاضر جناب"

سرفراز دهیرے سے بولا۔

"سيد انوارعلي"

" حاضر جناب شمعين اسكول ياد آربا موكار"

بال يشميس كييدمعلوم ؟"

" یارتم اب بھی پہلے کی طرح گھامر باتیں کرتے ہومیرا بورا نام حاضری کے وقت ڈرائنگ ماساب کے علاوہ اور کون جانتا تھا؟"

سرفراز بین کرمسرایا حالال که گھا مر والا جمله اسے برا نگا تھا لیکن وہ سوچ کرمطمئن ہوگیا کہ آج جس افسر کی او چی کری پر جیٹا ہوں۔ میرا بجین کا بددوست پرائمری اسکول میں اردو ٹیچر ہے۔ اینے احساس کمتری بدقابویانے کے لیے اسے ایسے بی جملے بولنے جا ہمیں۔

پھر اس نے سوچا انوار ہی تو اسے اسکول سے واپسی پر حوصلہ دیتا تھا ورنہ تھیے سے دیہات تک بھیلے جنگل سندان باغوں اور خاموش کھیتوں میں ہوکر گزرنے میں اس کی روح آدمی رہ جاتی تھی۔ سرفراز نے سرکری کی پشت سے نگایا اور آتھیں بند کرلیں اور بھین کی اس دہشت کو یاد کیا اور اس یاد میں مزہ محسوس کیا۔

جاڑوں کے شروع میں چار بجے اسکول کی آخری تھنی بجتی۔ سب کے سب غل غیاڑہ کرتے تیزی سے نگلتے اور مست چال سے، اپنے کندھے پہ ڈالے اپنے اپنے گھروں کو روانہ ہوجاتے۔ سرفراز کے دیہات کا کوئی بھی لڑکا کالج میں پڑھنے نہیں آتا تھا وہ راستے کی دہشت کے خیال سے سہا سہا' دھرے دھرے قدموں سے کالج کے گیٹ سے باہر نکا۔ دہشت کے خیال سے سہا سہا' دھرے دھرے قدموں سے کالج کے گیٹ سے باہر نکا۔ انوار بھی اس کے ساتھ ہوتا بھی نہیں ہوتا۔ جب ہوتا تھا تو تالاب تک چھوڑنے

ضرور آتا تھا۔ تالاب سے آگے وہ بھی نہیں پڑھتا تھا کیونکہ تالاب کے بعد سڑک مرحمی متی متی اور موڑ کے بعد سرک مرحمی متی اور موڑ کے بعد میچھے ویکھنے پر تصبہ عائب ہو جاتا تھا۔ رخصت ہوتے وقت وہ اس کی

नुमा फूल मिय कर एक लैम्प नुमा बत्तख़ बना कर उस की रबड़ वापस कर दी थी। हाजिरी के वक़्त उस का नाम हुआ था।

- ''सैय्यद् अनवार अली'' ''हाज़िर जनाब''
- "सरफ़राज धीरे से बोला"
- ''सैय्यद अनवार अली''
- ''हाजिर जनाब तुम्हें स्कूल याद आ रहा होगा।''
- ''हां तुम्हें कैसे मालूम ?''
- ''यार तुम अब भी पहले की तरह घामड़ बार्ते करते हो। मेरा पूरा नाम हाजिरी के वक़्त ड्राइंग मा साब के अलावा और कौन जानता था?''

सरफ़राज यह सुन कर मुस्कुराया हालांकि घामड़ वाला जुमला उसे बुरा लगा था लेकिन वह सोच कर मुतमइन हो गया कि आज मैं अफसर की ऊंची कुर्सी पर बैठा हूं। मेरा बचपन का यह दोस्त प्राइमरी स्कल में उर्दू टीचर है। अपने एहसासे-कमतरी⁽¹⁾ पे क़ाबू पाने के लिए उसे ऐसे ही जुमले बोलने चाहिए।

फिर उसने सोचा अनवार ही तो उसे स्कूल से वापसी पर हौसला देता था वर्ना कस्बे से देहात तक फैले जंगल, सुनसान बाग़ों और ख़ामोश खेतों में हो कर गुज़रने में उस की रूह आधी रह जाती थी। सरफ़राज़ ने सर कुर्सी की पुश्त से लगाया और आंखे बंद कर लीं और बचपन की उस दहशत को याद किया और उस याद में मज़ा महसूस किया।

जाड़ों के शुरू में चार बजे स्कूल की आख़िरी घंटी बजती। सब के सब गुल ग़ण्पाड़ा करते तेजी से निकलते और मस्त चाल से, बस्ते कंधें पर डालते अपने अपने घरों को रवाना हो जाते। सरफ़राज़ के देहात का कोई भी लड़का कालेज पढ़ने नहीं आता था। वह रास्ते की दहशत के ख्याल से सहमा सहमा, धीरे धीरे क़दमों से कालेज के गेट से बाहर निकलता। अनवार कभी उस के साथ होता कभी नहीं होता। जब होता था तो तालाब तक छोड़ने लख़्द आता था। तालाब से आगे वह भी नहीं बढ़ता था क्योंकि तालाब के बाद सड़क मुद्ध गई थी और मोड़ के बाद पीछे देखने पर क़स्बा ग़ायब हो जाता था। रुख़्सत होते वक़्त वह उस की हिम्मत बढ़ाता था।

^{1.} हेच भावना

حت پڑھاتا تھا۔

" تم ڈرنامت سرفراز۔ نہر کی پٹری پار کرو کے تو باغ میں وافل ہونے پر کوئی نہ کوئی آدی ال بی جائے گا"

سرفراز اس کی طرف ہے بس نظروں سے دیکتا اور اس خیال سے کہ انوار پر اس کا ڈر فلاہر نہ ہو چہرے یہ بہاوری کے تیور سجا کر جواب دیتا۔

" نہیں ڈرنے کی کیا بات ہے۔ باغ میں جمی جمی آدی مل جاتے ہیں تو ذرا اطمینان
رہتا ہے اور نہیں ملتے ہیں جب بھی میں گجرا تا نہیں ہوں۔ ' یہ کہہ کر دیبات کی طرف چل
پڑتا۔ دونوں چیچے مڑکر ایک دوسرے کو دیکھتے رہجے۔ سرفراز انوار کے اوجمل ہوتے ہی
گردن کے تعوید کو چھو کر محسوں کرتا اور جلدی جلدی آیة الکری پڑھنے لگا۔ نہر کی پڑی پر
مڑنے سے پہلے وہ چاروں قل پڑھ کر اپنے سینے پر پھونکا اور پھونک پھونک کر قدم رکھتا ہوا
باغ کی طرف بڑھنے لگا۔ یہ غروب کا وقت ہوتا تھا۔ سردیوں میں شامیں جلدی آجاتی
تعییں۔ نہر کی پڑی پر مڑنے سے پہلے پکی سڑک پر اکا دکا آدی سائیکل پہ آتے جاتے مل
جاتے یا گھنٹیاں بجاتی تیل گاڑیاں گزرتیں تو اسے تقویت کا احساس رہتا لیکن پڑی پہ
مڑتے ہی بالکل ساٹا ہو جاتا تھا۔ او پرشیشم کے درخت پہ بیشا کوئی گدھ شاخ بداتا یا پر
کول کر برابر کرتا تو وہ آواز اس سائے کو اور ڈراؤنا بنا دیتی۔ اور یہی وہ وقت ہوتا تھا۔
حب وہ آیة الکری بھول جاتا تھا۔ دہ قل ہو اللہ پڑھنا شروع کر دیتا۔ ای درمیان تیزی

اور اب سامنے باغ آتا۔ آموں کا بوڑھا باغ ڈویتے سورج کی زرد روشیٰ ہیں کہرے میں لیٹا باغ جس کے اندر دو پہر کے وقت بھی سورج ڈوینے والے وقت جیسا اندھیرا ہوتا تھا۔ کیوں کہ ایک دن اتوار کو اس نے دو پہر کے وقت بھی یہ باغ دیکھا تھا۔ شام کے وقت یہ باغ بالکل بدل جاتا۔ لگا جیسے سارے درختوں کی چوٹیاں آپس میں گندھ گئی ہیں۔ فجری کے درخت کے دینچے سے ہو کر گزرتے ہوئے اسے اپنے دل کی تیز تیز دو کرکن سائی دیتی۔ اسے لگا جیسے جنات بابا درخت سے اب اتر ے۔

''तुम डरना मत सरफ़राज। नहर की पटरी पार करोगे तो बाग़ में दाख़िल होने पर कोई न कोई आदमी मिल ही जाएगा। ''

सरफ़राज उस की तरफ़ बेबस नज़रों से देखता और इस ख़्याल से कि अनवार पर इस का डर ज़ाहिर न हो, चेहरे पे बहादुरी के तेवर सज़ा कर जवाब देता।

"नहीं डरने की क्या बात है। बाग़ में कभी कभी आदमी मिल जाते हैं तो जारा इत्मीनान रहता है और नहीं मिलते हैं तब भी मैं धबराता नहीं हूं" यह कह कर देहात की तरफ़ चल पड़ता। दोनों पीछे मुड़कर एक दूसरे को देखते रहते। सरफ़राज़ अनवार के ओझल होते ही गर्दन तावीज़ को छू कर महसूस करता और जल्दी जल्दी आयतलकुर्सी पढ़ने लगता। नहर की पटरी पर मुड़ने से पहले वह चारों कुल पढ़ कर अपने सीने पर फूंकता और फूंक फूंक कर क़दम रखता हुआ बाग़ की तरफ़ बढ़ने लगता। यह गुरूब (2) का वक़्त होता था। सर्दियों में शामें जल्दी आ जाती हैं नहर की पटरी पर मुड़ने से पहले कच्ची सड़क पर इक्का उत्का आदमी साइकिल पे आते जाते मिल जाते या घंटिया बजाती बैलगाड़ियां गुज़रतीं तो उसे तक़वियत (3) का एहसास रहता लेकिन पटरी पे मुड़ते ही बिल्कुल सन्नाटा हो जाता था। उत्पर शीशम के दरख़्त पे बैठा कोई गिद्ध शाख़ बदलता या पर खोल कर बराबर करता तो वह आवाज उस सन्नाटे को और डरावना बना देती। और यही वह वक़्त होता था जब वह आयतलकुर्सी भूल जाता था। वह सुल्होअल्लाह पढ़ना शुरू कर देता। इसी दरमियान तेजी से अव्वल कलमा—तय्यव (4) भी पढ़ लेता।

और अब सामने बाग आता। आमों का बूढ़ा बाग । डूबते सूरज की जर्द रौशनी में, कोहरे में लिपटा बाग जिस के अन्दर दोपहर के वक़्त भी सूरज डूबने वाले वक़्त जैसा अंधेरा होता था। क्योंकि एक दिन इतवार को उसने दोपहर के वक़्त भी यह बाग देखा था शाम के वक़्त यह बाग बिल्कुल बदल जाता। लगता जैसे सारे दरख़्तों की चोटियां आपस में गुन्ध गई हैं। फ़जरी के दरख़्त के नीचे से हो कर गुजरते हुए उसे अपने दिल की तेज तेज धड़कन सुनाई देती। उसे लगता जैसे जिन्नात बाबा दरख़्त से अब उतरे।

^{1.} क़ुरआन की एक सूरत 2. सूर्यास्त 3. शक्ति 4. क.नमा-ए-ला-इलाह.....

باغ سے نکل کر اکھ کے کھیتوں کے پاس مینڈھ پر گزرتے ہوئے اسے محسوں ہوتا کہ اہمی اکھ کے کھیت: سے نکل کر بھیٹریا اس کی ٹانگ پکڑ لے گا۔ وہ پیننے پینے ہو جاتا۔ پھر گیبوں کے کھیت آتے۔ پھر پلکھن کے درخت کے اوپر گاؤں کی مجد کے منارے اور مندر کے کھی نظر آتے۔ تب آہتہ آہتہ اس کے بدن کا کھنچاؤ دور ہوتا ٹانگوں میں طاقت کا احساس پیدا ہوتا۔ پھر وہ بلند آواز میں کوئی فلمی گانا گانے لگنا۔

مہینے میں دو چار بار ایسا ہوتا کہ باغ میں داخل ہوتے ہی اسے آدمی نظر آجاتا جوعمواً پھاوڑا لیے جمونیڑی کی طرف جا رہا ہوتا تھا۔ اسے دیکھ کرگانا شروع کردیتا۔گانا چ میں روک کر دہ بہت اینائیت کے ساتھ آدی کوسلام کرتا۔

آدی اس کا سلام س کر بھادڑا زمین پررکھ کرآ تکھیں مجھا کراہے و کھیا۔
"دام رام بیٹا۔ پٹواری صاحب کے بھانچ ہو۔ انھیں ہماری رام رام بولنا"
وہ روزاندای بجروسے پہکالج سے گھر آنے کی ہمت کر پاتا تھا کہ شاید آج بھی آدمی مل جائے۔ اگر بیر آسرا نہ ہوتا تو وہ رو پیٹ کرکالج سے نام کٹا کر اپنے گاؤں واپس جا چکا ہوتا۔

لین آدی روزانہ نہیں ملا تھا۔ ایک ون کالی سے نگلتے نگلتے درہوگی۔ وہ گراؤ تر پر والی بال کا بیج دیکھنے میں ایسا کو ہوا کہ وقت کا احساس ہی نہیں ہوا۔ جب در کا احساس ہوا تو اس نے سوری کی طرف دیکھا جو آئ قصبے ہی میں زرد ہوگیا تھا۔ وہ تیزی سے کالی کے گیٹ سے باہرنگلا اور دیہات کی طرف چل پڑا نہر کی پڑی پر مڑتے ہی اس نے اپنی بدن میں بیسوچ کر سننی محسوس کی کہ اب تو باغ سے آدمی بھی چلا گیا ہوگا۔ اس نے ماتھ بدن میں بیسوچ کر سننی محسوس کی کہ اب تو باغ سے گزرا درخت کے نیچ سے نگلتے ہی اس خاص کا پیپند پونچھا اور شیشم کے درخت کے نیچ سے گزرا درخت کے نیچ سے نگلتے ہی اس کا بیسامحسوس ہوا جیسے کوئی درخت سے اثر کر اس کے پیچھے چل پڑا ہو۔ پیچھے کی آ ہٹ اچا تک مخم گئی۔ اس فی گر جادو کی گیند مار نے بی مخم گئی۔ اس فی محرک جادو کی گیند مار نے بی والے ہیں۔ اس نے تیزی سے کلمہ پڑھا اور شکھیوں سے پیچھے دیکھا۔ وہ ایک بڑا بندر تھا جو چلتے چلے اچا تک رک کر زمین پر دونوں ہتھیایاں شکھے اس کی طرف د کھ کر فر فر کر رہا

बाग़ से निकल कर ईख के खेतों के पास मेंढ पर गुजरते हुए उसे महसूस होता है कि अभी ईख के खेत से निकल कर भेड़िया उस की टांग पकड़ लेगा। वह पसीने पसीने हो जाता फिर गेहूं के खेत आते। फिर पिलखन के दरख़्त के ऊपर गांव की मस्जिद के मीनारे और मंदिर के कलस नज़र आते। तब आहिस्ता आहिस्ता उस के बदन का खिंचाव दूर होता। टांगो में ताक़त का एहसास पैदा होता। फिर वह बुलन्द आवाज़ में कोई फ़िल्मी गाना गाने लगता।

महीने में दो चार बार ऐसा होता कि बाग़ में दाख़िल होते ही उसे आदमी नज़र आ जाता जो उमूमन फावड़ा लिए झोंपड़ी की तरफ़ जा रहा होता था। उसे देख कर गाना शुरु कर देता। गाना बीच में रोक कर वह बहुत अपनाइयत के साथ आदमी को सलाम करता।

आदमी उस का सलाम सुन कर फावड़ा जमीन पर रख कर आंखे मिचमिचा कर उसे देखता। "राम राम बेटा पटवारी साहब के भांजे हो उन्हे हमारी राम राम बोलना"। वह रोजाना इसी भरोसे पे कालेज से घर आने की हिम्मत कर पाता था कि शायद आज भी आदमी मिल जाए। अगर यह आसरा न होता तो वह रो पीट कर कालेज से नाम कटाकर अपने गांव वापस जा चका होता।

लेकिन आदमी रोजाना नहीं मिलता था एक दिन कालेज से निकलते निकलते देर हो गई वह ग्राऊंड पर वाली-बाल का मैच देखने में ऐसा महव हुआ कि वक्त का एहसास ही नहीं हुआ। जब देर का एहसास हुआ तो उस ने सूरज की तरफ़ देखा जो आज कस्बे में ही जर्द हो गया था। वह तेजी से कालेज के गेट से बाहर निकला और देहात की तरफ़ चल पड़ा। नहर की पटरी पर मुड़ते ही उस ने अपने बदन में यह सोच कर सनसनी महसूस की कि अब तो बाग़ से आदमी भी चला गया होगा उस ने माथे का पसीना पोंछा और शीशम के दरख़्त के नीचे से गुजरा। दरख़्त के नीचे से निकलते ही उसे ऐसा महसूस हुआ जैसे कोई दरख़्त से उतर कर उस के पीछे चल पड़ा हो पीछे की आहट अचानक थम गई। उसे लगा जैसे जिन्नात बाबा पीछे से उस की कमर का निशाना ले कर जादू की गेंद मारने ही वाले हैं। उस ने तेजी से कलमा पढ़ा और कंखियों से पीछे देखा वह एक बड़ा बंदर था जो चलते चलते अचानक रुक कर जमीन पर दोनों हथेलियां टेके उसकी तरफ़ देख कर खुर खुर कर रहा था। उसे बंदर से भी डर लगता था लेकिन

تھا۔ اسے بندر سے بھی ڈر لگنا تھالیکن جنات بابا کے مقابلے میں کم اس نے اپنا بستہ کس کے پکڑا اور باغ کے سامنے جاکر کھڑا ہو گیا۔ آج آگے کا راستہ بھی بند تھا اور چھے کا بھی۔ آگے سنسان باغ جس میں اب آدی ہونے کی اسے کوئی امید نہیں تھی اور چھے بندر۔ سورج ڈوب در ہو چکی تھی اور باغ کے درخت دھی آواز میں شام کی سرگوشیاں شروع کر بچکے تھے وہ باغ میں داخل ہوا اور آگے بڑھا۔ بوڑھے نجرتی کے پاس سے

گزرتے ہوئے اس کا دل زور سے دھڑکا یمی جنات بابا کا اصلی کھر ہے۔

داہنی ست سے آواز آئی۔

" آج بہت در کی بینا"

ارےآدی موجود ہے۔ اسے اتی خوثی اس دن بھی نہیں ہوئی تھی جس دن انگاش دالے ماساب نے آدی کی طرف نگا ہیں دائے ماساب نے آدی کی طرف نگا ہیں داخل ماساب نے آدی کی طرف نگا ہیں اٹھا کیں۔ دہ جمونیڑی کے قریب درختوں کے پاس کہرے میں کھڑا تھا۔ اس نے غور سے دیکھا اس کا بھادڑا اس کے ایک ہاتھ میں تھا جے دہ زمین پہ نکائے ہوئے تھا۔ دوسرے ہاتھ سے دہ انگوچھے کو کانوں پہ برابر کررہا تھا۔ کہرے میں لیٹا۔ دھوتی کرتا انگوچھا پہنے یہ آدی اسے حضرت خصر علیہ السلام کا نوکر لگا۔

" آدي سلام 'وه ڇبک کر بولا:

" جيتے رجو بينا پواري ساب كو جاري رام رام كہنا۔ اندهرا مت كيا كرو"

اس نے کوئی جواب نہیں دیا۔ گھر آ کر کھانا کھا کے والان میں پیٹی خالد کے کلیج سے لگ کر اس نے اٹھیں پورا واقعہ سایا وہ چاہتا تھا خالو اور خالہ کوعلم ہوجائے کہ اسکول کی پڑھائی کے علاوہ راستے میں والیسی کے لیے اسے کیسی جو تھم اٹھائی پڑتی ہے۔ گر خالہ کو جب بیمعلوم ہوا کہ والی بال کے چی کے چکر میں اسے دیر ہوئی تو وہ ہمدردی کے بجائے النا اسے ڈائٹے لکیس نے

رات کو دالان میں رضائی سے بدن اچھی طرح لپیٹ کر اس نے سو چا اگر وہ آدی مرکبا تو میں اسکول سے کیسے دالی آیا کروں گا۔ پھر بیسوچ کرمطمئن ہواکہ وہ آدی دیکھنے

बिन्नात बाबा के मुक़ाबले में कम। उस ने अपना बस्ता बहुत कस के पकड़ा और बाग़ के सामने जा कर खड़ा हो गया। आज आगे का रास्ता भी बन्द था और पीछे का भी। आगे सुनसान बाग़ जिस में अब आदमी होने की उसे कोई उम्मीद नहीं थी और पीछे बन्दर।

सूरज डूबे देर हो चुकी थी और बाग के दरख़्त धीमी आवाज में शाम की सरगोशियां शुरु कर चुके थे। वह बाग्र में दाख़िल हुआ। आगे बढ़ा। बूढ़े फ़जरी के पास से गुजरते हुए उस का दिल जोर से धड़का यही जिन्नात बाबा का असली घर है।

दाहिनी सम्त से आवाज आई

''आज बहुत देर की बेटा''

अरे आदमी मौजूद है उसे इतनी खुशी उस दिन भी नहीं हुई थी जिस दिन इंगलिश वाले मासाब ने "माई काउ" लिखने पर उसे वेरी गुड दिया था। उस ने आदमी की तरफ़ निगाहें उठायों वह झोंपड़ी के क़रीब दरख़ों के पास कुहरे में खड़ा था उस ने ग़ौर से देखा उसका फावड़ा उसके एक हाथ में था जिसे वह जमीन पर टिकाए हुए था दूसरे हाथ से वह अंगोछा को कानो पे बराबर कर रहा था। कुहरे में लिपटा, धोती कुर्ता अंगोछा पहने यह आदमी उसे हज़रत खिज़रअलैहिस्सलाम (1) का नौकर लगा।

''आदमी सलाम'' वह चहक कर बोला।

"जीते रहो बेटा पटवारी साब को हमारी राम राम कहना—अंधेरा मत किया करो।"

उस ने कोई जवाब नहीं दिया। घर आ-कर खाना खा के दालान में बैठी खाला के कलेजे से लग कर उस ने उन्हें पूरा वाकिआ⁽²⁾ सुनाया। वह चाहता था खालू और खाला को इल्म हो जाए कि स्कूल की पढ़ाई के अलावा रास्ते में वापसी के लिए उसे कैसी जोखिम उठानी पड़ती है। मगर खाला को जब यह मालूम हुआ कि वाली-बॉल के मैच के चक्कर में उसे देर हुई तो वह हमदर्दी के बजाए उलटा उसे डॉटने लगीं।

रात को दालान में रजाई से बदन अच्छी तरह लपेंट कर उस ने सोचा अगर 1. एक नबीं 2. घटना/

میں تو خالو سے ہمی چھوٹا گلا ہے ایمی نیس مرے گا۔

"مرفراز اِتمعاری خالد کی بیٹی کی شادی ہے .خالد نے جھے بلاکر کہا کد مرفراز تو ہمیں بالکل بھول کیا۔ تم اس سے جاکر کہوکہ خالد اور خالواسے دیکھنے کو بہت بے تاب ہیں اسے شادی میں ضرور آتا ہے "

سرفراز کو بین کر بہت عدامت ہوئی۔ وہ عدامت کے اس احساس کو چمپانا جاہتا تھا۔ اس نے سنجیدہ لیج لیکن کھوکھلی آ واز بی انوار کو بتایا کہ سرکاری ملازمت خصوصاً ذمہ داری کے عہدے پر کام کرنے بیں بالکل فرمت نہیں ملتی۔ پھر اسے عائشہ کی یاد آئی جے اس نے اپنی کود بیس کھلایا تھا۔ وہ کتنی جلدی اتنی بڑی ہوگئی۔

"شادی کب ہے؟"

'' پرسول بادات آئے گی''۔

"ارے۔ ان حالات میں تاریخ کوں رکھ دی خالہ نے" تم نے دیکھا نہیں، کیے داوانے ہورہے ہیں سب لال بمبھو کا چرے لیے ٹرکوں اور ٹریکٹروں پر جلوس تکال رہے ہیں۔ ہاتھوں میں ہتھیار اور کیے نفرت انگیز نعرے...."۔

انواراے دیکتارہا۔ چر بولا:

"شی نے بھی خالہ سے کہا تھا کہ آج کل تقریب کرنے والا وقت نہیں ہے۔ گاؤں گاؤں میں وہ بات بھیل گئی ہے۔ خود انھیں کے گاؤں میں لوگوں کے لیچ بدل کے ہیں۔
گرخالہ کی مجوری ہے۔ خالو کے بھائی کے بیٹے سے رشتہ ملے ہوا ہے جو تین دن بعد جد ہ والیں چلا جائے گا۔ خالو بھی اب بہت کرور ہوگئے ہیں۔ اپنے سامنے ماکشہ کے فرض سے سبکدوش ہونا چاہے ہیں۔ تسمیس آج بی چانا ہوگا سرفراز ہما بھی کوفون کر کے تیا رہونے کو کہدو۔"

"کیا تم نے اخبار نہیں پڑھا انوار۔ پرسول ریل گاڑی سے اتار کر وہ چپ ہوگیا۔ انوار بھی خاموش ہوگیا۔ گر بولا۔

"اجماتو بهابحي اور بجال كويبين رينے دو"

वह आदमी मर गया तो मैं स्कूल से कैसे वापस आया करुंगा। फिर यह सोच कर मुत्मइन हुआ कि वह आदमी देखने में तो ख़ालू से भी छोटा लगता है। अभी नहीं मरेगा।

"सरफ़राज! तुम्हारी खाला की बेटी की शादी है। ख़ाला ने मुझे बुला कर कहा कि सरफ़राज तो हमें बिल्कुल भूल गया। तुम उससे जा कर कहो कि ख़ाला और ख़ालू उसे देखने को बहुत बेताब हैं उसे शादी में जरूर आना हैं।

सरफ़राज को यह सुन कर बहुत नदामत हुई। वह नदामत के इस एहसास को छुपाना चाहता था। उसने सन्जीदा लहजे लेकिन खोखली आवाज में अनवार को बताया कि सरकारी मुलाजमत खुसूसन जिम्मेदारी के ओहदे पर काम करने में बिल्कुल फ़ुरसत नहीं मिलती फिर उसे आएशा की याद आई, जिसे उस ने अपनी गोद में खिलाया था वह कितनी जल्दी इतनी बडी हो गई।

- ''शादी कब है?''
- ''परसो बारात आएगी''
- "अरे इन हालात में तारीख़ क्यों रख दी ख़ाला ने" तुम ने देखा नहीं, कैसे दीवाने हो रहे हैं सब लाल भभूका चेहरे लिए ट्रको और ट्रैक्टरों पर जुलूस निकाल रहे हैं हाथों में हथियार और कैसे नफ़रत अंगेज़ नारे......

अनवार उसे देखता रहा फिर बोला

"मैं ने भी ख़ाला से कहा था कि आज कल तक़रीब करने वाला वक़्त नहीं है। गांव गांव में वह बात फैल गई है। खुद उन्हीं के गांव में लोगो के लहजे बदल गये हैं। मगर ख़ाला की मजबूरी है। ख़ालू के भाई के बेटे से रिश्ता तय हुआ है जो तीन दिन बाद जहा वापस चला जाएगा ख़ालू भी अब बहुत कमज़ोर हो गए हैं। अपने सामने आएशा के फर्ज़ से सुबुकदोश⁽¹⁾ होना चाहते हैं। तुम्हें आज ही चलना होगा सरफ़राज भाभी को फ़्रोन कर के तैयार होने को कह दो।"

"क्या तुम ने अख़बार नहीं पढ़ा अनवार। परसों रेलगाड़ी से उतार कर" वह चुप हो गया। अनवार भी ख़ामोश हो गया फिर बोला

"अच्छा तो भाभी और बच्चों को यही रहने दो"

"हां इन लोगो को नहीं ले जा पाऊंगा"

^{1.} मुक्त

"بال-ان لوكون كونيين في جاياؤن كا"

کیارہ بج میں ۔۔۔۔ اگر بارہ بج بھی کار سے چلیں تو شام چھ سات بج تک خالہ کے ہاں پہنچ مائیں گے۔''

" إل تقريباً وْ حالَى تَيْن سوكلوميشر كا سنر بـ "

رائے میں نہر کے بل پر اچا تک کچھ لوگوں نے گاڑی کے سامنے آکر گاڑی رد کئے کا اشارہ کیا۔ دونوں کے دل بیٹ گئے کیوں کہ بچاؤ کے لیے ان کے پاس کوئی ہتھیار نہیں تھا۔ سامنے بل پرٹرک اورٹر مکٹروں کا جلوس آرہا تھا۔ لوگ دیوانہ وار نعرے لگا رہے تھے اور ایک عجیب جذب کے ساتھ آگے برجتے کے آرہے تھے۔

دونوں کے ذہنوں نے کام کرتا بند کردیا۔ دونوں گاڑی میں بیٹے رہے جلوس برابر سے گزرتا رہا۔ گاڑی رکوائے والے وہیں کھڑے کھڑے نعروں کا جواب دیتے رہے۔ سرفراز نے آین الکری یاد کی۔

جلوں گزر گیا تو وہ لوگ بھی زور زور ہے کچھ باتی کرتے جلوں کے ساتھ بوھ گئے۔ سرفراز سخت وجی دباؤ میں تھا اس لیے گاڑی فورا اشارٹ نیس کر سکا۔ دونوں بیٹھے ایک ودسرے کا ڈرمحسوں کرتے رہے۔

سرفراز نے گاڑی اشارٹ کی تو انوار بولا:

" کلے عام سڑک پر اکا دکا آدمیوں سے پکوئیس کتے۔ اکا دکا آدمیوں سے نینے کے لیے شہر شمر گاؤں گوگوں کو تیا رکیا کیا ہے۔ ویسلے جعد کو جب احمد شہر کی پڑی سے باغ کی طرف مڑا تو اچا کے کسی نے بیجھے سے"

سرفراز کے بدن میں سر سے پاؤل تک سنی ی دور گئی۔ وہ خالی ذہن کے ساتھ گاڑی چلاتا رہا۔ انوار بتاتا رہا۔

"اگر پورا جلوس اکا دکا آدمیوں پرحملہ کرے تو بدنامی بھی تو بہت ہوگ۔ ویے اپنی طرف سے بھی تیاریاں ٹھیک ٹھاک ہیں۔" اس نے یہ بات رازداری کے لیجے میں بتائی۔ جب دو نهرکی پغری پر مڑے تو سورج ڈوب رہا تھا۔ سرفراز کو اپنا بھین یاد آگیا۔

''ग्यारह बजे हैं अगर बारह बजे भी कार से चले तो शाम छ: सात बजे तक ख़ाला के हां पहुंच जाएंगे''

''हां तक़रीबन ढाई तीन सौ किलो मीटर का सफ़र है''

रास्ते में नहर के पुल पर अचानक कुछ लोगो ने गाड़ी के सामने आ कर गाड़ी रोकने का इशारा किया। दोनों के दिल बैठ गये क्योंकि बचाव के लिए उन के पास कोई हथियार नहीं था। सामने पुल पर ट्रक और ट्रैक्टरो का जुलूस आ रहा था। लोग दीवाना वार नारे लगा रहे थे। और एक अजीब जज्बे के साथ आगे बढ़ते चले आ रहे थे।

दोनों के ज़ेहनो ने काम करना बन्द कर दिया। दोनों गाड़ी में बैठे रहे। जुलूस बराबर से गुजरता रहा। गाड़ी रुकवाने वाले वही खड़े खड़े नारों का जवाब देते रहे। सरफ़राज ने आयतलकुर्सी⁽¹⁾ याद की।

जुलूस गुजर गया तो वह लोग भी जोर जोर से कुछ बाते करते जुलूस के साथ बढ़ गये।

सरफ़राज सख़्त जेहनी दबाव में था इस लिए गाड़ी फौरन स्टार्ट नहीं कर सका। दोनों बैठे एक दूसरे का डर महसूस करते रहे।

सरफ़राज ने गाड़ी स्टार्ट की तो अनवार बोला।

"खुले आम सड़क पर इक्का दुक्का आदिमयों से कुछ नहीं कहते इक्का दुक्का आदिमयों से निपटने के लिए शहर शहर गांव गांव लोगों को तैयार किया गया है। पिछले जुमे को जब अहमद शहर की पटरी से बाग़ की तरफ़ मुड़ा तो अचानक किसी ने पीछे से"

सरफ़राज के बदन में सर से पांव तक सनसनी सी दौड़ गई वह ख़ाली ज़ेहन के साथ गाड़ी चलाता रहा। अनवार बताता रहा।

"अंगर पूरा जुलूस इक्का दुक्का आदिमयों पर हमला करे तो बदनामी भी बहुत होगी। वैसे अपनी तरफ़ से भी तैयारियां ठीक ठाक है" उस ने यह बात राजदारी के लहजे में बताई।

जब वह नहर की पटरी पर मुड़े तो सूरज डूब रहा था। सरफ़राज़ को अपना बचपन याद आ गया।

^{1.} क्रुरआन की एक आयत

آزادی کے بعد اردو انسانہ

تب اسے یہ خاموش نہر، سنسان پٹری اور سائیں سائیں کرتے باغ کتنے جمیا تک لکتے تھے۔

اس نے اچا تک گاڑی کے بریک لگائے۔ ہیڈ لائٹ کی روشی میں ایک برا سا بندر ہماگ کر مرفر کر رہا تھا۔ دونو ل مرائے۔ بندر ہماگ کر درخر کر رہا تھا۔ دونو ل مرائے۔ بندر ہماگ کر درخت پر چڑھ گیا۔ اوپر کسی گدھ نے پہلو بدلا تو پھڑ پھڑا ہٹ کی آواز ہوئی۔ سرفراز نے سویا پہلے اس پھڑ پھڑا ہٹ سے کتنا ڈرلگنا تھا۔

" توبداحمد دوكاندار والامعامله كب بواتها؟"

" آج جارون ہو گئے۔"

ارے، سرفراز کی بھیلیاں اسٹیرنگ وہیل برنم ہوگئیں۔

"كيا بوا؟" انوارن يوجها حالال كداس معلوم تها كدكيا بوار

" نبيس كونبيس يعنى ابهى بالكل تازه واقعد ب- كحمد يد لكا؟"

" پید کیا. لگتا۔ الفے تھانے وار نے وفن کے بعد ہی سب کو ڈانٹا کہ جب ایسے حالات چل رہے میں تو سورج مندے گھر سے باہر نگلنے ہی کیوں ویا۔ اندھیرے میں حملہ کرنے والوں کو مارکر بھا گئے میں سہولت رہتی ہے۔'

پڑی سے اترتے ہی باغ سامنے آگیا۔

" گاڑی مین ردک کر بیک کر کے لگادو۔ آگے راستہ نہیں ہے۔" انوار بولا۔

سرفراز نے گاڑی بیک کر کے نگادی اور باغ کے سامنے جاکر کھڑا ہوگیا۔

کہرے میں لیٹا باغ بہت دن بعد دیکھا تھا۔ آئ اسے باغ سے کوئی خوف محسوں نہیں ہوا۔ لیکن ایک عجیب سا ساٹا دونو سے اندر خاموثی سے اثر آیا تھا جو باتی کرنے کے باد جود ٹوٹ نہیں رہا تھا۔

دونوں جب جنات بابا والے پرانے درخت کے پاس سے گزر رہے تھے تو سرفراز نے اچا تک رک کر انوار کا ہاتھ اسے زور سے دبایا کہ دکمن بڈیوں تک پہنچ گئی۔ انوار نے سرفراز کی طرف دیکھا۔ سرفراز نے آگھ کے اشارے سے باغ کی بوی

तब उसे यह ख़ामोश नहर सुनसान पटरी और सांए सांए करते बाग़ कितने भयानक लगते थे।

उस ने अचानक गाड़ी के ब्रेक लगाये हेडलाइट की रौशनी में एक बड़ा सा बन्दर हथेलियां जमीन पर टेके उन की तरफ़ देख कर खुर खुर कर रहा था। दोनों मुस्कुराए, बन्दर भाग कर दरख़्त पर चढ़ गया। ऊपर किसी गिद्ध ने पहलू बदला तो फड़फड़ाहट की आवाज हुई। सरफ़राज ने सोचा पहले इस फड़फड़ाहट से कितना डर लगता था।

- ''तो यह अहमद दुकानदार वाला मामला कब हुआ था?''
- ''आज चार दिन हो गये''
- "अरे" " सरफ़राज की हथेलियां स्टेरिंग व्हील पर नम हो गई।
 - ''क्या हुआ ?'' अनवार ने पूछा। हांलाकि उसे मालूम था कि क्या हुआ।
 - ''नहीं कुछ नहीं यानी अभी बिल्कुल ताजा वाक्नेया है। कुछ पता लगा ?''
- "पता क्या लगता। उलटे थाने— दार ने दफ़न के बाद ही सब को डांटा कि जब ऐसे हालात चल रहे हैं तो सूरज मुदें घर से बाहर निकलने ही क्यों दिया? अंधेरे में हमला करने वालो को मार कर भागने में सहूलत रहती है।"

पटरी से उतरते ही बाग़ सामने आ गया।

"गाड़ी यहीं रोक कर बैंक कर के लगा दो। आगे रास्ता नहीं है" अनवार बोला सरफ़राज ने गाड़ी बैंक कर के लगा दी और बाग़ के सामने जा कर खड़ा हो गया। कोहरे में लिपय बाग़ बहुत दिन बाद देखा था। आज उसे बाग़ से कोई ख़ौफ़ महसूस नहीं हुआ लेकिन एक अजीब सा सन्नाय दोनों के अन्दर ख़ामोशी से उतर आया था जो बाते करने के बावजूद टूट नहीं रहा था।

दोनों जब जिन्नात बाबा वाले पुराने दरख़्त के पास से गुज़र रहे थे तो सरफ़राज़ ने अचानक रुक कर अनवार का हाथ इतने ज़ोर से दबाया कि दुखन हिड्ड्यों तक पहुंच गई।

अनवार ने सरफ़राज़ की तरफ़ देखा। सरफ़राज़ ने आंख के इशारे से बाग़ की बड़ी मेंढ की तरफ़ इशारा किया। अनवार को कुछ नज़र नहीं आया। अंधेरे में

آزادی کے بعد اردو افسانہ

مینڈھ کی طرف اشارہ کیا۔ انوار کو کچھ نظر نہیں آیا۔ اندھیرے میں وہ اس جگہ کا تعین بھی نہیں کریایا جہاں سرفراز نے اشارہ کیا تھا۔

سرفراز نے اس بار اور بھی زیادہ زور سے ہاتھ دبایا اور اس کا ہاتھ مضبوطی سے پکڑے پکڑے واپس مڑا اور کھینچنے والے انداز میں دوڑتا، گرتا، سنجلتا باغ سے باہر نکلا۔ گاڑی میں انوار کو دکھیل کرگاڑی اشارٹ کی اور فل اسپیڈ پر نہر کی پٹری پر چڑھا کر بل پار کرکے کچی سڑک پر آگیا۔ سرفراز شدید کھنچاؤ کے عالم میں گاڑی چلا رہا تھا۔ اس کا چہرہ ہولے ہوئے کا نیب رہا تھا اور یورا بدن لیسٹے سے شرابور ہو چکا تھا۔

''اب دورنگل آئے ہیں۔ بتاؤ تو سمی کیا بات تھی؟'' سرفراز نے گاڑی ردک دی۔ ''باغ کی مینڈھ پر درختوں کے درمیان ایک آدمی جھکا کھڑا تھا۔ اس کے ہاتھ میں کوئی ہتھیار تھا جے وہ زمین پر نکائے ہوئے تھا۔''



वह उस जगह का तअय्युन⁽¹⁾ भी नहीं कर पाया जहां सरफ़राज ने इशारा किया था।

सरफ़राज ने इस बार और भी ज्यादा जोर से हाथ दबाया और उसका हाथ मजबूती से पकड़े पकड़े वापस मुड़ा और खींचने वाले अंदाज में दौड़ता, गिरता, संभलता बाग से बाहर निकला। गाड़ी में अनवार को धकेल कर गाड़ी स्टार्ट की और फुल स्पीड पर नहर की पटरी पर चढ़ाकर पुल पार करके कच्ची सड़क पर आ गया। सरफ़राज शदीद⁽²⁾ खिंचाव के आलग में गाड़ी चला रहा था उसका चेहरा होले होले कांप रहा था। और पूरा बदन पसीने से शराबोर हो चुका था।

''अब दूर निकल आये हैं। बताओ तो सही क्या बात थी?'' सरफ़राज ने गाड़ी रोक दी।

"बाग़ की मेंढ पर दरख़्तों के दरिमयान एक आदमी झुका खड़ा था उस के हाथ में कोई हथियार था जिसे वह जमीन पर टिकाये हुए था।"



^{1.} निर्धारण 2. सख्त (तीव्र)

شهر گریه کا مکیں

قصبے کے بڑے بڑے والانوں والا پورا کا بورا گھر سنسان اور اندھیارا ہے۔ گھر میں آج وہ اکیلا ہے۔ سائیس سائیس کرتی خاموثی اور اتنے بڑے گھر کے لیے ناکافی ایک جھوٹی می لائٹین کی روشنی میں وہ سارے گھر کو ایک نگاہ میں نہیں دکھے سکا۔

نہ جانے کیوں اس کادل چاہتا ہے کہ وہ سارے کے سارے گھر کو یکبارگ و کھے

ہر جب کہ گھر کا ہر کونہ نہ صرف اس کا ویکھا ہوا بلکہ برتا ہوا بھی ہے ۔۔۔۔۔ کیونکہ یہ اس کا مر جے ۔۔۔۔۔ کیونکہ یہ اس کا مر جی مقیم نہیں ہے، گر ان بھر ہیں ان گنت بار، ہر موسم، ہر وقت میں وہ بھی جلدی جلدی ہلدی، بھی زیادہ وقفے وقفے وقفے سے اس گھر میں آتا اور رہتا رہا ہے اور آج بھی اپ گھر میں رہنے ہی آیا ہے کہ پیدائش سے اب تک یہ گھر میں رہنے ہی آیا ہے کہ پیدائش سے اب تک یہ گھر میں رہنے ہی آیا ہے کہ پیدائش

وہ آج دوپہر ہی رات بحر کا سفر کر کے شہر سے اپنے آبائی قصبے کے گھر میں آیا تھا۔... جب وہ گھر بہنچا تو سب موجود تھے... وہ گھر میں داخل ہوا تو اسے سب کے چروں پر جیب ک اداک ، گھراہٹ ، افراتفری اور خوف جیسی پر چھا کیاں منڈلاتی محسوں ہوئیں ... تھے کی حدود میں داخل ہوتے ہوئے بھی اسے ایسا ہی لگا تھا گر گھر پہنچنے کی جلدی میں اس نے اس پر کوئی خاص توجہ نہ دی تھی۔

حسب عادت وہ جاکر مال سے چٹ گیا۔ ادھیر ہونے کو آیا تھا گر مال کو دیکھتے ہی عربھول جاتا تھا۔ استحسن ہوا کہ مال کی دھر کنوں میں بھی خوف شامل ہے۔
'' کیا ہوا مال؟'' مال کے سینے سے لگے لگے اس نے پوچھا۔
''اچھا ہوا تو آئمیا'' مال بولی:

शहरे-गिरया का मर्की

क़स्बे के बड़े बड़े दालानों वाला पूरा घर सुनसान और अधियारा है। घर में आज वह अकेला है। सांय सांय करती ख़ामोशी और इतने बड़े घर के लिए नाकाफ़ी एक छोटी सी लालटेन की रौशनी में वह सारे घर को एक निगाह में नहीं देख सकता।

न जाने क्यों उस का दिल चाहता है कि वह सारे के सारे घर को यकबारगी⁽²⁾ देख ले जब कि घर का हर कोना न सिर्फ़ उस का देखा हुआ बिल्क बरता हुआ भी है..... क्योंकि यह उसी का घर है..... यह बात और कि वह पिछले कई बरसों से इस घर में मुक़ीम नहीं है, मगर इन बरसों में अंगिनत बार, हर मौसम, हर बक़्त में वह कभी जल्दी जल्दी कभी ज्यादा बक़्फ़े वक़्फ़े से इस घर में आता और रहता रहा है और आज भी अपने घर में रहने ही आया है कि पैदाइश से अब तक यही घर उस के लिए पनाहगाह रहा है।

वह आज दोपहर ही रात भर का सफ़र कर के शहर से अपने आबाई⁽³⁾ क़स्बे के घर में आया था......जब वह घर पहुंचा तो सब मौजूद थे...... वह घर में दाख़िल हुआ तो सब के चेहरे पर अजीब सी उदासी, घबराहट, अफ़रा तफ़री और खौफ़ की सी परछाईयां मंडलाती महसूस हुई......। क़स्बे की हुदूद में दाख़िल होते हुए भी उसे ऐसा ही लगा था मगर घर पहुंचने की जल्दी में उस ने उस पर कोई ख़ास तकजोह न दी थी।

हसबे-आदत⁽⁴⁾ वह जा कर मां से चिमट गया। अधेड़ होने को आया था मगर मां को देखते ही उम्र भूल जाता था-----उसे महसूस हुआ कि मां की

^{1.} रोने वाले शहर का वासी 2. एक बार में 3. पेतृक 4. आदत के अनुसार

آزادی کے بعد اردو انسانہ

''وہ کبوتر والے ماموں منے تا'

''وہ آج مج سدهار گئے، جنازہ عصر میں اٹھایا جائے گا، اچھا ہوا تو آگیا، تیری بھی شرکت ہوجائے گی۔''

"انالله اس كى زبال سے ادا ہوا۔"

کبوتر والے ماموں اگر چہاس کے سکے ملموں نہ تنے مگر ان سے بچپن اور اڑکین کی ا نہ جانے کتنی یادیں وابستہ تھیں

وہ سارے محلے کے ماموں تھے۔ مرغیاں، طوطے بطخیں، بکریاں اور بہت سے کبوتر پال رکھے تھے اس لیے کبوتر والے ماموں کے نام سے مشہور ہوگئے تھے۔

"کیا ہوا تھا ماموں کو؟" اس کے رندھے گلے سے آواز نگل۔

" بيڻا وه آندهي "

"نو كيا يهال بحى"

"بال بينا اب تويهال بعي أ

धड़कनों में भी ख़ौफ़ शामिल है।

- ''क्या हुआ मां ?'' मां के सीने से लगे लगे उस ने पूछा।
- ''अच्छा हुआ तू आ गया'' मां बोली।
- ''वह कब्तर वाले मामूं थे ना……''
- ''हाँ हाँ वह तो अब बहुत ज़ईफ़⁽¹⁾ हो चुके होंगे····· ''

वह आज सुबह सिधार गये, जनाजा असर में उठाया जाएगा, अच्छा हुआ तू आ गया, तेरी भी शिर्कत हो जाएगी,''

''इन्ना लिल्लाह⁽²⁾......'' उस की जुबान से अदा हुआ,

कबूतर वाले मामूं अगरचे उस के सगे मामूं न थे मगर उनसे बचपन और लड़क पन की ना जाने कितनी यार्दे वाबस्ता थीं,

वह सारे मोहल्ले के मामूं थे, मुर्ग़ियां, तोते, बत्तखें, बकरियां और बहुत से कबूतर पाल रखे थे इस लिए कबूतर वाले मामूं के नाम से मशहूर हो गए थे। शादी ब्याह मामूं ने किया नहीं था, रिश्तेदार उन के थे नहीं, बस सारा मोहल्ला उन का रिशतेदार था.....गिर्मयों की लू वाली दोपहरों और जाड़े की चान्दनी रातों में इधर उधर घूमते लड़कों को हांक-हांक कर घर भेजते थे, मोहल्ले का कोई भी इज्तेमाई काम हो मामूं आगे आगे रहते, मामूं की शख़सियत में सब से नुमायां चीज उनकी पाटदार आवाज थी...... मीलाद बहुत पढ़ते थे और मुसद्दस⁽³⁾ तो इतना मोअस्सर पढ़ते थे कि मोहल्ले की बीवियां चिक़ के पीछे बैठकर फरमाइशी तौर पर उन से सुनतीं और टप टप आंसू बहातीं......कृष्ण लीला और राम लीला में बड़े एहतमाम से हिस्सा लेते......बड़े शौक़ से लड़को को जमा करके पिंडाल और स्टेज सजाते मामूं लहक लहक कर मुकालमे दोहराते, जो कुछ कमाते उन्हीं चीज़ो में खर्च कर डालते......एक तरह से मोहल्ले की हर समाजी और तहजीबी जिम्मेदारी उन्होंने अपने सर ले रखी थी, सब उनकी इज्जत भी करते, उन से डरते भी और उन से मोहब्बत भी करते।

''क्या हुआ था मामूं को ?'' उसके रून्धे गले से आवाज निकली ''बेटा वह आंधी ……''

^{1.} बूढ़े 2. मौत की ख़बर मिलने पर पढ़ने वाली दुआ 3. छ: पंक्तियों वाली कविता

آزادی کے بعد اردو انسانہ

" ہاں بیٹا پھر بھی اچھا ہوا تو آگیا اب کم از کم اپنے گھر میں

سب کے چبرے زرد تھے....

عصر کا وقت تھا، سب ہی مامول کے جنازے میں شرکت کے لیے جانا جا ہتے تھے۔ . ''گھر کو اکیلا جھوڑ نا ٹھیک نہیں'' ماں بولی:

"كى كوتو گھر ميں ہونا جا ہے آج كل حالات

"میں رہ جاتا ہوں گھر پر آپ سب ہو آئے۔" وہ جلدی سے بولا۔ اتن جلدی سے کہ اس سے پہلے کوئی اور نہ بول بڑے۔

ایما اس نے غیر اختیاری طور پر کیا تھا گر کہنے کے بعد اے لگا کہ اس نے ٹھیک کیا ہے۔ وہ نہیں چاہتا تھا کہ مامول کے آخری دیدار کی وجہ سے اس کے ذہن اور آنکھوں میں موجود مامول کی تصویر بکھر کر مردے میں تبدیل ہوجائے۔

اس نے ماموں کو سالہا سال سے نہیں دیکھا تھا، جب بھی وہ شہر سے گھر آتا تو اتنی جلدی میں ہوتا کہ کہیں اور جانے کا اتفاق کم ہی ہوتا۔

" فھیک ہے، سفرے تھے ہوئے بھی آئے ہو، ہم لوگ ہوآتے ہیں۔"

سب کے جانے کے بعد اس نے گھر میں ایک طرح کا سکون محسوس کیا، ہاتھ مند رھویا اور صحن میں بڑے باتک پر دراز ہوگیا۔ تھکن کی وجہ سے اس کی آٹکھ لگ گئ۔

آ نکھ کھلی تو سورج غروب ہورہا تھا۔ تاریکی نے درود بوار کو گھیرنا شروع کر دیا تھا۔ وہ پلٹک سے اٹھا اور لائٹ کا سوئج کھولا گرردشی نہ ہوئی۔ ابھی اتنا اندھیرا نہ ہوا تھا کہ وہ چیز دں کو تلاش نہ کریا تا۔

اے معلوم تھا کہ دائین گھر کے کس کونے میں رکھی رہتی ہے۔ دائین جلا کر اس نے دالان کے در میں لگے بک میں ٹا نگ دی۔

"اب تو سب کولوث آنا چاہیے تھا۔" اس نے سوچا۔ اب اسے اکتاب میں ہورہی تھی۔ وہ ایک بار پھر بینک برلیٹ گیا۔ اس کی آئیسیں دروازے پرتھیں۔

- ''तो क्या यहां भी''
- ''हां बेटा अब तो यहां भी......''
- ''मगर माम्ं तो रामलीला''
- ''हां बेटा फिर भी अच्छा हुआ तू आ गया अब कमअज कम अपने घर में.....''

सब के चेहरे ज़र्द थे.....

असर का वक्त था सब ही मामूं के जनाजे में शिग्कत के लिए जाना चाहते थे,

- ''घर को अकेला छोड़ना ठीक नहीं'' मां बोली,
- ''किसी को तो घर में होना चाहिये आज कल हालात''
- "में रह जाता हूं घर पर आप सब हो आइए" वह जल्दी से बोला, इतनी जल्दी से कि उससे पहले कोई और न बोल पड़े,

ऐसा उसने ग़ैर इख़्तेयारी तौर पर कहा था मगर कहने के बाद उसे लगा कि उसने ठीक किया है, वह नहीं चाहता था कि मामूं के आख़री दीदार की वजह से इस के ज़ेहन और आंखों में मौजूद मांमू की तस्वीर बिखर कर मुदें में तब्दील हो जाए।

उसने मामूं को सालहा साल से नहीं देखा था, जब भी वह शहर से घर आता तो इतनी जल्दी में होता कि कहीं और जाने का इत्तेफ़ाक़ कम ही होता।

"ठीक है सफ़र से थके हुए भी आए हो हम लोग हो आते हैं।"

सब के जाने के बाद उसने घर में एक तरह का सुकून महसूस किया, हाथ मुंह धोया और सेहन में पड़े पलंग पर दराज हो गया, थकन की वजह से उस की आंख लग गई।

आंख खुली तो सूरज गुरूब⁽¹⁾ हो रहा था, तारीकी ने दरोदीवार को घेरना शुरू कर दिया था, वह पलंग से उठा और लाइट का स्विच खोला मगर रौशनी न हुई, अभी इतना अंधेरा न हुआ था कि वह चीजों को तलाश न कर पाता।

उसे मालूम था कि लालटेन घर के किस कोने में रखी रहती है, लालटेन जला कर उसने दालान के दर में लगे हुक में दांग दी।

^{1.} सूर्यास्त

آزادی کے بعد اردو افسانہ

تھوڑی دیر بعد لالٹین خود بخو دہھمکنے گی۔

''شاید تیل ختم ہور ہا ہوگا یا پھراو پر نظی ہونی کی دجہ سے ہوا سے لو تعر تعرار ہی ہوگ۔'' وہ اٹھا۔ لائٹین اتاری۔

" تيل تو ٹھيك ہے۔"

اب لائین کو اس نے ینچ رکھ دیا اور پاس بیٹھ کر شمطاتی لوکو دیکھنے لگا۔ دفعتا اے لگا کہ گھر کے باہر تیز آندھی چل رہی ہے۔ بھاری بھاری بوٹوں اور نعروں کی آوازیں دور ہے آتی سائی دے رہی ہیں۔ اس نے دروازے کی طرف کان لگادیے گر سائے کے سوا کچھ سائی نہ دیا۔

اب وہ چے کے اکتا چکا تھا۔ وقت گزاری کے لیے اس نے عاد تا گھر میں کتاب تلاش کرنی شروع کردی ۔۔۔۔۔ ہاتھ میں لائٹین لٹکائے وہ کتاب تلاش کرتا پھر رہا تھا۔ جہال جہال وہ لائٹین لئے کہ جہال وہ لائٹین لئے کہ جہال وہ لائٹین لئے کہ جہال ہو کہ جہال ہونے لگا جہال ہونے کا احساس ہونے لگا جب کہ وہ بچپن سے نہ جانے کتنی بار اس گھر میں اکیلا رہ چکا تھا۔ اسے پورے گھر میں بھی بھی اکیلے رہنا برانہیں لگتا تھا بلکہ ایک طرح کی طمانیت کا سا احساس ہوتا تھا۔ گر آج اسے ور لگ رہا تھا۔

"بڑے شہر کے چھوٹے سے مکان میں رہتے رہتے مجھے استے بڑے گھر میں تنہا رہنے کی شاید عادت نہیں رہی۔" اس نے سوچا اور والان میں بنی ایک الماری کے بث کھولنے لگا۔ وہ جانتا تھا کہ گھر میں کہیں اور کتاب ہو یا نہ ہو دادا کی الماری میں ضرور کتابیں ہوںگ۔

اس نے الماری کے بٹ کھولے تو کتابوں کے بجائے کئی عدد چوہے، کچھ خالی ڈ بے اور لوے کے کچھ خالی دیا ہے۔

اے لگا کہ بہت سارے مردے گفن سمیت اس پر گر پڑے ہیں۔ آندھی کے جھکڑ باہرے گھر میں تھس آئے ہیں۔

ز من ير دهري الثين الث كر معيك كيخوف اس جكر چكا تها-

"अब तो सब को लौट आना चाहिये था," उसने सोचा अब उसे उकताहट सी हो रही थी, वह एक बार फिर पलंग पर लेट गया, उसकी आंखें दरवाजे पर थीं।

थोड़ी देर बाद लालटेन खुद बखुद भभकने लगी।

शायद तेल ख़त्म हो रहा होगा या फिर ऊपर टंगी होनी की वजह से हवा से लौ थरथरा रही होगी।

वह उठा। लालटेन उतारी।

तेल तो ठीक है।

अब लालटेन को उसने नीचे रख दिया और पास बैठ कर टिमटमाती लौ को देखने लगा, दफ़अतन⁽¹⁾ उसे लगा कि घर के बाहर तेज आंधी चल रही है, भारी भारी बूटों और नारों की आवाज़ें दूर से आती सुनाई दे रही हैं, उस ने दरवाज़े की तरफ़ कान लगा दिए मगर सन्नाटे के सिवा कुछ सुनाई न दिया।

अब वह सचमुच उक्ता चुका था,वक्त गुजारी के लिए उस ने आदतन घर में किताब तलाश करना शुरू कर दी……हाथ में लालटेन लटकाए वह किताब तलाश करता फिर रहा था, जहां जहां वह लालटेन लेकर जाता घर का बाक़ी हिस्सा अंधेरे में डूब जाता, उसे अपने ही घर में ख़ौफ़ का एहसास होने लगा जबिक बचपन से नाजाने कितनी बार वह घर में अकेला रह चुका है उसे पूरे घर में कभी भी अकेले रहना बुरा नहीं लगता था बल्कि एक तरह की तमानीयत⁽²⁾ का एहसास होता था मगर आज उसे डर लग रहा था।

बड़े शहर के छोटे से मकान में रहते रहते मुझे इतने बड़े घर में तनहा रहने की शायद आदत नहीं रही उस ने सोचा और दालान में बनी एक अलमारी के पट खोलने लगा।

वह जानता था कि घर में कहीं और किताब होया ा हो दादा की अलमारी में जरूर किताबें होंगी।

उस ने अलमारी के पट खोले तो किताबों की बजाए कई अदद् चूहे, कुछ खाली डिब्बे और लोहे के कुछ पुराने कलपुर्जे उस पर उलट पडे।

उसे लगा के बहुत सारे मुदें कफ़न समेत उस पर गिर पड़े हैं, आंधी के

^{1.} अचानक 2. सुकृत

آزادی کے بعد اردو افسانہ

کانیتے ہاتھوں سے گری ہوئی الٹین کو اس نے سیدھا کیا، دونوں ہاتھوں کا بوجھ کھٹوں پر ڈال کر اٹھ کھڑا ہوا۔ اور الٹین ہاتھ میں لٹکائے دروازے کی طرف ایسے برجے نگا جیے جنازے کے آئے چل رہا ہو۔

النین بہت زوروں سے بھیمک رہی ہے بلکہ طنے بجھنے کے درمیان قریب المرگ کی طرح سانسیں لے رہی ہے، قصبے کے بڑے دالانوں والا گھر سنسان اور اندھیارا ہے......... اور وہ تعرقراتی لوکو بجھنے سے روکنے کی کوشش میں گھر کی دہلیز پر بیٹھا کانپ رہا ہے۔



झक्कड़ बाहर से घर में घुस आये हैं।

जमीन पर धरी लालटेन उलट कर भभकने लगी.....ख़ौफ़ उसे जकड़ चुका था। कांपते हाथों से गिरी हुई लालटेन को उस ने सीधा किया, दोनों हाथों का बोझ घुटनों पर डाल कर उठ खड़ा हुआ.....और लालटेन हाथ में लटकाए दरवाजे की तरफ़ ऐसे बढ़ने लगा जैसे जनाज़े के आगे चल रहा हो।

लालटेन बहुत जोरों से भभक रही है बल्कि जलने बुझने के दरिमयान क़रीबुलमर्ग⁽¹⁾ की तरह सांसें ले रही है, क़स्बे के बड़े दालानों वाला घर सुन्सान और अंधियारा है...... और वह थरथराती लौ को बुझने से रोकने की कोशिश में घर की दहलीज पर बैठा कांप रहा है।



^{1.} मौत के क़रीब

جادر والا آدمی اور میں

سندری ہواؤں سے مرطوب مبئی کاطبس، کمیار شنٹ میں موجود ہر مخف کے چرے ر چ سے سینے کی شکل میں جھلک رہا تھا۔ تھوڑی تھوڑی در سے بیند بو نچھنے کے لیے رومال جیب سے نکالنا را منا، جے دن مجر کی گرمی ادر نسینے ادر فضا میں تیرتے پٹرول اور ڈیزل کے کاربن نے مٹ میلا اور محیلا کر دیا تھا۔ میں نے رومال کو اپنی شرث کی کالر کے چھے کھیلا کر رکھ لیا تھا اور واکیں ہاتھ کی آسٹین سے منہ یونچھ لیتا تھا جس سے میں نے سمارے کے لیے لوہ کی راڈ پکڑ رکھی تھی۔ لوکل ٹرین کے تمام ڈبوں میں جگد نہ ملنے ک وجہ ہے کھڑے رہنے والے مسافروں کے سہارے کے لیے بیرراڈ لگائی گئی تھی۔ آج دوپہر بی سے میرا دائی تبض ابحرآیا تھا اور رہ رہ کر گیس میرے معدے سے نکل کر سینے تک ایسے ریک جاتی جیسے کوئی سوئی انتز بوں میں حرکت کر رہی ہو۔ گیس کا یہ چبھتا درد جب بھی اٹھتا میں سامنے کی پینے پر اطمینان سے سورہ اس فخص کو غصے سے ضرور دیکھ لیتا جس نے سر سے پیرتک عادرتان رکمی تھی۔ اس طرح سے اس نے خود کو اطراف کے ماحول سے يكسر لاتعلق كرايا تفام كويا وه جادر نه مو بلكه بيشرى كا خول موم ميس رياحي درد كا برسول ے مریض ہوں بوے شہر کی ہنگامہ خیز زندگی کا بید ایک ایبا تحفد ہے جو روزگار کے ساتھ ایے بی ماتا ہے جیے شیرو کے ساتھ میں مغت پلاسٹک کا کوئی چی۔۔۔۔! جب دروکی سوئی دل کی طرف ریگتی ہے تو ایسا لگتا ہے جیسے دل کا دورہ پڑنے والا ہو۔ ایسے میں پیٹم یا لیٹ كر پير پھيلانے كى خواہش ہوتى ہے۔

بمبئی کی سڑی گرمی میں کسی فخص کا لوکل ٹرین کے فرسٹ کلاس کمپارٹمنٹ میں اس قدراطمینان سے سونا ایک جیرت ناک واقعہ تھا۔ اس واقعے کا تحیر ہراس مسافر کے چیرے

चादर वाला आदमी और मैं

सम्दरी की हवाओं से मरतुब⁽¹⁾ बम्बई का हब्स, कम्पार्टमैन्ट में मौजूद हर शख्स के चेहरे पर पिचपिचे पसीने की शक्ल में झलक रहा था। थोड़ी थोड़ी देर से पसीना पोंछने के लिए रूमाल जेब से निकालना पड रहा था जिसे दिन भर की गर्मी और पसीने और फ़िज़ा में तैरते पैट्रोल और डीज़ल के काबर्न ने मट मैला और गीला कर दिया था। मैंने रूमाल को अपनी शर्ट के कालर के पीछे फैला कर रख लिया था और दाएं हाथ की आस्तीन से मुंह पोंछ लेता था जिससे मैंने सहारे के लिए लोहे की वह राड पकड़ रखी थी। लोकल टेन के तमाम डिब्बों में जगह न मिलने की वजह से खड़े रहने वाले मुसाफ़िरों के सहारे के लिए यह राड लगाई गर्ड थी। आज दोपहर ही से मेरा दाएमी⁽²⁾ क़ब्ज़ उभर आया था और रह रह कर गैस मेरे मेदे से निकल कर सीने तक ऐसे रेंग जाती जैसे कोई सुई अतिडयों में हरकत कर रही हो। गैस का यह चुभता दर्द जब भी उठता मैं सामने की बेंच पर इत्मीनान से सो रहे उस शख्स को ग़ुस्से से ज़रूर देख लेता जिस ने सर से पैर तक चादर तान रखी थी, इस तरह से उसने खुद को अंतराफ़ के माहौल से यक्सर⁽³⁾ लातअल्लुक कर लिया था। गोया वह चादर न हो बल्कि बेशर्मी का खोल हो। मैं रेयाही दर्द का बरसों से मरीज़ हूं बड़े शहर की हंगामा खेज़ जिंदगी का यह ऐसा तोहफ़ा है जो रोज़गार के साथ ऐसे ही मिलता है जैसे शैम्पू के साथ मुफ़्त पलास्टिक का कोई चम्चा। जब दर्द की सुई दिल की तरफ़ रेंगती है तो ऐसा लगता है जैसे दिल का दौरा पड़ने वाला हो। ऐसे में बैठ या लेट कर पैर फैलाने की ख्वाहिश होती है।

बम्बई की सड़ी गर्मी में किसी शख़्स का लोकल ट्रेन के फ़र्स्ट क्लास कम्पार्टमेंट में इस क़दर इत्मीनान से सोना एक हैरतनाक वाक़ेआ⁽⁴⁾ था, इस वाकेआ का तहय्युर⁽⁵⁾ हर उस मुसाफ़िर के चेहरे प्रर अयां⁽⁶⁾ था जो सीट की

^{1.} आद्र 2. हमेशा का 3. बिल्कुल 4. घटना 5. हैरत 6. स्पष्ट

آ زادی کے بعد اردو افسانہ

پرعیاں تھا جوسیت کی خواہش میں پہلو بدلتے ہوئے لو ہے کی راڈ سے کسی چیگادڑ کی طرح الکا ہوا تھا۔لیکن کسی نے بھی اپنی اس جیرت کو انجام تک پہچانے کے لیے اس سونے والے مخص کو جنجھوڑ کر اٹھانے کی کوشش نہیں کی تھی۔ اول درجے کے مسافروں کی نفسیات دوسرے درجے کے مسافروں سے کتنی مختلف ہوتی ہے اس کا اندازہ مجھے تین چار مہنے قبل اس وقت ہوا تھا جب تین برسوں تک دوسرے درجے میں سفر کرتے رہنے کے بعد حالات نے مجھے پہلے درجے کا مسافر بننے پر مجبور کر دیا تھا۔

دوسرے درج میں تین لوگوں کی سیٹ پر چوتھے آ دمی کو تو چوتز سکنے کی جگه ل جاتی تھی کیکن اول در ہے میں یہ جگہ کشادہ سیٹ کے باوجود نہیں ملتی۔ فرسٹ کلاس کے مسافر سب یر بیضت ہی پشت سے سر لگا کر آنکھیں بند کر لیتے ہیں اس طرح وہ سو جاتے ہیں یا سونے کی اداکاری کر کے بھی سیٹ بانٹنے کے اخلاقی فرض سے چ جاتے ہیں۔ سینڈ کاس میں بڑا شور شرابا اور ہنگامہ رہتا ہے۔ روز کے مسافر ایک دوسر بے کے سکھ دکھ کی خبر ضرور رکھتے۔ سالگرہ اور پر موثن کی خوشیاں ڈ بے کے تمام مسافروں میں مضائی کی صورت تقسیم ہوتیں۔ میں جس ڈے میں سفر کرتا تھا اس میں بھجن منڈلی بھی ہوتی۔ سرکاری اور غیر سرکاری دفاتر میں کلاس فور کے ملازموں کا بیالیگروپ تھا جودن مجرکی تھکن اور زندگی کی کلفتوں کو چیخ چیخ کرمیجن گا کر بھو لنے کی کوشش کرتا تھا۔ بھجن کے دوران ہی پرساد بھی تقسیم ہوتا۔ برساد کے لیے ہرروز چندہ ہوتا۔ چندے میں میں بھی شریک تھا۔ پہلے روز تو میرے اندر کے زہبی مسلمان نے نامواری کے شکنے سے میرے جبروں کو جکڑ دیا تھا لیکن پھر خیال ہوا تھا کہ میں سنی مسلمان نہ ہوتے ہوئے بھی جس طرح نذر ونیاز میں شرکت كرتابول اى طرح اين بندو سافر ساتعيول سے خوشكوار رفاقت كے ليے برساد كا چندہ دیے میں کون سامناہ ہے۔ ابتدائی تین چار ہفتوں تک تو کسی کو پہ بی نہیں تھا کہ میں کون ہوں۔ کمیار منٹ میں بے شار ایسے لوگ بھی تھے جو تمن جار برسوں سے ایک ساتھ سفر کر رہے تھے لیکن ان کا آپس میں کوئی تعارف نہیں تھا اور نہ ہی وہ کی سے راہ و رسم بر حانا پند کرتے تھے۔ فرسٹ کلاس کمپارٹمنٹ میں تو روز برسوں ایک دوسرے کے سامنے بنصنے والے مافر آپس میں گفتگو کی ضرورت ہی نہیں محسوس کرتے تھے۔ کوئی سونے لگتا تو

ख़्वाहिश में पहलू बदलते हुए लोहे की राड से किसी चमगादड़ की तरह लटका हुआ था। लेकिन किसी ने भी अपनी इस हैरत को अंजाम तक पहुंचाने के लिए उस सोने वाले शख़्स को झिनझोड़ कर उठाने की कोशिश नहीं की थी। अव्वल दर्जे के मुसाफ़िरों की निष्सियात दूसरे दर्जे के मुसाफ़िरों से कितनी मुख़्तिलफ होती है। इस का अंदाजा मुझे तीन चार महीने क़बल उस वक़्त हुआ जब तीन बरसों तक दूसरे दर्जे में सफ़र करते रहने के बाद हालात ने मुझे पहले दर्जे का मुसाफ़िर बनने पर मजबूर कर दिया था।

दूसरे दर्जे में तीन लोगों की सीट पर चौथे आदमी को तो चृतड टेकने की जगह मिल जाती थी लेकिन अव्यल दर्जे में यह जगह कशादह (1) सीट के बावजूद नहीं मिलती। फर्स्ट क्लास के मसाफ़िर सीट पर बैठते ही पृश्त से सर लगा कर आखें बंद कर लेते हैं इस तरह वह सो जाते हैं या सोने की अदाकारी कर के किसी से भी सीट बांटने के अखलाकी फ़र्ज से बच जाते हैं। सेकेंड क्लास में बड़ा शोर शराबा और हंगामा रहता। रोज़ के मुसाफ़िर एक दूसरे के सुख दुख की खबर ज़रूर रखते, सालगिरह और प्रोमोशन की खुशियां डिब्बे के तमाम मुसाफिरों में मिठाई की सुरत में तक्सीम होतीं। मैं जिस डिब्बे में सफ़र करता था उस में भजन मंडली भी होती। सरकारी और ग़ैर सरकारी दफ़ातिर में क्लास फ्रोर के मुलाजिमों का यह एक ग्रुप था जो दिन भर की थकन और जिन्दगी की कुल्फ़रों(2) को चीख चीख कर भजन गा कर भूलाने की कोशिश करता था। भजन के दौरान ही प्रसाद भी तक़सीम होता, प्रसाद के लिए हर रोज चंदा होता. चंदे में में भी शरीक था। पहले रोज तो मेरे अंदर के मजहबी मसलमान ने नागवारी के शिकंजे से मेरे जबड़ों को जकड़ दिया था लेकिन फिर ख़्याल हुआ था कि मैं सुन्नी मुसल्मान न होते हुए भी जिस तरह नज़रो-नियाज़⁽³⁾ में शिरकत करता हूं उसी तरह अपने हिन्दू मुसाफ़िर साथियों से खुशगवार रफ़ाक़त⁽⁴⁾ के लिए प्रसाद का चंदा देने में कौन सा गुनाह है। इब्तेदाई तीन चार हफ़्तों तक तो किसी को पता ही नहीं चला था कि मैं कौन हं। कम्पार्टमेन्ट में बेशमार ऐसे लोग भी थे जो तीन चार बरसों से एक साथ सफ़र कर रहे थे लेकिन उनका आपस में कोई ताअरुफ़⁽⁵⁾ नहीं था। और न ही वह किसी से राहोरस्म बढ़ाना पसंद करते थे। फर्स्ट क्लास कम्पार्टमैन्ट में तो रोज बरसों एक दसरे के सामने बैठने वाले मुसाफ़िर आपस में गुफ़तगू की जरूरत ही नहीं महसूस करते थे। कोई सोने लगता 1. विस्तृत 2. परेशानियों 3. भेंट-चढ़ावा 4. साथ 5. परिचय

آزادی کے بعد اردو افسانہ

کوئی اخبار پڑھنے لگنا چند گروپ ایسے تھے جن کی دوئی تاش کی گڈی میں سمینے جانے والے باوشاہ بیم اور غلام کی بار جیت سے وابستہ تھی۔ ادھر اشیشن آیا ادھر کھیل ختم اور دوئی آسندہ تیرہ چودہ کھنٹوں تک کے لیے ملتوی!

کمپارٹمنٹ کے مسافروں کو جب پہ چلاتھا کہ میں مسلمان ہوں تو ہمجن منڈلی کے ساتھیوں نے بڑے اثنتیاق ہے ہوچھا''تمھاری عید کب ہے؟''

> "شاید چوسات مین بعد" "جم تمحارے تبوار پر برساد بانش کے" منڈلی کے بعجن گائیک رکھونند نے بوی اپنائیت سے کہاتھا۔

" نہیں ہم مسلمان عید میں اپنے دوستوں اور رشتے داروں کو بیٹھا کھلاتے ہیں۔ اس لیے آپ نہیں میں آپ لوگوں کوعید کی مٹھائی کھلا دُن گا۔''

"اچھا" رکھوند نے اپنے ساتھیوں کی طرف دیکھتے ہوئے ہس کر کہا۔"بالکل اپنی دیوالی کے جیسا ہے ان کا بھی۔" "بالاور ہم لوگ اپنے سے چھوٹوں کوعیدی دیتے ہیں لیعن گفٹ....." "اچھا" رکھوند پھر ہنا۔" بالکل ہماری دیوالی کی رسم کے جیسا۔"

دو تین میینوں کے درمیان میری وہ ندہی سخت گیری جے بھجن کیرتن ساعت پر شور معلوم ہوتا تھا اسے.....

ہے جکدیش ہرے سوای ہے جکدیش ہرے بھکت جنو ل کے سکٹ بل میں دور کرے۔ دل کے تارول کو چھیڑنے والا ایک دل گداز نغر معلوم ہونے لگا تھا۔

چند ہی روز میں ہم سب ایک دومرے سے اتنے مانوں ہو گئے تھے جیسے برسوں کی
اری ہو۔ لوکل ٹرین کے دومرے درج کے مسافرں کی بیر تہذیب ہے کہ وہ اپنے اپ
گروپ کے ایسے ساتھی کو جو دیر سے آتا، آدھے سنر تک کے لیے سیٹ دے دیتے ہیں اس
طرح سب کو بیٹھنے کا موقع مل جاتا ہے۔ میں اکثر دیر سے پہنچا اور رگھوند جھے دیکھ
کر'' آگیا اپنا میاں بھائی'' کہہ کر سیٹ چھوڑ دیتا۔ اس کے میاں بھائی کہنے میں مجھے
تقارت نہیں اپنائیت محسوں ہوتی لیکن بابری مجد کے سانے کے تقریباً دوہفتوں کے بعد
جب میں ڈب میں سوار ہوا تھا تو بھے ایسا محسوس ہوا تھا جسے میرے داخل ہوتے ہی ڈب
میں سنانا چھا گیا ہو۔رگھوند جو ہیشہ جھے دیکھ کرسیٹ چھوڑ دیا کرتا تھا وہ اپنی جگہ بیشا رہااور

तो कोई अख़बार पढ़ने लगता चंद ग्रुप ऐसे थे कि जिनकी दोस्ती ताश की गड्डी में फेटे जाने वाले बादशाह बेगम और गुलाम की हार जीत से वाबस्ता⁽¹⁾ थी। इधर स्टेशन आया उधर खेल ख़त्म और दोस्ती भी आइन्दा तेरह चौदह घंटों तक के लिए मुल्तवी।

कम्पार्टमैन्ट के मुसाफ़िरों को जब पता चला था कि मैं मुसलमान हूं तो भजन मंडली के साथियों ने बड़े इश्तियाक़ से पूछा था। ''तुम्हारी ईद कब है ?''

"शायद छः सात महीने बाद"…… "हम तुम्हारें त्योहार पर प्रसाद बाटेंगे।"

मंडली के भजन गायक रघुनन्द ने बड़ी अपनाइयत से कहा था।

"नहीं, हम मुसलमान ईद में अपने दोस्तों और रिश्तेदारों को मीठा खिलाते हैं, इस लिए आप नहीं मैं आप लोंगों को ईद की मिठाई खिलाउंगा।"

"अच्छा" रघुनन्द ने अपने साथियों की तरफ़ देखते हुए हंस कर कहा। बिल्कुल अपनी दीवाली के जैसा है उन का भी,""हांऔर हम लोग अपने से छोटों को ईदी देते है यानी गिफ्ट....." "अच्छा" रघुनन्द फिर हंसा, "बिल्कुल हमारी दीवाली की रस्म के जैसा।"

दो तीन महीने के दरिमयान मेरी वह मजहबी सख़्त गिरी जिसे भजन कीर्तन समाअत⁽²⁾ पर शोर मालूम होता था उसे.....

जय जगदीश हरे स्वामी, जय जगदीश हरे, भगत जनो के संकट पल में दूर करे दिल के तारों को छेड़ने वाला एक दिल गुदाज नग़मा मालूम होने लगा था।

चंद ही रोज में हम सब एक दूसरे से इतने मानूस हो गए थे जैसे बरसों की यारी हो। लोकल ट्रेन के दूसरे दर्जे के मुसाफ़िरों की यह तहजीब है कि वह अपने अपने ग्रुप के ऐसे साथी को जो देर से आता, आधे सफ़्र तक के लिए सीट दे देते हैं इस तरह सब को बैठने का मौक़ा मिल जाता है। मैं अक्सर देर से पहुंचता और रघुनन्दन मुझे देख कर ''आ गया अपना मियां भाई,'' कह कर सीट छोड़ देता। उस के मियां भाई कहने में मुझे हक़ारत⁽³⁾ नहीं अपनाइयत महसूस होती। लेकिन बाबरी मस्जिद के सान्हें⁽⁴⁾ के तक़रीबन दो हफ़्तों के बाद जब मैं डिब्बे में सवार हुआ था तो मुझे ऐसा महसूस हुआ था जैसे मेरे दाख़िल होते ही डिब्बे में सन्नाटा छा गया हो। रघुनन्द जो हमेशा मुझे देख कर सीट छोड़ दिया करता था वह अपनी जगह बैठा रहा और खिड़की से बाहर देखने लगा था। रघुनन्द के भजन के बाद 1. जुड़ी 2. सुनने की क्षमता 3. घृणा 4. घटना

آزادی کے بعد اردو انسانہ

کھڑی سے باہر دیکھنے لگا تھا۔ رکھوند کے بجن کے بعد دوسرے روز جب پرساد کے لیے چندہ مانگا گیا تو مجھے نظر انداز کر دیا گیا۔ میں نے صاف محسوں کیا کہ یہ انقاق نہیں تھا کیوں کہ مجھے پرساد بھی نہیں دیا گیا۔ ایک دوسرے سے لاتعلق ہو جانے کی کوشش کا متیجہ تھا میرا فرسٹ کلاس کا میزن کلٹ ۔۔۔۔!

گاڑی کی رفتار کم ہونے لگی تھی۔ میں نے دروازے کے باہر دیکھا۔ اند جرے میں پیچیے حمیو شتے بکل کے تقول اور نیون سائن بورڈ سے میں نے اندازہ لگا لیا تھا کہ دادر اشیشن قریب آر ہا ہے۔ درد کی چیمن برستور تھی اگر چہ یہ درد نا قابل برداشت تو نہ تھا لیکن جوتے میں رہ جانے والے کس ککر کی طرح پریشان کن ضرور تھا۔ اٹیشن پر اترنے کے لیے چار یانچ لوگ اٹھے تو فورا بی کھڑے ہوئے لوگوں میں سے سات آٹھ لوگ جگہ پکڑنے کے کیے لیکے میں بھراس سوئے ہوئے قتص کی طرف دیکھنے لگا۔ جی میں آیا کہ باپ کا مگمر سجھ کرسونے والے کی جادر مھینے کر بھینک دول اور اس کا گریبان پکڑ کر بوری قوت سے ا پے اٹھالوں جیے خرگوش کو کان سے پکڑ کر اٹھاتے ہیں پھر جمعے اخبار کی وہ خبریاد آگئی کہ ویسٹرن لائن کی لوکل ٹرین میں ایک غندہ شراب کے نشے میں دھت، سیٹ ہر لیٹا گالیاں بک رہا تھا۔ ایک نو زوان جو اپنی بیوی بچوں کے ساتھ اس کی سامنے والی سیٹ بر بیٹا تھا ضبط ندکر سکا اور اس نے اسے ڈانٹ دیا شرائی نے اٹھ کر جیب میں سے جاتو نکالا اور اس نو جوان کے بیٹ میں مھونی دیا عورت اور بچوں کی چینیں نکل محتیں۔ دوسرے مسافر جرت سے پینی آگھوں سے یہ مظرد کھتے رہ گئے۔ نشے سے جمولتے اس آدی کو نہ کی نے پرا اور نہ کی نے چین مینی۔ جاتو کے دار سے اپنی بیوی کی گود میں اڑھک جانے والے نوجوان کے شانے پر شرابی نے جاتو کا پھل پونچھا اور جاتو پتلون کی جیب میں ڈال كر ڈيڑھ دومنٹ كے بعد آنے والے النيشن پر وہ كاڑى كے ركنے سے قبل بى چملانگ مار كر بعير مين ممرك ياني مين كرف والي بقرى طرح فائب موكيا

دادر اششن پرگاڑی کے رکتے ہی جتنے لوگ اترے اس سے بھی زیادہ لوگ ڈب میں کھس آئے۔ آج سنچر کا دن تھا۔ شہر کے تمام سرکاری دفاتر میں آدھے دن کی چھٹی ہوتی ہے عام طور پر رات کے دس بجے تک لوکل ٹرینیں ایسے بھری رہتی ہیں جیسے آبادی کا انخلاء

दूसरे रोज जब प्रसाद के लिए चंदा मांगा गया तो मुझे नजर अन्दाज कर दिया गया। मैंने साफ़ महसूस किया कि यह इत्तेफ़ाक़ नहीं था क्योंकि मुझे प्रसाद भी नहीं दिया गया। एक दूसरे से लातअल्लुक़ हो जाने की कोशिश का नतीजा था मेरा फर्स्ट क्लास का सीज़न टिकट.....!

गाड़ी की रफ़्तार कम होने लगी थी। मैंने दरवाजे के बाहर देखा, अंधेरे में पीछे छूटते बिजली के कुमकुमों और न्यून साइन बोर्ड से मैंने अन्दाजा लगा लिया था कि दादर स्टेशन क़रीब आ रहा है। दर्द की चुभन बदस्तूर थी अगरचे यह दर्द नाक़ाबिले बरदाश्त तो न था। लेकिन जुते में रह जाने वाले किसी कंकर की तरह परेशान कुन ज़रूर था। स्टेशन पर उतरने के लिए चार पांच लोग उठे तो फ़ौरन ही खड़े हुए लोगों में से सात आठ लोग जगह पकड़ने के लिए लपके मैं फिर उस सोये हुए शख्स की तरफ़ देखने लगा। जी में आया कि बाप का घर समझ कर सोने वाले की चादर खींच कर फेंक दूं और उस का गिरेबान पकड़ कर पूरी कुवत से ऐसे उठा लूं जैसे खरगोश को कान से पकड कर उठाते हैं.....फिर मुझे अखबार की वह खबर याद आ गई कि वेस्टर्न लाइन की लोकल ट्रेन में एक गुंडा शराब के नशे में धत, सीट पर लेटा गालियां दे रहा था एक नौजवान जो अपनी बीवी बच्चों के साथ उस की सामने वाली सीट पर बैठा था जब्त न कर सका और उस ने उसे डांट दिया। शराबी ने उठ कर जेब में से चाक़ निकाला और उस नौजवान के पेट में घोंप दिया औरत और बच्चों की चींखें निकल गई। दूसरे मुसाफ़िर हैरत से फटी आंखों से यह मंज़र देखते रह गए। नशे से झुलते उस आदमी को न किसी ने पकड़ा और न ही किसी ने गाड़ी की चैन खींची। चाकू के वार से अपनी बीवी की गोद में लुढ़क जाने वाले नौजवान के शाने पर शराबी ने चाक़ू का फल पोंछा और चाक़ू पतलून की जेब में डाल कर ढेड दो मिनट बाद आने वाले स्टेशन पर वह गाड़ी के रुकने से क़ब्ल ही छलांग मार कर भीड़ में गहरे पानी में गिरने वाले पत्थर की तरह गायब हो गया.....

दादर स्टेशन पर गाड़ी के रुकते ही जितने लोग उतरे उस से भी ज्यादा लोग डिब्बे में घुस आये। आज सनीचर का दिन था। शहर के तमाम सरकारी दफ़ातिर में आधे दिन की छुट्टी होती है आम तौर पर रात के दस बजे तक लोकल ट्रेने ऐसे भरी रहती हैं जैसे आबादी का इन्ख़्ला⁽¹⁾ हो रहा हो। सनीचर और छुट्टी के दिनों

^{1.} प्लायन

آزادی کے بعد اردو انسانہ

ہور ہا ہو۔ سنیچر اور چھٹی کے دنوں میں لوکل ٹرینوں میں اطمینان سے کھڑے رہنے کی جکد مل جاتی ہے اور رات میں بیٹنے کے لیے بھی کوئی جدو جہدنہیں کرنی پڑتی۔

ثرین اشیشن سے نکل بر کھے دور چل کر ہانیتے ہوئے رک گئے۔ پٹر بول کی دوسری طرف اونچی ممارتوں کے جنگل میں بجلی کے جگنوٹمٹا رہے تھے۔ٹرین کے رک جانے کی وجہ ہے جس برھ کیا تھا۔ دوسیٹوں ممکے درمیان کے گینگ وے میں میرے علاوہ چار پانچ لوگ بی راڈ کا سہارا لیے کھڑے تھے اور دادر اشیشن پر ڈیے میں سوار ہونے والا بولیس كانطيبل دروازے يركم ابواكها رہا تھا۔ اگر آخ سنيج نه بوتا اور رات ساز ھے نوكا وقت نه ہوتا تو دم مھونٹ دینے والے جس میں ڈیے میں کھڑے رہنا دشوار ہو جاتا۔ وفتر کے دو کرک متعدی بخار کی وجہ سے چھٹی پر تھے اور پیر کے روز بھلوں کا ایک کشائمنٹ صبح کی فلائٹ سے جدہ بھیجنا تھا۔ درمیان میں اتوار کی چھٹی کی وجہ سے فلائٹ میں اسپیس بگنگ ے لے کر مجلون کے آرڈر کی چیکنگ تک میرے ہی ذمہ آگئ تھی ون مجردوڑتے بیتا تھا۔ پورے دن کی معروفیت کے خیال بی سے چڑ ایوں کے عفالات میں ایکفن محسوس ہونے کی۔ پنڈلیوں کا دردمیشی ٹیس بن حمیا نرم بستر پر گرتے ہی میٹی نیند کی گاڑھی دھند میں کھو جانے کی خواہش نے بری تیکھی نظروں سے جادر تان کر سونے والے کو دیکھا۔ اس نے ایک بار بھی کرد فنبیں بدلی تھی میرا عمد رشک میں بدل کیا۔ کتنی برسکون نیندسور با ہے۔ پر بھی کتنے ارام سے لیے کرر کھے ہیں۔لیکن یہ جادر کول اور مے ہوئے ہے؟ اتن گرمی میں مادر ادامے کا کیا جواز ہوسکتا ہے، ہوسکتا ہے یہ اس کی عادت ہو۔ جسے میرے بڑے بھائی کو بھین سے عادت ہے کہ وہ کسی بھی موسم میں سینے تک جادر اوڑ ھے بغیر سوبی نہیں سکتے۔ہم بھائی بہن ان کی جا در مھنچ لیتے تھے تو وہ خوب بھٹاتے تھے۔ ایک بار گھریر جب کوئی برانہیں تھا۔ مجھلی باجی نے ان کی جادر چھپا دی تھی تو انھوں نے جادر کے لیے ہم سب سے خوب منت ساجت کی متی لیکن بابی نے چاور نہیں دی تھی اور مبع ہم نے ویکھا تھا وہ تولیہ اوڑھے سورہے ہیں۔ شاید میخف بھی ایس ہی عادت کا شکار ہے لیکن یہ بھی تو ہوسکتا ہے کہ دو زندہ ہی نہ ہوایک مردہ جم پر سردی گری ادر بارش کا اثر! اسے اس خیال ك تُصديق كے ليے من نے غور ے اس كے پيد اور سينے برنظر ڈالى جو مولے مولے اديريني مورما تغار

में लोकल ट्रेनों में इत्मीनान से खड़े रहने की जगह मिल जाती है और रात में बैठने के लिए भी कोई जिद्दोजहद् नहीं करनी पड़ती।

ट्रेन स्टेशन से निकल कर कुछ दूर चल कर हांपते हुए रुक गई। पटरियों की दसरी तरफ़ ऊंची इमारतों के जंगल में बिजली के जुगन टिमटिमा रहे थे। ट्रेन के रुक जाने की वजह से हब्स बढ़ गया था। दो सीटों के दरमियान के गैंगवे में मेरे अलावा चार पांच लोग ही राड का सहारा लिए खडे थे और दादर स्टेशन पर डिब्बे में सवार होने वाला पुलिस कांस्टेबल दरवाजे पर खड़ा हुआ खा रहा था। अगर आज सनीचर न होता और रात साढ़े नौ का वक़्त न होता तो दम घोंट देने वाले हब्स⁽¹⁾ में डिब्बे में खडे रहना दुश्वार हो जाता। दप्तर के दो क्लर्क म्ताअदी बखार की वजह से छुट्टी पर थे और पीर के रोज फलों का एक कन्साइंमैन्ट सुबह की फ्लाइट से जद्दा भेजना था। दरिमयान में इतवार की छुट्टी की वजह से फ्लाइट में स्पेस बुकिंग से लेकर फलों के ऑडर की चैकिंग तक मेरे ही ज़िम्मे आ गई थी दिन भर दौड़ते बीता था। पूरे दिन की मसरूफ़ियत के ख्याल ही से पिंडलियों के अजलात(2) में ऐंठन महसूस होने लगी। पिंडलियों का दर्द मीठी टीस बन गया। नर्म बिस्तर पर गिरते ही मीठी नींद की गाढी धंध में खोजाने की ख्वाहिश ने बड़ी तीखी नज़रों से चादर तान कर सोने वाले को देखा। उस ने एक बार भी करवट नहीं बद ली थी मेरा गुस्सा रश्क में बदल गया। कितनी पुर सुकृत नींद सो रहा है। पैर भी कितने आराम से लंम्बे कर रखे हैं। लेकिन यह चादर क्यों ओढ़े हुए है ? इतनी गर्मी में चादर ओढ़ने का क्या जवाज़(3) हो सकता है ? हो सकता है यह उस की आदत हो। जैसे मेरे बडे भाई को बचपन से आदत है कि वह किसी भी मौसम में सीने तक चादर ओढ़े बग़ैर सो ही नहीं सकते। हम भाई बहन उन की चादर खींच लेते थे तो वह खब भिनाते थे। एक बार घर पर जब कोई बडा नहीं था मंझली बाजी ने उन की चादर छुपादी थी तो उन्होंने चादर के लिए हम सब से खुब मिन्नत समाजत की थी लेकिन बाजी ने चादर नहीं दी थी और सबह हमने देखा था वह तौलिया ओढ़े सो रहे हैं। शायद यह शख़्स भी ऐसी ही आदत का शिकार है लेकिन यह भी तो हो सकता है कि वह जिन्दा ही न हो। एक मुर्दा जिस्म पर सर्दी गर्मी और बारिश का असर! अपने इस ख़्याल की तस्दीक़ के लिए मैंने ग़ौर से उस के पेट और सीने पर नज़र डाली जो हौले हौले ऊपर नीचे हो रहा था।

^{1.} घुटन 2. अजला (शरीर का हिस्सा) का बहुवचन 3. कारण

آزادی کے بعد اردو افسانہ

گاڑی چل بڑی تھی۔ میرا دایاں ہاتھ راڈ پکڑے پکڑے درد کرنے لگا تھا میں نے بائیں ہاتھ سے راڈ کرلی او ربیک کو دائیں کندھے پر منتقل کر لیا۔ پنڈلیوں کی میں کندهول کا درد اورسوئیوں کی چیمن اب بہت تکلف دہ ہوگئ تھی۔ یہ سارے لوگ جوتقریا بیں چیس منٹ سے کھڑے ہیں کیا وہ تھکن سے نارحال نہیں ہیں؟ کیا انھیں بیٹنے کی حاجت محسوس نہیں ہورہی ہے؟ یا میں ہی اتنا کرور ہو گیا ہوں کہ زیادہ تھے ہوئے جم کو نہیں ڈھوسکتا؟ تین آدمیوں کی جگہ پر پسر کرسونے والے بر کیا صرف مجھ ہی کو غصہ آرہا ہے؟ كيا أصين نبيس لكنا كداكر يدخص سيك ير ندسور با جوتا تو مزيد دولوگوں كو اطمينان سے بیٹے کی جگدل جاتی اور ان میں سے ایک تو میں ہی ہوتا کیونکہ جس وقت میں ٹرین میں وی ٹی سے سوار ہوا تھا ڈ بے میں تنہا میں ہی تھا جے بیٹھنے کی جگہ نہیں ملی تھی باتی لوگ تو معجد بندر اشیشن اور بائی کلّ اشیشن پرسوار ہوئے تھے۔ ڈیتے میں کھڑے دوسرے لوگوں کو میں نے غور سے ویکھا تو مجھے میمسوس کر کے سی بی برا سکون ملا کہ ایک پستہ قد والا آدمی جو اینے تھکے ہوئے چیرے ہے کسی سرکاری دفتر کا ہیڈ کلرک دکھائی دیتا تھا، کھڑا شام کا اخبار پڑھ رہا تھا اس کے علاوہ تمام کی نظریں رہ رہ کرسونے والے پر اٹھ رہی تھیں شاید وہ تمام مجی میری طرح خود کو اس جگہ کامستق تصور کر کے کڑھ رہے تھے۔موٹے شیشوں کے چشم والے سے میری نظریں کرائیں۔ اس نے میری طرف استفہامینظروں سے دیکھا جیسے يو چدر ما بو" كياتم كواس آدى كى ناشائتكى يرغصه نبيس آربا بي؟" ميس سوين لكايد چشم والا ثرین میں کب سوار ہوا تھا؟ سامنے والی سیٹ کے لیے اس کا کون سا نمبر ہوسکتا تھا؟ مجھے ٹھیک سے یاونہیں آرہا تھا کہ جشمے والا کب سوار ہوا تھا۔ میں نے سرکو جھنک کر اس خیال کو بھی جھنک دیا کول کہ میرا نمبر بہر حال اس سے پہلے بی آتا ...ند چاہتے ہوئے بھی میری نظر جادر تان کرسونے والے پر پڑ گئی کیونکہ وہ جادر کے نیچ تھوڑا سا کسمسایا تھا۔ مجھے لگا تھا کہ گرمی کی وجہ سے اس کی نیند میں خلل پڑا ہے اس لیے وہ چادر ضرور ہٹائے گا بیتے نہیں کیوں مجھے اس کا چیرہ دیکھنے کی خواہش ہو رہی تھی۔

چشے دانے نے مجھے دیکھا پھر سونے دالے کو یا شاید اس سیٹ کو دیکھا جس پر وہ اپنا حق سمجھ رہا تھا اور پھر اس پولس والے کو دیکھا جو دردازے سے لٹک کر آٹکھوں میں بھرنے

गाड़ी चल पड़ी थी। मेरा दायां हाथ राड पकड़े पकड़े दर्द करने लगता था मैं ने बाएं हाथ से रॉड पकड़ ली और बैंग को दाएं कंधे पर मृन्तक़िल कर लिया। पिण्डलियों की टीस कंधों का दर्द और सुइयों की चुभन अब बहुत तकलीफ़-देह हो गई थी। यह सारे लोग जो तक़रीबन बीस पच्चीस मिनट से खड़े हैं क्या वह थकन से निढाल नहीं हैं ? क्या उन्हें बैठने की हाजत महसूस नहीं हो रही है ? या में ही इतना कमज़ोर हो गया हूं कि ज़्यादा थके हुए जिस्म को नहीं ढो सकता? तीन आदिमयों की जगह पर पसर कर सोने वाले पर क्या सिर्फ़ मुझ ही को ग़ुस्सा आ रहा है ? क्या उन्हें नहीं लगता कि अगर यह शख्स सीट पर न सो रहा होता तो मज़ीद दो लोगों को इत्मीनान से बैठने की जगह मिल जाती और उस में से एक तो मैं ही होता क्योंकि जिस वक़्त मैं ट्रेन में वीटी से सवार हुआ था डिब्बे में तन्हां में ही था जिसे बैठने की जगह नहीं मिली थी बाकी लोग तो मस्जिद बंदर स्टेशन और बाइकला स्टेशन पर सवार हुए थे डिब्बे में खड़े दूसरे लोगों को मैंने गौर से देखा तो मुझे यह महसूस कर के सचमुच बड़ा सुकून मिला एक पस्ता क़दवाला आदमी जो अपने थके हुए चेहरे से किसी सरकारी दफ़्तर का हेड क्लर्क दिखाई देता था, खड़ा शाम का अखबार पढ़ रहा था इस के अलावा तमाम की नज़रें रह रह कर सोने वाले पर उठ रहीं थी शायद वह तमाम भी मेरी तरह खुद को उस जगह का मुस्तहिक़⁽¹⁾ तसव्वर कर के कुढ़ रहे थे। मोटे शीशों के चश्मे वाले से मेरी नज़रें टकराई। उस ने मेरी तरफ़ इस्तेहफ़ामियां⁽²⁾ नज़रों से देखा जैसे पछ रहा हो। क्या तुम को इस आदमी की नाशाइस्तगी पर गुस्सा नहीं आ रहा था? मैं सोचने लगा यह चश्में वाला ट्रेन में कब सवार हुआ था? सामने वाली सीट के लिए इस का कौन सा नंबर? मुझे ठीक से याद नहीं आरहा था कि चश्में वाला कब सवार हुआ था। मैंने सर को झटक कर इस ख़्याल को भी झटक दिया क्योंकि मेरा नंबर बहरहाल उस से पहले ही आता..... न चाहते हए भी मेरी नजर चादर तान कर सोने वाले पर पड़ गई वह चादर के नीचे थोड़ा सा कसमसाया था। मुझे लगा था कि गर्मी की वजह से उस की नींद में खलल पड़ा है इस लिए वह चादर ज़रूर हटाएगा पता नहीं क्यों मुझे उस का चेहरा देखने की ख्वाहिश हो रही थी।

चश्में वाले ने मुझे देखा फिर सोने वाले को या शायद उस सीट को देखा जिस पर वह अपना हक समझ रहा था और फिर उस पुलिस वाले को देखा जो

^{1.} हकदार 2. प्रश्नवाचक

آ زادی کے بعد اردو افسانہ

والی ہوا سے بیخ کے لیے آنکھیں مج میا کر اندھیرے کو چیر کر دیکھنے کی کوشش کر رہا تھا۔ چشے والا پنجوں کو جما جما کر چاتا ہوا دروازے تک جا پہنچا۔ وہ پولیس والے کے سامنے جا کر چندلمحوں تک تو خاموش کھڑا رہا پھر اس نے سونے والے کی طرف ویکھا پھر میری طرف اور پھر وہ بولیس والے کی طرف جسک کر اس سے پچھ کہنے لگا۔ بولیس والا اس کی بات سننے کے دوران اس سیٹ کی طرف بھی د کھ لیتا تھا۔ لیکن چشے والے کی نظریں سونے والے ير بى تھيں جب كه وه بوليس والے سے مخاطب تھا۔ بوليس والے نے باہر و كيھتے ہوئے سر جھٹک کر کچھ کہا اور جشمے والے نے منہ سکوڑ کر کندھوں کو اچکایا اور دوسری طرف دروازے کے قریب جا کر کھڑا ہو گیا۔ میں بھی دروازے سے نظر آنے والے سیاہ آسان پر ٹرین کے ساتھ دوڑتے نصف جاند کو دیکھتے ہوئے اپنی توجہ سونے والے کی طرف سے بنانے کی کوشش کرنے لگا۔ جاور میں سے اب خرائے کی ملکی ہلکی آواز بھی ابھرنے لگی تھی اگر چہ میں جاند اور ٹرین کی دوڑ میں اپنی بصارت کو بھی ملوث کر لینا جا ہتا تھا لیکن خرائے کی آواز صرف مجھ ہی کونہیں ڈتے کے تمام مسافروں کو اپنی طرف متوجہ کر رہی تھی۔ میں نے باری باری کھڑے ہوئے مسافروں پر نگاہ ڈالی سب کے چیروں کے تاثرات بتا رہے تھے کہ اگر ان کا بس طلے تو وہ اس حرامزادے کو اٹھا کرٹرین سے باہر بھینک دیں۔ شاید وہ اس سے بھی سخت اقدام کی بابت سوچ رہے تھے ٹرین سے باہر چھیکنے کا خیال میرا تھا کیونکہ کہ میں تشدد کا قائل نہیں تھا اس لیے میں اس سے زیادہ سخت بات سوچ بھی نہیں سکتا تھا۔ کوبر، سرتے کچڑے اور فضلے کی بو سے پیتہ جل گیا تھا کہ سائن اشیشن گزر چکا ہے لین پهیں منٹ کا سفراب بھی باقی تھا۔ پہیں منٹ اور مزید سات آٹھ اشیشنوں پر گاڑی کے رکنے اور مسافروں کے چڑھنے کے تصور ہی سے میرے پیٹ میں مروڑ اٹھنے گی۔ اب کرلا اسمیش آنے والا تھا۔ ریلوے لائن کے کنارے کنارے بی جمونیر بستیاں تیزی سے النے باؤل پیچے لوٹ رہی تھیں۔ میں دونوں ہاتھوں سے راڈ کو پکڑ کر اپنے سارے جسم کا بوجھ اپنی کلائیوں پر ڈال کر راڈ ہے جمول کیا۔ کرلا اشیشن پر گاڑی رینگ کر رک گئی۔ بچھ مافراترے اور بہت سے چرھے۔ گاڑی پلیٹ فارم برریکنے گی۔ تین جارمافر گاڑی کی رفار پرنے سے سلے ہی درواز نے کے بینڈل کو پکر کر ڈے میں کود کر چڑھے۔N.P دے

दरवाजे से लटक कर आंखों में भरने वाली हवा से बचने के लिए आंखें मच मचा कर अंधेरे को चीर कर देखने की कोशिश कर रहा था। चश्में वाला पंजों को जमा जमा कर चलता हुआ दरवाजे तक जा पहुंचा। वह पुलिस वाले के सामने जाकर चंद लम्हों तक तो खामोश खड़ा रहा फिर उस ने सोने वाले की तरफ़ देखा फिर मेरी तरफ़ और फिर वह पुलिस वाले की तरफ़ झुक कर उस से कुछ कहने लगा। पुलिस वाला उस की बात सुनने के दौरान उस सीट की तरफ़ भी देख लेता था। लेकिन चश्मे वाले की नज़रें सोने वाले पर ही थीं जब कि वह पुलिस वाले से मुखातिब था। पुलिस वाले ने बाहर देखते हुए सर झटक कर कुछ कहा और चश्में वाले ने मुंह सिकोड कर कंधों को उचकाया और दूसरी तरफ़ के दरवाजे के क़रीब जाकर खड़ा हो गया। मैं भी दरवाजे से नज़र आने वाले सियाह आसमान पर टेन के साथ दौड़ते निस्फ⁽¹⁾ चांद को देखते हुए अपनी तकजोह सोने वाले की तरफ़ से हटाने की कोशिश करने लगा। चादर में से अब खरिट की हल्की हल्की आवाज भी उभरने लगी थी अगरचे मैं चांद और टेन की दौड़ में अपनी बसारत⁽²⁾ को भी मुलव्विस⁽³⁾ कर लेना चाहता था लेकिन खर्राटे की आवाज मुझ ही को नहीं डिब्बे में तमाम मुसाफ़िरों को अपनी तरफ़ मृतकजोह कर रही थी। मैंने बारी बारी खडे हुए मुसाफ़िरों पर निगाह डाली सब के चहरे के तास्सुरात बता रहे थे कि अगर उन का बस चले तो वह इस हरामज़ादे को उठा कर ट्रेन से बाहर फेक दें। शायद वह इस से भी सख्त इक़्दाम (4) की बाबत सोच रहे थे ट्रेन से बाहर फेकने का ख्याल मेरा था क्योंकि मैं तशदूद⁽⁵⁾ का कायल नहीं था इस लिए मैं इस से ज्यादा सख्त बात सोच भी नहीं सकता था।

गोबर, सड़ते कचरे और फ़ुज़ले की बू से पता चल गया था कि साइन स्टेशन गुज़र चुका है यानी पच्चीस मिनट का सफ़र अब भी बाक़ी था। पच्चीस मिनट और मज़ीद सात आठ स्टेशनों पर गाड़ी के रुकने और मुसाफ़िरों के चढ़ने के तसव्वुर ही से मेरे पेट में मरोड़ उठने लगी। अब कुर्ला स्टेशन आने वाला था। रेलवे लाइन के कनारे कनारे बसी झोपड़ बस्तियां तेज़ी से उलटे पांव पीछे लौट रही थीं। मैं दोनों हाथों से राड को पकड़ कर अपने स्तरे जिस्म का बोझ अपनी कलाइयों पर डाल कर राड से झूल गया। कुर्ला स्टेशन पर गाड़ी रेंग कर रुक गई। कुछ मुसाफ़िर उतरे और बहुत से चढ़े, गाड़ी प्लेट फार्म पर रुकने लगी, तीन चार मुसाफ़िर गाड़ी के रफ़्तार पकड़ने से पहले ही दरवाजे के हैंडिल को पकड़ कर 1. आधे 2. देखने की क्षमता 3. लिप्त 4. कदम कस बहुवचन 5. हिंसा

آ زادی کے بعد اردو افسانہ

میں وهم سے سوار ہونے والے وہ تین لوگ تھے۔ ''سالا پیچے چھوٹ گیا'' درمیانہ قد کے کسرتی جسم والے، خار پشت جیسے سخت کھنے بالوں والے نے پیشانی سے بسینہ پو چھتے ہوئے بنس کر نعرہ لگانے والے انداز میں ایک بار پھر''سالا'' کہا اور پھر وہ اپنی آسٹین چڑھانے لگا۔ اس کی مضبوط کلائیوں اور کہنی سے او پر تر پتی بجلیوں والے صحت مند بازوں میں آسٹین پھنس گئی۔

'' کمزور آدمی ہے تا ہر بار پیچے چھوٹ جاتا ہے' کیے قد کے دیلے پتلے نوجوان نے مسکرا کر کندھے پر لنگے میک کو Luggageریک کا نشانہ لے کر باسکٹ بال کی طرح اچھال دیا۔ تیسرا جو پہتہ قد تھا اور جس کے چہرے پر جھائیوں کے بلکے بلکے واغ تھے پتلون کی ہپ پاکٹ میں سے کتاما نکال کر ماتھے پر گر آنے والے بالوں کو سنوارتے ہوئے کچھ گنگنانے لگا۔

وہ تینوں جس انداز میں ڈب میں سوار ہوئے تھے اور جس لب و لیج میں زور زور اسے باتیں کر رہے تھے وہ فرسٹ کاس کی تہذیب کے ظاف تھا۔ دن بحر کی تھان سے بوجھل مسافروں کی انسانی خاموثی کو ان تینوں کے شور نے درحم برہم کر دیا تھا۔ رودراکش والے نے چیک کے داغ والے اپنے ساتھی کی فیمیش کی جیب میں ہاتھ ڈال کر سکھے کی پڑیا نکال کر دانتوں میں دبا کر چیرا اور انگو شے اور درمیانی انگی ہے پکڑ کر گلکھے کو رد نے والی لومڑی کی طرح گردن افع کر موزو میں بحرلیا۔ انگریزی کا شام نامہ پڑھنے والے نے اخبار پر سے نظریں اٹھا کر دروازے کے قریب کھڑے زور زور سے باتیں کرنے والے نواردوں کو دیکھا۔ اس کی آنکھوں میں ناگواری کو میں نے صاف محسوس کرلیا تھا۔ یہ تینوں آدمی جو تھی سینیتیں کے چیئے میں نظر آتے تھے اور اپنے لباس اور لب و لیج سے کلاس تھری کے تھا۔ میری توجہ کا مرکز اب وہ خرائے بحر نے والا آدمی نہیں بلکہ یہ تینوں سے بالخصوص وہ تھا۔ میری توجہ کا مرکز اب وہ خرائے بحر نے والا آدمی نہیں بلکہ یہ تینوں سے بالخصوص وہ کسرتی جسم والا تھا جس کے محلے میں تائی می سونے کی چین اور رودراکش کی موثی مالا لئک کری تھی اور دا کیں ہا تھی کی کلائی میں اسٹیل کا موٹا ساکڑا تھا جیسے سکھ پہنتے ہیں۔ ''یہ سالا دی چیکو چلتی گاڑی پر کول نہیں چ ھتا۔'' پہت قد والے نے تنگھی جیب میں رکھ کرسنچیدہ چیرہ بتا ویکھی چیب میں رکھ کرسنچیدہ چیرہ بتا

डिब्बे में कूद कर चढ़े।

NP डिब्बे में धम से सवार होने वाले वह तीन लोग थे "साला पीछे छूट गया" दरिमयाना कद के कसरती जिस्म वाले, ख़ार⁽¹⁾ पुशत जैसे सख़्त घने बालों वाले ने पेशानी से पसीना पोंछते हुए हंस कर नारा लगाने वाले अंदाज में एक बार फिर "साला" कहा और फिर वह अपनी आस्तीन चढ़ाने लगा। उस की मज़बूत कलाइयों और कुहनी से ऊपर तड़पती बिजलियों वाले सेहत मंद बाजुओं में आस्तीन फंस गई।

"कमज़ोर आदमी है ना हर बार पीछे छूट जाता है" लम्बे क़द के दुबले पतले नौजवान ने मुस्कुरा कर कंधे पर लटके बैग को लगेज रैक का निशाना लेकर बासकेट बॉल की तरह उछाल दिया। तीसरा जो पस्ता⁽²⁾ क़द था और जिस के चेहरे पर झाईयों के हल्के हल्के दाग़ थे पतलून की हिप पॉकेट में से कंघा निकाल कर माथे पर गिर आने वाले बालों को संवारते हुए कुछ गुनगुनाने लगा।

वह तीनों जिस अंदाज में डिब्बे में सवार हुए थे और जिस लबों लहजे में जोर जोर से बार्ते कर रहे थे वह फ़र्स्ट क्लास की तहजीब के खिलाफ़ था। दिन भर की थकन से बोझल मुसाफ़िरों की इन्सानी खामोशी को इन तीनों के शोर ने दरहम-बरहम⁽³⁾ कर दिया था। रुद्राक्ष वाले ने चेचक के दाग्न वाले अपने साथी की कमीज की जेब में हाथ डाल कर गुटखे की पुडिया निकाल कर दांतों में दबा कर चीरा और अंगुठे और दरमियानी उंगुली से पकड़ कर गुटखे को रोने वाली लोमडी की तरह गर्दन उठा कर मुंह में भर लिया। अंग्रेज़ी का शाम नामा पढने वाले ने अखबार पर से नज़रें उठा कर दरवाज़े के क़रीब खड़े ज़ोर ज़ोर से बातें करने वाले नौवारिदों⁽⁴⁾ को देखा, उस की आंखों में नागवारी को मैं ने साफ महसूस कर लिया था। यह तीनों आदमी जो तीस पैतीस के पेटे में नजर आते थे और अपने लिबास और लबो लहजे से क्लास थ्री के ऐसे सरकारी मुलाजिम मालूम होते थे जिन्हें शायद फर्स्ट क्लास का सीजन टिकट मुफ़्त में हासिल था. मेरी तक्जोह का मर्कज अब वह खरिट भरने वाला आदमी नहीं बल्कि यह तीनों थे बिलखसुस⁽⁵⁾ वह कसरती जिस्म वाला था जिस के गले में पतली सी सोने की चेन और रूद्राक्ष की मोटी माला लटक रही थी और दाएं हाथ की कलाई में स्टील का मोटा सा कड़ा था जैसे सिख पहनतें हैं. "ये साला चीक चलती गाडी पर क्यों नहीं चढ़ता,'' पस्ता क़दवाले ने कंघी जेब में रख कर संजीदा चेहरा बना 1. कांटा 2. छोटा 3. बिखेर देना (तोड़ देना) 4. आगम्तुकों 5. विशेषत:

آزادی کے بعد اردو افسانہ

کر یو چھا۔

"اس چوتیے کو چڑھنا آتا تو عورت چھوڑ کے کیوں جاتی !" رودراکش والے نے معنی خیز انداز میں کہا اور تیوں مستما مار کر بنس پڑے۔ ان کے قبلیم کی ناشائنگی اور محش نداق کو صرف میں نے بی نہیں سمجی نے محنوں کیا تھا۔ ایک عجیب ی بوسارے میں پھیل رہی تھی۔ شاید انھوں نے ٹھڑ اپی رکھا تھا جس میں شامل نوسادر کی تیزابی بو نتینوں میں سوزش پیدا کرنے تھی تھی۔ اخبار پڑھنے والے نے اخبار بیں اپنا چہرہ ایسے چھپا لیا جیسے وہ اب کی سے نظریں ملانا نہ چاہتا ہو۔ دروازے پر کھڑا پولس والا بھی ان کے نداق پر وانت نکال کر اندھیرے میں دیکھتے ہوئے منہ چلاتے ہوئے بننے لگا جیسے وہ اندھیرے ہی کو مرفن غذا کی اندھیرے میں دیکھتے ہوئے منہ چلاتے ہوئے بننے لگا جیسے وہ اندھیرے ہی کو مرفن غذا کی طرح چیا رہا ہو۔ دروازے کے دوسری طرف کھڑے چشنے والے نے ججھے ویکھا میں نے والے نے انکھا میں نے والے نے انکھا جی انہا کہ انہاں اور اسے دیکھا چیاتے ہوئے زور سے نکھاز کر دروازے کی طرف جمک کر پیک انچالی اور اس کی نظروں کو چو تکتے ہوئے دور سے نکھاز کر دروازے کی طرف جمک کر پیک انچالی اور اس کی نظروں کو چو تکتے ہوئے دیکھا۔ اس کی آنکھیں چادر اوڑھ کر جلکے جکم کر پیک انجالی اور اس کی نظروں کو چو تکتے ہوئے دیکھا۔ اس کی آنکھیں چادر اوڑھ کر جلکے جلکے تر اور جم کئی تھیں۔ اس نے جلدی جلدی سلای سگریٹ کے دو چارش لے کر دھوئیں کا گاڑھا خیار چھوڑا جس نے ربلوے کاشیبل کے چہرے اور ''تمباکو نوشی ممنوع ہے'' کی انگریزی عبر کیا دیا۔ رودراکش والے نے اپنا سگریٹ لیے قد والے کی طرف بڑھا دیا۔ رودراکش والے نے اپنا سگریٹ لیے قد والے کی طرف بڑھا دیا۔ رودراکش والے نے اپنا سگریٹ لیے قد والے کی طرف بڑھا دیا۔

''اب میکون مجومری کا نواب سورہا ہے؟''اس نے ناگواری سے زور سے کہا جیسے سب کو سنانا چاہتا ہو۔'' کمال ہے سالا ادھر کمپارٹمنٹ میں سب کھڑے ہیں اور یہ مال کا استقن لوگوں کی سیٹ پر قبضہ کر کے سورہا ہے۔''

رودراکش والے کی گالیوں کے علاوہ یہ بات مجھے ہی نہیں شاید سمعوں کو اچھی گی تھی اس لیے سب کی توجہ اس کی طرف میذول ہوگئی تھی۔

''اے اٹھ کیا باپ کا گھر سجھ لیا ہے؟'' رودرائش والا سونے والا کی سیٹ پر جھک کر چیجا۔ پھر وہ دو تین بارای طرح چیجا لیکن جادر کے بیٹچ ذرای بھی حرکت نہیں ہوئی۔ ''ارے بھوسڑی کا بہت ڈھیٹ مالوم پڑتا ہے۔'' وہ اب جھنجھلانے لگا تھا۔

कर पूछा।

"उस चृतिये को चढ़ना आता तो औरत छोड़ के क्यों जाती" रुद्राक्ष वाले ने मानी खेज अंदाज़ में कहा और तीनों ठटठा मार कर हंस पड़े। उन के क़हक़हे की नाशांडस्तर्गी⁽¹⁾ और फ़हश्⁽²⁾ मज़ाक को सिर्फ़ मैंने ही नहीं सभी ने महसूस किया था। एक अजीब सी बु सारे में फैल रही थी। शायद उन्होंने ठर्रा पी रखा था, जिस में शामिल नोसादर की तेज़ाबी बू नथनों में सोज़िश⁽³⁾ पैदा करने लगी थी। अखबार पढने वालें ने अखबार में अपना चेहरा ऐसे छुपा लिया जैसे वह अब किसी से नज़रें मिलाना न चाहता हो। दरवाज़े पर खड़ा पुलिस वाला भी उन के मजाक पर दांत निकाल कर अंधेरे में देखते हुए मुंह ःलाते हुए हंसने लगा जैसे वह अंधेरे ही को मुराग़न (4) गज़ा की तरह चबा रहा हो। दरवाज़े के दूसरी तरफ़ खड़े चश्में वाले ने मुझे देखा मैं ने उसे देखा उस ने और मैं ने साथ ही में कंधे नाखुशगवारी से उचकाए। रुद्राक्ष वाले ने गुटखा चबाते हुए जोर से खंखार कर दरवाजे की तरफ़ झक कर पीक उछाली और जेब से सिगरेट निकाल कर सुलगा कर पूरे डिब्बे में एक उचटती नज़र डाली, मेरी नज़रों ने उस की नज़रों को चौंकते हुए देखा। उस की आंखें चादर ओढ़ कर हुल्के हुल्के खर्राटे भरने वाले पर जम गई थीं उस ने जल्दी जल्दी सिगरेट के दो चार कश लेकर धुएं का गाढ़ा गुबार छोडा जिस ने रेलवे कांस्टेबल के चेहरे और ''तम्बाकु नोशी ममन् (5) है'' की अंग्रेजी तंबीह⁽⁶⁾ को ध्ंधला दिया, रुद्राक्ष वाले ने अपना सिगरेट लम्बे क़दवाले की तरफ़ बढा दिया।

"अबे यह कौन भोसड़ी का नवाब सो रहा है"? उस ने नागवारी से जोर से कहा जैसे सब को सुनाना चाहता हो। "कमाल है साला इधर कॅम्पार्टमैन्ट में सब खड़े हैं और यह मां का तीन लोगों की सीट पर कब्ज़ा कर के सो रहा है।" रुद्राक्ष वाले की गालियों के अलावा यह बात मुझे ही नहीं शायद सभों को अच्छी लगी थी इस लिए सबकी तक्जोह उसकी तरफ़ मबज़ूल 7 हो गई थी। "ऐ उठ क्या बाप का घर समझ लिया है।" रुद्राक्ष वाला सोने वाला की सीट पर झुक कर चीख़ा। फिर वह दो तीन बार इसी तरह से चीख़ा लेकिन चादर के नीचे जरा सी भी हरकत नहीं हुई।

''अरे भोसड़ी का बहुत ढीठ मालूम पड़ता है'' वह अब झुंझलाने लगा था। ''छोड़ना मरने दे साले को यार----- चल उधर दरवाज़े पे हवा खायेगें।''

^{1.} बदतमोजी 2. गन्दा 3. जलन 4. वसापूर्ण 5.वर्जित 6. चेतावनी 7. आकर्षित

آزادی کے بعد اردو انسانہ

" چھوڑ نا مرنے دو سالے کو یار چل ادھر دردازے یہ ہوا کھا کیں ہے۔" بہت قد والے نے اپنی جگد پر کھڑے کھڑے کہا۔

"ارے ایا کیے سالا بلک برارٹی ہے اکیے کا تضدا کیے جلے گا۔"

'' وصحح بات ہے میں نے بھی ان سے یہی بولا تھا۔ لیکن بید'' چشمے والے نے کانٹیل کی طرف دیکھ کر رودراکش والے کی تائیدگ۔

اخبار پڑھنے والے نے اپنا اخبار تہد کر کے پتون کی جیب میں کسی لفافے کی طرح خونس لیا اور ستائثی نظروں سے انھیں و کھنے لگا۔

سب کی توجہ اب رودراکش والے پرتھی جیت اس ناجائز قبضے کے خلاف وہ تمام مسافروں کی امیدوں کا مرکز ہو۔ رودراکش والے نے سونے والے کی سیت بر بایاں ہاتھ رکھا اور دائمیں ہاتھ کے پنچ کو اینے گھٹول پر رکھ کر جھک گیا۔ اس نے چیکتی آمکھوں سے سر تھماکر ڈے میں موجود لوگوں کو دیکھا چھرا مین چو کا نعرہ بلند کر کے سونے والے کی جادر ایسے صبی جیسے مردہ جانور کی کھال اتار رہا ہو۔ سونے والا شاید گالی کی آواز سے یا عادر کھنے جانے سے جاگ کیا تھا سرکی عادر کے نیچ سے ناگواری میں بھنچ ہوئے ہونوں والا ایک چرہ تھوڑی تک دکھائی دے رہا تھا۔جس کی سلوٹوں والی پیشانی کے فیجے بری بری میلی آئیس جیرت سے رودرائش والے کو محور ربی تھیں۔ بیلی انگیوں والی وومشیوں نے جادر کے کھکتے کناروں کومفبوطی سے پکڑ رکھا تھا۔ جادر کا دوسرا کنارا رودراکش والے کی مضبوط مٹی میں تھا۔ وہ کمر کی طرف سے جمک کر حیادر کو ایسے تھینج رہا تھا جیسے رسد کثی کے مقابلے میں این طاقت کا مظاہرہ کر رہا ہو۔ رودراکش والے کے چیرے یر اجا تک خقت بجری مسکرابث ابحر آئی جیسے اسے اپن فکست محسوس ہو رہی ہو۔ اس کی موثی مونچموں کے نیجے دو دانت مسکرا تو رہے متے لیکن ان میں مجروح انا کا خونخوارین بھی جملک رہا تھا۔ ہم سب کی نظریں طاقت آ زمائی کے اس کھیل کے انجام پر جمی ہوئی تھیں۔ ہارے لیے یہ ایک ولیب کھیل تھا لیکن میری خواہش تو میم تھی کہ رودراکش والا جاور سمیت سونے والے کو بھی تھینے کرسیٹ کے نیجے بھینک دے۔ جمائیوں کے واغ والا اس منظر کو د کھنے کے لیے اور قریب کھیک آیا تھا اور کھی کھی کی آواز کے ساتھ زور زور سے بنس

पस्ता क़द वाले ने अपनी जगह पर खड़े खड़े कहा।

"अरे ऐसा कैसे साला पब्लिक प्रापर्टी पे अकेले का क़ब्ज़ा! कैसे चलेगा।" "सही बात है मैंने भी उन से यही बोला था। लेकिन यह……" चश्में वाले ने कान्स्टेबल की तरफ़ देख कर रुद्राक्ष वाले की ताईद की।

अख़बार पढ़ने वाले ने अपना अख़बार तह कर के पतलून की जेब में किसी लिफ़ाफ़े की तरह टुंस लिया और सताइशी⁽¹⁾ नज़रों से उन्हें देखने लगा।

सबकी तवज्जोह अब रुद्राक्ष वाले पर थी जैसे उस नाजाइज कब्जे के खिलाफ़ वह तमाम मुसाफ़िरों की उम्मीद का मरकज़ हो। रुद्राक्ष वाले ने सोने वाले की सीट पर बायां हाथ रखा और दायें हाथ के पंजे को अपने घटनों पर रख कर झुक गया। उसने चमकती आंखों से सर घुमाकर डिब्बे में मौजूद लोगों को देखा फिर ''बहन चो'' का नारा बुलन्द करके सोने वाले की चादर ऐसे खींची जैसे मुद्रा जानवर की खाल उतार रहा हो। सोने वाला शायद गाली की आवाज से या चादर खींचे जाने से जाग गया था सरकती चादर के नीचे से नागवारी में भिंचे हुए होठों वाला एक चेहरा ठोडी तक दिखाई दे रहा था। जिस की सिलवटों वाली पेशानी के नीचे बड़ी बड़ी मैली आखें हैरत से रुद्राक्ष वाले को घूर रही थीं। पतली उंगलियों वाली मुट्टियों ने चादर के खिसकते किनारों को मजबूती से पकड़ रखा था, चादर का दूसरा किनारा रुद्राक्ष वाले की मजबूत मुट्ठी में था। वह कमर की तरफ़ से झुक कर चादर को ऐसे खींच रहा था जैसे रस्सा कशी के मुक़ाबले में अपनी ताक़त का मुज़ाहिरा कर रहा हो। रुद्राक्ष वाले के चेहरे पर अचानक खिफ़र्रत⁽²⁾ भरी मुसकुराहट उभर आई जैसे उसे अपनी शिकस्त⁽³⁾ महसूस हो रही हो। उस की मोटी मूछों के नीचे दो दांत मुसकुरा तो रहे थे लेकिन उन में मजरूढ अना का खंखारपन भी झलक रहा था। हम सब की नज़रें ताक़त आज़माइ के इस खेल के अंजाम पर जमी हुई थीं। हमारे लिए यह एक दिलचस्प खेल था लेकिन मेरी ख्वाहिश तो यही थी कि रुद्राक्ष वाला चादर समेत सोने वाले को भी खींच कर सीट के नीचे फेंक दे। झाइयों के दारा वाला इस मंज़र को देखने के लिए और क़रीब खिसक आया था और खी खी की आवाज के साथ जोर जोर से हंस रहा था। मुझे हंसी भी आ रही थी और सोने वाले की दिवाई पर गुस्सा भी। अब चादर सोने वाले के सीने तक आ गई थी वह फटी फटी आंखों से रुद्राक्ष वाले को देखते हुए चादर को मजबती से पकड़ कर अपनी तरफ़ खींच रहा था

^{1.} प्रशंसक 2. झंझलाहट 3. पराजय

آزادی کے بعد اردو انسانہ

ر ہا تھا۔ مجھے ہنس مجی آربی تھی اور سونے والے کن ڈھٹائی پر عصہ بھی۔ اب چادر، سونے والے کے سینے تک آئی تھی وہ میٹی میٹی آٹھوں سے رودراکش والے کو دیکھتے ہوئے عادر کومضبوطی سے پکڑ کر اپنی طرف تھینج رہا تھا اس اوشش میں وہ اپنے پورے بدن سے کانپ رہا تھا اس کی ضد پر میرا بن جاہا کہ کہ پڑھ کر رودراکش والے کی مدد کو پینی جاؤں۔ جمائیوں کے داغ والا بدستور کھی کھی کر کے بنس رہا تھا۔ اس کی بیانسی غصہ دلانے والی تھی۔ میں نے جلتی نظروں سے اسے ویکھا وہ بنے جارہا تھا جیسے مداری کے کھیل سے مخلوظ ہورہا ہو۔ رودراکش والے کا چبرہ سرخ ہوگیا اور اس نے نتھنوں کوسکوڑ کردانتوں کو کچ کیا کر بوری طانت سے جاور کو تھینےا۔ اس لمح میں مجھے اس کا چرہ کوں کی اثرائی میں ہارنے والے کھسیانے کتے کی طرح لگا جو وانتوں کو تکوس کر حاوی ہو جانے والے کتے پر آخری وار كرنے والا ہو۔ جاور كے چيجے سے نظرآنے والى آئكميں خوف سے بيث يري اور برگد کی جناؤں جیسی بہل خنک الکیوں کی گرفت ڈھیلی بڑگی رودراکش والے کے بھنچ ہوئے دانتوں کے درمیان سے مصراتا ہوا " بہن چو کا نعرہ لکا اور جادر کوسونے والے کی گرفت سے چیڑا کر وہ پیچے کی طرف جمول کیا تھا لیکن اس نے شاید اپنے پنجوں پر ال جانے والے اسیے جسم کے بہ جھ کوسنجال لیا تھا۔رودراکش والے نے فاتحانہ مسراہٹ کے ساتھ ڈب میں چاروں طرف نظریں دوڑا کیں۔ مجھے بھی ایبا لگا تھا جیسے وہ کوئی بڑی اہم لڑائی ہارتے ہارتے جیت گیا ہواگر وہ ہار جاتا تو ہماری بھی ہار ہو جاتی۔ میں نے محسوس کیا کہ میرے ہون بھی تھیل کرمسکرا رہے ہیں۔ میرے ہونٹ کیول مسکرا رہے ہیں؟ میں نے خود سے سوال کیا میں نے ڈیے میں موجود لوگوں کے تاثرات کو بڑھنے کی کوشش کی جو كمرے تے ان كے بھى مونث مكرا رہے تے جو بيٹے تے ان كے چرول يركوكى روعمل نہیں تھا مسرانے والوں کو شاید اٹی حق تلفی کرنے والے کی درگت پر خوثی ہو رہی تھی۔ عادر کے نیچے سے ایک مرقوق چرے والاتمیں پیغس سال کا آدی ہم سب کی نظروں کے سامنے تھا وہ خود کوسیٹ کر اٹھنے کی کوشش کر رہا تھا جیے اس کے جم سے جاور نہیں سارے كيرے اتار ليے كئے ہوں۔ اس كاشيو برحا ہوا تھا اور سياه طقوں كہ ج اس كى بدى بدى آكسيں سو کھے چرے پر تاسب سے زیادہ بری معلوم ہو رہی تھیں۔ اس نے میلی کرتے نما بنڈی اور

इस कोशिश में वह अपने पूरे बदन से कांप रहा था उस की इस जिद पर मेरा जी चाहा के बढ़कर रुद्राक्ष की मदद को पहुंच जाऊं। झाइयों के दाग वाला बदस्तूर खी खी कर के हंस रहा था। उस की यह हंसी गुस्सा दिलाने वाली थी, मैं ने जलती नजरों से उसे देखा वह हंसे जारहा था जैसे मदारी के खेल से महजूज़⁽¹⁾ हो रहा हो। रुद्राक्ष वाले का चेहरा सुर्ख हो गया और उसे ने नथनों को सिकोड़ कर दांतों को किच किचा कर पूरी ताक़त⁽²⁾ से चादर को खींचा। इस लम्हे में मुझे उसका चेहरा कुतों की लड़ाई में हारने वाले खिसयाने कुत्ते की तरह लगा जो दांतो को निकोस कर हावी हो जाने वाले कुत्ते पर आख़री वार करने वाला हो। चादर के पीछे से नजर आने वाली आंखें ख़ौफ़ से फट पड़ी और बरगद की जटाओं जैसी पतली खुशक उंगुलियों की गिरफ़त ढीली पड़ गई। रुद्राक्ष वाले के भिंचे हुए दांतों के दरमियान से घुसराता हुआ ''बहन चो......'' का नारा निकाला और चादर को सोने वाले की गिरफ़त से छुड़ा कर वह पीछे की तरफ़ झूल गया था लेकिन उस ने शायद अपने पंजों पर हिलजाने वाले अपने जिस्म के बोझ को सम्भाल लिया था।

रुद्राक्ष वाले ने फातेहाना⁽³⁾ मुसकुराहट के साथ डिब्बे में चारों तरफ़ नजरें दौड़ायीं। मुझे भी ऐसा लगा था जैसे वह कोई बड़ी अहम लड़ाई हारते हारते जीत गया हो अगर वह हार जाता तो हमारी भी हार हो जाती। मैंने महसूस किया कि मेरे होंठ भी फैल कर मुसकुरा रहें हैं। मेरे होंठ क्यों मुसकुरा रहें हैं? मैंने खुद से सवाल किया मैंने डिब्बे में मौजूद लोगों के तास्स्रात को पढ़ने की कोशिश की जो खड़े थे उन के भी होंठ मुसक्ता रहे थे जो बैठे थे उनके चेहरों पर कोई रद्दो अमल नहीं था। मसक्राने वालों को शायद अपनी हक़तलफ़ी⁽⁴⁾ करने वाले की दुर्गत पर खुशी हो रहीं थी। चादर के नीचे से एक मदकुक़⁽⁵⁾ चेहरे वाला तीस पैंतीस साल का आदमी हम सब की नज़रों से सामने था वह खुद को समेट कर उठने की कोशिश कर रहा था जैसे उस के जिस्म से चादर नहीं सारे कपड़े उतार लिए गए हों। उस का शेव बढ़ा हुआ था और सियाह हलकों के बीच उस की बड़ी बड़ी आंखें सूखे चेहरे पर तनासुब से ज्यादा बड़ी मालूम हो रही थी। उस ने मैली कुरते नुमाबंडी और बोसीदा सा पाजामा पहन रखा था। जो आम तौर पर सरकारी अस्पतालों के मरीजों को पहनाया जाता है बटन न होने की वजह से गिरेबान खला हुआ था जिस में से उस के सीने के पंजर की हडिडयां झांक रही थी। उस का जिस्म कांप रहा था जैसे उसे जाड़ा लग रहा हो। उस ने अपने दोनों हाथों के 1. आनन्द लेना 2. शक्ति 3. विजयपूर्ण 4. हक्क मारना 5. तपेदिक से पीडित

گاڑی کی رفتار ست ہو چک تھی۔ رودراکش والے نے گردن گھا کر وروازے کی طرف دیکھا جھے لگا تھا کہ رودراکش والا اور اس کے ساتھی مولنڈ اشیشن پر اتر جا کیں گے۔ گاڑی مولنڈ اشیشن کے بلیٹ فارم پر ریک رہی تھی۔ ڈب کے دروازے کے قریب کھڑے تین چار لوگ اشیشن پر اتر گئے۔ اشیشن پر بھیڑ بالکل نہیں تھی۔ یہ دروازے کی طرف اس خیال سے دکھ رہا تھا کہ شاید رودراکش والا اور اس کے ساتھی پلیٹ فارم پر اتر جا کیں۔ ان کا فداتی اور انداز گفتگو شاید سعوں کو ناگوارگزر رہا تھا۔ اس لیے اب وہ لوگوں کی توجہ کا مرکز نہیں تھے۔ ٹرین کے چلتے ہی دروازے کے ٹھیک درمیان میں گی لوہ کی راڈ کو پکڑ کر آیک اندھا فقیر اور آیک جھے سات سال کی بڑی ڈب میں چڑھے تھے۔ اندھے فقیر کے چہرے پر چیک کے کہرے واغ تھے اس نے اپنی بہن ور آئھوں کو چھپانے کے لیے ساہ چشمہ پہن رکھا تھا۔ وہ دروازے کے اس نے آپی بہنور آئھوں کو چھپانے کے لیے ساہ چشمہ پہن ما گگ کر آپ گھر اوٹ رہا تھا۔ بڑی کا چہرہ اندھے فقیر سے کافی مشابہ تھا۔ اس نے آپی میلی ما گگ کر آپ کی ذرج ہو نے کو وجہ نے بڑی کے گھنوں کے نیچ تک کی فراک بہن رکھی تھی جو سائز میں کافی بڑی ہونے کی وجہ سے بڑی کے گھنوں کے نیچ تک کی فراک بہن رکھی تھی جو سائز میں کافی بڑی ہونے کی وجہ سے بڑی کے گھنوں کے نیچ تک کی فراک بہن رکھی تھی۔ اندھے کا ہاتھ پکڑ رکھا تھا اور رہ رہ کی فرون بھیک ما تھے ہوں گے۔ لئری نے آپ کی بیا کہ خور نے میات کی اندھے کا ہاتھ پکڑ رکھا تھا اور رہ رہ کو کی خور کی میات میں کی تھی۔ بی کی کے گھنوں کو بجا دیا کرتی تھی۔ شاید یہ اس کی عادت بن تی تی تی تی تھی۔ کی کی بیا دیا کرتی تھی۔ شاید یہ اس کی عادت بن تی تی تی تی تی تھی۔ کاس کی وہ بیا کرتی تھی۔ خور کی میات کی کی خور کی میات کیا ہی کی دوروں کو بجا دیا کرتی تھی۔ شاید یہ اس کی عادت بن تی تی تی تھی۔

"نيه فرست كلاس ہے او اندھے" بوليس والے نے رعب جمانے والى آواز ميں

पंजो पर जिस्म का बोझ रख कर दोनों पैरों को घुटनों की तरफ़ से खींच कर सीने से लगा लिया। पाजामें के चौड़े पांइचों में से उस की पतली पतली पिंडलियां दिखाई दे रही थीं जिन पर खुशकी की वजह से खरंड़सी जमी हुई थी और पैरों की उंगुलियों के दरिमयान हलदी जैसी पीलाहट थी। वह शिकार हो जाने वाले बेबस और कमजोर जानवर की तरह रुद्राक्ष वाले को बड़ी बेचारगी से देख रहा था।

गाडी की रफ़्तार सस्त हो चुकी थी। रुद्राक्ष वाले ने गर्दन घुमाकर दरवाज़े की तरफ़ देखा मुझे लगा था कि रुद्राक्ष वाला और उसके साथी मुलुंडा स्टेशन पर उतर जाएगें। गाडी मुलंडा स्टेशन के प्लेट फार्म पर रेंग रही थी। डिब्बे के दरवाज़े के क़रीब खड़े तीन चार लोग स्टेशन पर उतर गए। स्टेशन पर भीड़ बिल्कुल नहीं थी। मैं दरवाजे की तरफ़ इस ख्याल से देख रहा था कि शायद रुद्राक्ष वाला और उस के साथी प्लेट फार्म पर उतर जायें, उन का मज़ाक और अंदाज़े गुफ्तगु शायद सभों को न गवार गुज़र रहा था। इस लिए अब वह लोगों की तवज्जोह का मरकज नहीं थे। ट्रेन के चलते ही दरवाजे के ठीक दरमियान में लगी लोहे की राड को पकड़ कर एक अंधा फ़क़ीर और एक छ: सात साल की बच्ची डिब्बे में चढे थे। अंधे फ़क़ीर के चेहरे पर चेचक के गहरे दाग थे उस ने अपनी बेन्र आंखों को छुपाने के लिए सियाह चश्मा पहन रखा था, वह दरवाजे के क़रीब ही जगह बना कर चुपचाप खडा हो गया था। शायद वह भीख मांग कर अपने घर लौट रहा था बच्ची का चेहरा अंधे फ़क़ीर से काफ़ी मुशाबा (1) था। उस ने एक मैली सी फ़राक पहन रखी थी जो साइज में काफ़ी बड़ी होने की वजह से बच्ची के घटनों के नीचे तक आ रही थी। बच्ची के हाथ में कांच के दो छोटे छोटे मुस्ततील टुकड़े थे जिन्हें बजा कर दोनों भीख मांगते होंगे। लड़की ने एक हाथ से अंधे का हाथ पकड़ रखा था और रह रह कर कांच के टकड़ों को बजा दिया करती थी। शायद यह उस की आदत बन गई थी।

"यह फर्स्ट क्लास है ओ अंधे" पुलिस ने रोब जमाने वाली आवाज में अंधे फ़क़ीर को मराठी में आगाह किया,

''बाबा यह फर्स्ट क्लास है'' बच्ची ने अंधे फ़क़ीर का हाथ हिलाते हुए पुलिस वाले को देखते हुए कहा।

"अरे भूल हो गई" उस ने भी मुंह उठा कर अंधे शीशों से ख़ला⁽²⁾ में देखते हुए मुसकुरा कर मराठी में ऐसे कहा जैसे सामने खड़े मुख़ातिब को जवाब 1. मिलता जुलता 2: अंतरिक्ष

اند صے فقیر کو مراشی میں آگاہ کیا۔

''بابا بہ فرسٹ کلال ہے'' بچی نے اندھے فقیر کا ہاتھ ہلاتے ہوئے پولس والے کو د کھتے ہوئے کہا۔

"ارے بھول ہو گئ" اس نے بھی منہ اٹھا کر اندھے شیشوں سے خلا میں دیکھتے ہوئے مسکرا کر مراتھی میں ایسے کہا جیسے سامنے کھڑے مخاطب کو جواب دے رہا ہو۔"دو اشیشن بعد اترنا ہے" کہد کر دو پھر خلا میں دیکھ کر مسکرایا۔

بھکاری تو نہیں ہوسکنا کیونکہ بھیک ماتھنے والے بھی پہلے درجے اور دوسرے درجے اور دوسرے درجے اور ان دونوں درجوں کے مسافروں کے روقوں کے فرق کو خوب سجھتے ہیں۔ بارش کے دنوں میں بھکاری اکثر ریلوے پولس کی نظروں سے نیج کریا چھران کی ہھیلی کی تھیلی مٹاکر لوکل ٹرین کے دوسرے درجے میں سو جاتے تھے لیکن صبح پانچ بہتے جاگ پڑنا ان کے لیے ناگزیر تھا چونکہ مسافروں کی ریل پیل صبح پانچ بجے سے ہی شروع ہو جاتی ہے۔

اس کا مطلب یہ ہوا کہ یہ بھکاری نہیں ہے؟ تو پھر یہ کون ہے؟ گھٹنوں میں مند دیکر کا نہتے ہوئے اس آدمی کو دیکھ کر میں نے سوچا۔ میں نے محسوس کیا کہ اس کا جسم خوف سے نہیں بلکہ شدید کمزوری محسوس ہونے والی شنڈ سے کانپ رہا ہے۔

رودراکش والے کو شاید اچا تک محسوس ہوا تھا کہ اس کے ہاتھوں میں جو چادر ہے وہ میلی اور گندی ہے اس نے کرا ہیت سے مند بنا کر چادر کوسیٹ پر پھینک کر دونوں ہاتھوں کو ایسے جھاڑا جیسے گندگی جھاڑ رہا ہو چشے والا جو اب تک پولس والے کے قریب کھڑا بڑی دلچیں سے بیسب کچھ دیکھ رہا تھا۔ کھسک کر رودراکش والے کے قریب آکر کھڑا ہو گیا تھا۔ اور اس کے کسرتی بازوں کی مجھلیوں کو وہ ستائشی نظروں سے ایسے دیکھ رہا تھا جسے کوئی فاحشہ کی خوبصورت اور صحت مندلڑ کے کونہارتی ہے۔

وہ بری حرت سے اپنی جادر کو دکھ رہا تھا جو اس سے صرف ہاتھ بھر کے فاصلے پر بڑی ہوئی تھی۔ اس نے ایک سہی ہوئی چڑیا کی طرح رودراکش والے کو دیکھا جو اپند دونوں ہاتھ کمر پر رکھ کر اسے گھور رہا تھا اسنے لرزتا ہوا خٹک ارہرکی ٹبنی جیسا ہاتھ جادر کی طرف بڑھایا ہی تھا کہ رودراکش والے نے ''ہاتھ مت لگانا'' اتنی زور سے کہا کہ جاور والا

दे रहा हो, ''दो स्टेशन बाद उतरना है.....'' कह कर वह फिर ख़ला में देख कर मुस्कुराया।

भिखारी तो नहीं हो सकता क्यों के भीख मांगने वाले भी पहले दर्जे और दूसरे दर्जे और उन दोनो दर्जों के मुसाफ़िरों के ख्रव्यों के फ़र्क़ को ख़ूब समझते हैं। बारिश के दिनों में भिखारी अक्सर रेलवे पुलिस की नजरों से बच कर या फिर उस की हथेली की खुजली मिटा कर लोकल ट्रेन के दूसरे दर्जे में सो जाते थे लेकिन सुबह पांच बजे जाग पड़ना उन के लिए नागुजीर 10 था। चूंकि मुसाफ़िरों की रेल पेल सुबह पांच साढ़े पांच बजे से ही शुरू हो जाती है।

इस का मतलब यह हुआ कि यह भिखारी नहीं है? तो फिर यह कौन है? घुटनों में मुह दे कर कांपते हुए उस आदमी को देख कर मैंने सोचा। मैंने महसूस किया कि उस का जिस्म ख़ौफ़ से नहीं बल्कि शदीद कमजोरी महसूस होने वाली ठंड से कांप रहा है।

रुद्राक्ष वाले को शायद अचानक महसूस हुआ था कि उस के हाथों में जो चादर है वह मैली और गंदी है उस ने कराहियत⁽²⁾ से मुंह बना कर चादर को सीट पर फैंक कर दोनों हाथों को ऐसे झाड़ा जैसे गंदगी झाड़ रहा हो चश्में वाला जो अब तक पुलिस वाले के क़रीब खड़ा दिलचस्पी से यह सब कुछ देख रहा था खिसक कर रुद्राक्ष वाले के क़रीब आकर खड़ा हो गया था। और उस के कसरती बाजुओं की मछलियों को वह सताइशी नज़रों से ऐसे देख रहा था जैसे कोई फाहिशा⁽³⁾ किसी खबस्रत और सेहत मंद लड़के को निहारती है।

वह बड़ी हसरत से अपनी चादर को देख रहा था जो उस से सिर्फ़ हाथ भर के फ़ासले पर पड़ी हुई थी। उस ने एक सहमी हुई चिड़िया की तरह रुद्राक्ष वाले को देखा जो अपने दोनों हाथ कमर पर रख कर उसे घूर रहा था। उस ने लरजता हुआ खुश्क अरहर की टेहनी जैसा हाथ चादर की तरफ़ बढ़ाया ही था कि रुद्राक्ष वाले ने ''हाथ मत लगाना'' इतनी जोर से कहा के चादर वाला ही नहीं मैं भी चौंक पडा।

"क्या बात है कौन चिल्ला रहा है" अंधे फ़क़ीर ने इसी तरह मुंह उठा कर ख़ला में देख कर पूछा। बच्ची रुद्राक्ष वाले की आवाज़ से सहम गई थी और अंधे फ़क़ीरे से लग कर खड़ी हो गई थी। वह सहमी सी रुद्राक्ष वाले को देख रही थी जो आंखें निकाल कर चादर वाले को घूर रहा था। चादर वाले ने अपना हाथ

^{1.} लाजमी 2. घृणा 3. बदचलन

ى نېيى مىن جى چونك برا تقار

" کیا بات ہے کون چلا رہا ہے" اند ھے فقیر نے ای طرح منہ اٹھا کر فلا میں دکھ کر کوری ہو پہا۔ پکی رودراکش والے کی آواز سے ہم گئ تھی اور اند ھے فقیر سے ساگ کر کوری ہو گئی تھی۔ وہ ہمی ہمی سی رودراکش والے کو دکھ رہی تھی جو آئھیں نکال کر چادر والے کو کھور رہا تھا۔ چادر والے نے اپنا ہا تھ کھینے کر پھر اپنے گھٹنوں کے گرد باندھ لیا تھا اس کی کھور رہا تھا۔ چیب ضدی آدی ہے سیٹ سے اٹھتا ہی نہیں ہے۔ اس کی ب کہی میں اضافہ ہو گیا تھا۔ بجیب ضدی آدی ہے سیٹ سے اٹھتا ہی نہیں ہے۔ اس کی ب حسی پر جھے غصہ تو تھا ہی لیکن چشے والے کی کہی کا دباؤ چادر والے سے زیادہ اس پر غصہ دلا رہا تھا۔ میں نے ناگواری سے اسے گھورا۔ وہ بڑے انہاک سے چادر والے کو دکھ رہا تھا۔ میں نے محسوس کیا کہ اس کا بیانہاک در اصل دکھاوا تھا وہ قطار تو ڈر آ کے گھنے والوں کی طرح برتاؤ کر رہا تھا۔ اس کے اس کرکو دکھ کر جی میں آیا کہ پہلے ای کو اٹھا کرٹرین کی طرح برتاؤ کر دہا تھا۔ اس کے اس کرکو دکھ کر جی میں آیا کہ پہلے ای کو اٹھا کرٹرین سے باہر پھینک دوں میں نے اپنے اطراف میں دکھنے کے لیے سرگھمایا تو جھے بید دکھ کر جیرت ہوئی کہ ڈب میں کھڑے ہوؤں میں اسے بیشتر لوگ چادر والے کی سیٹ کے قریب جرت ہوئی کہ ڈب میں اس کی جیک تھی جولومڑی کی آٹھوں میں اس وقت ہوئی ہے جوڑ دیتا ہے۔ ان تمام کی آٹھوں میں اسی چک تھی جولومڑی کی آٹھوں میں اس وقت ہوئی ہے جوڑ دیتا ہے۔

''ابے سالے تیرا باپ بھی مجھی فرسٹ کلاس میں بیٹھا تھا؟'' رودراکش والے نے خشمگیں نظروں سے اسے گھور کر پوچھا۔

''ارے پہلے اس کو پوچھ کہ مجھی اس کا باپٹرین میں بھی بیشا تھا کیا؟ کھی تھی! ''کیوں گالی بکتا ہے ساب؟ اندھا ہوں نا، مالوم نہیں تھا کہ یہ فسٹ کلاس ہے.....' اندھے فقیر نے لاکھی سمیت اینے ہاتھ جوڑ کر عاجزی سے کہا۔

"وہ ہمیں نہیں کہ رہے ہیں۔" پی نے اندھے سے کہا لیکن اس کی نظریں رودراکش والے یری تھیں۔

" پھر وہ کس کو گالیاں بک رہا ہے؟ کیا ڈب میں کوئی دوسرا فقیر بھی آگیا ہے؟" اندھے فقیر نے یوجھا۔

खींच कर फिर अपने घुटनों के गिर्द बांध लिया था उस की कंपकपी में इजाफ़ा हो गया था। अजीब जिद्दी आदमी है सीट से उठता ही नहीं है। उस की बेहिसी पर मुझे गुस्सा तो था ही लेकिन चश्में वाले की कोहनी का दबाव चादर वाले से ज्यादा उस पर गुस्सा दिला रहा था मैंने नागवारी से उसे घूरा। वह बड़े इनिहमाक (1) से चादर वाले को देख रहा था। मैंने महसूस किया कि उस का यह इनिहमाक दरअसल दिखावा था। वह क़तार तोड़ कर आगे घुसने वालों की तरह बरताव कर रहा था। उसके उस मकर को देख कर जी में आया कि पहले उसी को उठा कर ट्रेन से बाहर फेंक दूं। मैंने अतराफ़ में देखने के लिए सर घुमाया तो मुझे यह देख कर हैरत हुई कि डिब्बे में खड़े हुए में से बेशतर (2) लोग चादर वाले की सीट के क़रीब आखड़े हुए थे। उन तमाम की आंखों में ऐसी चमक थी जो लोमड़ी की आंखों में उस वक्त होती है जब शेर अपने शिकार से शिकमसैर (3) हो कर उसी की बची खुची हड़िडयां मुर्दा खोर जानवरों के लिए छोड़ देता है।

''अबे साले तेरा बाप भी कभी फर्स्ट क्लास में बैठा था?'' रुद्राक्ष वाले ने खुश्मर्गी⁽⁴⁾ नज़रों से उसे घूर कर पूछा।

"अरे पहले इस को पूछ के कभी इस का बाप ट्रेन में भी बैठा था क्या? खी, खी, खी"

''क्यों गाली बकता है साब ? अंधा हूं ना, मालूम नहीं था कि यह फर्स्ट क्लास है……'' अंधे फ़क़ीर ने लाठी समेट अपना हाथ जोड़ कर आजज़ी⁽⁵⁾ से कहा,

''वह हमें नहीं कहरहे हैं'' बच्ची ने अंधे से कहा लेकिन उस की नज़रें रुद्राक्ष वाले पर ही थीं।

''फिर वह किस को गालियां बक रहा है ? क्या डिब्बे में कोई दूसरा फकीर भी आगया है ?'' अंधे-फ़क़ीर ने पूछा।

बच्ची आहिस्ता आहिस्ता अंधे फ़क़ीर से कुछ कहने लगी और अंधा झुक कर बड़ी तकजोह से उस की बार्ते सुन रहा था। बच्ची बार बार मदक़ूक़ आदमी को देख लेती थी ।

चादर वाला मदकूक आदमी सहमा हुआ सा रुद्राक्ष वाले को देख रहा था अलब्ज़ा उस के हडयाले रुख़सार का पतला सा गोश्त फड़कने लगा था। रुद्राक्ष जात ने अचानक उसे गिरेबान से पकंड़ कर खींच लिया, "साला जवाब नहीं देता 1. ध्यान पूर्वक 2. अधिकतर 3. पेट भरकर 4. खौफ़नाक 5. विनम्रता

بی آہتہ آہتہ اندھے سے کھے کہنے لگی اور اندھا جھک کر بڑی توجہ سے اس کی باتیں من رہا تھا۔ بی بار بار مرقوق آدمی کو دکھے لیق تھی۔

دھپ دھراپ دھپ کی بے ہنگم آواز پر میں اپنے خیالات سے چونکا۔ رودراکش والا مرقوق آدمی کو دروازے کی طرف ڈھکیل رہا تھا۔ شاید اشیشن آنے والا تھا۔

"ارے بابا کا ہے کو مارتا ہے؟" اچا تک ایک کرخت آواز نے پورے ڈ بے کو چونکا دیا۔ بیا ندھے فقیر کی آواز تھی۔ وہ زور زور سے، دائی اندھیرے میں مھورتا ہوا بول رہا تھا۔ مدقوق آدی کو ڈھکیلتے ڈھکیلتے رودراکش والا رک گیا اس نے بلٹ کر خونخوار نگاہوں سے اندھے کو دیکھا۔

मैं क्या चित्रया हूं?'' रुद्राक्ष वाले की गिरफ़्त में उसकी गर्दन के ऊपर सूखे हुए चेहरे पर बड़ी बेचारगी थी, इलतिजा थी, रहम तलबी थी, मुझे अपना दम घुटता हुआ महसूस होने लगा जैसे कोई मेरा गला घोंट रहा हो.....

"खी खी खी, बंदर साला खी खी खी" झाइयों के दाग वाले की हंसी कांनों में गर्म तेल की तरह छनछना रही थी रुद्राक्ष वाले ने उसे यक्लख्त⁽¹⁾ ऐसे छोड़ दिया जैसे वह कोई बेजान और बेकार शे हो। वह धप से फर्श पर गिरा। चोट शायद उस के कुल्हे में लगी थी उस के मुंह से जोर की कराह निकली थी वह कराहते हुए उठने की कोशिश करने लगा। मैंने पुलिस वाले की तरफ मदद मांगने वाले अंदाज़ में देखा जैसे में गूंगा हूं और सिर्फ़ नज़रों ही से अपनी बात कह सकता हूं पुलिस वाला दोनों हाथों से राड पकड़े मुस्कुरा रहा था। बच्ची धीमी आवाज़ में अंधे से कुछ कह रही थी और अंधे की भवें कमान की तरह तन गई थीं।

''भों सड़ी कामादर चोद बाप की प्रापर्टी समझ के सो रहा था......'' रुद्राक्ष वाला गालियां बक रहा था और उस का साथी खी खी खी! कोई अंजानी गिरफ़्त मेरी गर्दन पर बढ़ती जा रही थी। मेरा जी कर रहा था कि फौरन ही स्टेशन आजाए और मैं डिब्बे से उतर कर इस माहौल से निजात हासिल करलूं।

धप धड़ाप धप की बेहंगम आवाज पर मैं अपने ख्यातात से चौंका, रुद्राक्ष वाला मदक़ूक आदमी को दरवाजे की तरफ़ ढकेल रहा था,। शायद स्टेशन आने वाला था।

"अरे बाबा काहे को मारता है?" अचानक एक करख़त⁽²⁾ आवाज ने पूरे डिब्बे को चौंका दिया। यह अंधे फ़क़ीर की आवाज थी। वह जोर जोर से, दाएमी⁽³⁾ अंधेरे में घूरता हुआ बोल रहा था। मदक़ूक आदमी को ढकेलते ढकेलते रुद्राक्ष वाला रुक गया उस ने पलट कर खुंखार निगाहों से अंधे को देखा।

"ओ अंधे" पुलिस वाला फिर अपनी जगह से चींखा, "एक तो तुम भिखारी लोग बिना टिकट के ट्रेन में घुसता है और ऊपर इतना रूवाब दिखाता है"

पुलिस वाले का चेहरा हूबहू रुद्राक्ष वाले जैसा बन गया था जैसे रुद्राक्ष वाले ने ही वर्दी पहनली हो। मदक़ूक़ आदमी की आंखों में बेबसी के साथ आंसू भी शामिल होगए थे। मैं गैंगवे से निकल कर दरवाजे के क़रीब जाकर खड़ा हो गया।

^{💴 1.} अचानक 🔝 2. कर्कश 🕒 3. हमेशा का

''اد اندھے۔'' پولس والا چرائی جگہ سے چینا '' ایک تو تم سمیکاری لوگ بنا کلٹ کے ٹرین میں محستا ہے اور او پر اتنا رواب دکھاتا ہے۔''

پلس والے کا چہرہ ہو بہورودراکش والے جیسا بن کیا تھا جیسے رودراکش والے نے علی وردی بہن لی ہو۔ مرقوق آدمی کی آکھوں میں بے بی کے ساتھ آنسو بھی شامل ہو گئے تھے۔ میں گینگ وے سے نکل کر وروازے کے قریب آ کر کھڑا ہوگیا۔ میں نے ارادہ کرایا تھا کہ اب اگر رودراکش والے نے زیادتی کی تو میں اے ضرور روکوں گا۔اس سے لاونگا نہیں البتہ شائستہ زبان میں اے ضرور روکوں گا۔لین تم اسے درکو گے کیے؟ وہ تو غنڈہ نظر آتا ہے۔ ممکن ہے وہ نشے میں ہو اور تمھاری بے عزتی کردے! یہ بوے اہم سوالات شے جن کا جواب جمعے انے کی کوشش ضرور کروں گا۔ بیس نے خود کو سمجھانے کی کوشش ضرور کروں گا۔" میں نے خود کو سمجھانے۔

گاڑی کی رفتار پھر کم ہونے گئی تھی۔ اشیشن قریب تھا۔ رددراکش دالا کمر پر دونوں ہاتھ رکھے مدقوق آدمی کو ایسے گھور رہا تھا جیسے باکسر اپنے مد مقابل کو جاروں شانے چت کرنے کے بعد اسے حقارت سے دیکھتا ہے ۔ مدقوق آدمی گھٹوں جی منہ دیے جیٹھا تھا اس کا جسم مل رہا تھا پیدنہیں ہانپ رہا تھا کانپ رہا تھا یا رو رہا تھا؟

گاڑی پلیٹ فارم میں داخل ہو ری تھی۔ رودراکش والے نے گاڑی کے رکتے ہی جمیٹ کر مرقوق آدمی کو گریبان سے پکڑ کر پوری طانت سے اٹھا لیا جیسے وہ کوئی انسان نہیں کچوا ہو۔ ایک لجلجا کیڑا جس کے جینے مرنے کا کوئی معرف نہ ہو۔ وہ اس کی گرفت میں ایسے جمول نے لگا جیسے بیگر پرکوئی ڈھیلا ڈھالا کرتا جمول رہا ہو۔ جس میں کوئی جسم ہی نہ ہو۔ طلق سے نگلتی خرفر کی آواز کے ساتھ اس کی پھٹی پھٹی آئکھیں جمحے۔۔۔۔۔نہیں نہیں جمحے نہیں ۔۔۔۔۔۔۔ اس اندھے کو رجم طلب نظروں سے دکھے ربی تھیں جو ''کون ہے؟ ارے کا ہے کو باراتا ہے بابا۔۔۔۔۔ کہتے ہوئے ہوا میں لاٹھی چلانے لگا تھا۔ میں پھرتی سے بیچے ہٹ نہ کیا ہوتا تو لاٹھی کی ضرب جمحے ضرور لگتی۔ نہی اندھے کا دامن پکڑ کر رودراکش والے کی گرفت میں جہت پاتے مرقوق آدی کوالیے و کھے ربی تھی جیسے ابھی رویز ہے گی

"اب بہتمت چروعی ہے۔سیدھا کرے رہ اد اندھ" پلس والے نے اندھے کو ڈاٹا "ہاں، ہاں، من تو اندھا ہوں تماری ہے تا بوی بوی آ کھتم میرے کو بتاؤ تا

मैं ने इरादा कर लिया था कि अब अगर रुद्राक्ष वाले ने ज्यादती की तो मैं उसे जरूर रोकूगा। उस से लडूँगा नहीं अलबता शाइस्ता⁽¹⁾ जबान में उसे जरूर रोकूगा। उस से लडूँगा नहीं अलबता शाइस्ता⁽¹⁾ जबान में उसे जरूर रोकूगां? लेकिन तुम उसे रोकोगे कैसे? वह तो गुंडा नजर आता है। मुमिकन है वह नशे में हो और तुम्हारी बेइज्जती करदे! यह बड़े अहम सवालात थे जिन का जवाब मुझे नहीं सूझ रहा था……चाहे जो हो मैं उसे समझाने की कोशिश जरूर करूंगा'' मैं ने खुद को समझाया।

गाड़ी की रफ़्तार फिर कम होने लगी थी। स्टेशन क़रीब था। रुद्राक्ष वाला कमर पर दोनों हाथ रखे मदक़ूक़ आदमी को ऐसे घूर रहा था जैसे बॉक्सर अपने मद्देमुक़ाबिल को चारों शाने चित करने के बाद उसे हिक़ारत⁽²⁾ से देखता है। मदक़ूक़ आदमी घुटनों में मुंह दिए बैठा था उस का जिस्म हिल रहा था। पता नहीं हांप रहा था कांप रहा था या रो रहा था?

गाड़ी प्लेट फार्म में दाख़िल हो रही थी। रुद्राक्ष वाले ने गाड़ी के रूकते ही झपट कर मदक़ूक आदमी को गिरेबान से पकड़ कर पूरी कुट्यत से उठा लिया जैसे वह कोई इन्सान नहीं केंचवा हो। एक लुजलुजा कीड़ा जिस के जीने मरने का कोई मसरफ़ (3) न हो। वह उस की गिरफ़्त में ऐसे झूलने लगा जैसे हैंगर पर कोई ढीला ढाला कुर्ता झूल रहा हो। जिस में कोई जिस्म ही न हो। हलक़ से निकलती ख़र ख़र की आवाज के साथ उस की फटी फटी आंखें मुझे नहीं नहीं मुझे नहीं उस अंधे को रहम तलब नज़रों से देख रही थी जो ''कौन है? अरे काहे को मारता है बाबा '' कहते हुए हवा में लाठी चलाने लगा था। मैं फुर्ती से पीछे हट ना गया होता तो लाठी की ज़र्ब (4) मुझे ज़रूर लगती। बच्ची अंधे का दामन पकड़ कर रुद्राक्ष वाले की गिरफ़्त में छटपटाते मदक़ूक़ आदमी को ऐसे देख रही थी जैसे अभी रो पड़ेगी।

"अबे बहुत मस्ती चढ़गई है, सीधा खड़े रह ओ अंधे……" पुलिस वाले ने अंधे को डांटा... "हां, हां, मैं तो अंधा हूं तुम्हारी है ना बड़ी बड़ी आंख तुम मेरे को बताओ कौन है यह मारने वाला और कौन है मार खाने वाला ?…… बोलो काहे को मारता है यह स्थान वाला को मारता है यह स्थान को मारता है आख़िर?" अंधा फ़क़ीर ग़ुस्से में एक ही सांस में बोल गया।

गाड़ी के रूकते ही रुद्राक्ष वाले ने एक झोंका देकर मदक्कूक आदमी को डिब्बे से बाहर ढकेल दिया वह काग़ज़ के टुकड़े की तरह लहरा कर प्लेट फार्म पर 1. नम्र 2. घृणा 3. उपयोग 4. चोट

کون ہے یہ مارنے والا اور کون ہے مار کھانے والا؟ بولو سب بولو کا ہے کو مارتا ہے یہ کا ہے کو مارتا ہے اور کیا۔ کا ہے کو مارتا ہے آخر؟'' اعد حافقر عصد میں ایک عی سائس میں بول گیا۔

گاڑی کے رکتے ہی رودراکش والے نے ایک جمونکا دے کر مدقوق آدی کو ذہب اہر ذھکیل دیا وہ کاغذ کے فکڑے کی طرح لہرا کر پلیٹ فارم پر گرا۔ اس کے گرتے ہی میرا دل طق میں آگیا۔ خوف زدہ پکی اپنے پتلے پتلے ہاتھوں سے اندھے کو پلیٹ فارم کی طرف کھینچنے گلی۔ اندھا مرائٹی میں زور زور نے بحرائی آواز میں بزبراتے ہوئے پکی کے ماتھ پلیٹ فارم پر از گیا۔ گاڑی جھنکا لے کر چل پڑی۔ میں نے لیک کر دروازے میں ساتھ پلیٹ فارم پر دوسائے کی سے چیجے چھوٹے پلیٹ فارم پر دیکھا۔ مٹ میلے اندھیرے میں پلیٹ فارم پر دوسائے کی گئھری جیسی شے پر جھکے ہوئے تھے۔ ٹرین کی رفاز کے ساتھ پلیٹ فارم اور وہ سائے اندھیرے میں فیلیٹ فارم اور وہ سائے اندھیرے میں فوجے سے کے۔

خالی سیٹ پر وہ میلی چاور پڑی ہوئی تھی جس سے عجیب طرح کی ہو آرہی تھی لیکن ناک میں سوزش پیدا کرنے والی تفرے کی ہوجیسی نہیں تھی۔ سامنے کی سیٹ خالی پڑی تھی۔ جہاں کچھ دیر پہلے تک وہ مدقوق آ دمی سویا ہوا تھا! چشے والا کلرک نما آ دمی اپنی اپنی جگہوں پر کھڑے ٹرین کے پیکولوں کے ساتھ ال رہے تھے۔ جھے ایسا لگ رہا تھا جسے میں ما قبل تاریخ کے ایک ایسے عظیم الجشہ اور مہیب جانور کے تاریک پیٹ میں پڑا ہوا ہوں جو گاڑھے اندھرے میں بے تھاشد دوڑا چلا جا رہا ہے!



गिरा। उस के गिरते ही मेरा दिल हलक़ में आ गया। ख़ौफ़ जदा बच्ची अपने पतले पतले हाथों से अंधे को प्लेट फार्म की तरफ़ खींचने लगी। अंधा मराठी में जोर जोर से भराई आवाज़ में बड़बड़ाते हुए बच्ची के साथ प्लेट फ़ार्म पर उतर गया। गाड़ी झटका लेकर चल पड़ी, मैंने लपक कर दरनाज़े में से पीछे छूटते प्लेट फार्म पर देखा। मटमैले अंधेरे में प्लेट फ़ार्म पर दो साए किसी गठरी जैसी शै पर झुके हुए थे। ट्रेन की रफ़्तार के साथ प्लेट फ़ार्म और वह साए अंधेरे में डूबते चले गये।

ख़ाली सीट पर वह मैली चादर पड़ी हुई थी जिस से अजीब तरह की बू आ रही थी लेकिन नाक में सोजिश पैदा करने वाली ठरें की बू जैसी नहीं थी, । सामने की सीट ख़ाली पड़ी थी, जहां कुछ देर पहले तक वह मदकूक आदमी सोया हुआ था। चश्मे वाला और क्लर्क नुमा आदमी अपनी अपनी जगहों पर खड़े ट्रेन के हिचकोलों के साथ हिल रहे थे। मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मैं मा-क़ब्ल-तारीख़⁽¹⁾ के एक ऐसे अजीमुलजुस्सा⁽²⁾ और मुहीब⁽³⁾ जानवर के तारीक पेट में पड़ा हुआ हूं जो गाढ़े अंधेरे में बेतहाशा दौड़ा चला जा रहा है।



^{1.} इतिहास से पूर्व 2. विशाल शरीर वाला 3. डरावना

أثكن كا بير

دہشت گردسانے کا دروازہ تو ٹر کر کھسے تھے ادر وہ عقبی دروازے کی طرف بھاگا تھا۔ گھر کا عقبی دروازہ آئٹن کے دوسرے چھور پر تھا اور باہر گلی بیس کھلتا تھا۔ لیکن وہاں تک وہ پہنی نہیں پایا..... آئٹن سے بھا گتے ہوئے اس کادامن پیڑکی اُس شاخ سے الجھ عمیا جو نیچے تک جھک آئی تھی

ید وئی پیڑ تھا جو اس کے آگئن میں اُگا تھا اور اس نے مدتوں جس کی آبیاری کی تھی لیکن بہت پہلے

بہت پہلے پیڑ وہاں نہیں تھا۔ تب وہ بحین کے دن تھے اور اس کی ماں آگن کو ہمیشہ صاف سخرا رکھتی تھی اور جنگل جھاڑ اگئے نہیں دیتی تھی۔ لیک ایک دن صبح صبح اس نے اچا تک ایک ایک بودا اُگا ہوا دیکھا تھا۔ لودا رات کی بوندوں سے نم تھا۔ اُس کی پیتاں باریک تھیں اور ان کا رنگ بلکا عنائی تھا۔ او پر والی پتی پر اُدس کا ایک موٹا سا قطرہ نجمد تھا۔ اُس نے نے بے افقیار چاہا اُس قطرے کو چھوکر دیکھے ہاتھ بڑھایا تو اُلگیوں کے لمس سے قطرہ پتی پر اُڑھک گیا۔.... اُس نے جہرت سے انگل کی پور کی طرف دیکھا جہاں نمی لگ گئ متی براڑھک گیا۔.... اُس نے جہرت سے انگل کی پور کی طرف دیکھا جہاں نمی لگ گئ متی بودا اگا کوندھ رہی تھی اور اس کے باس پنجا تھا۔ ماں اُس وقت آٹا گوندھ رہی تھی اور اس کے کان کی بالیاں آ ہت آ ہت میں ایک پودا اگا ہے۔ تو دہ آ ہت سے مسکرائی تھی اور آٹا گوند ھے جس کی رہی تھی۔

مال نے پودے کو دیکھا۔اُس کو نگا کوئی پھل دار درخت ہے۔ باپ کو وہ شیٹم کا پودا معلوم ہوا۔ مورثی مکان کے دروازے پرانے ہوگئے تھے۔ باپ اکثر سوچتا تھا اُن جس شیٹم کے تختے لگائے گا۔

आंगन का पेड़

दहशत-गर्द¹. सामने का दरवाज़ा तोड़कर धुसे थे और वह अक्रबी². दरवाज़े की तरफ़ भागा था। घर का अक्रबी दरवाज़ा आंगन के दूसरे छोर पर था और बाहर गली में खुलता था लेकिन वहां तक वह पहुंच नहीं पाया.... आंगन से भागते हुए उसका दामन पेड़ की उस शाख़ से उलझ गया जो नीचे तक झुक आई थी।

यह वही पेड़ था जो उसके आंगन में उगा था और उसने मुद्दतों जिसकी आबयारी³ की थी... लेकिन बहुत पहले।

बहुत पहले पेड़ वहां नहीं था। तब वह बचपन के दिन थे और उसकी मां आंगन को हमेशा साफ़ सुथरा रखती थी और जंगल झाड़ उगने नहीं देती थी। लेकिन एक दिन सुबह उसने अचानक एक पौधा उगा हुआ देखा था। पौधा रात की बुंदों से नम था। उसकी पित्तयां बारीक थीं और उनका रंग हल्का उनाबी था। ऊपर वाली पत्ती पर ओस का एक मोटा सा क़तरा मुन्जिमिद था। उसने बे-एिख्तयार चाहा के उस क़तरे को छू कर देखे.... हाथ बढ़ाया तो उंगिलयों के लम्स से क़तरा पत्ती पर लुढ़क गया....। उसने हैरत से उंगली की पोर की तरफ़ देखा जहां नमी लग गई थी। वह भागता हुआ मां के पास पहुंचा था। मां उस वक्त आटा गूंध रही थी। उसके कान की बालियां आहिस्ता-आहिस्ता हिल रही थीं। उसने मां को बताया कि आंगन में एक पौधा उगा है, तो वह आहिस्ता से मुस्कुराई थी और आटा गूंधने में लगी रही थी।

माँ ने पौधे को देखा, उसको लगा कोई फलदार दरख़्त^{8.} है। बाप को वह शीशम का पौधा मालूम हुआ, मौरुसी^{9.} मकान के दरवाज़े पुराने हो गए थे।

^{1.}आतंकवादी

^{2.} पिछले

^{3.} सींचना

^{4.} सियाही लिए हुए लाल

^{5.} बूंद

^{6.} जमा हुआ

[ं] ७. स्प**र्श**

^{8.} पेड

^{9.} पैतृक

وہ صبح شام پودے کی آب یاری کرنے لگا۔ اسکول سے واپسی کے بعد تھوڑی دیر بودے کے قریب بیٹھتا۔ اس کی پتیاں جھوتا اور خوش ہوتا۔

ایک بار پردی کی بحری آگن کے پچھلے دردازے سے اندر تھس آئی۔ وہ اس وقت اسکول جانے کی تیاری کررہا تھا۔ پہلے تو اس نے توجہ نہیں دی لیکن جب بحری پودے کے قریب پینی اور ایک دو پتیاں چٹ کر گئ تو وہ بستہ پھینک کر بکری کو مارنے دوڑا۔ بکری میاتی ہوئی بھاگی۔ آس نے آگن کا دردازہ میاتی ہوئی بھاگی۔ آس نے آگن کا دردازہ بند کیا اور روتا ہوا ماں کے پاس پہنچا۔ ماں نے دلاسہ دیا۔ باپ نے پودے کی چاروں طرف سے حد بندی کردی۔

اس دن سے وہ بکری کی تاک میں رہنے لگا کہ پھر گھے گی تو ٹانگیں توڑے گا۔ وہ اکثر گلی میں جھا تک کر دیکھتا کہ بکری کہیں ہے کہ نہیں؟اگر نظر آتی تو جھٹری لے کر دروازے کی اُوٹ میں ہوجاتا اور دَم سادھے بکری کے گھنے کا انتظار کرتا رہتا

ایک بار باپ نے اس کی اس حرکت بریخی سے ڈاٹنا تھا۔ پیڑ سے اس کا بیدلگاؤ دیکھ کر مال ہنستی تھی اور کہتی تھی۔ ''جسے جسے تو بڑھے کا پیڑ بھی بڑھے گا۔''

बाप अक्सर सोचता था, उनमें शीशम के तख्ते लगायेगा।

वह सुबह शाम पौधे की आबयारी करने लगा। स्कूल से वापसी के बाद थोड़ी देर पौधे के क़रीब बैठता। उसकी पत्तियां छूता और खुश होता।

एक बार पड़ोसी की बकरी आंगन के पिछले दरवाजे से अंदर घुस आई। वह उस वक्त स्कूल जाने की तैयारी कर रहा था। पहले तो उसने तवज्जोह¹. नहीं दी लेकिन जब बकरी पौधे के क़रीब पहुंची और एक दो पित्तयां चट कर गई तो वह बस्ता फेंक कर बकरी को मारने दौड़ा, बकरी मेमयाती हुई भागी। ग़मो-ग़ुस्से से उसकी आंखों में आंसू आ गए। उसने आंगन का दरवाज़ा बन्द किया और रोता हुआ मां के पास पहुंचा। मां ने दिलासा दिया। बाप ने पौधे की चारों तरफ़ से हदबंदी². कर दी।

उस दिन से वह बकरी की ताक में रहने लगा कि फिर घुसेगी तो टांगें तोड़ देगा। वह अक्सर गली में झांक कर देखता कि बकरी कहीं है कि नहीं? अगर नजर आती तो छड़ी लेकर दरवाजे की ओट में हो जाता और दम साधे बकरी के घुसने का इंतिजार करता रहता......। एक बार बाप ने उसकी इस हरकत पर सख़्ती से डांटा था। पेड़ से उसका यह लगाव देखकर मां हंसती थी और कहती थी जैसे-जैसे तू बढ़ेगा, पेड़ भी बढ़ेगा।

माँ पौधे का ख़्याल रखने लगी थी। आंगन की सफ़ाई के वक्त अक्सर पानी डाल देती। पौधा आहिस्ता-आहिस्ता बढ़ने लगा.... देखते-देखते उसकी टेहनियां फुट आई और पत्ते हरे हो गए लेकिन फिर भी पहचान नहीं हो सकी कि किस चीज का पेड़ है। बाप को शक था के वह शीशम है, माँ इसको अब फलदार दरख़्त मानने को तैयार नहीं थी। लेकिन पौधा अपनी जड़ें जमा चुका था और एक नन्हें से पेड़ में तब्दील³. हो गया था।

अब पत्तों पर खुश रंग तितिलयां बैठने लगी थीं...... वह उन्हें पकड़ने की कोशिश करता। एक बार तितिलयों के पर टूटकर उसकी उंगिलयों में रह गये...। उसको अफ़सोस हुआ। उसने फिर तितली पकड़ने की कोशिश नहीं की। वह बस तितली को देखता रहता, जब उड़ती तो उसके पीछे भागता.... लेकिन आंगन में गिरगिट का सरसराना उसको क़तई पसंद नहीं था। उसके सर हिलाने का

^{1.} ध्यान 2. घेराबन्दी 4. परिवर्तित

گرگٹ سرک کرینچے بھاگا تو اس نے چھر دے مارا چھر زمین پر اُچھل کر آنگن میں رکھی کوڑے کی بالٹی سے طرایا اور ڈھن کی آواز ہوئی تو ماں نے کھڑی سے آنگن میں جھانکا اور اُس کو دھوپ میں دیکھ کر ڈانٹے گئی۔

وہ صبح شام پیڑ کی رکھوالی کرنے لگا۔وفت کے ساتھ پیڑ بڑا ہوگیا اور اُس نے بھی دسویں جماعت یاس کرلی۔

وہ اب عمر کی ان سیر حیوں پر تھا جہاں چیونٹیاں بے سبب نہیں رینھتیں اور خوشہو کیں نے نے بھید کھولتی ہیں۔ پیڑ کے تنے پر چیونٹیوں کی تطار چڑھنے گئ تھی اور اُس کی جواں سال شاخوں میں ہوا کیں سر سراتیں اور پتے لہراتے اور وہ اُ چک کر ای شاخ پر بیٹھ جاتا اور کوئی گیت مختلانے لگا۔

پیڑی جس شاخ پر وہ بیٹھتا تھا وہاں سے پرون کا آنگن نظر آتا تھا۔ ایک دن اچا تک ایک لڑک نظر آن جو تار پر سیلے کپڑے بھیلا رہی تھی۔لڑک کو اس نے پہلے نہیں دیکھا تھا اس کے نقوش اس کو شکھے گے۔ کپڑے بھیلا تی ہوئی وہ آنگن میں کونے کی طرف بڑھ تھا اس کے نقوش اس کو شکھے گے۔ کپڑے بھیلاتی ہوئی وہ آنگن میں کونے کی طرف بڑھ گئی اور نگاہوں سے اوجھل ہوگئی۔وہ فورا اوپر والی شاخ پر چڑھ گیا جہاں سے آنگن کا کونا صاف نظر آتا تھا۔لڑکی کادو پٹہ ہوا میں لہرا رہا تھا۔ یکا یک دو پٹہ کندھے سے سرک گیا اور اس کی جھا تیاں نمایاں ہوگئیں۔نا گہاں لڑکی کی نظر پیڑ کی طرف اٹھ گئی۔۔۔۔وہ ایک لیح کے لیے تھے میں ہوگئی۔۔۔۔لڑکی صاف چھپی ہوئی نہیں کے لیے تھی۔اس کا ایک پیراور سرکا نصف حقہ دکھائی دے رہا تھا۔لڑکی نے ایک دو بار پائے کی اوٹ سے جھا تک کر اس کی طرف دیکھا تو جواں سال شاخوں میں ہوا کی سرسراہٹ تیز ہوگی۔۔۔

وہ اب خواہ مخواہ بھی شاخ پر بیٹھنے لگا تھا اور لڑی بھی پائے کی اوٹ میں ہوتی تھی بھی سمجی وہ ای آنگن میں کمڑی ہوجاتی اور اس کا دویتہ ہوا میں لہرانے لگتا اور

ایک دن اس نے دھڑ کتے دل کے ساتھ الوک کو خفیف سا اشارہ کیا.....لوک مسکرائی اور بھاگ کر ستون کی اوٹ میں ہوگئ۔وہاں سے لڑک نے کئی بار مسکرا کر اس کی طرف دیکھا۔اس کے دل کی دھڑکن بڑھ گئے۔چیوٹیوں کی ایک قطار بیڑ پر چڑھنے گئی.....

अंदाज उसको मकरूह¹. लगता । एक बार एक गिरगिट पेड़ की फुनी पर चढ़ गया और जोर-जोर से सर हिलाने लगा उसको कराहियत महसूस हुई....। उसने पत्थर उठाया... फिर सोचा पत्ते झड़ जाएंगे ... तब उसने पांव को जमीन पर जोर से पटका...धब.. !! गिरगिट सरक कर नीचे भागा तो उसने पत्थर दे मारा। पत्थर जमीन पर उछल कर आंगन में रखी कूड़े की बाल्टी से टकराया और, ढन की आवाज हुई तो मां ने खिड़की से आंगन में झांका और उसको धूप में देखकर डांटने लगी।

वह सुबह शाम पेड़ की रखवाली करने लगा। वक्त के साथ पेड़ बड़ा हो गया और उसने भी दसवीं जमाअत पास कर ली।

वह अब उम्र की उन सीढ़ियों पर था जहां चिटियाँ बे सबब² नहीं रेंगती और खुशबुएं नए नए भेद खोलती हैं। पेड़ के तने पर चिटियों की कृतार चढ़ने लगी थी और उसकी जवां साल शाख़ों में हवाएँ सरसराती और पत्ते लहराते और वह उचक कर उसी शाख़ पर बैठ जाता और कोई गीत गुनगुनाने लगता।

पेड़ की जिस शाख पर वह बैठता था, वहां से पड़ोसन का आंगन नजर आता था। एक दिन अचानक एक लड़की नजर आई, जो तार पर गीले कपड़े फैला रही थी। लड़की को उसने पहले नहीं देखा था। उसके नुकूश³ उसको तीखे लगे। कपड़े फैलाती हुई वह आंगन में कोने की तरफ़ बढ़ गई और निगाहों से ओझल हो गई। वह फ़ौरन उमर वाली शाख़ पर चढ़ गया, जहां से आंगन का कोना साफ़ नजर आता था। लड़की का दुपट्टा हवा में लहरा रहा था...। यकायक दुपट्टा कंधे से सरक गया और उसकी छातियों नुमायां⁴ हो गई...... नागहां⁵ लड़की की नजर पेड़ की तरफ़ उठ गई.... वह एक लम्हे के लिए ठिठ्की...... दुपट्टा संभाला और सुतून की ओट में हो गई लड़की साफ़ छुपी हुई नहीं थी। उसका एक पैर और सर का निस्फ़⁶ हिस्सा दिखाई दे रहा था। लड़की ने एक-दो बार पाए की ओट से झांक कर उसकी तरफ़ देखा तो जवां साल शाखों में हवा की सरसराहट तेज हो गई....।

^{1.} घृणित 2. बिना कारण 3. नाक नक्षशा 4. स्पष्ट 5. अचानक 6. आधा

وہ گرمی سے السائی ہوئی دو پہرتھی جب لڑی نے ایک دن عقبی دروازے سے آگئن میں جھانکا۔وہ بکری کے لیے پتے مانگئے آئی تھی۔وہ پیڑ کے پاس آئی تو اس نے پہلی بار لڑکی کو قریب سے ویکھا۔اس کی پیشانی پر نسینے کی تعفی تھی بوندیں جمع تھیں۔ہونٹوں کا بالائی حقد نم تھا اور آٹھوں میں بسنتی ڈورے لہرارہے تھے۔

وہ پتے توڑنے لگا۔اس کا ہاتھ بار بارلڑک کے بدن سے جھوجاتا۔لڑکی خوش نظر آرہی تھی۔وہ بھی خوثی سے سرشار تھا۔ یکا کیک جموا کا ایک جھوٹکا آیا اورلڑکی کا دویقہ

لڑی کی آتھوں میں بنتی ڈورے گانی ہو گئے ہونٹوں کے بالائی حقے پر نہینے کی بوندیں دھوپ کی روشی میں جیلئے لگیں اس کا ہاتھ ایک بار پھر لڑی کے بدن سے چھو گیا۔اور دو پٹہ ایک بار پھر ہوا میں لہرایا اور کچے انارجیسی چھاتیاں نمایاں ہوگئیں۔اور وہ کچھ ہجھ نہیں سکا کہ کب وہ لڑی کی طرف ایک وہ تھینج گیا۔.... اس نے اپنے ہونٹوں پر اس کے بھیتے ہونٹوں کا کمس محسوس کیا۔ پہلے بوسے کا پہلا کمس اس پر بے خودی طاری ہونے گئی۔

اچاک لڑی اس سے الگ ہوئی۔اس کا چہرہ گلنار ہوگیا تھا اور بدن آہتہ آہتہ کانپ رہا تھا۔ وہ بھاگتی ہوئی آگئن سے باہر چلی گئ۔اس نے پتے بھی نہیں لیےوہ دَم خوداس کو دیکی رہ گیا رہ گیا ۔...

اس بار پیز پر پہلی بار پھول آئے۔

वह अब ख़्वाह-म-ख़्वाह¹. भी शाख़ पर बैठने लगा था और लड़की भी पाए की ओट में होती थी। कभी कभी वह बीच आंगन में खड़ी हो जाती थी और उसका दुपटटा हवा में लहराने लगता और

एक दिन उसने धड़कते दिल के साथ लड़की को ख़फ़ीफ़². सा इशारा किया.... लड़की मुस्कुराई और भाग कर सुतून की ओट में हो गई। वहां से लड़की ने कई बार मुस्कुरा कर उसकी तरफ़ देखा उसके दिल की धड़कन बढ़ गई.... चींटियों की एक क़तार पेड़ पर चढ़ने लगी।

वह गरमी से अलसाई हुई दोपहर थी जब लड़की ने एक दिन अक़बी दरवाज़े से आंगन में झांका। वह बकरी के लिए पत्ते मांगने आई थी। वह पेड़ के पास आई तो उसने पहली बार लड़की को क़रीब से देखा। उसकी पेशानी^{3.} पर पसीने की नन्हीं-नन्हीं बूदें जमा थीं। होंठों का बालाई हिस्सा नम था और आंखों में बसंती डोरे लहरा रहे थे।

वह पत्ते तोड़ने लगा, उसका हाथ बार-बार लड़की के बदन से छू जाता। लड़की खुश नजर आ रही थी। वह भी खुशी से सरशार⁴ था। यकायक हवा का एक झोंका आया और लड़की का दुपट्य....।

लड़की की आंखों में बसंती डोरे गुलाबी हो गए होंठों के बालाई हिस्से पर पसीने की बून्दें धूप की रोशनी में चमकने लगीं....... उसका हाथ एक बार फिर लड़की कि बदन से छू गया और दुपट्टा एक बार फिर हवा में लहराया और कच्चे अनार जैसी छातियाँ नुमायां हो गई ... और वह कुछ समझ नहीं सका के कब लड़की की तरफ़ एक दम खींच गया उसने अपने होंठों पर उसके भींगे होंठो का लम्स महसूस कियापहले बोसे का पहला लम्स उस पर बेखुदी तारी⁵. होने लगी।

लड़की उसके सीने से लगी थी..... होंठ पर होंठ सब्त^{6.} थेऔर पेड़ की जवां साल शाख़ों में हवा की सरसराहट हो े लगी थी जिन्दगी के आतिशीं^{7.} लम्हों का पहला नशा था। दिल की पहली धड़कन थी..... किसी के आ जाने का ख़ौफ़ था और पेड़ पर चढ़ती चींटियों की क़तार थी.....।

लम्हा-लम्हा लम्स की लंजजत हवा में बर्फ़ की तरह उसकी रूह में घुल

^{1.} न चाहते हुए 2. हलका 3. माथा 4. मस्त 5. छा जाने वाला 6. चिपके हुए 7. आग जैसे

ونت کے ساتھ پیڑ کھے اور گھنا ہوا۔وہ بھی جوان اور تنومند ہوگیا اور باپ کے دھندے میں ہاتھ بٹانے لگا۔ پیڑ کی موٹی موٹی شاخیں نکل آئیں اور پتے بڑے بڑے برے ہوگئا موٹی ساخیاں بیار کھا۔ ہوا چلتی ہوگئے۔لیکن پیڑ کھل دارنہیں تھا۔مرف کھول اگتے تھے جن کا رنگ ہلکا عنائی تھا۔ ہوا چلتی تو کھول اور عنائی کھولوں سے تو کھول ٹوٹ کر آئٹن میں بھر جاتے۔آئٹن اور اوسارا زرد پتوں اور عنائی کھولوں سے بھرجاتا۔ اس کو صفائی میں اور زیادہ محنت کرنی پڑتی۔

شام کواس کا باپ بیڑ کے ینچ کھاٹ بچھا کر بیٹھتا تھا۔ وہ بمیشہ آلتی پالتی مار کر بیٹھتا اور پاجا ہے کو گھٹے کے اوپر چڑھا لیتا اور آ ہتہ آ ہتہ بیڑی کے کش لگاتا رہتا۔ اُس کی ماں پاس بیٹ کر سبزی کا تی اور گھر کے مسائل پر بات چیت کرتی۔

ایک دن مال نے اس کی شادی کی بات چمیٹری۔باپ نے بیڑی کے دوچارکش لگائے اور اُن رشتوں برغور کیا جواس کے لیے آرہے تھے۔

پھر وہ دن آعمیا جب مال نے آئن میں مزدا کھینچا اور محلنے کی عورتیں رات بھر دھول بجاتی رہیں اور محلنے کی عرمراہٹ معلق ربی اور محلت کی لئے میں چول کی سرسراہٹ معلق ربی اس سال پیڑ پر بہت پھول آئے.....

اس کی بیوی خوبصورت اور ہنس کھ تھی۔ آہتہ آہتہ اُس نے گھر کا کام سنجال لیا تھا۔ لیکن پیڑ ہے اس کی ولچیں نہیں تھی۔ آگن کی صفائی پر ناک بھوں چڑھاتی ہتے بھی اب بہت ٹوشتے تھے۔اس کی ماں آگن کے کونے میں چوں کے ڈھیر لگاتی اور انہیں آگ دکھاتی رہتی۔

اس کی بیوی نے چار بچے جنے ۔ بچوں کو پیڑ سے دلچی نہیں تھی وہ اس کے ساتے میں کھیلتے تک نہیں تھے۔ نہ ہی کوئی اُ چک کر شاخ پر بیٹھتا تھا۔ بڑا بیٹا تو پیڑ کو کاشنے کے در پے تھا۔ پیڑ اس کو بھد ا اور برصورت لگآ۔ شاخیں اینٹھ کر اوپر چلی می تھیں۔ ایک شاخ اوپر سے بل کھاتی ہوئی نیچے جھک آئی تھی۔ نے کی چاروں طرف کی زمین عموا مسلیل رہتی۔ بارش ہوتی تو وہاں بہت کچڑ ہوجاتا جن میں پھول دھنے ہوتے۔ سو کھے پھوں کا بھی بہت وقیر ہونے لگا تھا۔ اس کی بیوی صفائی ہے عابر تھی۔

بير بره كرجيتنار بوكيا تفا-

रही थी...... और शाख़ें हवा में झुम रही थीं..... और बेख़ूदी के इन लम्हों में पेड़ उसका हमराज था..... यह शज्दे-ममनूआ^{1.} नहीं था जो जन्नत में उगा था..... यह उसके वजूद का पेड़ था जो उसके आंगन में उगा था उसका हम-दम उसका हमराज...... उसकी मासूम लग़जिश^{2.} में बरान्य का शरीक.....।

अचानक लड़की उससे अलग हुई उसका चेहरा गुल्नार हो गया था। और बदन आहिस्ता-आहिस्ता कांप रहा था.... वह भागती हुई आंगन से बाहर चली गई उसने पत्ते भी नहीं लिए वह दम-बखुद^{3.} उसको देखता रह गया......।

इस साल पेड पर पहली बार फूल आये।

वक्त के साथ पेड़ कुछ और घना हुआ। वह भी जवान और तनोमंद⁴. हो गया और बाप के धंधे में हाथ बंदाने लगा। पेड़ की मोदी-मोदी शाखें निकल आईं और पत्ते बड़े-बड़े हो गए लेकिन पेड़ फलदार नहीं था, सिर्फ़ फूल उगते थे, जिनका रंग हल्का उनाबी था, हवा चलती तो फूल टूट कर आंगन में बिखर जाते। आंगन और ओसारा जर्द पत्तों और उनाबी फूलों से भर जाता। मां को सफ़ाई में और ज्यादा मेहनत करनी पडती।

शाम को उसका बाप, पेड़ के नीचे खाट बिछा कर बैठता था। वह हमेशा आलती पालती मारकर बैठता और पाजामे को घुटने के उसर चढ़ा लेता और आहिस्ता–आहिस्ता बोड़ी के कश लगाता रहता। उसकी माँ पास बैठकर सब्जी काटती और घर के मसाएल^{5.} पर बातचीत करती।

एक दिन मां ने उसकी शादी की बात छेड़ी। बाप ने बीड़ी के दो चार कशं लगाए और उन रिश्तों पर ग़ौर किया जो उसके लिए आ रहे थे।

फिर वह दिन आ ग्या, जब माँ ने आंगन में मड़वा खींचा और मुहल्ले की औरतें रात भर ढोल बजाती रहीं और गीत-गाती रहीं, और गीत की लय में पत्तों की सरसराहट घुलती रही। उस साल पेड़ पर बहुत फूल आए.....।

उसकी बीवी खूबसूरत और हंसमुख थी, आहिस्ता-आहिस्ता उसने घर का काम संभाल लिया था लेकिन पेड़ से उसकी दिलचस्पी नहीं थी। आंगन की सफ़ाई पर नाक भांव चढ़ाती। पत्ते भी अब बहुत टूटते थे। उसकी मौं आंगन के कोने में पत्तों के ढेर लगाती और उन्हें आग दिखाती रहती।

^{1.} निषेध किया हुआ पेड़, 2. भूल 3. हक्का-बक्का 4. ह्न्ट-पुष्ट 5. समस्याओं

گھر کی ساری ذمہ داریاں اس پرآگئ تھیں۔باپ بوڑھا اور کزور ہو چلا تھااور زیادہ تر گھر پر بی رہتا تھا۔لین وہ اب بھی پیڑ کے سائے میں کھاٹ پرآلتی پالتی مار کر بیٹھتا تھا اور بیڑی چھونکا رہتا تھا۔اس کو اب کھانی رہنے گئی تھی۔وہ اکثر کھانتے کھانتے ہے دم ہوجاتا۔آٹکھیں طقوں سے باہر اُلخے لگتیں اور بہت سا بلغم کھاٹ کے بیچے تھوکا۔پھر بھی اس کا بیڑی چھونکا بندنہیں ہوتا۔

آخر ایک دن اس کا باپ چل بسا۔ مال بین کرکر کے روئی..... مغموم اور اُداس پیڑ کے پنچ بیٹھا رہا۔ زندگی میں پہلی بار پچھ کھونے کا ہذت سے احساس ہوا تھا۔

باپ کے مرنے کے بعد ذمہ داریاں اور بھی بڑھ گئ تھیں۔وہ اب نود باپ تھا۔اور نبج بڑے بڑے ہوگئے تھے۔وہ اب نبتا نوش حال نبج بڑے بڑے ہوگئے تھے جو کاروبار میں اس کا ہاتھ بٹانے گئے تھے۔وہ اب نبتا نوش حال تھا۔اس کا دھندہ جم گیا تھا۔اس نے موروثی مکان کی جہاں تہاں مرمت کروائی تھی اور دروازوں میں شیشم کے تختے لگوائے تھے۔ایک پختہ دلان بھی بنوالیا تھا۔اس کی بیوی نئے کرے میں رکھنا کمرے میں رہتی تھی جس سے ہلی عسل خانہ بھی تھا۔وہ ماں کو بھی نئے کرے میں رکھنا چاہتا تھا لیکن وہ راضی نہیں تھی۔بپ کے گذرجانے کے بعد وہ ثوث گئی تھی اور دن بحر اپنے کمرے میں پڑی کھالتی رہتی تھی۔ویواروں کا پلستر جگہ جگہ سے اُ کھڑ گیا تھااور شہتر کو دیکھ جائے گئی تھی۔

وہ اس کی مرمّت بھی نہیں چاہتی تھی مرمّت میں تھوڑی بہت توڑ پھوڑ ہوتی جو اس کو گوارہ نہیں تھا۔وہ جب بھی دوسرے کمرے میں رہنے کے لئے زور دیتا تو مال کہتی تھی کہ اپنی جگہ چھوڑ کر کہاں جائے گی؟ ڈولی سے اتر کر کمرے میں آئی اب کمرے سے نکل کر ارتھی میں جائے گی۔ماں کی ان ماتوں سے وہ کوفت محسوں کرتا تھا۔

وہ گرچہ خوش حال تھا لیکن بہت پُرسکون نہیں تھا۔اب آسان کا رنگ سیابی مائل تھا اور تتلیاں نہیں اُڑتی تھیں۔اب چیل اور کو ے منڈلاتے تھے اور نضا مسموم تھی۔ پہلے جب اس کا باپ زندہ تھا تو رات دس بج بھی شہر میں چہل پہل رہتی تھی۔اب علاقے میں دہشت گرد کھوضتے تھے اور سرِشام بی دکا نیں بند ہوجاتی تھیں۔شہر میں آئے دن کر فیو لگا رہتا اور سیابی بھتر بندگاڑیوں میں کھوما کرتے۔

उसकी बीवी ने चार-बच्चे जने, बच्चों को भी पेड़ से दिलचस्पी नहीं थी। वह उसके साये में खेलते तक नहीं थे, न ही कोई उचक कर शाख़ पर बैठता था। बड़ा बेटा तो पेड़ को काटने के दरपै¹. थे। पेड़ उस को भद्दा और बदसूरत लगता। शाखें ऐंठ कर ऊपर चली गई थीं। एक शाख़ ऊपर से बलखाती हुई निचे झुक आई थी। तने की चारों तरफ़ की ज़मीन उम्मूमन². गीली रहती। बारिश होती तो वहां बहुत कीचड़ हो जाता, जिनमें फूल धंसे होते। सूखे पत्तों का भी बहुत ढेर होने लगा था। उसकी बीवी सफ़ाई से आजिज³. थी।

पेड बढकर छतनार हो गया था।

घर की सारी जिम्मेदारियाँ उसपर आ गई थीं। बाप बुढ़ा और कमज़ोर हो चला था और ज़्यादातर घर पर ही रहता था लेकिन वह अब भी पेड़ के साये में खाट पर आलती पालती मार कर बैठता था और बीड़ी फूंकता रहता था। उसको खांसी रहने लगी थी वह अक्सर खांसते-खांसते बेदम हो जाता। आंखें हलक़ों से बाहर उबलने लगतीं और बहुत सा बलग़म खाट के नीचे थूकता, फिर भी उसका बीड़ी फूंकना बंद नहीं होता।

आख़िर एक दिन उसका बाप चल बसा। माँ बैन⁴ कर कर के रोई... मग़मूम⁵ और उदास पेड़ के नीचे बैठा रहा.... जिन्दगी में पहली **बार खोने का** शिद्दत से एहसास हुआ था।

बाप के मरने के बाद जिम्मेदारियां और भी बढ़ गई थीं। वह अब खुद वाप था और बच्चे बड़े हो गये थे, जो कारोबार में उसका हाथ बटाने लगे थे। वह अब निस्वतन खुशहाल था। उसका धंघा जम गया जा। उसने मौरुसी मकान की जहां तहां मरम्मत करवाई थी और दरवाजों में शीशम के तख़ते लगवाये थे। एक पुख़ता दालान भी बनवा लिया था। उसकी बीवी नये कमरे में रहती थी, जिससे मुलहिक गुसलख़ाना भी था। वह माँ को भी नये कमरे में रखना चाहता था लेकिन वह राज़ि नहीं थी। बाप के गुजर जाने के बाद वह टूट गई थी और दिन भर अपने कमरे में पड़ी खांसती रहती थी...... दीवारों का पलस्तर जगह-जगह से उखड़ गया था और शहतीर को दीमक चाटने लगी थी।

^{..}उतारू

^{2.} आमतौर से

^{3.} तंग

^{4.} बोल-बोल कर

^{5.} ग्रम से भरा हुआ 6. लगा हुआ

७. स्नान घर

८. तैयार

پیر پر اب کؤے بیٹے تھے اور دن بحرکاؤں کاؤں کرتے کؤے کی آواز اس کومنوں گئی۔ وہ چاہتا تھا اس کا آئن چیل کؤوں سے پاک رہے لیکن اس کو احساس تھا کہ ان کا اڑانا مشکل ہے۔ وہ آنکھوں جس بے لی لیے انہیں تکتا رہتا۔ پیر کے سائے جس اب بیٹمنا بھی مشکل تھا۔ پرندے بیٹ کرتے تھے اور آنگن گندہ رہتا تھا۔ ماں جس اب مفائی کرنے کی سکت نہیں تھی اور بیوی کو یہ سب گوارہ نہیں تھا۔ وہ بھی بھی مزدور رکھ کر آنگن کی صفائی کرادیتا۔

آئے دن کے ہنگاموں سے اس کی بیوی خوف زوہ رہنے گی تھی۔وہ کی محفوظ علاقے میں رہنا چاہتی تھی۔اس کے بنتج بھی یہاں سے ہنا چاہتے تھے اور وہ دکھ کے ساتھ سوچتا کہ آخر اپنی موروثی جگہ چھوڑ کر کوئی کہاں جائے.....؟ اور پھر ماں کا کیا ہوگا....؟ماں اپنا کمرہ بدلنے کے لیے تیار نہیں تھی بھلا زمین جگہ کیسی چھوڑ دیتی....؟

لیکن ایک دن وہ اپنا خیال بد لئے پر مجبور ہوگیا۔اُس دن وہ نشانہ بنتے بنتے بچا تھا۔وہ بیوی کے ساتھ سودا سانی لینے بازار نکلا تھا کہ دہشت گردوں کی ٹولی آگئی اور دیکھتے ہوئی ہوگئی ۔ رکھتے گولیاں چلئے آئیں۔ہر طرف بھگدڑ کچ گئی۔۔۔۔اس کی بیوی خوف سے بے ہوئی ہوگئی اور وہ جیسے سکتے میں آگیا۔اس کی نگاہوں کے سامنے کھوپڑیوں میں نزا نز سوراخ ہورہ تھے۔۔۔۔۔اس سے پہلے کہ پولیس کا حفاظتی دستہ وہاں پنچتا کئی جانیں تلف ہوگئی تھیں۔ دہشت گردآ نا فانا اُرن چھو ہوگئے۔۔۔۔۔شہر میں کرفیوں نافد ہوگیا۔

وہ کسی طرح ہوی کو اُٹھا کر گھر لایا۔ ہوش آنے کے بعد بھی وہ رہ رہ کر چونک اٹھتی تھی اور اُس سے لیٹ جاتی۔وہ خود بھی اس حادثے سے ڈرگیا تھا۔اس نے فیصلہ کرلیا کہ کہ علاقہ جھوڑ دے گا۔لیکن ماں اب بھی گھر جھوڑنے کو تیار نہیں تھی۔اس کو بس ایک بات کی رٹ تھی کہ کوئی موروثی جگہ جھوڑ کر کہاں جائے.....؟

وہ بھی اپنی وراثت سے محروم ہونانہیں چاہتا تھا۔ کیکن اس نے اپنی آ تکھوں سے دیکھ لیا تھا کہ کس طرح انسان کی چھاتیوں میں سوراخ ہوتے ہیں اور خون کا فوارہ چھوٹا ہے۔ اور اس کے بعد کچھ نہیں ہوتا....بس شہر میں کرفیو ہوتا ہے اور بکتر بندگاڑیاں ہوتی ہیں اس نے سوچ لیا کہ کہیں دور دراز علاقے میں پھر سے لیے گا.... کیکن ماں ماں زار زار روتی تھی اور حسرت سے درو و بوار کو تکتی تھی۔ آخر ایک دن اس کی ہوی

ہ یانی انداز میں چنے چنے کر کہنے گئی۔

वह उसकी मरम्मत भी नहीं चाहती थी। मरम्मत में थोड़ी बहुत तोड़ फोड़ होती जो उसको गवारा नहीं था। वह जब भी दूसरे कमरे में रहने के लिए जोर देता तो माँ कहती थी कि अपनी जगह छोड़कर कहाँ जाएगी....? डोली से उतर कर कमरे में आई, अब कमरे से निकल कर अर्थी में जाएगी। मां की इन बातों से वह कोफ़्त महसूस करता था।

वह गरचे खुशहाल था लेकिन बहुत पुरसुकून नहीं था। अब आसमान का रंग सियाही माइल था और तितिलयाँ नहीं उड़ती थीं। अब चील और कौवे मंडलाते थे और फ़िजा^{1.} मसमूम्^{2.} थी। पहले जब उसका बाप जिन्दा था तो रात दस बजे भी शहर में चहल पहल रहती थी। अब इलाक़े में दहशत-गर्द घूमते थे और सरेशाम ही दुकानें बंद हो जाती थीं। शहर में आए दिन कर्फ़्यू लगा रहता और सिपाही बक्तरबंद^{3.} गाड़ियों में घूमा करते।

पेड़ पर अब कौवे बैठते थे और दिन भर कांव-कांव करते, कौवे की आवाज उसको मनहूस⁴ लगती। वह चाहता था, उसका आंगन चील और कौवों से पाक रहे लेकिन उसको एहसास था कि उनको उड़ाना मुश्किल है। वह आंखों में बेबसी लिये उन्हें तकता रहता। पेड़ के साये में अब बैठना भी मुश्किल था। पिन्दे बीट करते थे और आंगन गंदा रहता था। माँ में अब सफ़ाई करने की सकत नहीं थी और बीवी को यह सब गवारा नहीं था। वह कभी-कभी मज़दूर रखकर, आंगन की सफ़ाई करा देता।

आए दिन के हंगामों से उसकी बीवी खौफ़जदा⁵ रहने लगी थी। वह किसी महफूज इलाक़े में रहना चाहती थी। उसके बच्चे भी यहां से हटना चाहते थे और वह दु:ख के साथ सोचता कि आख़िर अपनी मौरुसी जगह छोड़कर, कोई कहां जाए...? और फिर माँ का क्या होगा। माँ अपना कमरा बदलने के लिए तैयार नहीं थी, भला जमीन जगह कैसे छोड़ देती...?

लेकिन एक दिन वह अपना ख़्याल बदलने पर मजबूर हो गया। उस दिन वह निशाना बनते-बनते बचा था। वह बीवी के साथ सौदा-सल्फ़ लेने बाज़ार निकला था कि दहशत-गर्दों की टोली आ गई और देखते-देखते गोलियाँ चलने लगीं। हर तरफ़ भगदड़ मच गई... उसकी बीवी ख़ौफ़ से बेहोश हो गई

^{1.} वातावरण 2. दूषित 3. कवच 4. घिनौना 5. भयभीत

'' بڑھیا سب کو مروادے گی''

ماں چپ ہوگئ پھر نہیں روئی اور کمرے سے باہر نکلی کھانا بھی نہیں ا

وہ اداس اور مغموم پیڑ کے پاس بیٹے گیا۔ پیڑ جیسے دم سادھے کھڑا تھا۔ پتوں میں جنبش تک نہیں تھی۔ شاخوں پر بیٹے ہوئے جیل اور کؤ ہے بھی خاموش تھے صرف ماں کے کھانے کی آواز سائی دے رہی تھی۔ کھی کہ بھی کھی بکتر بندگاڑی کی گھوں گھوں سائی دی تی اور پھر سنانا چھا جاتا۔ ایک گدھ پیڑ سے اڑا اور چھت کی منڈیر پر بیٹے گیا۔ ایک لمح کے لیے اس کے پروں کی پھڑ پھڑا ہٹ فیصا میں اُبھری اور ڈوب گی۔۔۔۔۔اور اُس نے جمر جھری سی محسوس کی۔۔۔۔ جیسے گھات پر بیٹے ہوا دشن اچا تک سائے آگیا ہو۔۔۔۔۔اس کو لگا گھری درد ہے جو این وراثت بیانا جا جا۔۔۔۔
این وراثت بیانا جا جا۔۔۔۔

ماں اچا تک زور زور سے کھانسے گئی۔وہ جلدی سے کمرے میں آیا۔مال سینے پر ہاتھ رکھے مسلسل کھانس رہی تھی۔وہ سر ہانے بیٹھ گیا اور مال کوسہارا دینا جاہا تو اس کی کہنی دیوار سے لگ گئی جس سے بلستر کھر کھر اکریٹے گر گیا اور وہاں پر اینٹ کی دراریں نمایاں ہوگئیں۔دیوار پر چپکی ہوئی چھپکی شہتر کے پیچسے ریک گئی۔

وہ ماں کی چینے سہلانے لگا۔ کھانی کسی طرح رکی تو گھڑو نجی سے پانی ڈھال کر پلایا اور سہارا دے کر لٹادیا.....مال نے ایک بار دعا گونظروں سے اس کی طرف دیکھا اور آئسس بند کرلیں.....

وہ کچھ دیر وہاں بیٹھا رہا۔ پھر اُٹھ کر اپنے کمرے میں آیا بیوی چادر اوڑ مے کر پڑی تھی۔اس کے قدموں کی آجٹ پر چادر سے سرنکال کر شکھے لیجے میں بولی۔ ''تم کو ماں کے ساتھ مرنا ہے تو مرو..... میں ایک بلی یہاں نہیں رہوں گی۔''

وہ خاموش رہا۔ ہیوی مجر حیاور سے منھ ڈھک کر سوگی۔

وہ رات بھر بستر پر کروٹ بدلتا رہا اور کچھ وقفے پر مال کے کھانسے کی آواز سنتا رہا...... آدھی رات کے بعد آواز بند ہوگئی۔سناٹا اور گہرا ہوگیا.....

और वह जैसे सकते में आ गया। उसकी निगाहों के सामने खोपड़ियों में तड़ातड़ सुराख़ हो रहे थे...। इससे पहले के पुलिस का हिफ़ाजती दस्ता वहां पहुंचता कई जानें तल्फ़ हो गई थीं...।

दहशत-गर्द आनन-फ़ानन^{1.} उड़न छू हो गये... शहर में कर्फ़्यू नाफ़िज्^{2.} हो गया।

वह किसी तरह बीवी को उठा कर घर लाया। होश आने के बाद भी वह रह-रह कर चौंक उठती थी और उससे लिपट जाती वह खुद भी इस हादसे से डर गया था। उसने फ़ैसला कर लिया कि यह इलाक़ा छोड़ देगा लेकिन माँ अब भी घर छोड़ने के लिए तैयार नहीं थी उसको बस एक बात की रट थी कि कोई मौरुसी जगह छोड़ कर कहां जाए.......?

वह भी अपनी विरासत³. से महरूम⁴. होना नहीं चाहता था लेकिन उसने अपनी आंखों से देखा था कि किस तरह इंसान की छातियों में सुराख़ होते हैं और खून का फ़व्चारा छूटता है। और उसके बाद कुछ नहीं होता....... बस शहर में कफ़्यू होता है....... और बक्तर बंद गाड़ियां होती हैं। उसने सोच लिया के कहीं दूर-दराज़ इलाक़े में फिर से बसेगा.... लेकिन मां.....

मॉं जार-जार रोती थी और हसरत से ररो-दिवार को तकती थी। आख़िर एक दिन उसकी बीवी हिजयानी⁵. अंदाज में चीख़-चीख़ कर कहने लगी....। बुढिया सबको मरवा देगी....

माँ चुप हो गई.......फिर नहीं रोई और कमरे से बाहर नहीं निकली.... खाना भी नहीं खाया....

वह उदास और मग़मूम पेड़ के पास बैठ गया। पेड़ जैसे दम साधे खड़ा था। पत्तों में जुम्बिश⁶ तक नहीं थी। शाखों पर बैठे हुए चील और कौवे भी ख़ामोश थे। सिर्फ़ माँ के खांसने की आवाज सुनाई दे रही थी। कभी-कभी किसी बक्तर-बंद गाड़ी की घों-घों सुनाई देती और फिर सन्नाटा छा जाता। एक गिद्ध पेड़ से उड़ा और छत की मुंडेर पर बैठ गया। एक लम्हे के लिए उसके परों की फड़फड़ाहट फ़िज़ा में उभरी और डूब गई... और उसने झुईरी सी महसूस की,

^{1.} अचानक 2. लागू 3. तर्का 4. वंचित 5. अर्थहीम 6. हरकत

ا جا تک مج مج مل کے کرے سے بوی کے رونے پیٹنے کی آواز آئی۔وہ دوڑ کر کمرے میں کے رونے پیٹنے کی آواز آئی۔وہ دوڑ کر کمرے میں گیا۔مال آٹھری بنی پڑی تھی۔اس کا بے جان جسم برف کی طرح سرد تھاوہ کتے میں آھیا۔ بیوی دھاڑیں مار مارکر رونے گئی۔

ماں کے مرنے کے بعد اس کے پاس کوئی بہانہ نہیں تھا۔ کچھ دنوں کے لیے اس ۔ نے بیوی کو اس کے میکے بھیج دیا اور نے شہر میں بسنے کے منصوبے بنانے لگا۔

دہ اُداس آگلن میں بیٹا تھا۔آگلن میں خشک بقوں کا ڈھر تھا۔ ہر طرف گہرا ساٹا تھا۔ ہوا ساکت تھی۔ بقوں میں کھڑ کھڑاہٹ تک نہیں تھی۔ یکا کیک گئی میں کسی کئے کے رونے کی آواز گوئی سٹاٹا اور بھیا تک ہوگیا۔اس کا دل دہل گیا۔اس نے کا نہتی ہوئی نظردں سے چاروں طرف دیکھا پیڑ اُسی طرح مم سُم کھڑا تھا۔۔۔۔۔ بیٹل کو ے بھی چپ تے۔۔۔۔۔اور دفعتا اس کومحسوس ہوا کہ بیخوثی ایک سازش ہے جو جیل اور کو وں نے زبی ہوا اور پیڑ اس سازش میں برابر کا شریک ہے۔ تب شام کے بڑھتے ہوئے سائے میں اس نے ایک بارخور سے پیڑ کو دیکھا۔۔۔ بیٹر اس کو بھد الگا۔۔۔۔وہ اس کو کوادے گا۔۔۔۔اس نے ایک بارخور سے پیڑ کو دیکھا۔۔۔ بیٹر اس کی مرسراہٹ ہوئی اور ایک کو سے اُن کی اس کے سر پر بیٹ کردی۔ اُس نے فیض میں بلکی می سرسراہٹ ہوئی اور ایک کو بے نے اس کے سر پر بیٹ کردی۔ اُس نے فیض سے اوپر کی طرف دیکھا۔ پکھ گدھ پیڑ سے اُزگر اس کے سر پر بیٹ کردی۔ اُس نے فیض سے اوپر کی طرف دیکھا۔ پکھ گدھ پیڑ سے اُزگر عیب پر منڈلانے گئے اور اچا تک ورداز سے پر دہشت گردوں کا شور بلند ہوا اور گولیاں عیب کی آدازیں آنے لگیں۔۔۔۔۔۔

وہ أجمل كر آگن كے عقبى دروازے كى طرف بھا كاكن اچا كك كسى نے جيسے كس كر بكڑنياس كو ايك جمئا لگا اور اس كا دامن بيڑكى اس شاخ سے الجھ كيا جو ايك دم ينج تك جمك آئى تقى اس نے أس بل دامن جمرانا چا إليكن شاخ كى شبى دامن ميس سوراخ كرتى ہوئى نكل من تقى جس كوفورا جمڑا ليتا دشوار تھا.....

دہشت گرد دروازہ توڑنے کی کوشش کررہے تھے۔اس پر کپکی طاری ہوگئی۔ حلق خٹک ہونے لگا۔اور دل کنپٹیوں میں دھڑ کتا ہوامحسوس ہوا.....

जैसे घात में बैठा हुआ दुश्मन अचानक सामने आ गया हो.... उसको लगा गिद्ध, बक्तर बन्द गाड़ी और बीमार माँ एक निजाम^{1.} है, जिसमें हर उस आदमी का चेहरा जर्द^{2.} है जो अपनी विरासत बचाना चाहता है।

माँ अचानक जोर-जोर से खांसने लगी। वह जल्दी से कमरे में आया। माँ सीने पर हाथ रखे मुसल्सल^{3.} खांस रही थी। वह सिरहाने बैठ गया और माँ को सहारा देना चाहा तो उसकी कोहनी दीवार से लग गई, जिससे पलस्तर भुर भुरा कर नीचे गिर गया और वहाँ पर पेंट की दरारें नुमायां हो गईं दीवार पर चिपकी हुई छिपकली शहतीर के पीछे रेंग गई।

वह माँ की पीठ सहलाने लगा। खांसी किसी तरह रूकी तो घड़ाँची से पानी ढाल कर पिलाया और सहारा देकर लिय दिया..... माँ ने एक बार दुआगो⁴ नजरों से उसकी तरफ़ देखा और आंखें बंद कर ली....। वह कुछ देर वहां बैठा रहा, फिर उठकर अपने कमरे में आया। बीवी चादर ओढ़ कर पड़ी थी। उसके क़दमों की आहट पर चादर से सर निकाल कर तीखे लहज़े में बोली।

तुमको माँ के साथ मरना है तो मरो..... मैं एक पल यहां नहीं रहूंगी। वह ख़ामोश रहा। बीवी फिर चादर से मुँह ढक कर सो गई

वह रात भर बिस्तर पर करवट बदलता रहा और कुछ वक़्फे⁵ पर माँ के खांसने की आवाज सुनता रहा... आधी रात के बाद आवाज बन्द हो गई..... सन्नाटा और गहरा हो गया.....।

अचानक सुबह-सुबह माँ के कमरे से बीवी के रोने-पीटने की आवाज आई। वह दौड़ कर कमरे में गया। माँ गठरी बनी पड़ी थी। उसका बेजान जिस्म बर्फ़ की तरह सर्द था... वह सकते में आ गया। बीवी धाड़ें मार-मार कर रोने लगी।

माँ के मरने के बाद उसके पास कोई बहाना नहीं था, कुछ दिनों के लिए उसने बीवी को उसके मैके भेज दिया और नये शहर में बसने के मंसूबे बनाने लगा।

वह उदास आंगन में बैठा था। आंगन में खुश्क पत्तों का ढेर था। हर तरफ़ गहरा सन्नाय था। हवा साकित^{6.} थी। पत्तों में खड़खड़ाहट तक नहीं थीं। यकायक गली में किसी कुत्ते के रोने की आवाज गुंजी, सन्नाय और भयानक हो

^{1.} व्यवस्था 2. पीला 3. लगातार 4. आशीर्वाद 5. थोड़ी-थोड़ी देर 6. स्थिर

وہ دامن چیزانے کی مستقل کوشش کررہا تھا ادر پیڑ جو اس کا ہم دم تھا.....اس کا ہم راز، کسی جلّا دکی طرح خاموش کھڑا تھا۔ایک دم ساکت.....اس کے بقوں میں جنبش تک نہیں تھی.....اور دردازہ ٹوٹا اور دہشت گرد دھڑدھڑاتے ہوئے اندر تھس آئے۔کؤ سے کاؤں کاؤں کرتے ہوئے اڑے اور آگن میں روئے زمین کا سب سے کریہہ منظر چھاگیا.....

کاؤں کاؤں کو کے تے کو ہے ۔۔۔۔۔ منڈلاتے گدھ۔۔۔۔۔اور آدمی کا پھنا ہوا دامن۔۔۔۔۔
اس نے بے بی سے عقبی دروازے کی طرف دیکھا جہاں تک وہ پنج نہیں سکا تھا۔۔۔۔۔
ادر تب حسرت سے سوچنے لگا تھا کہ اگر وہ آنگن کے کنارے سے بھاگتا تو شاید۔۔۔۔۔ تب
تک دہشت گرداس کو دبوج میکے تھے۔۔۔۔۔!!!



गया। उसका दिल दहल गया। उसने कांपती हुई नजरों से चारों तरफ़ देखा। पेड़ उसी तरह गुम-सुम खड़ा था...चील और कौवे भी चुप थे....और दफ़अतन¹ उसको महसूस हुआ कि यह ख़ामोशी एक साजिश है जो चील और कौवों ने रची है और पेड़ इस साजिश में बराबर का शरीक है.... तब शाम के बढ़ते हुए साये में उसने एकबार ग़ौर से पेड़ को देखा....पेड़ उसको भद्दा लगा..... वह उसको कटवा देगा.... उसने एक लम्हे के लिए सोचा.... तब ही पत्तों में हल्की सी सरसराहट हुई और एक कौवे ने उसके सर पर बीट कर दी उसने गुस्से से ऊपर की तरफ़ देखा कुछ गिध पेड़ से उड़कर छत पर मंडलाने लगे और अचानक दरवाजे पर दहशत-गदों का शोर, बुलन्द हुआ और गोलियां चलने की आवाजें आने लगीं...।

वह उछल कर आंगन के अक़बी दरवाजे की तरफ़ भागा... लेकिन अचानक किसी ने जैसे कसकर पकड़ लिया ... उसको एक झटका लगा और उसका दामन पेड़ की उस शाख़ से उलझ गया जो एक दम नीचे तक झुक आई थी। ... उसने उसी पल दामन छुड़ाना चाहा लेकिन शाख़ की टहनी दामन में सुराख़ करती हुई निकल गई थी, जिसको फ़ौरन छुड़ा लेना दुश्वार था.....

दहशत-गर्द दरवाजा तोड़ने की कोशिश कर रहे थे... उस पर कपकपी तारी हो गई... हलक़ खुशक होने लगा... और दिल कन्पट्टियों में धड़कता हुआ महसूस हुआ...

वह दामन छुंड़ाने की मुस्तिक़ल² कोशिश कर रहा था और पेड़ जो उसका हमदम था...... उसका हमराज, िकसी जल्लाद की तरह ख़ामोश खड़ा था ... एक दम सािकत... उसके पत्तों में जुम्बिश तक नहीं थी और दरवाजा टूटा और दहशत-गर्द धड़धड़ाते हुए अंदर घुस आए.... कौवे कांव-कांव करते हुए उड़े और आंगन में रूपे-जमीन का सबसे करीह³ मंजर छा गया....।

कांव...... कांव करते कौवे... मंडलाते गिद्ध और आदमी का फंसा हुआ दामन.....

उसने बेबसी से अक़बी दरवाजे की तरफ़ देखा, जहां तक वह पहुंच नहीं सका था.. और तब हसरत से सोचने लगा था कि अगर वह आंगन के किनारे से भागता तो शायद ... तब तक दहशत-गर्द उसको दबोच चुके थे....!!! ◆ ◆

^{1.} अचानक 2. लगातार 3. घिनौना

ياؤل

بس میں بے انتہا بھیر ہے بھیر سے زیادہ شور ہے شور میں بے انتہا سانا اور سمّائے میں خوفاک بدئو ہے۔

بس میں بے انتہا بھیر ہے۔ آدی پر آدی چڑھ رہا ہے۔ پاؤں میں پاؤں اس طرح بھن سے بین کہ چروں سے کی گنا زیادہ پاؤں ہیں۔ اپنی اپنی جگہ کھڑے طرح بھن گئے جی کہ جروں سے کی گنا زیادہ پاؤں جی خاردار جماڑیوں میں سب کے سب محسوں کرتے ہیں۔ ان کے پاؤں کون ہیں، کوئی پچپان نہیں پا تا۔ سب ایک جی بین ایک کون جی روائی سے چھوکر محسوں کرنا چاہج ہیں لیکن جمنجمنا ہے ایک جی بیروں کو بگانہ کر رہی ہے۔

مارے باؤں.... ہارے باؤں کہاں ہیں.... پروں کو کیا ہوا.... کون چمین لے میں....؟ کو چھن کے میں اور کی جھن کے میں

पांव...

बस में बेइंतहा^{1.} भीड़ है....भीड़ से ज़्यादा शोर है.... शोर में बेइंतहा सन्नाटा.. और सन्नाटे में ख़ौफ़नाक बदबू है।

बस में बेइंतहा भीड़ है.... इसके बावजूद इस भीड़ में पिसना है..... क्यों कि ग्यारह नम्बर की सवारी इतनी खड़तल है कि मिन्टों का सफ़र शायद हफ़्ते में तय होगा......हफ़्तों का सफ़र महीनों में...... और महीनों का सफ़र सालों में...... और मिन्टों का सफ़र मिन्टों में तय करना इसलिए जरूरी है कि वक्त आज भी पसीना बनते हुए ख़ून को चुपचाप हज़म करता है...... इस होशियारी के साथ कि हज़म होने के अमल में आदमी धीरे-धीरे अपना वजूद खोने लगता है...... खुद से अजनबी बन जाता..... और फिर अपने आप को रियाकार जबड़ों में पिस्ते देखकर पराए की मौत का गुमान करता है...... खुश होता है और अंदर बाहर से बेख़बर अपनी लाश पर अंधा-धुंध रक्स करता है...... कल अपनी हिड्डयों की भारी लाश कन्धे पर उठायेगा..... आज रायफ़ल का मुख़ासर के वज़न उसे भारी लगता है।

बस में बेइंतहा भीड़ है.....। आदमी पर आदमी चढ़ रहा है। पांव में पांव इस तरह फंस गये हैं के चेहरों से कई गुना ज़्यादा पांव हैं। अपनी-अपनी जगह खड़े सबके सब महसूस करते हैं। इनके पांव घने जंगल की ख़ारदार झाड़ियों में अटक गए हैं। इतने पांव कि किसके पांव कौन हैं, कोई पहचान नहीं पाता। सबके के सब अपने-अपने पांव को ख़ून की रवानी से छू कर महसूस करना चाहते हैं लेकिन झनझनाहट उनके पैरों को बेगाना कर रही है।

हमारे पांव.... हमारे पांव कहां हैं पैरों को क्या हुआ... कौन छीन ले गया... ? कुछ चीख़ने लगते हैं।

^{1.} बहुत 2. धोखेबाज 3. संदेह 4. नृत्य 5. कम, थोड़ा, 6. बहाव

اور بس میں ہی نہیں سڑک پر بھی۔۔۔

نٹ یاتھ برجھی

گھروں، جمونپڑوں، میدانوں، گلیوں اور غلاظتوں کے ڈھیروں پر پاؤں کی بھیٹر میں سب چنج رہے ہیں۔

میرے یا وُں کون چھین لے کیا....؟

ميرے ياؤں....!

**

کیسی کیسی مشکلوں سے وہ بس میں چڑھ سکا۔ پوری زندگی میں اُسے صرف اتنا موقع دیا گیا کہ جیسے تیے گرتے پڑتے کم از کم یہ بس کچڑ لے۔وہ جو دنیا کی سب سے بلند چوٹی سر کرنے کی تمتا رکھتا تھا،اس بس میں سوار ہو کر معلق ہونے کی تنی گھونٹ رہا ہے۔سوٹا اور بیٹھنا تو در کنار یہاں کھڑا ہوتا بھی محال ہے۔بغیر پاؤں کے کھڑا ہوتا غیر آ کمنی بات ہے۔اس طرح اس بس میں سب کے سب معلق ہیں اور یوں یہ تمام لوگ جو اپنے پاؤں کی بیچان کھو بچے ہیں،اس بحری پُری دنیا میں معلق ہیں۔اوپر نہیں آسکتے، نیچے نہیں جاسکتے، کروٹ نہیں بدل سکتے۔ بس جن طرح سوار ہو گئے،ساری زندگی کاٹ دو۔سوچنے جاسکتے، کروٹ نہیں بدل سکتے۔بس جن طرح سوار ہو گئے،ساری زندگی کاٹ دو۔سوچنے کے علاوہ بچے بھی کرسکتے کی مخوائش نہیں۔

और बस में हो नहीं सड़क पर भी.. । फुटपाथ पर भी.. i

घरों, झोंपड़ों, मैदानों, गिलयों और ग़लाजतों के ढेरों पर, पांव की भीड़ में सब चीख़ रहे हैं। मेरे पांव कौन छीन ले गया..?

मेरे पांव.....।

मुख़्तसर सी इस बस में चेहरों से कई गुना ज़्यादा नथुने हैं। नथुनों से ज़्यादा सांसें हैं.... सांसों से ज़्यादा तसादुम². और तसादुम से ज़्यादा तअफ़्क़ुन³... और बेग़ैर पांव के खड़े हुए लोग रूमाल निकालना चाहते हैं तो उन्हें जेब में हाथ घुसाने की जगह भी नहीं मिलती...और फिर किसकी जेब की तरफ़, किसका हाथ बढ़ जाए, इसका भी ठिकाना नहीं।

और अग़ल-बग़ल से चमचमाती ख़ाली-ख़ोली मोटों, पीछे की सीट पर सिर्फ़ एक रोग़नी^{4.} जिस्म के साथ, शाएं-शाएं गुजरती हैं...भीड़ में पिसते हुए भीड़ का हर फ़र्द^{5.} सोचता है.....

इन हरामजादी मोटरों को, बसों में क्यों नहीं मुन्तक़िल⁶ कर दिया जाता......। भीड़ तो कम होती ...

लेकिन हर फ़र्द सिर्फ़ सोचता है खौलता है सिर्फ़ उबलता है... सिर्फ़ ऐंटता है.... और फिर बेहवा टयूब में वापस आ जाता है।

कैसी-कैसी मुश्किलों से वह बस में चढ़ सका है। पूरी जिन्दगी में उसे सिर्फ़ इतना मौक़ा दिया गया कि जैसे तैसे गिरते पड़ते कम अज कम यह बस पकड़ ले। वह जो दुनिया की सबसे बुलंद चोटी सर करने की तमन्ना रखता था, इस बस में सवार हो कर मोअल्लक़⁷ होने की तल्ख़ी⁸ घोंट रहा है। सोना और बैठना तो दर किनार, यहां खड़ा होना भी मुहाल है। बेग़ैर पांव के खड़ा होना ग़ैर आईनी⁹ बात है। इस तरह इस बस में, सबके सब मोअल्लक़ हैं और यूँ यह तमाम लोग जो अपने पांव की पहचान खो चुके हैं, इस भरी पुरी दुनिया में मोअल्लक़ हैं, ऊपर नहीं आ सकते, नीचे नहीं जा सकते, करवट नहीं बदल सकते। बस जिस तरह सवार हो गए, सारी जिन्दगी काट दो। सोचने के अलावा कुछ भी कर सकने की गुंजाइश नहीं।

^{1.} कूड़ा-कर्कट, गन्दगी, 2. धक्का, टक्कर, 3. दुर्गन्ध, 4. चर्कदार 5. व्यक्ति 6. हस्तांतरित 7. लटका हुआ, 8. कड़वाहट, 9. कानुनी

کنڈ کٹر ککٹ کے لیے جھڑ رہا ہے اور لوگ ککٹ کے بدلے سیٹ کے لیے لارہے ہیں۔سیٹ کے لیے لارہے ہیں۔سیٹ کے لیے لارہے ہیں۔سیٹ کے لیے لڑنا ان کا پیدائش حق ہے۔۔۔۔۔اور ککٹ کیا۔لیکن کنڈ کٹر کی مجھداری کہتی کی مجبوری۔۔۔۔مافروں کا خیال ہے بغیر سیٹ کے کلٹ کیا۔لیکن کنڈ کٹر کی مجھداری کہتی ہے کہ بس میں سوار ہونے کا مطلب ہے ککٹ کٹاؤ۔

کنڈ کٹر سے ہاتھا پائی شروع ہوجاتی ہے۔ چاتی ہوئی ہی سے کنڈ کٹر اسے دھکے مارکر ایک دیتا ہے۔ اور پھر اس کی ٹاگوں میں پھنا پھناخود بھی باہر آ جاتا ہے۔ سرک پر دونوں عصم گفتا ہوجاتے ہیں ۔۔۔۔ دونوں ہی جسے اپنے اپنے ہونے اور نہ ہونے کی سرا جمیل رہے ہیں۔ دونوں کے جملے بہ جان ہیں۔ اپنے بیدائش حق اور مجور پھیے کے لیے ہائپ رہے ہیں۔ دونوں کے جملے بہ جان ہیں۔ ایک دوسر سے پر مردوں کی طرح بے ضرر ہاتھ پاؤں چلاتے ہیں۔ بس کی ساری بھیر دائر سے میں بے حس تماشا دیکھی ہے۔ اگر دونوں بیک وقت اپنی اپنی پھر کی سے ایک دوسر سے کی گردن اتارہ یں تو بھی بھیڑ میں معلق سے خلقت ای طرح صرف تماشا دیکھی گ۔ مائزن کی چنگھاڑ سنتے ہی با نیخ ہوئے دونوں لڑائی چھوڑ تے ہیں اور اُچک کر بس میں سوار ہوجاتے ہیں۔ تمام خلقت بھی بس میں سوار ہوکر اچھی طرح معلق ہوجاتی میں میں سوار ہوکر اچھی طرح معلق ہوجاتی ہیں۔ جو میں۔ جو سب خاموش ہیں، اپنی اپنی سانسوں پر قابو پانے کی کوشش کرتے ہیں۔ جو دھکے دے کر نکالا گیا ہے۔ وہ اسینے دھکے دے کر نکالا گیا ہے۔ وہ اسینے دھکے دے کر نکالا گیا تھا ،اُس نے سوچا اُسے بمیشہ دھکے دے کر نکالا گیا تھا ،اُس نے سوچا اُسے بمیشہ دھکے دے کر نکالا گیا ہے۔ وہ اسینے

بیروں کو نہیں پھیان یاتا ہے اور ہواؤں میں معلّق بے تقیبہ ہاتھ یاؤں چلاتا رہ جاتا

ہے۔اُسے یادآتا ہے، جب مرحدول پر اُسے روکا کیا تھا۔

- تم کس مولوک کا شہری ہے؟
- __ بي آدى ہول بے نام آدى!
 - أسطرف كيون جاريا تعا....؟
- کیول که اس طرف جمی آ دمی بین!
 - __ ياسپورث دكھاؤ؟
- سے میرے پاس بی پانچ پانچ کل ملا کر بیس الکلیاں ہیں.... کھ زیادہ یا کم ہوتیں تب بھی کوئی فرق نہیں ہے تا....!

कन्डक्टर टिकट के लिए झगड़ रहा है और लोग टिकट के बदले सीट के लिए लड़ रहे हैं। सीट के लिए लड़ना उनका पैदाएशा हक़ है और टिकट के लिए झगड़ना... कन्डक्टर के पेशे की मजबूरी मुसाफ़िरों का ख़्याल है, बैग़ेर सीट के टिकट क्या। लेकिन कन्डक्टर की समझदारी कहती है कि बस में सवार होने का मतलब है टिकट कटाव..

कन्डक्टर से हाथा पाई शुरू हो जाती है। चलती हुई बस से कन्डक्टर उसे धक्के मार कर निकाल देता है। और फिर उसकी टांगों में फंसा-फंसा खुद भी बाहर आ जाता है। सड़क पर दोनों गुत्थम-गुत्था हो जाते हैं।.....दोनों ही जैसे अपने-अपने होने और न होने की सजा झेल रहे हैं। अपने पैदाएशी हक और मजबूर पेशे के लिए हांप रहे हैं। दोनों के जुमले बेजान हैं। एक दूसरे पर मुदों की तरह बेजरर¹. हाथ पांव चलाते हैं। बस की सारी भीड़ दायरे में बेहिस². तमाशा देखती है। अगर दोनों बयकवक्त³. अपनी-अपनी छुरी से एक दूसरे की गर्दन उतार दें तो भी भीड़ में मोअल्लक़ यह ख़िलक़त¹. इसी तरह सिर्फ़ तमाशा देखेगी।

सायरन की चिंघाड़ सुनते ही हांपते हुए दोनों लड़ाई छोड़ते हैं और उचक कर बस में सवार हो जाते हैं। तमाम ख़िलक़त भी बस में सवार होकर अच्छी तरह मोअल्लक़ हो जाती है। सब के सब ख़ामोश हैं। अपनी-अपनी सांसों पर क़ाबू पाने की कोशिश करते हैं। जो धक्के देकर निकाला गया था, उसने सोचा उसे हमेशा धक्के देकर निकाला गया है। वह अपने पैरों को पहचान पाता है और हवाओं में मोअल्लक़, बेनतीजा हाथ पांव चलाता रह जाता है, उसे याद आता है जब सरहदों पर उसे रोका गया था।

- तुम किस मुलुक का शहरी है ?
- मैं आदमी हूं ... बे नाम आदमी
- उस तरफ़ क्यों जा रहा था...?
- क्योंकि उस तरफ़ भी आदमी हैं।
- पासपोर्ट दिखाओ ?

मेरे पास यह पांच.... पांच..... कुल मिलाकर बीस उंगिलयां हैं...... कुछ ज्यादा या कम होतीं तब भी कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता.....।

^{1.} हानि रहित, 2. सुन्न, 3. एक साथ, एक समझ ही में, 4. लोग

۔ کیا بکتا ہے ہم پوچھتا ہے کس مولوک کا شہری ہے ہم کہتا ہے آدی ہے ہم بوتی ہے ... ارے آدی ہے ... ارے یہتو ہم بھی دیکھتا ہے کہتم جانورنہیں ہے ... ا؟

وہ پوچھنے والے کی طرف ایک تک دیکھتا ہے اور آگے بوط جاتا ہے۔ پوچھنے والا اس کی گردن میں ہاتھ دے کر اُسے دور پھینکتا ہے۔وہ لاکھڑاتا ہوا گرتا ہے اور غصتہ میں دھرے دھرے گالیاں دیتا ہے۔

وه بكتا ربا اور دحكا كما تا ربا_

**

بس برهتی جاربی ہے۔۔۔۔بس جیسے تیسے بردھ رہی ہے۔۔۔۔اوراس ایک سفر ہے۔اوراس ایک سفر میں کئی چھوٹے چھوٹے سفر ہیں ۔۔۔۔۔آفس،اسکول،گھر، ہوئل،کلب۔۔۔۔۔ کی چھوٹی چھوٹی مخزلوں کو طے کرتے ہوئے اس منزلوں کو طے کرتے ہوئے اس ایک بارے باؤں، جہاں ایک صفر اور اندھرے ایک بردے سفر کے ان دیکھے ان گنت تھکے ہارے پاؤں، جہاں ایک صفر اور اندھرے اپنے ہاتھوں میں آتھیں ذرّات لیے، تھکے ہارے قدموں کا بے مبری سے انتظار کردہے ہوں گے۔

سنرادر اندهروں سے اُکاتے ہوئے اُس نے تمام سنر سے اٹکار کردیا۔ مجور یوں کی جھکڑی پہنے جہاں تھا، وہیں کھڑا ہوگیا۔اور وہیں سے اس نے اپنے آپ کو کا نتات کی محدوں تک چھیلانا شروع کردیا۔ حدوں تک چھیلانا شروع کردیا۔

......क्या बकता है हम पूछता है किस मुलूक का शहरी है..... तुम कहता है आदमी है.... हम बोलता है पासपोर्ट दिखाओ तुम कहता है हमारे पास उंगली है... अरे यह तो हम भी देखता है कि तुम जानवर नहीं है.....?

वह पूछने वाले की तरफ एक टुक देखता है और आगे बढ़ जाता है। पूछने वाला उसकी गर्दन में हाथ देकर उसे दूर फेंकता है, वह लड़खड़ता हुआ गिरता है और गुस्से में धीरे-धीरे गालियाँ देता है।

......साला......हरामी..... हम जिधर जाना चाहें, तुम्हारे बाप का क्या.... मैं किसी मुल्क को नहीं मानता.......किसी सरहद, किसी दीवार को नहींमैं बेनाम आदमी हूं....इस दुनिया में जहां कहीं भी आदमी हैं मैं अपनी मर्जी से आने जाने का हक़ रखता हूं, मैं जहां चाहूँ जाऊँगा... कोई पूछने वाला कौन..... और क्यों खुद मुझे अपने आप को रोकने का हक़ नहीं..... यह मेरे खून की रवानी है जो मिट्टी के इस छोर से उस छोर तक रवां दवां¹. है.....! वह बकता रहा और धक्के खाता रहा

बस बढ़ती जा रही है..... बस जैसे तैसे बढ़ रही है। यह एक सफ़र है और इस सफ़र में कई छोटे -छोटे... सफ़र हैं...... ऑफ़िस, स्कूल, घर, होटल, क्लब..... की छोटी-छोटी मंजिलों को तय करते हुए बेशुमार सफ़र। एक अनदेखे स्टेशन की तरफ़ भागते हुए, इस एक बड़े सफ़र के अनदेखे अनगिनत थके हारे पांव जहां एक सिफ़र² और अंधेरे अपने हाथों में आतिशीं³ जर्रात⁴ लिए, थके हारे क़दमों का बेसबीं से इंतजार कर रहे होंगे।

सफ़र और अंधेरों से उकताते हुए उसने तमाम सफ़र से इन्कार कर दिया। मजबूरियों की हथकड़ी पहने, जहां था वहीं खड़ा हो गया और वहीं से उसने अपने आप को काएनात⁵. की हदों तक फैलाना शुरू कर दिया।

और मुत्वातिर⁶ धक्का खाने के बावजूद उसने सरहदों को तस्लीम⁷ करने से इंकार कर दिया तो एक तवील⁸ साजिश के तहत बुलिन्दियों का बहलावा देकर उसे मिट्टी से उक्काल दिया गया। जमीन की किशशे-सक्कल⁹ से बिछड़कर वह मोअल्लुक़ हुआ तो उसका हर अमल बे नतीजा होने लगा और वह अपने तमाम दुश्मनों के लिए एक बेजरर सी शै¹⁰. में तब्दील हो गया सरहदों को तोड़ते

१. जारी

^{2.} शुन्य

^{3.} आग जैसा. 4. कर्णों.

^{5.} ब्रह्माण्ड

^{6.} लगातार, निरंतर

७. मान्यता

८. लम्बी

गुरुत्वाकर्षण

१०. वस्तु

اور متواتر دھکا کھانے کے باوجود اُس نے سرحدوں کو تشلیم کرنے سے انکار کردیا تو ایک طویل سازش کے تحت بلندیوں کا بہلادا دے کراُ سے مٹی سے اُچھال دیا گیا۔ زیمن کی کشش تُقل سے چھڑ کر وہ معلق ہوا تو اس کا ہر عمل بے بتیجہ ہونے لگا اور وہ اپنے تمام دشمنوں کے لیے ایک بے ضرری شئے میں تبدیل ہوگیا۔ سرحدوں کو تو ژتے ہوئے اس کے یاؤں سرحدوں کے اوپر بے دزن اور ات کی طرح پھڑ پھڑانے گئے۔

بھیر میں پھنس کر بس کی رفآر دھی ہوجاتی ہے۔ سڑک پر ادر بس کے اندر بے انہا شور ہے۔ سورج کی کرنیں سیاہ ہورہی ہیں۔ سڑک پر مانک سے کوئی خاص اعلان ہورہا ہے جس کو سنتے ہی لوگوں کے چیروں کو سانپ سونگھ جاتا ہے۔ بڑی مشکلوں سے سڑک کا اعلان بس کی کھڑ کیوں میں داخل ہونے کی جگہ نکال سکا۔ شہر کے ایک سرے سے سیلاب تیزی سے بڑھ رہا ہے۔ جو جہاں معلق تھا، دہیں اس نے اپنی چھوٹی تجھوٹی منزلوں کو غرقاب ہوتے ہوئے گئی:۔

کوئی نہ ہوگا.... کچھ نہیں ہوگا میں تم وہ کچھ نہیں صرف ایک سلاب ہوگا دور دور تک صرف سلاب ادر سب کچھ ڈوب چکا ہوگا سطح آب پر سورج کے چند تخم ریزے ہوں کے جو صدیوں کے انتظار کی سزا کا شنتے ہوئے اپنی بقائے لیے ایک دوسرے سے نبردآزما ہوں گے۔

بس میں بھکدڑ مچتی ہے۔۔

سب لوگ ایک دوسرے کو کیلتے ہوئے بار بار ایک دوسرے پر گر ادر اُٹھ رہے ہیں۔سب لوگ ایک دوسرے کو کیلتے ہوئے بار بار ایک دوسرے پر گر ادر اُٹھ رہے ہیں۔سب لوگ اتر کر بس کی حمیت پر چڑھنا چاہتے ہیں۔اس دھم بیل میں کوئی بھی پاؤں باہر نہیں نکال پاتا۔سارے لوگ اپ نہ ہوتے ہوئے کا یقین کرنا چاہتے ہیں، اور محفوظ مہت پر چہنچنے کے لیے بس کے پائیدان پر زور آزمائی کررہے ہیں۔کین سب کے سب بول جیسے پاؤں ہیں میں نہیں،بس کے اندر معلق وحینگا مشتی کرتے رہ جاتے ہیں۔

بدی مشکلوں سے وہ جلتی بس سے اتر کیا ہے۔ سیلاب سے بے خوف ایک ستون کا سہارا لے کر اس نے مغبوطی سے اپنے پاؤں زمین میں جمادیئے ہیں۔ سیلاب أسے بے دخل کرنے کے لیے بوحا تو اس نے کہا:

हुए उसके पांव सरहदों के ऊपर बे-वजन औराक़^{1.} की तरह फडफडाने लगे।

भीड़ में फंस कर बस की रफ़्तार धीमी हो जाती है। सड़क और बस के अंदर बेइंतहा शोर है। सूरज की किरणें सियाह हो रही हैं। सड़क पर माइक से कोई ख़ास एलान हो रहा है जिसको सुनते ही लोगों के चेहरों को सांप सूंघ जाता है। बड़ी मुश्किलों से सड़क का एलान बस की खिड़िकयों में दाखिल होने की जगह निकाल सका... शहर के एक सिरे से सैलाब तेजी से बढ़ रहा है.. जो जहां मोअल्लक था वहीं उसने अपनी छोटी-छोटी मंज्ञिलों को ग़रक़ाब^{2.} होते हुए देखा। हवा चीखने लगी:

कोई न होगा..... कुछ नहीं होगा..... मैं ... तुम... वह... कुछ नहीं... सिर्फ़ एक सैलाब होगा... दूर-दूर तक सिर्फ़ सैलाब ... और सब कुछ डूब चूका होगा... सतहेआब^{3.} पर सूरज के चंद तुख़्म^{4.} रेज़े^{5.} होंगे जो सदियों के इंतजार की सजा काटते हुए, अपनी बका^{6.} के लिए एक दूसरे से नबर्रद-आज़मा^{7.} होंगे। बस में भगदड मचती है...।

सब लोग एक दूसरे को कुचलते हुए बार-बार एक दूसरे पर गिर और उठ रहे हैं। सब लोग उतर कर बस की छत पर चढना चाहते हैं। इस धक्कम पेल में कोई भी पांव बाहर नहीं निकाल पाता। सारे लोग अपने न होते हुए पैर को बार-बार पटक कर, अपने होने का यक्नीन करना चाहते हैं और महफ़ूज़^{8.} छत पर पहुँचने के लिए बस के पायदान पर जोर आजमाई कर रहे हैं। लेकिन सबके सब यूं जैसे पांव हैं ही नहीं, बस के अंदर मोअल्लक़ धींगा मुश्ती करते रह जाते हैं।

बड़ी मुश्किलों से वह चलती बस से उतर गया। सैलाब से बेखौफ़ एक सुतून का सहारा लेकर उसने मजबूती से अपने पांव जमीन में जमा दिए हैं। सैलाब उसे बेदखल करने के लिए बढ़ा तो उसने कहा -

- यह मिट्टी मेरी है इसलिए कि मैं इसके तुख्य से उगा हूं।
- मैं, अब और मोअल्लक़ नहीं रह सकता।
- खड़ा होने के लिए मुद्ठी भर जमीन मेरा अजली^{9.} हक है।

पुरखों ने जो कुछ किया शमशानों, और क़ब्रिस्तानों में जल सड़ रहा है। अगर इस मिट्टी से मुझे दस्त-बरदार 10. होने का इशारा भी किया तो तुम सब के

^{2.} ड्रबते, 1. पन्नों

^{3.} पानी की सतह 4. बीज

^{5.} टुकड़ा

अस्तित्व 7. लड़ाई करना 8. सुरक्षित 9. सदैव, पैदाएशी 10. बे-दखल, छोड़ना

ے أكا بول	لہ میں اس کے حخم سر	ہے اس کیے	بیمٹی میری	

میں اب اور معلق نہیں رہ سکتا۔

کرا ہونے کے لیے مٹی بمرزمین میراازل حق ہے۔

پرکھوں نے جو پکھ کیا، شمثانوں اور قبرستانوں میں جل سرارہا ہے۔اگر اس مٹی سے جھے دست بردار ہونے کا اشارہ بھی کیا تو تم سب کے نرخرے چیا جاؤں گا جھے دکھاؤ وہ بے جان دستاویز بتاؤ اس پر کہیں میرا بھی دسخط ہے اس دستاویز سے میرا کوئی لینا دیتانہیں ہے میں مرف اس مئی کو جانتا ہوں جہاں سے جھے کوئی نہیں ہٹا سکتا میں صرف اتنا جوں کہ اس مئی کی گود میں میں نے جنم لیا اور بیمٹی میری ماں ہے! اور بیمٹی میری ماں ہے! اور بیمٹی میری ماں ہے! اور بیمٹی میری ماں ہے! اور بیمٹی میری ماں بے! اور بیمٹی میری ماں بیانی اور سارا آگاش میری ماں ۔.... میرے دوں کی بات کی تو بھنجوڑ ڈالوں گا!

دھرے دھرے وہ اپنی پاؤس بہوانے لگا ہےوہی جانی بہوانی شندک وہی اندر اندر تک کو شخے والالمس وہ دور دور تک چر پھاڑ کرنے والی لہک پاؤں بہوانے ہوئے اس کی توانائی لوث رہی ہے خوفناک سیلاب قریب آیا تو اس کے پاؤں چوم کرلوث ممیان



नरखरे चबा जाऊँगा...। मुझे दिखाओ वह बेजान दस्तावेजबताओ उस पर कहीं मेरा भी दस्तखत है........ इस दस्तावेज से मेरा कोई लेना देना नहीं है... मैं सिर्फ़ उस मिट्टी को जानता हूं, जहां से मुझे कोई हटा नहीं सकता....। मैं सिर्फ़ इतना जानता हूं कि इस मिट्टी की गोद में मैंने जन्म लिया और यह मिट्टी मेरी मां है...।

और सच तो यह है कि सारी मिट्टी मेरी मां है....। सारी हवा, सारी आग, सारा पानी और सारा आकाश मेरी मां.... सरहदों की बात की तो भंभोड़ डालूंगा...।

धीरे-धीरे वह अपने पांव पहचानने लगा है.... वही जानी पहचानी ठंडक... वही अन्दर-अन्दर तक गूंजने वाला लम्स¹... वह दूर तक चीर फाड़ करने वाली लहक पांव पहचानते हुए उसकी तवानाई² लौट रही है ... ख़ौफ़नाक सैलाब क़रीब आया तो उसके पांव चूम कर लौट गया।



^{1.} स्पर्श, 2. ताकृत

مشرف عالم ذوقي

كانتيائن تبهنيس

ایک ضروری نوث ا

قارئین! کچھ کہانیاں ایک ہوتی ہیں جن کامتعقبل مصنف طے کرتا ہے لیکن کچھ کہانیاں ایک بھی ہوتی ہیں۔ کہانیاں ایک بھی ہوتی ہیں۔ یعنی جیسے جیسے کہانیاں ایک بھی ہوتی ہیں۔ یعنی جیسے جیسے کہانی آگے بڑھتی جاتی ہے، اپنے متعقبل کے تانے بانے بنتی ہے اور حقیقت میں مصنف اینے کرداروں کوراستہ دکھا کرخود چھے ہٹ جاتا ہے۔

कातियाइन बहनें

एक जरूरी नोट

क़ारईन⁽¹⁾! कुछ कहानियां ऐसी होती हैं जिन का मुस्तक़बिल मुसिन्नफ़⁽²⁾ तै करता है लेकिन कुछ कहानियां ऐसी भी होती हैं जिन का मुस्तक़बिल कहानी के किरदार तै करते हैं। यानी जैसे जैसे कहानी आगे बढ़ती जाती है, अपने मुस्तक़बिल के ताने बाने बुनती जाती है और हक़ीक़त में मुसिन्नफ़ अपने किरदारों को रास्ता दिखा कर खुद पीछे हट जाता है।

ऐसा इस कहानी के साथ भी हुआ है और ऐसा इस लिए हुआ है कि इस कहानी का मौजू है 'औरत' काएनात में बिखरे तमाम असरार से ज्यादा पुरअसरार, (3) खुदा की सब से हसीन तख़लीक़, (4) यानी अगर कोई यह कहता है कि वह औरत को जान गया है तो शायद उससे ज्यादा घामड़ और शेख़ी बघारने वाला, या इस सदी में इतना बड़ा झूठा कोई दूसरा नहीं हो सकता। औरतें जो कभी घरेलू या पालतू हुआ करती थींए छोटी और कमज़ोर थीं। अपनी पुरअसरार फ़ितरत या मकड़ी के जाले में सिमटी, कोख में मर्द के नुत्फे (5) की परविश्त करतीं..... सदियां गुजर जाने के बाद भी वह महज बच्चा देने वाली एक गाय बन कर रह गई थीं लेकिन शायद सदियों मर्द के अंदर दहकने वाला यह नुत्फा शांत हुआ था। या औरत के लिए यह मर्द धीरे धीरे बांझ या सर्द या महज्ञ बच्चा पैदा करने वाली मशीन का महज एक पुर्ज़ा बन कर रह गया था तो यह उस कहानी की तमहीद (6) नहीं है कि औरत अपने उस एहसास से आज़ाद होना चाहती है शायद इसी लिए इस कहानी का जन्म हुआ या इस-लिए कि औरत जैसी पुरअसरार मख़लूक़ (7) को अभी और कुरेदने या उस

^{1.} पाठक गण 2. रचनाकार 3. रहस्यमय 4. रचना 5. वीर्य 6. भूमिका 7. जीव

تو قارئین! یہ کوئی پر بوں کی کہانی نہیں ہے۔ یہاں دو بہنیں ہیںکا تیائن بہنیں۔ ممکن ہے ان بہنوں کے نام پر آپ کو''لولٹا''اناکار نینا''اور'' مادام بواری''کی یاد آجائے مرنہیں! یہ دوسری طرح کی بہنیں ہیں۔ مردوں کی حاکمی کو للکارنے والی تو اس کہانی کا جنم کچھ'خاص' حالات میں ہوا ہے۔

ایک واقعه

گرچہ یہ کوئی فلمی منظر نہیں تھالیکن یہ فلمی منظر جیسا ہی تھا۔ مس کا تیائن کے ہاتھوں سے سبزی کا تھیلا بھسلا اور دو بڑے بڑے آلواڑ ھکتے ہوئے بھو پیندر پریہار کے پاؤل سے فکرائے۔ بھو پیندر پریہار، عمر ایک کم باسٹھ سال، تھوڑا لہرائے، تھوڑا جھے، آلوؤں کو اٹھایا اور سبزی منڈی کی ایک دوکان پر کھڑی مس کا تیائن پر جی جان سے نچھاور ہوگئے۔

'' آپمس کا تیائن ہیں ناوہ''اینا کی ڈال'' والی ددکان کے سامنے والے گھر ی؟''

''ہاں۔'' مس کا تیائن اتنا بول کر خاموش ہوگئیں۔ شاید انھیں گفتگو کا یہ انداز پند نہیں آیا۔ وہ بھی الی جگہ؟ سبزی منڈی میںکوئی' مرد' اس طرح کی عورت ہے '' میں وہیں رہتا ہوںآپ کے گھر کے پاستقیلا بھاری ہے؟'' پیدنہیں کہاں ہے بھو پیندر پر یہار کے لیجے میں اتنا اپنا پن سٹ آیا تھا۔ ''نہیں کوئی یات نہیں''

"ديجية تامن الحالية مول"

بھوپندر پریہار نے آرام سے تعمیلا اٹھایا ادر سبزی منڈی کی دھول بھری سر کوں پردونوں چپ چاپ چلے ہے بالکل بھول مجئے کے لیے یہ بالکل بھول مجئے کے دونوں چپ چاپ چپاں نہیں ایک کم باٹھ سال کے گھوڑ سے پرسوار ہیں۔
تھے کہ وہ کوئی نوجوان نہیں ایک کم باٹھ سال کے گھوڑ سے پرسوار ہیں۔
لیکن گھوڑ سے ہیں اچا تک جوش آگیا تھا۔

तहक़ीक़ करने की ज़रूरत है ······ हमने अभी भी इस मुहज्ज़ब⁽¹⁾ दुनिया में उसे सिर्फ़ मुक़द्दस⁽²⁾ नामों या रिश्तों में जकड़ रखा है।

तो क़ारईन! यह कोई परियों की कहानी नहीं है। यहां दो बहनें हैं...कातियाइन बहनें। मुमिकन है इन बहनों के नाम पर आप को "लौलिता" अन्नाकार नीना" और "मादाम बुवारी" की याद आ जाए मगर नहीं! यह दूसरी तरह की बहनें हैं। मर्दों की हाकमी को ललकारने वाली......तो इस कहानी का जन्म कुछ 'ख़ास' हालात में हुआ है।

एक वाक़ेआ,

अगरचे यह कोई फ़िल्मी मंजर नहीं था लेकिन यह फ़िल्मी मंजर जैसा ही था। मिस कातियाइन के हाथों से सब्ज़ी का थैला फिसला और दो बड़े बड़े आलू लुढ़कते हुए भूपेन्द्र परिहार के पांव से टकराए। भूपेन्द्र परिहार, उम्र एक कम बासठ साल, थोड़ा लहराए, थोड़ा रुके, आलुओं को उठाया और सब्ज़ी मंडी की एक दुकान पर खड़ी मिस कातियाइन पर जी जान से निछावर हो गए।

- "आप मिस कातियाइन हैं ना----वह" ईना की डाल "वाली दुकान के सामने वाले घर में-----?"
- "हां" मिस कातियाइन इतना बोल कर ख़ामोश हो गई। शायद उन्हें गुफ़्तगू का यह अंदाज पसंद नहीं आया। वह भी ऐसी जगह? सब्जी मंडी में कोई 'मर्द' इस तरह किसी औरत से.....
- ''मैं वहीं रहता हूं……आप के घर के पास……गैला भारी है?'' पता नहीं कहां से भूपेन्द्र परिहार के लहजे में इतना अपनापन सिमट आया था,
 - ''नहीं कोई बात नहीं..... ''
 - ''दीजिए ना। मैं उठा लेता हं......''

भूपेन्द्र परिहार ने आराम से थैला उठाया और सब्ज़ी मंडी की धूल भरी सड़कों पर दोनों चुप चाप चलने लगे। हाँ भूपेन्द्र परिहार कुछ लम्हें के लिये यह बिल्कुल ही भूल बैठे थे कि वह कोई नौजवान नहीं बिल्क एक कम बासठ साल के घोड़े पर सवार हैं.....

लेकिन घोड़े में अचानक जोश आ गया था।

^{2.} शिष्ट 3. पवित्र

ایک عالی شان محر پرانے زمانے کا چندن کی لکڑی کا بنا ہوا محراب نما دروازہ تھا۔ یہ دروازہ جرائے کی آواز کے ساتھ کی ہاررفلم کی طرح کھانا تھا اس کے بعد کافی کھلا ہواضحن تھا۔ غرض یہ کہ ایک ٹوٹا مجبوٹا سابے رونق گھر تھا۔ یہاں آپ ہمیشہ بری مس کا تیائن کو دیکھ سکتے تھے۔ نظریں جنگ ہوئی، ہاتھ میں پکڑی ہوئی تیلیاں۔ ایک طرف پڑا ہوا اون کا گھا۔ تیلیوں میں الجھے ہوئے ہاتھ یعنی دنیا سے بخرمس کا تیائن سوئٹر بن ربی میں۔ جاڑا ہوگری یا برسات، مس کا تیائن کی بس اتن می دنیا ہے مہری قر، اون کا گولا اور تیلیاں۔ لیکن یہ باتی سوئٹر من کا تیائن یہ سوئٹر کس کے لیے بنتی ہیں۔ انھیں پہننے والا کون ہے؟ یا بس سوئٹر بنا مس کا تیائن کا ایک شغل ہے۔ ایک بی سوئٹر کو بار بار ادھیڑتے رہنا اور بنتے رہنا ۔...،

"اندرآجاييك"

چھوٹی مس کا تیائن نے اشارہ کیا۔ بھو پیندر پریہار تھیلا لیے صحن میں آ مکے بمیشہ کی طرح بڑی مس کا تیائن نے گردن محما کر چھوٹی مس کا تیائن کے ساتھ اندر آتے ہوئے، اجنبی کو دیکھالیکن آٹکھوں میں جیرانی کا شائبہ تک نہ تھا۔ چہرہ چقر جیسا بے حس۔

''یہ پردوی ہیں'' چھوٹی مس کا تیائن نے بڑی کے سامنے تھیلے کی طرف اشارہ کرتے ہوئے کہا' بھاری تھا۔ اس لیے مدد کرنے چلے آئے۔''

بھو پیندر پر بہار کو یقین ہے کہ چھوٹی کا تیائن کی دضاحت سے بڑی کی آتھوں ہیں ایک بھی آگھوں ہیں ایک بھی ایک بھی ایک بلکی سی چک ضرور لہرائی ہوگی حالانکہ وہ اس جبک کو صرف محسوس کرسکے تھے۔ اس لیے کہ دوسرے بی لمحے سؤئٹر بنتے پھر کے جسمے سے آواز آئی تھیں۔

" بيني نا...........

یہ کا تیائن بہنوں کے ہاں بھو پیندر پر یہارک پیلی انٹری (Entry)تھی۔ کچھ بھو بیندر بر یہار کے بارے میں

بھو پیندر پریہار مرد آدمی تھے۔ مردول کے بارے میں ان کی اپنی رائے تھی ایک خاص طرح کا فیسی نیشن (Fascination) تھا اس لفظ کے بارے میں مثلاً وو سوچتے تھے کہ مرد ایک شاندارجسم رکھتا ہے۔ خوشبو میں ڈوبا ہوا جسم ایک سدا بہار، مست مست، کی تناور درخت کی طرح شان سے ایستادہ برداہ، بے نیاز کمی کو



एक आली शान मगर पुराने जमाने का चंदन की लकड़ी का बना हुआ मेहराब नुमा दरवाजा था। यह दरवाजा चर-चराने की भयानक आवाज के साथ किसी हारर फ़िल्म की तरह खुलता था..... उस के बाद काफ़ी खुला हुआ सेहन था। ग़र्ज यह कि एक टूटा फूटा सा बे रौनक घर था। यहां आप हमेशा हर मौसम में बड़ी कातियाइन को देख सकते हैं। नज़रें झुकी हुईं, हाथ में पकड़ी हुईं तीलियां। एक तरफ पड़ा हुआ ऊन का गुच्छा। तीलियों में उलझे हुए हाथ.....यानी दुनियां से बेख़बर मिस कातियाइन स्वेटर बुन रही हैं। जाड़ा हो गर्मी या बरसात मिस कातियाइन की इतनी सी दुनियां है.....गहरी फ़िक्क, ऊन का गोला और तीलियां। लेकिन यह बातें ज्यादा तकजोह तलब नहीं हैं कि बड़ी मिस कातियाइन यह स्वेटर किस के लिए बुनती हैं, उन्हें पहनने वाला कौन है? या बस स्वेटर बुनना मिस कातियाइन का एक शग़ल⁽¹⁾ है। एक ही स्वेटर को बार बार उधेड़ते रहना और बुनते रहना......''

"अन्दर आ जाइये……" छोटी मिस कातियाइन ने इशारा किया। फिर भूपेन्द्र परिहार थैला लिए सेहन में आ गए……हमेशा की तरह बड़ी मिस कातियाइन ने गर्दन घुमा कर छोटी मिस कातियाइन के साथ अंदर आते हुए, अजनबी, को देखा……लेकिन आंखों में हैरानी का शाएबा⁽²⁾ तक न था। चेहरा पत्थर जैसा बेहिस।

''यह पड़ोसी हैं-----'' छोटी मिस कातियाइन ने बड़ी के सामने थैले की तरफ़ इशारा करते हुए कहा----- ''भारी था-----इस लिए मदद करने चले आए''

भूपेन्द्र परिहार को यक़ीन है कि छोटी कातियाइन की वज़ाहत पर **बड़ी की** आंखों में एक हल्की सी चमक ज़रूर लहराई होगी हालांकि उस चमक को वह सिर्फ़ महसूस कर सके थे।

इसलिए कि दूसरे ही लम्हे स्वेटर बुनते पत्थ्य के मुजस्समे से आवाज आई थी.....

''बैठिये ना……''

यह कातियाइन बहनो के हाँ भूपेन्द्र परिहार की पहली इन्ट्री थी।

^{1.} काम 2. शक

فاطر میں نہ لانے والا، عورت یا بیوی جیسی چز، ای چز کو قید میں رکھنا چاہتی ہے۔ یہ جمم ب کام محور کے کی طرح ہے، شاہراہوں کو روئدتا، منزلوں کو چھپے چھوڑتا، سمندر کی طرح ب قابو، ب خوف، لہروں کی طرح چینا دہاڑتا، طوفان کی طرح گرجتا۔ یا شیر بہر کی طرح بے قابو، سرکش اور دھرتی کو اپنے طاقتور بیٹوں سے روئدنے والا۔ یہ جم کسی ایک دربے میں نہیں جھپ سکتا، کسی ایک بیرک میں قید نہیں رہ سکتا، کسی ایک محر میں یا کسی ایک محر میں یا کسی عورت میں سیس

لیکن ہوتا کیا ہے، وقت آنے پر بیجم ایک عورت کے حوالے کر دیا جاتا ہے، اور کہا جاتا ہے بساسے تمعارے حوالے کیا۔ بس میں ہےاپنے جسم کی پتوار جیسے جا ہو اس پر استعال کرو۔

مز پر بہار عام عورتوں جیسی ہی ایک عورت تھیجس کے لیے زندگی کا مطلب ایک کنبے شوہر یا بچوں سے زیادہ کو ٹیس ہوتا۔ یا شاید بنچ کے آنے کے بعد شوہر کی بھی کچھ زیادہ حیثیت ٹیس رہتی۔ من کے آنے کے بعد مسز پر بہار کی زندگی کا بہی ایک مقصد رہ گیا تھا۔ من صرف من ۔ اس لیے شاید بھی ہمی شوہر کے بتوار جیسے سے جسم کی ما مگ کو بھی وہ نظر انداز کر حاتی

''نہیںاے اتنا پیار مت دو۔ بھگوان کے داسطے۔''بھو پیندر پریہار کے ہونٹوں تکی تھی۔

"کول"؟

"كونكه يج موت بى ايس ميل لا برواه اورب وفا"

"ياكل موكئ موا"

'' نیج تمماری محبت کی قدر نہیں کریں گے۔ وہ ایک دن تاثر جتنے ہو جا کیں گے اور ہمیں بھول جا کیں گے۔''

اور شاید یمی ہو افغا۔ سمن بڑا ہوااو میرج کی اور بیوی کو لے کر کناڈا چلا کیا۔ منز پر بہار اس فرض سے سبک دوش ہو کر ابدی نیندسوگی۔ اسلے رہ گئے بھو پنیدر پر بہار۔ لیکن وہ اس زندگی کو یادوں کا قبرستان نہیں بنانا چاہیے تھے۔ وہ بقول رسول حزہ توف

कुछ भूपेन्द्र परिहार के बारे में

भूपेन्द्र परिहार मर्द आदमी थे। मर्दों के बारे में उन की अपनी राय थी......
एक ख़ास तरह का Fascination था इस लफ़्ज़ के बारे में...... मसलन वह
सोचते थे कि मर्द एक शानदार जिस्म रखता है, खुशबू में डूबा हुआ जिस्म....
एक सदा बहार मस्त मस्त किसी तनावर दुरख़्त की तरह शान से ईस्तारा.....
बेपरवाह, बेनियाज किसी को ख़ातिर में न लाने वाला, औरत या बीवी जैसी चीज
उसी जिस्म को क़ैद में रखना चाहती है। यह जिस्म बे लगाम घोड़े की तरह है,
शाहराहों को राँदता, मंजिलों को पीछे छोड़ता, समुंदर की तरह बे ख़ौफ़, लहरों की
तरह चींख़ता दहाड़ता, तूफ़्ज़न की तरह गरजता, या शेर बबर की तरह बेक़ाबू,
सरकश और धरती को अपने ताकतवर पंजों से राँद देने वाला। यह जिस्म किसी
एक दर्रे में नहीं छुप सकता, किसी एक बैरक में क़ैद नहीं रह सकता, किसी एक
क़ैद खाने में, किसी एक घर में या किसी एक औरत में.....

लेकिन होता क्या है वक्त आने पर यह जिस्म एक औरत के हवाले कर दिया जाता है, और कहा जाता है 'बस-----इसे तुम्हारे हवाले किया। बस यही है----अपने जिस्म की पतवार जैसे चाहो इस पर इस्तेम्प्तल करो।

मिसेज परिहार आम औरतों जैसी ही एक औरत थी..... जिस के लिए जिन्दगी का मतलब एक कुन्बे या शौहर या बच्चों से ज्यादा कुछ नहीं होता। या शायद बच्चे के आने के बाद शौहर की भी कुछ ज्यादा हैसियत नहीं रहती। सुमन के आने के बाद मिसेज परिहार की जिन्दगी का यही एक मक़सद रह गया था। सुमन— सिर्फ़ सुमन। इसलिए शायद कभी कभी शौहर के पतवार जैसे तने जिस्म की मांग को भी वह नजर अंदाज कर जाती.....

"नहीं......उसे इतना प्यार मत दो। भगवान के वास्ते" भूपेन्द्र परिहार के होठों पर तल्खी थी।

^{&#}x27;'क्यों''?

^{&#}x27;'क्योंकि बच्चे होते ही ऐसे है। लापरवाह और बेवफ़ा......''

^{&#}x27;'पागल हो गए हो !''

^{&#}x27;'बच्चे तुम्हारी मुहब्बत की क़दर नहीं करेंगे। वर एक दिन ताड़ जितने हो जायेंगे और हमें भूल जाएगें।''

..... پیار کو زندہ رکھنا چاہتے تھے جس کے بارے شنان کا عقیدہ تھا کہ زندگی ہے جگر پارہ چلا گیا تو ہم بھی نہیں نگ سکتے۔ وہ کھونا نہیں چاہتے تھے اور بھی کہا جائے تو اپنے مرد ہونے کے بعرم کو قائم رکھنا چاہتے تھے۔ اور شاید خالی پن کے بہی وہ لمح تھے جب کا تیائن بہنوں سے ان کی دوئی کے در وا ہوئے تھے یا بقول رسول حمزہ توف.....اس بہانے وہ اپنے آپ کو زندہ رکھ سکتے تھے۔

بری بهن رما کا تیائن کا نظریه

کا تیائن بہنوں کی زندگی میں ویرانی کی شاید ایک لیمی تاریخ رہی تھی ہی پاس کے لوگوں کے لیے اس گھریا بہنوں کے بارے میں سب کچھ براسرار تھا........ یعنی جب یہ بہنیں گھر میں ہوتیں یاوہ وقت جب بے ہتم آ و از کے ساتھ کھلنے والے و رواز وں سے یہ باہر تکتیں تو گویا سر گوشیوں کا بازارگرم ہو جاتا۔ ان کی زندگی پراسرار کا دینز پردہ پڑا تھا۔ سے یہ باہر تکتیں وہ بری بہن کے ہاتھ میں تھا۔ سال کا نکات ہے بھی زیادہ پراسراتھیں وہ بری بہن کے ہاتھ میں ایک گل بوٹوں وائی چھتری ہوتی جس کا ساتھ ان کے لیے ہرموسم میں لازی تھا۔ جاڑا ہو یا گری ہو یا اندر کوئی خوف ہو اور پھول وار چھتری کی باؤی گارڈ کی طرح ان کی گرانی کرتی ہو۔ چہرہ اس چٹان کی طرح سخت سمندر کی لہریں جس کا پکھنیں بھاڑ ان کی گرانی کرتی ہو۔ چہرہ اس چٹان کی طرح سخت سمندر کی لہریں جس کا پکھنیں ہوئی من راکا تیا کین کوشتے ہوئے نہیں دیکھا تھا۔ آ پ اپ بالائی منزل سے شام ڈھلنے تک جب بھی چاہے آئیں کو کھنے ہیں۔ می کر بھوٹی رہا کا تیائن بری سے کا تیائن آ پ کو ضرور ال جا کیں گی۔ عرساٹھ کے آ س پاس۔ چھوٹی رہا کا تیائن بری سے دو تین سال چھوٹی رہی ہوں گی۔ عرساٹھ کے آ س پاس۔ چھوٹی رہا کا تیائن بری سے دو تین سال چھوٹی رہی ہوں گی۔ اس سے زیادہ نہیں۔ گر رہارا کی طرح سخت نہیں تھیں۔ کسی زمانے میں خوش مزاج بھی رہی ہوں گی موس کی گر رہارا کی طرح ساتھ مزاج میں ایک تھی کی جیرگی آ گئی تھی۔

یہ کہنا مشکل ہے کہ اس سے پہلے کا تیائن بہنوں کی پراسرار دنیا میں کوئی آیا تھا یا نہیں۔ گر بعو پنیدر پر یہار کی اوپا یک آ مد گھر میں شکوک وشبہات کی فصل لے کرآئی تھی اور یہ شک بعو پنیدر پر یہار کے جاتے ہی شتر مرغ کی طرح ریت سے اپنا سرنکالنے لگا تھا۔ بری کا تیائن کی آ تھوں میں جرانی کے ڈورے تھے اور چھوٹی کا تیائن کے موٹوں پر ایک

और शायद यही हुआ था। सुमन बड़ा हुआलव मैरिज की और बीवी को लेकर कनाड़ा चला गया। मिसेज परिहार उस फर्ज से सुबुकदोश (1) होकर अबदी नींद सो गईं। अकेले रह गए भूपेन्द्र परिहार। लेकिन वह उस जिन्दगी को यादों का क़ब्रिस्तान नहीं बनाना चाहते थे। वह बक़ौल रसूल हम्ज़ा तोफ प्यार को जिन्दा रखना चाहते थे जिसके बारे में उन का अक़ीदा था कि जिन्दगी से जिगरत्पारा चला गया तो हम भी नहीं बच सकते। वह खोना नहीं चाहते थे और सच कहा जाए तो अपने मर्द होने के भरम को क़ायम रखना चाहते थे। और शायद खाली पन के यही वह लम्हें थे जब कातियाइन बहनों से उन की दोस्ती के दर वा हुए थे या बक़ौल रसूल हम्ज़ा तोफ इस बहाने वह अपने आप को जिंदा रख सकते थे।

बड़ी बहन यानी रमा कातियाइन का नजरिया,

कातियाइन बहुनों की जिन्दगी में वीरानी की शायद एक लम्बी तारीख रही थी.....आस पास के लोगों के लिए उस घर या बहनों के बारे में सब कुछ पुरअसरार था यानी जब यह बहनें घर में होतीं या वह वक़्त जब बेहंगम आवाज के साथ खुलने वाले दरवाजों से यह बाहर निकलर्ती तो गोया सरगोशियों का बाज़ार गर्म हो जाता। उन की ज़िन्दगी पर असरार का दबीज पर्दा पड़ा था.....शायद इस मुकम्मल काएनात से भी ज्यादा पुरअसरार थीं वह। बड़ी बहन के हाथ में एक गुल बूटों वाली छतरी होती जिस का साथ उन के लिए हर मौसम में लाजमी था। जाडा हो गर्मी हो या बरसात, गोया अंदर कोई खौफ़ हो और फुलदार छतरी किसी बाडी गॉर्ड की तरह उन की निगरानी करती हो। चेहरा उस चट्टान की तरह सख़्त, समुंदर की लहरें जिस का कुछ नहीं बिगाड़ पार्ती। आज तक किसी ने भी रमा कांतियाइन को हंसते हुए नहीं देखा था। आप अपने घर की बालाई मंजिल से शाम ढलने तक जब भी जी चाहे उन्हें देख लीजिए एक कुर्सी पर स्वेटर बुनती हुई रमा कातियाइन आप को ज़रूर मिल जाएगी। उम्र साठ के आस पास। छोटी रीता कातियाइन बड़ी से दो तीन साल छोटी रही होंगी। उस से ज्यादा नहीं मगर रीता कातियाइन रमा की तरह सख़्त नहीं थीं। किसी जमाने में खुश मिज़ाज भी रही होंगी मगर वक़्त के साथ साथ मिज़ाज में एक क़िस्म की

^{1.} मुक्त

شرارت بحری خاموثی۔''کب سے جانتی ہوا ہے؟''

"کے؟"

"وبى جے لے كرتم كھر آ كى تقى۔"

''احیما وہ۔ بھو پیندر پریہار.....''

'' نام بھی جانتی ہواس کا مطلب پرانی ملاقات ہے....کب ہے جانتی ہواہے؟'' '' آج سے پہلے....نہیں۔''

" ایک بی دن میں اس نے سبری کا تھیلا بھی تھام لیا اور مگر میں آ پیکا"

" نبیں۔ آپ نے سمجمانہیں۔"

"كيا ايك اجنبي شخص كوتم اس محريس لے آئيں اتنا كافي نہيں"

چیونی مس کا تیائن کی آنکموں میں مابوی تھی۔''نہیں د راصل آپ ابھی بھی نہیں سجھیں.....تھیلا بھاری تھا.....''

" صفائی مت پیش کرو۔ اس سے پہلے ایسا حادثداس گھر میں نہیں ہوا۔"

یوی مس کا تیائن کا لہد فیصلہ کن تھا۔ " ابھی تم سبری کاٹو۔ رات کا کھانا بنانے کی تیاریاں کرتے ہیں مگر یاد رکھو رات میں۔ رات میں اس واقعہ کے بارے میں دوبارہ غور کریں گے۔ "

دہشت بھری ربگزار سے

ہم کہ کتے ہیں وہ رات کا تیائن بہنوں کی نظر میں بہت عام ی رات نہیں تھی۔ بری کا تیائن کمرے میں نہل رہی تھیں۔ سب جیسے اندر ہی اندر کی خاص نتیج پر چنچنے کی تیاری کر رہی ہوں یا جیسے رات کے وقت شو ہر اپنے کمرے میں کچن سے لوشے والی اپنی نوبیا ہتا والبن کا انظار کرتا ہے۔ ۔۔۔۔ کہ وہ اب آئے گی یا بی بجمائے گی یا اس کے قدموں کی آ ہٹ سائی وے گی۔

نیکن آپ اس طرح بری کا تیائن کو خیلتے دیو کر بینیں کہد سکتے کہ وہ بڑھاپ کے گیاروں میں اتن دور تک نکل آئی ہے۔ نہیں، جیرت انگیز طور پر اس وقت وہ کس نوجوان

संजीदगी आ गई थी।

यह कहना मुश्किल है कि उन से पहले कातियाइन बहनों की पुरअसरार दुनियां में कोई आया था या नहीं। मगर भूपेन्द्र परिहार की अचानक आमद घर में शक्को शुबहात की फसल ले कर आई थी और यह शक भूपेन्द्र परिहार के जाते ही शुतुर मुर्ग़ की तरह रेत से अपना सर निकालने लगा था।

बड़ी कातियाइन की आंखों में हैरानी के डोरे थे और छोटी कातियाइन के होंठों पर एक शरारत भरी खामोशी,

- "कब से जानती हो उसे"?
- "किसे"?
- ''वही, जिसे लेकर तुम घर आई थीं''
- ''अच्छा वह! भूपेन्द्र परिहार......''
- "नाम भी जानती हो, इस का मतलब पुरानी मुलाक़ात है.....कब से जानती हो उसे ?"
 - ''आज से पहले……नहीं''
- "एक ही दिन में उस ने सब्ज़ी का थैला भी थाम लिया और घर में आ टपका·····''
 - ''नहीं! आप ने समझा नहीं।''
- "क्या एक अजनबी शख़्स को तुम इस घर में ले आईं इतना काफ़ी नहीं……"

छोटी मिस कातियाइन की आंखों में मायूसी थी। "नहीं दरअसल आप अभी भी नहीं समझीं……थैला भारी था……''

"सफ़ाई मत पेश करो। इस से पहले ऐसा हादसा इस घर में कभी नहीं हुआ।"

बड़ी मिस कातियाइन का लहजा फ़ैसला कुन था। ''अभी तुम सब्जी काटो। रात का खाना बनाने की तैयारियाँ करते हैं, मगर याद रखोंरात में। रात में इस वाक्रेए के बारे में दोबारा ग़ौर करेंगे।

दहशत भरी रहगुजार (1) से

हम कह सकते हैं वह रात कातियाइन बहनों की नज़र में बहुत आम सी रात

سے کم نہیں لگ ربی تھیں۔ یقینا ایک ایسے نوجوان سے جو اپنی بیوی کی کسی بات سے ناراض ہواٹھا ہواور اس سے گفتگو شروع کرنے کی ذہنی کفکش سے گزر رہاہو۔ جمونی کا تیائن کے اندر داخل ہوتے ہی بڑی نے کسی لومڑی کی طرح اپنی نگاہیں اس پر مرکوز کردیں.....

......آؤٹرسٹ ایمرسائز (Trust Exercise) کرتے ہیں۔

...... ٹرسٹ ایکسرسائز؟ لیکن کیوں؟

..... جرح مت کرو۔ مردول کی طرح مت بنو کیونکہ تم نے اپنا Trust

کھویا ہے....

.....یاتم نے؟

.....مکن ہے، اس لیے آؤ آئیسیں بند کریں اور شروع ہوجا کیں

اور ای کے ساتھ دونوں آسے ساسے کھڑی ہوگئیں۔ بڑی کا تیائن کی پتلیاں دھیرے دھیرے بند ہونے لکیں چھوٹی کا تیائن کچھ سوچ کرمسرائیں اور چھر کی زین پر وہ بھی بڑی کا تیائن کے آسے ساسے کھڑی ہوگئیں۔ ٹرسٹ ایکسسائز بیل ایک دوسرے پر آنکھیں موند کر گرنا ہوتا ہے۔ ساسے والے کو اپنے ساتھی کو تھامنا ہوتا ہے ایسا کی بارکرنا ہوتا ہے۔ ساسے والے نے اگر تھام لیا تو مطلب صاف ہے۔ ابھی یقین بی کی بارکرنا ہوتا ہے۔ سامنے والے نے اگر تھام لیا تو مطلب صاف ہے۔ ابھی یقین بی کی نہیں آئی یا ابھی یقین بحال ہے۔ بیٹل چھر کی زمین پر اس لیے کرتے ہیں تاکہ کی نہیں آئی یا ابھی یقین بحال ہے۔ بیٹل چھر کی دول سے بیدا ہونے والا احساس اس یقین کو پھر سے بحال کر سے۔ دراصل مغربی ممالک سے ہم لگا تار پکھ نہ پکھ بطور تھے گئے رہے ہیں اور "ٹرسٹ" کرنے کا یہ نایاب طریقہ ابھی پچھ دنوں پہلے ہی وہاں سے امیورٹ ہوکر آیا ہے۔

تو کا تیائن بہنوں نے آکھیں بند کرلیں۔ ممکن ہے آپ کے لیے بیہ سارا منظر بے لطف، اکادیے والا اور واہیات ہو ۔۔۔۔۔گر شاید کا تیائن بہنوں کو یقین کی ڈور سے بائد منے کے لیے بیکھیل کائی معنی رکھتا تھا۔ اور جیبا کہ ہمیں بھی یقین تھا آکھیں بند کرنے، ایک دوسرے پرگرنے کے عمل میں چوٹی سرے بل گری تھی۔ شاید بیا ایک عمر پارکرنے کی طد کے سبب تھا یا جو بھی ہو، گر طے تھا کہ بوئی اسے تھام نہیں یائی اور چھوٹی کا تیائن کے سبب تھا یا جو بھی ہو، گر طے تھا کہ بوئی اسے تھام نہیں یائی اور چھوٹی کا تیائن کے

नहीं थी। बड़ी कातियाइन कमरे में टहल रही थी......जैसे अंदर ही अंदर किसी ख़ास नतीजे पर पहुंचने की तैयारी कर रही हों या जैसे रात के बक़्त शौहर अपने कमरे में किचन से लौटने वाली अपनी नौ ब्याहता दुल्हन का इंतिजार करता है......िक वह अब आएगी या बत्ती बुझाएगी या उस के क़दमों की आहट सुनाई देगी।

लेकिन आप इस तरह बड़ी कातियाइन को टहलते देख कर यह नहीं कह सकते कि वह बुढ़ापे के गलियारों में इतनी दूर तक निकल आई है। नहीं, हैरत अंगेज तौर पर इस वक़्त वह किसी नौजवान से कम नहीं लग रही थी। यक़ीनन एक ऐसे नौजवान से जो अपनी बीवी की किसी बात से नाराज हो उठा हो और उस से गुफ़्तगू शुरू करने की जेहनी कश्मकश से गुजर रहा हो। छोटी कातियाइन के अंदर दाख़िल होते ही बड़ी ने किसी लोमड़ी की तरह अपनी निगाहें उस पर मरकूज़⁽¹⁾ करदीं......

- ---आओ ट्रस्ट एक्सरसाइज (TRUST EXCERCISE) करते हैं।
- ---ट्रस्ट एक्सर साइज ? लेकिन क्यों ?
- —जिरह मत करो। मदौँ की तरह मत बनोक्यों कि तुम ने अपना ट्रस्ट खोया है.....
 - -या तुम ने ?
- --- मुमिकन है। इस लिए आओ आंखें बंद करें और शुरू हो जायें...... और उसी के साथ दोनों आमने सामने खड़ी हो गईं। बड़ी कातियाइन की पुतलियां धीरे धीरे बंद होने लगीं......छोटी कातियाइन कुछ सोच कर मुस्कुराई और पथरीली जमीन पर वह भी बड़ी कातियाइन के आमने सामने खड़ी हो गई। ट्रस्ट एक्सर साइज में एक दूसरे पर आंखें मूंद कर गिरना होता है। सामने वाले को अपने साथी को थामना होता है, ऐसा कई बार करना होता है। सामने वाले ने अगर थाम लिया तो मतलब साफ़ है। अभी यक्कीन में कमी नहीं आई या अभी यक्कीन बहाल है। यह अमल पथरीली जमीन पर इस लिए करते हैं ताकि गिरने या चोट लगने से पैदा होने वाला एहसास उस यक्कीन को फिर से बहाल कर सकें। दर असल मग़रिबी मुमालिक से हम लगातार कुछ न कुछ बतौर तोहफ़्त्र लेते रहे हैं और ''ट्रस्ट'' करने का यह नायाब⁽²⁾ तरीक़ा अभी कुछ दिनों पहले ही वहां से 1. केन्द्रित 2. अदभत

ہونوں ہے، لڑ کھڑاتے، گرتے ہوئے ایک زور کی چیخ فکل گئی تھی۔

'' آہ جیسا کہ مجھے یقین تھا۔'' بڑی کا تیائن کا لہجہ برف سا سرد تھا۔'' وہ آدیتم نے سچ مچ اپنا ٹرسٹ کھودیا ہے۔ چلو بہت دنوں کے بعد ہی سمی ذرا ماضی کی راکھ کریدتے ہیں۔'' بڑی کا تیائن نے چھوٹی کے کندھے پر ہاتھ رکھا.....

" والمسميل كه يادآر باع؟"

"بال-"

· نتميس ياد ركهنا جايي '

بزی کی آواز میں کرزش مقی۔

''اس آدمی کی یاد جو مرد تھا یا باپ تھا۔۔۔۔۔ یا جنگل ساعڈ۔ یہی کمرہ تھانا ۔۔۔۔۔۔۔۔ اور وہاں دروازے بر۔۔۔۔۔۔۔۔''

چھوٹی کا تیائن کو یاد تھا۔ باپ ورواز نے پر شراب بی کر شام کے وقت آ کر، مال کا نام لے کر زور زور سے چلاتا تھا۔

"..... بإد إ

"..... باپ کیوں یا د ہے اس لیے کہ اس میں بے رحی تھی۔ وہ ایک خوفاک انسان تھا۔ بلکہ حیوان تعاد بلکہ حیوان تعاد ہے، مال رویا کرتی تھی۔ کبھی بھی خوب زوروں سےساری ساری رات چلایا کرتی تھی اور باپ نشے میں دھت سویا رہتا تھا........

''.....بان، مگر وہ سب بھیا تک یادیں ہیں۔ اور رو نکٹے کھڑی کرنے والی میری ماں ایک سہی ہوئی گائے تھی۔نہیں، وہ ایک معصوم میںنا تھی اور بھین سے باپ تھوڑا تھوڑا کر کے اس میکنے کو ذیح کرتا رہا تھا۔''

''تسمیں یاد ہے؟ اس وقت یا ان دنوں تم کرتی تھی تو، روتی تھی تومیں یاد ہے؟ اس وقت یا ان دنوں تم کرتی تھی تومیں یاد ہوتا تھی، میںمیں پر بیثان کردینے والے ڈر سے بہم جاتی تھی تومیں، تسمیں یاد ہوتا جا ہے، بری تھی اور میں اٹھیں دنوں تسمیں چاہئے بھی تھی ۔...سینیں، تسمیں یاد ہوتا جا ہے، جب یکا کی تھی تو یا میری کود میں اپنا سر جب یکا کی تھی تو یا میری کود میں اپنا سر

इम्पोर्ट होकर आया है.....

तो कातियाइन बहनों ने आंखें बंद कर लीं। मुमिकन है आप के लिए यह सारा मंजर बे लुत्फ़, उकता देने वाला और वाहियात¹¹ हो..... मगर शायद कातियाइन बहनों को यक़ीन की डोर से बांधने के लिए यह खेल काफ़ी मानी रखता था। और जैसा कि हमें भी यक़ीन था आंखें बंद करने, एक दूसरे पर गिरने के अमल में छोटी सर के बल गिरी थी, शायद यह एक उम्र पार करने की हद के सबब था। या जो भी हो, मगर तै था कि बड़ी उसे थाम नहीं पाई और छोटी कातियाइन के होंठों से लड़खड़ाते, गिरते हुए एक जोर की चीख़ निकल गई थी.....

"आह! जैसा कि मुझे यक्तीन था।" बड़ी कातियाइन का लहजा बर्फ़ सा सर्द था। "वह आदमी …… तुम ने सच मुच अपना ट्रस्ट खो दिया है। चलो …… बहुत दिनों के बाद ही सही जरा माजी⁽²⁾ की राख कुरेदते हैं।" बड़ी कातियाइन ने छोटी के कंधे पर हाथ रखा ……

''तुम्हें कुछ याद आ रहा है ?''

''हां।''

—''तुम्हें रखना चाहिये।'' बड़ी की आवाज में लर्जिश⁽³⁾ थी। ''उस आदमी की याद जो मर्द था या बाप था..... या जंगली सांड। यही कमरा था ना..... और वहां दरवाजे पर..... छोटी कातियाइन को याद था। बाप दरवाजे पर शराब पीकर शाम के वक्षत आकर, मां का नाम लेकर जोर जोर से चिल्लाता था.....

---''सब याद है''

- "—बाप क्यों याद है इस लिये कि उसमें बेरहमी थी। वह एक ख़ौफ़नाक इंसान था। बल्कि हैवान----- तुम्हें याद है, मां रोया करती थी। कभी कभी ख़ूब जोरों से ------ सारी सारी रात चिल्लाया करती थी------ और बाप नशे में धुत सोया करता था-----'
- "—हां, मगर वह सब भयानक यादें हैं। और रॉगटे खड़ी करने वाली…… मेरी मां एक सहमी हुई गाय थी। नहीं वह एक मासूम मेमना थी …… और

^{1.} बेकार 2. अतीत 3.कपकाहट

رکھ دیتی تھی تو یہاں ٹاگوں کے درمیان سےکی ایک مرکز سے دریا پھوٹ پڑے تو کیما لگنا ہوگا، اندر سنتا ہٹ کا ایک طوفان سا آجا تا تھا۔ شاید ایسا اس لیے بھی تھا کہ دنیا میں اور بھی لوگ ہو سکتے ہیں، ہمیں پیتا نہیں تھا۔ ہم صرف ایک دوسرے کو جانتے تھے یا پھر ماں کو۔ جے اس زمانے میں معصوم میسنا کہہ کر ہم اداس ہوجایا مکر تے تھے یا پھر اپ کو، جس کی پرچھا کیں تک سے ہمیں ڈرلگنا تھا۔ ہم کی مرد کو صحیح طور سے پہچان نہیں پاتے تھے، جیسے عورت ہونے کے نام پر ہمارے سامنے صرف مظلوم ماں کا تصور رو گیا تھا۔

ہاں یہ سی ہے۔ چھوٹی کا تیائن کی آواز بوجمل تھی۔

.......... "تو شمس یاد مونا جا ہے۔" بری کا تیائن نے اپنی بات جاری رکھی وہ دن شاید وہ ون ہماری زندگی کے چند خوبصورت دنوں میں ایک تھا......گلی میں ایک سائڈ یاگل ہوگیا تھا..... یاد ہے، وہ اپنی بڑی بڑی سینگیس اٹھائے، مجمی ادھر مجمی ادهر دوڑ رہاتھا۔ کچھ دیر تک ہم بھی اس تماشے کا حصہ بنے رہے۔ گراب باب کے آنے کا وقت ہوچلا تھا۔ باہر دوکا عدار، را مگیرسب تالیاں بجارے تھے۔ ہم کرے میں آ گئے، ہم ایک دوسرے کو برابر دیکھے جارہے تھے جیے، اب مینے کے لرزنے کی آواز آئے گ۔ ا جاک آجھوں کے سامنے باپ کی شبیہ امجری۔ اس کا چرہ سائر جیہا تھا۔ اس کی ينگيس نكلي موئي تنعيس اور وه ان سينگول سے ديوانه وار مينے كو زخي كر رہاتھا تم میری طرف د کیدر بی تغییں، اور میں ان لبروں کی ہلچل من ربی تقی جوتمعارے اس طرح و کھنے سے میرے بدن میں اٹھنے کی تھیں یاد ہے میں نے کہا تھا مجھے چھوؤ جمعے بخار لگ رہا ہےتم دھیرے سے میری طرف برحی تھیں اور تبعی بابر زور دار گرج کے ساتھ دروازے پر پچھ گرنے کی آواز آئی تھی۔ زبردست شور ہوا تھا۔تم کا بھتی ہوئی میرے بدن میں سامنی تعیں۔ اور میں۔ جیے کی ایک مرکز سے دریا چھوٹ یڑے تو'' میں صمیں لے کرکائی رہی تھی ... اندر سنناہے ہورہی تقىتېمى مىن كى بەخوف، برسكون اور تغبرى موكى آواز ساكى دى.......... "دروازه كھولو سائل نے تممارے باپ كو فخ ديا ہے شايد وہ مرحميا

बचपन से बाप थोड़ा थोड़ा करके उस मेमने को जबह करता रहा था।

"—नुम्हें याद है? उस वक़्त या उन दिनों तुम गिरतीं थी तो ……, रोती थी …… तो …… या किसी परेशान कर देने वाले डर से सहम जाती थी तो ……, यह मैं होती थी, मैं …… मैं बड़ी थी। और मैं उन्हीं दिनों तुम्हें चाहने भी लगी थी ……नहीं, तुम्हें याद होना चाहिए, जब यकायक डर कर सहम कर तुम मुझ से चिपक जाया करती थी तो ……या मेरी गोद में अपना सर रख देती थीं तो … यहां टांगों के दरिमयान से …… किसी एक मरकज से दिखा फूट पड़े तो … कैसा लगता होगा? अंदर संसनाहट का एक तुफ़ान सा आ जाता था। शायद ऐसा इस लिए भी था कि दुनियां में और भी लोग हो सकते हैं। हमें पता नहीं था। हम सिर्फ़ एक दूसरे को जानते थे या फिर मां को। जिसे उस जमाने में मासूम मेमना कह कर हम उदास हो जाया करते थे या फिर अपने बाप को, जिस की परछाई तक से हमें डर लगता था। हम किसी मर्द को सही तौर से पहचान नहीं पाते थे, जैसे औरत होने के नाम पर हमारे सामने सिर्फ़ मजलूम (1) मां का तसव्वुर (2) रह गया था।

"हां यह सच है। छोटी कातियाइन की आवाज बोझल थी।

"" वह दिन न्या चाहिए" बड़ी कातियाइन ने अपनी बात जारी रखी "" वह दिन स्मारी जिन्दगी के चंद खूबसूरत दिनों में एक था "" गली में एक सांड़ पागल हो गया था "" याद है, वह अपनी बड़ी बड़ी सींगें उठाए, कभी इधर कभी उधर दौड़ रहा था। कुछ देर तक हम भी उस तमाशे का हिस्सा बने रहे। मगर अब बाप के आने का वक़्त हो चला था। बाहर दुकानदार, राहगीर सब तालियां बजा रहे थे। हम कमरे में आगए "हम एक दूसरे को बराबर देखे जा रहे थे "" जैसे, अब मेमने के लरज़ने की आवाज आएगी। अचानक आंखों के सामने बाप की शबीह उभरी। उस का चेहरा सांड जैसा था " उस की सींगें निकली हुई थीं " और वह उन सींगों से दीवानावार मेमने को ज़ख़नी कर रहा था " जुम मेरी तरफ़ देख रही थी, और मैं उन लहरों की हलचल गिन रही थी जो तुम्हारे उस तरह देखने से मेरे बदन में उठने लगी थी " याद है " मैंने कहा था " मुझे छुओ " मुझे बुख़ार लग रहा

^{1.} पीड़ित 2. ख्याल

ہے "وروازہ کھول کر میں نے مہلی یا ر مال کو دیکھا۔ وہ حسین لگ ربی تھی
ال کے چرے پر خوف کا شائبہ تک نہیں تھا۔ باہر دروازے پر ایک جوم اکٹھا تھا
اور وہیں گل میں کھلنے والے وروازے کے پاس باپ کا ب جان جم
اوندمارا تنا شرث خون ے ترسی اس نے شراب بی رکی سی میشد کی طرح
را مگیروں کے شہد دینے پر وہ سانڈے جرامیا۔ لوگ مال کو صبر کی تلقین کر رہے
تے " کے معلوم تھا کہ ایا ہوجائے گا'' یاد ہے مال خاموثی سے سب چھنتی
ربینکا یک سب کے سامنے زور زور سے بنس دی تھیاوگول کی آنکھیں
حیرانی سے پھٹی بڑی تھیں۔ ممکن ہے سے جماعیا ہوکہ شوہر کے صدے کو ندسمہ پانے کی وجہ
ےسکین مال کی کیفیت تو صرف ہمیں معلوم تھی
" إلى الله الله على الله الله الله الله الله الله الله ال
تھی '' اور مرتے وقت بھی اس کے ہونؤں پر یہنمی موجود تھی۔ کویا مال نے جمعی
تصور بھی نہ کیا ہوگا، کہ باپ جیاآدی ایک دن مرسکا ہے۔ بڑی کاتیائن کے لیج میں
سنجيدگي تھي مرآخر ميسب جي شميس كيون يا دولا ربي جون؟ توسنوريتا كايتائن! "بوي
كايتائن ك الفاظ برف بورب تع "سنو اورغور سسنو الل لي عورت
انے آپ میں کمل ہوتی ہے۔ ایک کمل ساج۔ مردمجی کمل نہیں ہوتا۔ جومرد ایسا بھتے ہیں
وہ غلط فہم کا شکار ہیںمرد کوعورت کی ضرورت پڑسکتی ہے لیکن عورت کو مرد کی نہیں
اس لیے، ابھی سے کھرروز پہلے جوآ دی تمماری زندگی میں آیا ہے
چھوٹی کا بتائن نے بات نے میں علی کاٹ دی "آپ کی فلوقنی ہے" اس
نے دوسرے بی بل نظر جھالی۔ " میری زعدگی میں کوئی مردنہیں آیا ہے۔ میں نے کہانا
وه محض ایک حادثه
" ممک ہےکینتم نے حادثوں کے دروازے کھول دیئے ہیں۔ یاد رکھنا۔
وه آدىكيا نام بتاياتم نےها ل جو پنيدر پريهار وه دوباره بھى آسكا ہے
اوراس کے لیے تمارا جواب کیا ہوگا۔ کیا بتانا پڑے گا جھے''۔
'' نہیں'' جیوٹی کا بتائن مشکرائی۔''عورت اپنے آپ میں کمل ہے ایک کمل ہارج''

है......तुम धीरे से मेरी तरफ़ बढ़ी थी और तभी बाहर जोरदार गरज के साथ दरवाजे पर कुछ गिरने की आवाज आई थी। जबरदस्त शोर हुआ था। तुम कांपती हुई मेरे बदन में समा गई थी। और मैं। ''जैसे किसी एक मरकज से दिरया फूट पड़े तो...... मैं तुम्हें लेकर कांप रही थी...... अंदर सनसनाहट हो रही थी...... तभी मेमने की बेख़ौफ़, पुरसुकून और ठहरी हुई आवाज सुनाई दी......''

''दरवाजा खोलो सांड ने तुम्हारे बाप को पटख़ दिया है..... शायद वह मर गया है......''

दरवाजा खोल कर मैंने पहली बार मां को देखा। वह हसीन लग रही थी.....मां के चेहरे पर ख़ौफ़ का शाएबा⁽¹⁾ तक नहीं था। बाहर दरवाजे पर एक हुजूम⁽²⁾ इकटठा था...... और वहीं.....गली में खुलने वाले दरवाजे के पास बाप का बेजान जिस्म आँधा पड़ा था..... शर्ट ख़ून से तर थी। उस ने शराब पी रखी थी हमेशा की तरह.....राहगीरों के शह देने पर वह सांड से भिड़ गया। लोग मां को सब्र की तलक़ीन कर रहे थे.....' किसे मालूम था कि ऐसा हो जाएगा''..... याद है। मां ख़ामोशी से सब कुछ सुनती रही......पर यकायक सब के सामने जोर जोर से हंस दी थी......लोगो की आंखें हैरानी से फटी पड़ी थीं। मुमिकन है यह समझा गया हो कि शौहर के सदमे को न सहपाने की वजह से......लेकिन मां की कैफ़ियत तो सिर्फ़ हमें मालूम थी.....''

"हां...... उस के बाद मां जब तक जिन्दा रही..... वह बैठी बैठी हंस पड़ती थी..... और मरते वक़्त भी उस के होंठों पर यह हंसी मौजूद थी, गोया मां ने कभी तसव्वुर भी नहीं किया होगा, कि बाप जैसा आदमी एक दिन मर सकता है। बड़ी कातियाइन के लहजे में संजीदगी थी......मगर आख़िर यह सब मैं तुम्हें क्यों याद दिला रही हूं? क्यों? तो सुनो रीता कातियाइन!" बड़ी कातियाइन के अलफ़्ज़ज़ बर्फ़ हो रहे थे..... "सुनों और ग़ौर से सुनों! इस लिए कि औरत अपने आप में मुकम्मल होती है। एक मुकम्मल समाज। मर्द कभी मुकम्मल नहीं होता। जो मर्द ऐसा समझते हैं वह ग़लत फ़हमी का शिकार हैं.....मर्द को औरत की ज़रूरत पड़ सकती है लेकिन औरत को मर्द की नहीं......इस लिए, अभी से कुछ रोज़ पहले जो आदमी तुम्हारे जिन्दगी में आया है.....

^{1.} शक 2. भीड़

" اور اب میں بید وکھا نا جائتی ہوں کہ اس کمل ساج کے پاس کیسی کیسی فیٹا ی موجود ہے موجود ہے اپنی کھلی کھلی نائل نائل لو۔ موجود ہے بڑی کا بتائن کی سلیولیس (Sleevless) تم اس عمر میں بھی آ ہ۔ اس عمر میں بھی'' بڑی کا بتائن کی آئی۔'' کھیں جل رہی تھیں۔'' ساتم نے میں بس ابھی آئی۔''

كايتائن بہنوں كى فينتاس

رات دھیرے دھیرے خاموثی کے ساتھ اپنا سفر طے کر رہی تھی۔ مگر یہاں چار اینا کی ڈالی والی دوکان کے سامنے والے گھر میں رات ایک نے ایم و نجر ہے آئکھیں چار کر رہی تھی شاید! بہت ممکن ہے ہمارے ہندوستانی معاشرے میں سوچا جائے ، اس عمر میں تو آگ بہت پہلے کی کمی منزل میں بچھ چکی ہوتی ہےادر کیسی آگ ؟ کیسی راکھ ؟ مستی کے ساتویں آسان پر پہنچانے والے نئے نشلے براؤن شوگر اور ہیروئن بھی وہ بیجان نہ پیداکر یا کیں جواس خند اور سیلن زوہ کمرے میں پیدا ہو رہاتھا

چھوٹی کاتیا ئن لیٹ من اند جرے میں جلتی ٹیوب لائٹ میں اس کا جم

छोटी कातियाइन ने बात बीच में ही काट दी..... ''आप की ग़लत फ़हमी है'' उस ने दूसरे ही पल नज़र झुकाली।''मेरी ज़िन्दगी में कोई मर्द नहीं आया है। मैंने कहा ना..... वह महज़ एक हादसा.....''

''ठीक है.....लेकिन तुम ने हादसों के दरवाजे खोल दिए हैं। याद रखना। वह आदमी.....क्या नाम बताया तुमने.....हां भूपेन्द्र परिहार वह दोबारा भी आ सकता है.....और इस लिए तुम्हारा जवाब क्या होगा। क्या बताना पड़ेगा मुझे,।''

"नहीं" छोटी कातियाइन मुसकुराई। "औरत अपने आप में मुकम्मल है। एक मुकम्मल समाज।"

''और अब मैं यह दिखाना चाहती हूं कि उस मुकम्मल समाज के पास कैसी कैसी फैनतासी मौजूद है..... उहरो, हां। हो सके तो वॉर्ड रोब से अपनी खुली खुली नाइटी निकाल लो, सिलीव लेस (SLEEVELESS) तुम इस उम्र में भी आह। इस उम्र में भी''.....बड़ी कातियाइन की आंखें जल रही थीं।''सुना तुम ने मैं बस अभी आई।''

कातियाइन बहनों की फैनतासी।

रात धीरे धीरे ख़ामोशी के साथ अपना सफ़र तै कर रही थी। मगर यहां......''इना की डाली'' वाली दुकान के सामने वाले घर में रात एक नए 'एडवेनचर से आंखें चार कर रही थी.....शायद! बहुत मुमिकन है हमारे हिन्दुस्तानी मुआशरे⁽¹⁾ में सोचा जाए, इस उम्र में तो आग बहुत पहले की किसी मंजिल में बुझ चुकी होती है.....और कैसी आग? कैसी राख? मस्ती के सातवें आसमान पर पहुंचाने वाले नये नशीले ब्राउन शूगर और हिरोइन भी वह हैजान पैदा न कर पाई जो उस ख़स्ता और सीलन जदा कमरे में पैदा हो रहा था.....''इस वक़्त मैं तमात काएनात की स्वामी हूं.....समझा तुम ने। ''बड़ी कातियाइन के हाथों से गर्म गर्म भाप उठ रही थी, जैसे जाड़े के दिनों में सुबह सुबह मुंह खोलने से उठती है......उस के हाथ में एक स्टील की कटोरी थी.....कटोरी में पिघला हुआ असली घी पड़ा था, छोटी का चेहरा क़द्दे आदम आइने की जानिब था..... उस ने सिलीव लेस सियाह नाइटी पहन रखी

थी.....शायद नहीं। नाइटी ने अचानक उस की उम्र पहन ली थी.....उस छोटे से

१. समाज

بری کا تیائن اینے غیرمفتوح ہونے کے خیال سے زور سے ہنمی

" اسے ہتادیتاکیا تا م بتایا تم نے۔ بھو پیندر پریہار اسے ہتادینا،عورت اپنے آپ میں مکمل ہوتی ہے ... ہتادینا،عورت اپنے آپ میں مکمل ہوتی ہےاسے مردکی ضرورت نہیں، پھروہ اس پر جھک گئی۔ رات خاموثی سے اپنا سفر طے کر رہی تھی۔

بھو پیندر پریہار اور عشق کی ڈگر

اتی عمر گزر جانے کے بعد بھی بھو پیندر پر یہار زندگی کے اس فلفے پر قائم سے کہ ایک عمر گزر جانے کے بعد بھی ایک عمر بگل رہ جاتی ہے۔۔۔۔۔۔اور جوعمر باتی نج جاتی ہے اسے اس طرح گزر جانے اور سمن کے کناڈا عمر گزر نے یا جینے کاحق حاصل ہونا چاہیے۔ سنز پر یہار کے گزر جانے اور سمن کے کناڈا بھاگ جانے کے بعد اچا تک ان پر بڑھا پا طاری ہونے لگا تھا۔۔۔۔ حالانکہ انھوں نے بھی سوچا بھی نہیں تھا کے جسم بوڑھا بھی ہوسکتا ہے۔۔۔۔ وہ تو بقول رسول حمزہ تو ف۔ جسم تو بس عثق کے لیے ہے اور عشق کو زندہ رکھنا ہی انسان کا اولین فرض ہے۔۔۔۔ شاید بڑھا ہے کی شروعات انھیں کافی آگے لئے گئی ہوتی 'وہ تو اچھا ہوا جوا چا تک چھوٹی کا تیائن الی سے بیشروعات انھیں کافی آگے لئے گئی ہوتی 'وہ تو اچھا ہوا جوا چا تک چھوٹی کا تیائن الی سے آگرا کیں۔۔۔۔ بڑھا ہے کی شہائی میں چرے اور با

कपड़े में वह एक दम से छुई मुई लग रही थी। बुढ़ापे और झुर्रियों से मीलों पीछे। जहां सिर्फ़ हंसता गाता ढोल बजाता हुस्न होता है। हुस्न का साज छेड़ने वाले जज्बात होते है......और जज्बात के पीछे छुपी मजरूह⁽¹⁾ हवसनाकी होती है..... ''हां अब ठीक है। लेट जाओ और कपड़े उतार दो......'' बड़ी कातियाइन की आवाज से ऐसा लग रहा था जैसे उस ने ढेर सारी ''मारिज्वाना'' पीली हो.....और वह पूरी तरह नशे में आ गई हो......

छोटी कातियाइन लेट गई..... अंधेरे में जलती ट्यूब लाइट में उस का जिस्म चमका.....बड़ी ने स्टील की कटोरी थाम लीं उस का सख़्त झुर्रियों भरा हाथ घी के अंदर गया..... जैसे कभी मैदे की छोटी छोटी 'लोइयां बनती हैं और उन्हें ढेर सारे घी में डुबोया जाता है.....गोरे चिट्टे बदन पर बड़ी कातियाइन घी इस तरह मलने लगी गोया छोटी का बदन अचानक मैदे की लोइयों में तबदील हो गया हो......छुप......

''आह, तुम अब भी वैसी हो'' बड़ी के हाथ में हरकत हुई, ''बिलकुल वैसी सुनो रीता कातियाइन देखो खुद को देखो, ग़ौर से। आह अपनी उम्र को देखो। नहीं, उम्र को मत देखो। मगर सुनो। ग़ौर से सुनो। मर्द इस तंदूर को कब का ठंडा कर चुका होता है, एक लाश घर की तरह। मगर यहां तुम अपने आप को देखो। तुम लाश घर नहीं हो, बर्फ घर भी नहीं हो, तुम तंदूर हो।''

बड़ी कातियाइन अपने ग़ैर मफ़्तूह होने के ख़्याल से ज़ोर से हंसी

''उसे बता देना·····क्या नाम बताया तुम ने भूपेन्द्र परिहार·····उसे बता देना, औरत अपने आप में मुकम्मल होती है·····उसे मर्द की जरूरत नहीं·····''

फिर वह उस पर झुक गई। रात ख़ामोशी से अपना सफ़र तै कर रही थी, भूपेन्द्र परिहार और इश्क़ की डगर

इतनी उम्र गुजर जाने के बाद भी भूपेन्द्र परिहार जिन्दगी के उसी फ़लसफ़ें पर क़ायम थे कि एक उम्र गुजर जाने के बाद भी एक उम्र बची रह जाती है.....और जो उम्र बाक़ी बच जाती है उसे उसी तरह गुजारने या जीने का हक़ हासिल होना चाहिए। मिसेज परिहार के गुजर जाने और सुमन के कनाडा भाग

^{1.} जख्मी

بالوں کو سنوارتے ہوے وہ جیسے برسوں پرانے چہرے والے بھو پیندر پریہار کو واپس لانے کی کوشش کر رہے تھےکتنی ہی بار قدم'' اینا کی ڈالی'' والی دوکان کے سامنے والے گھر کی طرف اٹھے۔ ہر بار دروازہ کھلتا تھا اور بند ہو جاتا تھا۔

"کاتیائن بہنوں کی دنیا" بھو پنیدر پر یہار کولگا اپا ہر کی دنیا میں ان کے بارے میں جتنی کہانیاں ہیں بی ہیں جتنی کہانیاں ہیں بیاں تو کسی براوں کی کہانی سے بھی جی نیادہ الجما ہوا معاملہ تھا اور شاید ای لیے اس دن انھیں کامیابی مل گئی ہیں۔
اس دن انھیں کامیابی مل گئی تھی۔

دوایک دستک کے بعد دروازہ کھلاتو سامنے چپوٹی کا تیائن کھڑی تھیں۔

" کیا بات ہے؟ برى كاتيائن سورى میں ۔ جو بولنا ب جلدى بولو-"

"اندرآ جادَل؟"

چھوٹی کا تیائن نے کچھ سوچنے کے بعد کہا۔'' آسکتے ہو۔ دیسے بھی بڑی کو اٹھنے میں دو ایک مجھنے تو لکیں گے ہی۔''

وہ اندرآ گئے۔ چندن کی کٹڑی کے بنے محراب نما دردازے سے گزرتے ہوئے۔
یہ وہی جگمتی جہاں آپ ہرموم میں بڑی کا تیائن کو دکھے سکتے ہیں ہاتھ میں تیلیاں
تھاے سر جھکائے سوئٹر بنتی ہوئی وہ ایک آ رام کری پر بیٹھ گیا۔ یہ سب پھھ ایسا تھا جیسا
کالج کے دنوں میں لڑکے لڑکیوں کے ساتھ ہوتا ہے۔ یا بیار کی پہلی بارش کی پہلی بوند
پڑتے ہی یہ سب ان کی اداؤں میں شامل ہو جاتے ہیں

جموئی کا تیائن کچے دریتک اسے محورتی رہی۔

مجو پیندر پریهار نے نظری جمالیں ذرا دیر بعد کا تیائن کے لب ہے "مماری بیوی "

«نہیں ہے گزر می۔"

«· أوو......

'' نہیں، اس میں افسوں کرنے جیسی کوئی بات نہیں۔ وہ اپنی عمر سے زیادہ جی چکی تھی''

जाने के बाद अचानक उन पर बुढ़ापा तारी होने लगा था.....हालांकि उन्होंने कभी सोचा भी नहीं था कि जिस्म बूढ़ा भी हो सकता है.....वह तो बक्रौल रसूल हमजा तोफ़ जिस्म तो बस इश्क़ के लिए है और इश्क़ को जिन्दा रखना ही इंसान का अव्वलीन 'फर्ज है.....शायद बुढ़ापे की यह शुरूआत उन्हें काफ़ी आगे ले गई होती, वह तो अच्छा हुआ जो अचानक छोटी कातियाइन उन से आ टकराई मुद्दतों बाद अंदर कहीं कोई चिंगारी सी लपकी थी......बुढ़ापे की तन्हाई में चेहरे और बालों को संवारते हुए वह जैसे बरसों पुराने चेहरे वाले भूपेन्द्र परिहार को वापस लाने की कोशिश कर रहे थे......िकतनी ही बार क़दम ''इना की डाली'' वाली दुकान के सामने वाले घर की तरफ़ उठे। हर बार दरवाज़ा खुलता था और बन्द हो जाता था।

''कातियाइन बहनों की दुनिया……'' भूपेन्द्र परिहार को लगता, बाहर की दुनिया में उन के बारे में जितनी कहानियां हैं……शायद वह सब की सब सच हैं…… यहां तो किसी परियों की कहानियों से भी ज्यादा उलझा हुआ मामला था, लेकिन उन्होंने हार न मानने का फ़ैसला किया था और शायद इसी लिए उस दिन उन्हों कामयाबी मिल गई थी।

दो एक दस्तक के बाद दरवाजा खुला तो सामने छोटी कातियाइन खड़ी थी। "क्या बात है? बड़ी कातियाइन सो रही हैं, जो बोलना है जल्दी बोलो" "अंदर आ जाऊं?"

छोटी कातियाइन ने कुछ सोचने के बाद कहा। ''आ सकते हो। वैसे भी बड़ी को उठने में दो एक घंटे तो लगेंगे ही।''

वह अंदर आ गए। चंदन की लकड़ी के बने मेहराब नुमा दरवाज़े से गुजरते हुए। यह वही जगह थी जहां आप हर मौसम में बड़ी कातियाइन को देख सकते हैं...... हाथ में तीलियां थामें, सर झुकाए स्वेटर बुनती हुई..... वह एक आराम कुर्सी पर बैठ गया, यह सब कुछ ऐसा था जैसा कालेज के दिनों में लड़के लड़िकयों के साथ होता है। या प्यार की पहली बारिश की पहली बूंद पड़ते ही यह सब उन की अदाओं में शामिल हो जाते हैं.....

छोटी कातियाइन कुछ देर तक उसे घूरती रही।

^{1.} पहला

"عمرے زیادہ؟" چھوٹی کا تیائن نے حیرانی ظاہری۔

"بال، مرنے سے دس برس پہلے تک جھے احساس بی نہیں تھا کہ وہ ہے یعنی گھر میں ہے۔"

"ايدا كيون تفا؟" جمونى كاتيائن كى مرنى جيسى آكمون من چك جاكى-

"پة نيس، پر جمه من جيسے ايک نے اور جوان بھو پيندر پر يہار كى واپسى ہورى تقى استة سين أپ سجه على جيسے اس عرفيں سين الحجم من جمعے د كيد كرسين وہ كہتے كہتے لئے اللہ كار اللہ كا

چھوٹی کا تیائن کھلکھلا کر بنس پڑیں۔'وبی غلط فہی کی روایتمرد سجھتا ہے وہ ساتھ ہال کے بعد پھر سے بچہ بن گیا ہے ۔... اور عورت تو اپنی عمر سے زیادہ بوڑھی ہوگی ہے ہے ۔.. ہے نا، ایبا بی کچھے'وہ پھر زور سے بنی۔

"پية نبيں ـ" بعو پيندر پريہار كے كھو تھلے لفظوں ميں الچل ہوئى ـ" مگر ميرا خيال ہے

''مرد۔ مرد کے نام پر اتن رعونت بھر جاتی ہے مرد میں۔ بار بار اس لفظ کو د ہراتے ہوئے ، اپنی کسی کمزوری پر پردہ تو نہیں ڈالتے'' چھوٹی کا تیائن نے الفاظ جیسے زہر میں ڈبور کھے تھے۔'' خیر! جو بھی کچھے کہنا ہو جلدی کہو۔ بڑی کا تیائن تممارے اس طرح آنے کو پندنہیں کرتیں۔''

''کوں؟''مجو پیندر پر بہار اجا تک تفہر سے گئے۔ان کی آتکھیں جبک رہی تھیں۔۔۔۔''تھیں۔۔۔۔''تھیں۔۔۔۔''تھیں۔۔۔۔''تھیں۔۔۔۔'

"نبيس ماري زندگيال ايك بين-"

مجو پنیدر پریهار زورے لؤ کھڑائے "کیا؟"

" ہال، ہم لسین (Lesbain) ہیںلسین ۔ "وہ بڑی اطمینان سے ناخن چیاتے ہوئے بولی۔

'دلسین '' مجو پیندر پر بہار انجیل پڑے جیے کھونے ڈک مار دیا ہو۔ '' ہاں، میں نسین ہول کین تم تو ایسے ڈر رہے ہو جیے میں کوڑھی ہوں، یا مجھے

भूपेन्द्र परिहार ने नज़रें झुकालीं।

ज्ञरा देर बाद छोटी कातियाइन के लब हिले.....''तुम्हारी......तुम्हारी बीवी।''

- ''नहीं है, गुज़र गई''
- ''ओह·····'
- ''नहीं, उस में अफ़सोस करने जैसी कोई बात नहीं है। वह अपनी उम्र से ज्यादा जी चुकी थी......''
 - ''उम्र से ज्यादा…… ?'' छोटी कातियाइन ने हैरानी जाहिर की।
- ''हां, मरने से दस बरस पहले तक मुझे एहसास ही नहीं था कि वह है.....यानी घर में है।''
- ''ऐसा क्यों था?'' छोटी कातियाइन की हिरनी जैसी आंखों में चमक जागी।
- ''पता नहीं, पर मुझ में जैसे एक नये और जवान भूपेन्द्र परिहार की वापसी हो रही थी……तुम……यानी आप समझ सकती हैं……इस उम्र में……यानी मुझे देख कर……'' वह कहते कहते लड़खड़ाए थे,

छोटी कातियाइन खिलखिला कर हंस पड़ी। ''वही.....ग़लत फ़हमी की रिवायत.....मर्द समझता है वह साठ के बाद फिर बच्चा बन गया है.....और औरत तो अपनी उम्र से ज़्यादा बूढ़ी हो गई है..... है ना, ऐसा ही कुछ वह फिर ज़ोर से हंसी।

- ''पता नहीं'' भूपेन्द्र परिहार के खोखले लफ़्ज़ों में हलचल हुई'' मगर मेरा ख्याल हैं.....मर्द.....यानी......''
- "मर्द। मर्द के नाम पर इतनी रऊनत⁽¹⁾ क्यों भर जाती है मंद में। बार बार इस लफ़्ज़ को दोहराते हुए, अपनी किसी कमजोरी पर पर्दा तो नहीं डालते....." "छोटी कातियाइन ने अलफ़्ज़ज़ जैसे जहर में डूबो रखे थे।" ख़ैर! जो भी कहना है जल्दी कहो। बड़ी कातियाइन तुम्हारे इस तरह आने को पसंद नहीं करती।"
- "क्यों ?'' भूपेन्द्र परिहार अचानक ठहर से गए, उन की आंखें चमक रही थीं……''तुम्हारी अपनी जिन्दगी है, उन की अपनी……''

¹ रौब दाब

ایڈس ہو کماہے۔"

"لكن تم سس"ان كي آنكيس اب مجي محيثي محيثي تعيس-

"کوں آتے ہو میرے پاس، اچھی طرح جانتی ہوں۔"چھوٹی کا تیائن کے لیج بیل شدید نفرت تھی۔ "مجھوٹی کا تیائن کے لیج بیل شدید نفرت تھی۔ "مجھیل ہیں ۔ "ہمبارے اس پورے مردانہ ساج کو۔ جران مت ہو۔ بس وہی غلاقبی پر بنی روایتیں۔ مر د ہونے کی خوش خیالی۔ یہ احساس ہی تسمیس اچا تک ایک بے وقوف راکشش بنا دیتا ہے۔ تم سجھتے ہو سبتھاری طاقت کے ماتحت ہیں۔ تو یعتماری تا مجھی ہے ۔ ۔ ۔ سنو بھو پینیدر پر یہار۔ ۔ تم معاری ہوی نہیں ہے، یہ بات ذہن کی گانٹ کھول کر نکال کیوں نہیں دیتے کہ تھاری ہوی، دس برس پہلے ہی کھوئی نہیں تھی بیلہ مر پھی تھی اور تم نے مارا تھا اے۔ ۔۔۔۔ "

"من نے؟" بوپندر پر بہارایک دم سے چو کھے۔

"بال تم نےبال، اس لیے کہ دس برس پہلے بی اس کے اندر کے لاوے کو بجھا چکے تھے تم اور اس لیے وہ تھارے لیے نہیں تھی یا مرگئ تھی اور اس بڑھا پ شک تھی تھی تھی تھی تھی تھی تھی است اور اس بڑھا پ شک تھی است کے دہ مو آبا ہوا جسم ہے سنو پر بہار تم نے اپنی تہذیب اور روایت کے دہ موتی چنے ہیں جہال صرف" ایک بو ی بس، یا لوگ کیا کہیں گے" بندشیں ہوتی ہیں۔ تم لاکھ ماڈرن بنے کی کوشش کرو گرتم ہو دہی ایک بردل مرد اگر اتی بی آتم مارے اندر ہے تو تم اپنا جسم کی فرد سے کیون نہیں یا نشخ جہال تسمیس بند کر سے میں داخل ہونے کے لیے بہت سے سوالوں کا جواب نہیں دینا ہوگا

«ليكن خود كو، مجو پيندر پريهار كاجم تفر تمرايا-

" بھول کر رہے ہوتم۔ خود کو ابھی دیکھا کہاں ہے۔ اسے تو تم نے Gay یا Homosexuality اور کی دوسرے فلا ناموں میں بائدھ رکھا ہے میں کہتی ہوں میں اسین ہوں، تب بھی تمھارا ساج اچا تک ہم پر بے رحم ہوجاتا ہے۔ اسین لینی کی ناجائز نظریہ کی اولاد۔ لیکن ایسانیس ہے۔ ہم نے آپس میں سکھ، امن، شان و شوکت اور سرشاری کی انتہا ڈھویڈ لی ہے۔ ابتم چا ہوتو جا سکتے ہو۔...."

آخری جملہ اس طرح مخبر همر کر بولا حمیا تھا کہ بھو پیندر پر بہار کی آجھوں کے آ مے

''नहीं, हमारी जिन्दगियां एक हैं''

भूपेन्द्र परिहार जोर से लड़ खड़ाए "क्या"

''हां, हम लेजबीयन (LESBIAN) हैं.....लेजबीयन'' वह बड़े इत्मीनान से नाखून चबाते हुए बोली।

"लेजबीयन" भूपेन्द्र परिहार उछल पड़े जैसे बिच्छ ने डंक मार दिया हो।

''हां, मैं लेजबीयन हूं.....लेकिन तुम तो ऐसे डर रहे हो जैसे मैं कोढ़ी हूं, या मुझे एड्स हो गया है''

''लेकिन तुम·····'' उन की आंखें अब भी फटी फटी थीं।

"क्यों आते हो मेरे पास, अच्छी तरह जानती हूं। "छोटी कातियाइन के लहजे में शदीद नफ़रत थी......" अपने बाय को भी जानती थी। तुम्हें भी......तुम्होरे इस पूरे मर्दाना समाज को। हैरान मत हो। बस वही ग़लत फ़हमी पर मबनी रिवायतें, मर्द होने की खुश ख़्याली, यह एहसास ही अचानक तुम्हें एक बेवक़ूफ़ राक्षस बना देता है, तुम समझते हो सब तुम्हारी ताक़त के मातेहत हैं। तो यह तुम्हारी ना समझी है.....सुनों भूपेन्द्र परिहार......तुम्हारी बीवी नहीं है, यह बात ज़ेहन की गांठ खोल कर निकाल क्यों नहीं देते कि तुम्हारी बीवी, दस बरस पहले ही खोई नहीं थी बल्कि मर चुकी थी और तुम ने मारा था उसे......"

''मैंने ?'' भूपेन्द्र परिहार एक दम से चौंके।

"हां तुम ने। हां, इस लिए के दस बरस पहले ही उस के अंदर के लावे को बुझा चुके थे तुम..... और इसी लिए वह तुम्हारे लिए नहीं थी..... या मर गई थी..... और इस बुढ़ापे में भी तुम्हारे अंदर एक गर्म, दहकता हुआ जिस्म है.....सुनो परिहार.....तुम ने अपनी तहजीब और रिवायत के वह मोती चुने हैं, जहां सिर्फ "एक बीवी बस, या लोग क्या कहेंगे" कि बंदिशें होती हैं। तुम लाख मार्डन बनने की कोशिश करो मगर तुम हो वही....एक बुज़दिल मर्द....अगर इतनी ही आग तुमहारे अन्दर है तो तुम अपना जिस्म किसी मर्द से क्यों नहीं बांटते.....जहां तुम्हें बंद कमरे में दाख़िल होने के लिए बहुत से सवालों का जवाब नहीं देना होगा....."

''लेकिन खुद को......'' भूपेन्द्र परिहार का जिस्म थर थराया।

^{1.} आधारित

اندھرا چھا گیا۔ اندھرا دھرے دھرے دھیرے حیث رہا تھاجبوق کا تیائن کے لفظ چخ رہے تھے اور اس چھٹے ہوئے اندھرے میں وہ کئی پر چھا نیوں کو سٹتے ہوئے دکھے رہے تھے ماں، بابو تی، بیوی، بمن پر چھا نیاں ایک دم سے ہٹ گئی تھیں کے الیسین اور کتنے بی غیر فطری رشتے اب ایک سہاسا اجالا تھا اور اس اجالے میں وہ صاف د کھے رہے تھے کہ وہ اپنی عمر سے زیادہ جی چی ہیں۔ زندگی، موت، سکھ کہنا چاہیے ایک بل کوچھوٹی کا تیائن کے الفاظ کے تیر سے گھراکر وہ کافی دورنکل آئے تھےاوراب

"سنورما کا تیائن" وہ اس کی طرف دیکھے بغیر بولے شول شول کر اپنے لفظوں کو یکجا کرتے ہوئے بولے در سنو۔ ہم میں سے کوئی بھی بھی مرسکتا ہے سبجھ رہی ہونا۔ بھی بھی مرسکتا ہے۔ کیوں کہ ہم اپنی عمر سے زیادہ بی چکے ہیں اس لی اس سنائی بین مرسکتا ہے۔ کیوں کہ ہم اپنی عمر سے زیادہ بی چکے ہیں الی نہیں لیے نہیں وہ اور کیا کیا کہ رہے تھے لیکن چھوٹی کا تیائن انھیں پہر بھی سائی نہیں وے رہا تھا۔ وہ صرف ایک عک بھو پینیدر پر بہار کا چہرہ تکے جا رہی تھیں۔ ہاں اس عمل کے دوران، ان کے اندر تیز سنسناہ ہو رہی تھی۔ جو اس سنسناہ ہے محتوی کی تھی جیسی سائد والے حادثہ کے دن بری کا تیائن کی باہوں میں سمٹ کر اس نے محتوی کی تھی پہر نہیں والے حادثہ کے دن بری کا تیائن کی باہوں میں سمٹ کر اس نے محتوی کی تھی پہر نہیں ۔

آخري مكالمه جيوثي كاتيائن كا

وہ ای نائی میں تھی۔ سلیولیس سیاہ نائی میں۔ آئینے کے سامنے لین آئینہ شانت تھا۔ آئینے میں کہیں کوئی آگ ہیں۔ آئینے کے سامنے بین رہ گئ تھی۔ شانت تھا۔ آئینے میں کہیں کوئی آگ، کوئی بھڑ کیلا پن کوئی لگاؤ، کوئی کشش نہیں رہ گئ تھی۔ دمیرے دمیا کا تیائن کے اکا تیائن کھڑی تھیں، اور آٹھیں گھورے جا رہی تھیں۔ لیکن ان کے اس طرح دیکھنے میں کوئی بزرگ، کوئی تھی، یا کوئی نظل شامل نہیں تھی۔

اچا تک چوٹی کا تیائن کے منھ سے ایک تیز چیخ نگل۔ نائی کے تمام کب انھوں نے کھول دائے تھے آئیے میں چیخی ہوئی کھول ڈائے تھے آئیے میں ایک سہا، ب ڈھنگا جسم پڑا تھا وہ بوکھلا ہٹ میں چیخی ہوئی

"भूल कर रहे हो तुम। खुद को अभी देखा कहां है। उसे तो तुम ने GAY या HOMOSEXUALITY और कई दूसरे ग़लत नामों में बांध रखा है......मैं कहती हूं मैं लेजबीयन हूं तब भी तुम्हारा समाज अचानक हम पर बेरहम हो जाता है। लेजबीयन यानी किसी नाजाइज नजरिये की औलाद। लेकिन ऐसा नहीं है। हम ने आपस में सुख, अमन, शान व शौकत और सर-शारी⁽¹⁾ की इनतेहा⁽²⁾ ढूंढली है। अब तुम चाहो तो ज़ा सकते हो......"

आख़िरी जुमला इस क़दर ठहर ठहर कर बोला गया था कि भूपेन्द्र परिहार की आंखों के आगे अंधेरा छा गया। अंधेरा धीरे धीरे छट रहा था......छोटी कातियाइन के लफ़ज़ चींख़ रहे थे और उस छटते हुए अंधेरे में वह कई परछाइयों को सिमटते हुए देख रहे थे.....मां, बाबू जी, बीवी, सुमन.....परछाइयां एक दम से हट गई थीं.....गे, लेजबीयन और कितने ही ग़ैर फ़ितरी रिश्ते.....अब एक सहमा सा उजाला था.....और इस उजाले में वह साफ़ देख रहे थे कि वह अपनी उम्र से ज्यादा जी चुके हैं। जिन्दगीमौत, सुख.....क़्ना चाहिए एक पल को छोटी कातियाइन के अलफ़्ज़ज़ के तीर से घबरा कर वह काफ़ी दूर निकल आए थे.....और अब.....भूपेन्द्र परिहार के होठों पर एक तीखी सी मुस्कुराहट थी.....

''सुनो रमा कातियाइन ''वह उस की तरफ़ देखे बग़ैर बोले ''स्नो हम में से कोई भी ट्यंल कर अपने लफ़्जों को यक्जा करते हुए बोले। ''सुनो। हम में से कोई भी कभी भी मर सकता है ' समझ रही हो ना। कभी भी मर सकता है। क्योंकि हम अपनी उम्र से ज्यादा जी चुके हैं '' इस लिए '' पता नहीं वह और क्या क्या कह रहे थे लेकिन छोटी कातियाइन '' उन्हें कुछ भी सुनाई नहीं दे रहा था। वह सिर्फ़ एक दुक भूपेन्द्र परिहार का चेहरा तके जा रही थी। हां, इस अमल के दौरान, उन के अंदर तेज सनसनाहट हो रही थी। जो उस सनसनाहट से मुख़्तिलफ़ थी जैसी सांड वाले हादसे के दिन बड़ी कातियाइन की बांहों में सिमट कर उस ने महसूस की थी '' पता नहीं यह क्या था, उसे कुछ भी समझ में नहीं आरहा था '' सा वह समझना नहीं चाह रही थी।

आख़िरी मुकालमा⁽³⁾ छोटी कातियाइन का,

वह उसी नाइटी में थी। सिलीवलेस सियाह नाइटी में। आइने के सामने.....लेकिन आईना शांत था। आइने में कहीं कोई आग, कोई भड़कीला पन

^{1.} उन्मत्त 2. अन्त 3. डायलॉग

بری کا تیائن کی طرف جمپٹیں

"آگ کہاں ہے؟ میرےجسم کی آگ کیا ہوئی؟"

بری کا تیائن ایسے چیاتھی، جیسے اس نے کچھ سنا ہی نہیں ہو۔

"سنو، میرے اندرتم نے تو کہا تھا....." چھوٹی کا تیائن کی نظریں جیسے مدتول بعد بردی کا تیائن کی نظریں جیسے مدتول بعد بردی کا تیائن کی آگھول میں سائی جا رہی تھیں یاد ہے....سنو، تم نے بی کہا تھا، آہ تم اب بھی ولی ہو بالکل ولی ریتا کا تیائنسنو، مرد اس تندور کو کب کا شندا کر چکا ہوتا ہے" ، اسدوہ پھر چینی "آگ کہال ہے، میرے اندرکی آگ کہال ہے؟"

بری کا تیائن کا چرہ ہر بل تیزی سے بدل رہا تھا۔

''تمتم سن ربی ہو۔ میں میں کیا بوچوربی ہول.....؟''

کافی در بعد بڑی کا تیائن کے بدن میں حرکت ہوئیاس نے چھوٹی کی جلتی آتھوں کی تاب نہ لاکرنظر س جھالیں۔

"آ گ تو میرے یاس بھی نہیں ہے۔"

بری کا تیائن کے الفاظ سرد ہو بھے تھے پھر وہ تھری نہیں، تیزی سے کمرے سے باہر نکل گئیں۔

آ کینے میں ابھی بھی چوٹی کا بیائن کا سما، ب و منگاجم پڑا تھا اور شاید مرد و بھی۔



कोई लगाव, किशश नहीं रह गई थी। धीरे धीरे रीता कातियाइन ने नाइटी के तमाम हुक खोल डाले। जरा फ़ासले पर बड़ी कातियाइन खड़ी थी, और उन्हें घूरे जा रही थी। लेकिन उस के इस तरह देखने में कोई बुर्जुगी, कोई हुक्म या कोई ख़फ़गी⁽¹⁾ शामिल नहीं थी। अचानक छोटी कातियाइन के मुंह से एक तेज चीख़ निकली। नाइटी के तमाम हुक उन्होंने खोल डाले थे आईने में एक सहमा, बेढंगा जिस्म मुर्दा पड़ा था। वह बौखलाहट में चींखती हुई बड़ी कातियाइन की तरफ़ झपटी.....

''आग कहां है ? मेरे जिस्म की आग क्या हुई ?''

बड़ी कातियाइन ऐसे चुप थी, जैसे उसने कुछ सुना ही नहीं हो।

"सुनो, मेरे अंदर……तुम ने तो कहा था……" छोटी कातियाइन की नजरें जैसे मुद्दतों बाद बड़ी कातियाइन की आंखों में समाई जा रही थीं……याद है……सुनों, तुम ने ही कहा था, आह तुम अब भी वैसी हो……बिलकुल वैसी रीता कातियाइन……सुनो, मर्द इस तंदूर को कब का ठंडा कर चुका होता है।……" वह फिर चीख़ी…… "आग कहां है, मेरे अंदर की आग कहां है.…..?"

बड़ी कातियाइन का चेहरा हर पल तेजी से बदल रहा था।

''तुम----तुम सुन रही हो। मैं----मैं क्या पूछ रही हूं-----?''

काफ़्री देर बाद बड़ी कातियाइन के बदन में हरकत हुई......उस ने छोटी की जलती आंखों की ताब⁽²⁾ ना लाकर नज़रें झुका लीं।

"आग तो मेरे पास भी नहीं है"

बड़ी कातियाइन के अलफ़ाज़ सर्द हो चुके थे। फिर वह उहरी नहीं, तेजी से कमरे से बाहर निकल गई।

आइने में अभी भी छोटी कातियाइन का सहमा, बेढंगा जिस्म पड़ा था-----और शायद मुर्दा भी।

 $\bullet \bullet \bullet$

^{1.} नाराजगी 2. नजर ना मिला पाना

شهر

اس شہر میں آئے انہیں صرف ایک ہفتہ ہوا تھا۔

امان کو بہت عرصے ہے اس شہر میں اپنی تبدیلی کردانے کی خواہش تھی لیکن اس میں بس ایک بی پریشانی تھی کہ رہائش کا انظام نہایت مشکل کام تھااس کے تصب کے انوارصاحب بھی ای کمپنی میں کام کرتے تھے گر وہ ہیڈ آفس سے وابسۃ تھے اور شہر میں رہائش پذیر تھے۔ رہائش بھی کمپنی کی طرف سے بلی ہوئی تھی کیونکہ وہ پچیس برس سے ای دفتر میں تھے۔ رہائش بھی کمپنی کی طرف سے بلی ہوئی تھی کیونکہ وہ پچیس برس سے ای دفتر میں تھے۔ اس کے بعد آنے والے طاز مین میں سے بہت کم کو فلیت میسر آیا۔ غیر شادی شدہ لوگ تو ایک کمرے والی سکونت میں دو، یا تمین تمین کے حساب سے ہوئیل کی طرح کمرہ بانٹ لیتے تھے گرفیلی والے ارکان کے لیے یہ مسئلہ سب سے جیجیدہ تھا۔ امان اسے قصبے میں کمپنی کا برائج فیجر تھا۔ انوار صاحب ہر تین ماہ کے بعد اپنی کمپنی

शहर

प्लास्टिक की मेज पर चढ़कर सोनू ने नेमत ख़ाने की अलमारी का छोटा सा किवाड़ वाकिया तो अन्दर किस्म किस्म के बिस्कुट, नमक पारे, शकर पारे, और जाने क्या-क्या नेमतें रखी थीं। पल भर को वह नन्हें से दिल पर कचौके लगाता हुआ ग़म भूल कर मुस्कुरा दिया, और नाइट सूट की लम्बी आस्तीन से सूखे हुये आंसू भरे रुख़सार पर एक ताज़ा बहा हुआ आंसू को पोंछ कर उसने बिस्कुट का डिब्बा हाथ में ले लिया और अपने पांच साला वजूद का बोझ संभालता हुआ मेज से नीचे उतर आया। उसे भूख भी बहुत लगी थी। आज सुबह से उसने कुछ नहीं खाया था। उसकी छोटी अढ़ाई बरस की बहन सूबिया भी सुबह से भूखी थी। सारा दिन वह मसहरी पर लेटी अपनी अम्मी को पुकार -पुकार कर थक गयी थी। और बहुत ज्यादा रोते रहने के बाद निढाल सी होकर उसने अपना घुंघराले बालों वाला नन्हा सा सर अपनी अम्मी के फ़ैले हुये बाजू पर रख छोड़ा था। दिन भर शायद वह रोती रही थी, और कुछ देर पहले ही उठकर ड्राइंग रूम में आयी थी। इस शहर में आये हए उन्हें सिर्फ़ एक हफ़्ता हआ था।

अमान को बहुत अरसे से इस शहर में अपनी तब्दीली करवाने की ख़्वाहिश थी। लेकिन उस में बस एक ही परेशानी थी कि रेहाइश का इन्तेज़ाम निहायत मुश्किल काम था। उसके कस्बे के अनवार साहब भी उसी कम्पनी में काम करते थे, मगर वह हेड ऑफ़िस से वाबिस्ता थे। और शहर में रेहाइश-पजीर⁽¹⁾ थे। रेहाइश भी कम्पनी की तरफ़ से मिली हुई थी क्योंकि वह पच्चीस बरस से उसी दफ़्तर में थे। उसके बाद आने वाले मुलाज़मीन में से बहुत कम को फ़्लैट मयस्सर⁽²⁾ आया। ग़ैर शादी शुदा लोग तो एक कमरे वाली सुकृनत⁽³⁾ में दो या

^{1.} निवास करते थे 2. मिलना 3. निवास

کا کوئی کام نکال کراہے آبائی گر آتے۔ بزرگ والدین سے ملاقات بھی ہوجاتی اور کمپنی کا کام بھی نبٹا لیتے۔

اس بار انوار صاحب اپنے ساتھ امان کے لیے کھے سپنے بھی لے آئے تھے۔ بڑے شہر میں رہنے کے بچوں کو بڑے بڑے اسکولوں میں تعلیم دلوانے کے اور ہیڈ آئس میں رہ کر ترقی کے شے راستے وا ہونے کے۔ وہ ریٹائر میٹ لے رہے تھے اور امان کے لیے ٹرانسفر کی بات بھی کر آئے تھے۔

امان اگر بروقت نہ پہنچا تو اے اور پھے برس انظار کرنا پڑتا اور فیملی فلیٹ اے جب
ہی ملتا جب فیملی ساتھ ہوتی ورنہ اے بچلر رومز میں رہنا تھا۔ انوار صاحب نے فلیٹ کی
چابی اہمی وفتر میں جع نہیں کرائی تھی۔ وہ یہ کام امان کی موجودگی میں کرانا چاہیج تھے۔
ڈپٹی ڈائر یکٹر ان کی عزت کرتے تھے، انھیں یقین تھا کہ وہ ان کی بات مان لیس مے۔ اور
اس سے پہلے کہ کوئی دوسرا آنے کی کوشش کرتا وہ کسی کی علیت سے پیشتر امان کے حق میں
فیملہ کروانا چاہیے تھے۔

امان نے دو دون کے اندر ساری تیاریاں عمل کر لیس اور مع بابرا اور بچوں کے شہر روانہ ہوگیا

انوار صاحب کا فلیٹ 14 منزلہ ممارت کا سب سے اوپری فلیٹ تھا۔ ممارت کی ہر منزل پر تین تین فلیٹ تھا۔ ممارت کی ہر منزل پر تین تین فلیٹ تھا۔ کیونکہ ایک منزل پر تین تین فلیٹ تھا۔ کیونکہ ایک طرف ڈش اثینا تھا اور دوسری طرف پائی کی فئیاں۔ درمیان میں یہ ایک فلیٹ بی بن پایا تھا۔ اس کے اوپر بردا ساکشادہ ٹیمرس تھا جس میں تقریبات وغیرہ ہوا کرتیں۔ وہاں سے بیجے و کیمنے پر سارا شہرداین کے ستارے گئے آئیل کی طرح نظر آتا۔

اس سے ینچے کے تین فلیٹس میں سے دوآباد تھے اور ایک پر پچھ تنازع چل رہا تھا۔
ایک فلیٹ کے کمین کہیں باہر گئے ہوئے تھے اور ایک میں امان کی بی کمپنی میں کام کرنے دالے وکرم بھسین رہتے تھے۔ باہرا کو فلیٹ اور امان کوشہر بہت پند آیا۔ فلیٹ کشادہ تھا۔
تین خوابگاہوں، ڈرائنگ روم اور باور پی خانے پرمشمتل۔ ہر کمرے کے ساتھ ملحقہ عسل خاند، اور لباس بدلنے کے لیے چھوٹا سا احاطہ۔ اونچی چستیں، بڑی بڑی کھڑکیاں، لمبے لمبے دروازے۔ تین دن میں فلیٹ سے گیا۔ ضرورت کا سامان آجیا سوائے شیلیفون کے۔ ٹیلیفون

तीन-तीन के हिसाब से होस्टल की तरह कमरा बांट लेते थे। मगर फ़ैमली वाले अरकान के लिए यह मसला सबसे पेचीदा था। अमान अपने क़स्बे में कम्पनी का ब्रांच मैंनेजर था। अनवार साहब हर तीन माह के बाद अपनी कम्पनी का कोई काम निकाल कर अपने आबाई घर आते। बुजुर्ग वालदैन से मुलाक़ात भी हो जाती और कम्पनी का काम भी निपद्य लेते। इस बार अनवार साहब अपने साथ अमान के लिए कुछ सपने भी ले आये थे। बड़े शहर में रहने के, बच्चों को बड़े-बड़े स्कूलों में तालींम दिलवाने के और हेड ऑफ़िस में रह कर तरक़्क़ी के नये रास्ते वा होने के।

वह रिटार्यमेन्ट ले रहे थे और अमान के लिए ट्रांसफर की बात भी कर आए थे। अमान अगर बरवक़्त⁽¹⁾ न पहुंचता तो उसे और कुछ बरस इंतिजार करना पड़ता और फ़्रीमली फ़्लैट उसे जब मिलता जब फ्रीमली साथ होती वरना उसे बैचलर रूम्ज में रहना था। अनवार साहब ने फ्लैट की चाभी अभी दफ़्तर में जमा नहीं करायी थी। वह यह काम अमान की मौजूदगी में कराना चाहते थे। डिप्टी डायरेक्टर उनकी इज़्ज़त करते थे। उन्हें यक़ीन था कि वह उनकी बात मान लेंगे और इससे पहले की कोई दूसरा आने की कोशिश करता वह किसी की इलिमयत⁽²⁾ से पेश्तर अमान के हक़ में फ़ैसला करवाना चाहते थे।

अमान ने दो दिन के अन्दर सारी तैयारियाँ मुकम्मल कर लीं और मअ बाबरा और बच्चों के शहर रवाना हो गया। अनवार साहब का फ़्लैट 14 मंजिल इमारत का सबसे ऊपरी फ़्लैट था। इमारत की हर मंजिल पर तीन-तीन फ़्लेट थे। मगर सबसे ऊपर वाली मंजिल में यही एक फ़्लेट था क्यों कि एक तरफ़ डीश-एंटिना था और दूसरी तरफ़ पानी की टंकियां, दरिमयान में यही एक फ़्लैट ही बन प्रया था। उसके ऊपर बड़ा सा कुशादा टेरिस था। जिसमें तक़रीबात⁽³⁾ वग़ैरह हुआ करती थीं। वहां से नीचे देखने पर सारा शहर दुल्हन के सितारे लगे आंचल की तरह नज़र आता।

उससे नीचे के तीन फ़्लैट में से दो आबाद थे, और एक पर कुछ तनाजा चल रहा था। एक फ्लैट के मकीन कहीं बाहर गये हुये थे। और एक में अमान की ही कम्पनी में काम करने वाले विक्रम भसीन रहते थे।

बाबरा को फ़्लैट और अमान को शहर बहुत पसन्द आया था। फ़्लैट कुशादह था। तीन ख़्वाब-गाहें, (4) ड्राइंग रुम, और बावर्ची ख़ाने पर मुश्तमिल हर कमरे के 1. वक्त पर 2. जानकारी 3. प्रोग्राम 4. सोने के कमरे

کی فیس پیچیلے تین ماہ سے ادا نہیں ہوئی تھی اور ان مہربانیوں کے بدلے امان کو انوار صاحب کی گر بجود بی وغیرہ متاثر صاحب کی گر بجود بی وغیرہ متاثر ہوتی۔ بلکہ امان کوتو کی مبینے کا بجلی کا بل بھی بجرنا پڑا تھا جب جاکر بجلی کا کشف دوبارہ جوڑا عمیا۔ فیلیفون کا بل ادا کرنے کا وقت نہیں تھا کیونکہ امان نے پہلے دن آفس جوائن کرنے کے بعد دوبارہ آفس کا رخ تک نہیں کیا تھا کہ بغیر بجلی کے اس شہر میں ایک دن کے لیے بھی رہنا مشکل تھا اور سارا وقت اے ادھر ادھر بحلکنا بڑا تھا۔

کوئی پانچویں دن امان دفتر کیا کہ مسین صاحب کے فلیٹ میں اس کے لیے فون آیا تھا۔ اے سائٹ پر جانا تھا اور واپسی دوسرے دن کی تھی۔ وہاں پچھ ایسا کام پڑگیا کہ امان دوسرے دن نہ آسکا۔

صبح دروازے کی تھنٹی بچی تھی تو سونو کی آ کھے اسی آواز سے کھل گئی تھی۔ می اورثو بیہ سو رہی تھیں۔ سونو دروازے تک گیا اور اس نے دروازے کی ٹجلی چٹنی بھی کھولی تھی گر میز پر کھڑے ہونے کے باوجود اس کا ہاتھ دروازے کے اوپر والی چٹنی تک نہ پہنچ سکا۔

"جی کون ہے؟" اس نے پکارا بھی تھا گر باہر سے کوئی جواب ند آیا۔ آنے والے نے شاید اس کی آواز نہیں سی تھی۔ اور وروازہ ند کھلنے برلوث کیا تھا۔

''می ۔ کوئی تھنٹی بجا رہا ہے۔ میمی۔'' اس نے کئی بارمی کو پکارا تھا گرمی جانے آج کیسی نیندسورہی تھیں۔ جاگ ہی نہیں رہی تھیں۔

''ممیمی جی جیکوئی درواز ہے کی تھنٹی بجا رہاہے۔'' اس نے او پُی آواز میں پکارا تو تو بیہ نے ابروؤں کے رخ پر خمیدہ بلکوں والی منی منی آ تکھیں کھول دیں۔ اور اٹھ کر بیٹے گئی۔ آ تکھیں جھپک جھپک کر ادھرادھر دیکھا اور بھائی کوممی پکارتے سن کر خود بھی ممی ممی بکارنا شروع کردیا۔

خرمی بول بی نہیں رہی تھیں۔می کے دہانے کے چاروں طرف کوئی سفیدی چیز جی ہوئی تھی۔ ہاتھ یاؤں بھی کچھ عجیب طرح سے تھیلے ہوئے تھے۔

ثوبيے نے مال كى طرف سےكوئى جواب نه پاكر رونا شروع كرديا۔

'' چپ ہو جانا۔ روتی کیوں ہے؟'' سونو نے جھلاکر کہا تو توبیہ اور زور زور سے رونے گئی۔

साथ मुलहिका, (1) गुसल खाना और लिबास बदलने के लिए छोटा सा अहाता, ऊँची छतें, बडी-बडी खिडिकयां, लम्बे-लम्बे दरवाजे। तीन दिन में फ़्लैट सज गया। जरूरत का समान आ गया सिवाय टेलीफ़ोन के। टेलीफ़ोन की फ़ीस पिछले तीन माह से अदा नहीं हुई थी और इन मेहरबानियों के बदले अमान को अनवार साहब के लिए इतना तो करना ही था। वरना ख्वाह मख्वाह⁽²⁾ अनवार साहब की ग्रेच्एटी वग़ैरह मृतास्सिर⁽³⁾ होती। बल्कि में अमान को तो कई महीने का बिजली का बिल भी भरना पड़ा था। तब जाकर बिजली का कनेक्शन दोबारा जोड़ा गया। टेलीफ़ोन का बिल अदा करने का वक़्त नहीं था। क्योंकि अमान ने पहले दिन ऑफ़िस ज्वाइन करने के बाद दोबारा ऑफ़िस का रुख तक नहीं किया था कि बग़ैर बिजली के इस शहर में एक दिन के लिए भी रहना मुश्किल था। और सारा वक़्त उसे इधर-उधर भटकना पड़ा था कोई पांचवे दिन अमान दफ़्तर गया कि भसीन साहब के फ़्लैट में उसके लिए फ़ोन आया था। उसे साइट पर जाना था और वापसी दूसरे दिन की थी। वहां कुछ ऐसा काम पड गया कि अमान दूसरे दिन न आ सका सुबह दरवाजे की घंटी बजी तो सोनू की आंख उसी आवाज से खुल गयी थी। अम्मी और सुबिया सो रही थी। सोनु दरवाजे तक गया और उसने दरवाज़े की निचली चिटख़नी को खोला मगर मेज पर खडे होने के बावजूद उसका हाथ दरवाजे के उत्पर वाली चिटखनी तक नहीं पहुंच सका। "जी कौन है ?'' उसने पुकारा भी मगर बाहर से कोई जवाब न आया। आने वाले ने शायद उसकी आवाज नहीं सूनी थी और दरवाजा न खुलने पर लौट गया था।

''मम्मी कोई घण्टी बजा रहा है मम्मी.....मम्मी'' उसने कई बार मम्मी को पुकारा मगर मम्मी जाने आज कैसी नींद सो रहीं थीं, जाग ही नहीं रही थीं ''मम्मी.....मम्मी जी.....कोई दरवाजे की घण्टी बजा रहा है''। उसने ऊंची आवाज में पुकारा तो सूबिया ने अबरूओं⁽⁴⁾ के रुख़ पर ख़मीदह⁽⁵⁾ पलकों वाली मुनी मिनी आँखें खोल दीं और उठ कर बैठ गयी। आँखें झपक-झपक कर इधर-उधर देखा और भाई को मम्मी पुकारते सुन कर देख खुद भी मम्मी -मम्मी पुकारना शुरू कर दिया।

मगर मम्मी बोल ही नहीं रही थीं। मम्मी के दहाने के चारों तरफ़ कोई सफ़ेद

^{1.} मिला हुआ 2. यूं ही 3. प्रभावित 4. भृकुटी 5. झुकी हुई

"می سورہی ہیں توبی۔" وہ بہن کو سمجھانے کے انداز میں بولا۔

''می می می اینے نا۔'' سونو نے پھر مال کو جگانے کی کوشش کی جب تک درواز ہے کی کوشش کی جب تک درواز ہے کی کھنٹی دویارہ بچنے لگی تھیٰ۔

''کون ہےن' وہ دروازے کے قریب جاکر اور او کچی آواز میں بولا۔ کوئی جواب نہ آیا۔

وہ واپس کمرے میں آیا۔ ثوبیہ با قاعدہ بھکیاں لے لے کر رو رہی تھی۔ سونو کچھ دیر ماں کے چیرے کو دیکمتا رہا۔ پھر روتی ہوئی بہن کو بغور دیکھنے لگا۔

''می'' اس نے ممی کو پوری طاقت سے جنجھوڑا گرممی بے حس وحرکت پڑی رہیں۔ وہ کچھ دریگم سم سا ہیٹھا رہا۔ پھر تو ہیہ کے قریب جاکر اس نے اپنے چھوٹے جھوٹے ہاتھوں سے اس کے آنسو یو تخیے۔

' و نہیں رونا توبی می سور ہی ہیں۔'' گر توبی تھی کہ جب بی نہیں ہو رہی تھی۔

'' چپ ہوجا۔'' وہ چیخا اور ساتھ ہی دھاڑیں مار کر رونے لگا۔

جانے کب تک دونوں بہن بھائی روتے رہے گر ای نے چپ ہی کرایا نہ پھھ

توبيه کوئی گھنشہ بھر روتی رہی نے پھر تھک کر سوگئ۔

وہ سو گئی تو سونو پھر مال کے قریب عمیا۔ اس کا چبرہ دونوں ہاتھوں میں لے کز دائیں بائیں ہلانے لگا۔

''ممی'' اس نے زور زور ہے ممی کا سر ہلایا۔''ممی سسسمی جی۔'' اس نے آنسوؤں میں بھیگی آواز میں محبت گھول کر پکارا۔ ممی نے کوئی جواب ند دیا۔ کچھ دیر بعد اٹھے کروہ ڈرائنگ روم میں چلا گیا۔ بردہ سرکا کر کھڑکی کے ششتے سے باہر دیکھنے لگا۔

سامنے ایک بڑا سا پارک تھا جس میں چھوٹے چھوٹے کھلونوں جیسے رنگ بر نگے نچے کھیل رہے تھے۔ پارک میں کی طرح کے چھوٹے بڑے جھولے لگے ہوئے تھے ادھرادھر آئس کریم اور ویفرس کے پیکٹ والے اپنی چھوٹی چھوٹی ہاتھ گاڑیاں لیے ہوئے گھوم رہے تھے ایک ریڑھی پر نہایت بھی تھی ہوٹلوں میں کولڈ ڈرکس بھی ہوئی تھیں۔ پارک کے دوسرے جانب لمبی می سرک پر چھوٹی چھوٹی بے شار گاڑیاں بھاگ رہی تھیں۔ سونو نے

सी चीज जमी हुई थी। हाथ पांव भी कुछ अजीब तरह से फैले हुए थे।

सूबिया ने माँ की तरफ़ से कोई जवाब न पा कर गेना शुरू कर दिया। "चुप हो जा ना। रोती क्यों है।" सोनू ने झिल्ला कर कहा तो सूबिया और जोर-जोर से रोने लगी।

''मम्मी सो रही है, सूबी'' वह बहन को समझाने के अन्दाज में बोला।

''मम्मी-मम्मी उठिये ना-'' सोनू ने फिर माँ को जगाने की कोशिश की जब तक दरवाजे की घण्टी दुबारा बजने लगी थी।

"कौन है....." वह दरवाज़े के क़रीब जा कर और ऊँची आवाज़ में बोला कोई जबाव न आया वह वापस कमरे में आया। सूबिया बाक़ाएदा हिचकियां लेकर रो रही थी। सोनू कुछ देर माँ के चेहरे को देखता रहा फिर रोती हुई बहन को बग़ौर देखने लगा।

''मम्मी'' उसने मम्मी को पूरी ताक़त से झिंझोंड़ा। मगर मम्मी बेहरकत पड़ी रहीं।

वह कुछ देर गुम सुम सा बैठा रहा। फिर सूबिगा के क़रीब जाकर उसने अपने छोटे-छोटे हाथों से उस के आँसू पेछे। "नहीं रोना सूबी- मम्मी सो रही हैं।" मगर सूबी थी कि चुप हो ही नहीं रही थी।

''चुप हो जा'' वह चीख़ा और साथ ही दहाड़ें मार कर रोने लगा।

जाने कब तक दोनो भाई-बहन रोते रहे मगर अम्मी ने चुप ही कराया न कुछ बोली। सुबिया कई घण्टे तक रोती रही फिर थक कर सो गई।

वह सो गयी तो सोनू फिर मां के क़रीब गया। और उसका चेहरा दोनों हाथों में लेकर दायें-बायें हिलाने लगा।

"मम्मी" उसने जोर से मम्मी का सर हिलाया। "मम्मी......मम्मी जी," उसने आँसुओं में भीगी अवाज में मोहब्बत घोल कर पुकारा। मम्मी ने कोई जबाव न दिया। कुछ देर बाद वह उठ कर ड्राइंग रुम में चला गया। पर्दा सरका कर खिड़की के शीशे से बाहर देखने लगा।

सामने एक बड़ा सा पार्क था। जिसमें छोटे-छोटे खिलौनों जैसे रंग-बिरंगे बच्चे खेल रहे थे। पार्क में कई तरह के छोटे बड़े झुले लगे हुए थे। इधर-उधर

یہ ساری چزیں اس قدر چھوٹی جسامت میں آج سے پہلے کھی نہ دیکھیں تھیں۔ اس کے ذہن میں بوٹ آیا۔ ذہن میں عجیب عجیب سوال اور خیال انجرنے گئے۔ وہ کرے میں لوٹ آیا۔

"می جی۔" اس کے نتھے سے سینے سے درد بھری کراہ نکلی۔ اور اس نے اپنا چھوٹا سا سرمی کے سینے پر رکھ دیا اور دھیر سے دھیرے سکنے لگا۔ اس کے آنسوؤں سے می کے شب خوابی کے لباس کا گریبان بھیگ بھیگ کیا گرمی نے آئسیں نہیں کھولیں۔ روروکر جب وہ ہلکان ہوگیا تو جانے کب اسے نیندآگئ۔

جانے کتنا وقت وہ سوتا رہا۔

"جھوچھو" نیند میں اس کے کانوں میں توبیدی آواز پڑی تو اس نے آئکھیں کھول دی۔ "حجھوچھو" ثوبید نے اس می کی طرف سے نظر بٹا کر بھائی کو دیکھ کر کہا۔

''سوسوکرنا ہے'' سونو نے بوچھا تو اس نے جھوٹا ساسر ہلادیا۔سونو نے عشل خانے کا ہنڈل محما کر دروازہ کھول دیا۔

باہر شام ہو چلی تھی۔

توبیہ باتھ روم سے آکر مال کے پاس لیٹ گئ۔

''میم می میں میں۔'' توبیہ نے اپنی شہادت کی انگلی سے مال کی آگھ

کھولنے کی کوشش کی وہ ناکام ہوکر پھر رونے آگی ۔ م

ممى ى ىن وه ممي كو پكارتى موئى بچكياں لينے گل-

سونو بہن کو بے بسی سے دیکھتا رہا۔

''ممی اٹھئے نا۔۔۔۔۔ممی جی جی۔۔۔۔۔تو بی رو رہی ہے۔ اسے بھوک لگی ہے۔'

وہ گلو کیر آواز میں مال سے مخاطب ہوا۔ اسے خود بھی بھوک گلی تھی مگر جب تک اس نے ثوبیہ کی بھوک کا ذکر نہ کیا، اس طرف اس کا خیال نہ گیا تھا۔

اب اسے بھوک کا احساس ہونے لگا۔

وہ مال کے پاس سے اٹھ کر باور پی خانے میں چلاگیا۔ تمام برتن دھلے وھلائے رکھے تھے۔ کسی میں کچھ کھانے کو نہ تھا۔

اس نے فرج کھولا اس میں سیب رکھے تھے۔ وہ دوسیب اٹھا کر کمرے میں آھیا۔

ایک سیب کوخود کترنے لگا اور دوسرا ٹوبنی کو پکڑادیا۔ توبیدا سے کھانے کی کوشش کرنے

आईसक्रीम और वेफ़र्स के पैकेट वाले अपनी छोटी-छोटी हाथ गाड़ियां लिए घूम रहे थे। एक रेढ़ी पर निहायत नन्ही-नन्ही बोतलों में कोल्डड्रिंक सजी हुई थीं। पार्क के दूसरी तरफ़ लम्बी सी सड़क पर छोटी-छोटी बेशुमार गाड़ियां भाग रही थीं। सोनू ने यह सारी चीजें इस क़दर छोटी जसामत⁽¹⁾ में आज से पहले कभी न देखीं थीं। उसके जहन में अजीब-अजीब सवाल और ख्याल उभरने लगे। वह कमरे में लौट आया।

"मम्मी जी" उसके नन्हें से सीने से दर्द भरी कराह निकली, और उसने अपना छोटा सा सर मम्मी के सीने पर रख दिया और धीरे-धीरे सिसकने लगा। उसके आंसुओं से मम्मी के शब-ख़्वाबी⁽²⁾ के लिबास का गिरेबान भीग गया मगर मम्मी ने आँखें नहीं खोलीं। रो-रो कर जब वह बेहाल हो गया तो जाने कब उसे नींद आ गयी।

जाने कितना वक्त वह सोता रहा

"छू-छू" नींद में उस के कानों में सूबिया की आवाज पड़ी तो उसने आँखें खोल दीं।

"छू-छू" सूबिया ने मम्मी की तरफ़ से नज़र हटा कर भाई को देख कर कहा-

"सू-सू करना है।" सोनू ने पूछा तो उसने छोटा सा सर हिला दिया। सोनू ने गुसलख़ाने का हैण्डल घुमा कर दरवाजा खोल दिया।

बाहर शाम हो चुकी थी।

सुबिया बाथरुम से आकर मां के पास लेट गयी थी।

''मम्मी....मम्म....मम्मी'' सूबिया ने अपनी शहादत⁽³⁾ की उंगली से माँ की आंख खोलने की कोशिश की ······ वह नाकाम हो कर फिर रोने लगी।

''मम्मी ई...ई...'' वह मम्मी को पुकारती हुई हिचकियां लेने लगी। सोनू बहन को बेबसी से देखता रहा।

''मम्मी उठिये न...मम्मी जी...सूबी रो रही है, उसे भूख लगी है।''

वह गुलोगीर⁽⁴⁾ आवाज में माँ से मुख़ातिब हुआ......उसे खुद भी भूख लगी थी। मगर जब तक उसने सूबिया की भूख का जिक्र न किया, उस तरफ़

^{1.} आकार 2. सोने का वस्त्रं 3. अंगुठे के पास वाली अंगुली 4. रूंधी हुई

گی۔ گراس کے منہ میں اگے آٹھ دانت سیب کے تخت تھیکنے کے ساتھ انساف نہ کر سکے اور وہ محض سیب کی سطح پر ایک آدھ نثان لگا کررہ گئی اور چپ چاپ بھائی کو دیکھنے گئی۔ سونو نے سیب کا ایک کلڑا توڑ کر دیا تو وہ اسے چبانے کی کوشش میں ادھر ادھر گھماتی رہی اور آخرکارنگل گئی۔

دونوں سیب ختم ہو گئے تو سونو فرج میں پڑا آخری سیب اٹھالایا...... پکھ دیر دونوں سیب پر زور آ زمائی کرتے رہے۔ اس سے فامرغ ہوکر پھر می کو جگانے کی کوشش کرنے گئے۔
می پکھے نہ بولی تو دونوں رورو کرممی کو بلانے لگے۔ گھر میں اتن گری تھی گرمی کا بدن ایک دم شدا پڑا ہوا تھا..... پیتہ نہیں کیوں پھر کسی وقت انھیں نیند آگئ۔ دم شدا پڑا ہوا تھا میں اٹھیں درواز سے کی تھنی دوبار بجی تھی۔ جس سے سونو واگ کیا تھا۔

"جی سسسس ی ی سسسکون ہے۔" کوئی جواب نہ آیا سسس شاید مضبوط دیواروں اور بھاری دروازے کے اس پار اس کی معصوم سی کرور آواز پہنچ نہیں پائی تھی اور آئے والا پھر لوٹ عمیا تھا۔

ثوبیہ نے جاگتے ہی رونا شروع کر دیا تھا۔ اور می کے پاس جاکر زور زور سے چیختے ہوئے روروکر جب ماہیسِ ہوگئ تو بھیاں لیتی ہوئی باہر آگئ۔

اس کا چھول سا چہرہ ممبلا کیا تھا۔

باور چی خانے میں سونو فرج کھولے بغور اندر دیکھ رہا تھا۔ پرسوں کا پڑا ہوادودھ پھٹ چکا تھا۔ تو بید کو قریب دیکھ کر اُس نے اُس کے کا ندھے پر ہاتھ رکھ دیا۔

'' دو دو پیئے گی۔''اُس نے ممی کی طرح پو چھا تھا۔

"بول" وه زورزور سے سر ہلا کر بولی۔

اُس نے پھٹا ہوا دودھ چی ہے تو ہید کے فیڈ ریس ڈالنے کی کوشش میں بہت سارا دودھ گراکر تھوڑا سا ڈالنے میں کامیابی حاصل کرلی تو فیڈ ربہن کے بڑھے ہوئے ہاتھوں میں تھا دیا۔ تو ہیدو ہیں فرش پر چت لیٹ کر دودھ چینے گی۔ جب چھٹے ہوئے دودھ کا کوئی کلوا نہل کے چھید کو بند کرنے لگتا تو وہ پیر پٹنے پٹنے کر پوری طاقت سے نہل کو چو سے لگتی اور رونے لگتی

उसका ख्याल न गया था। अब उसे भूख का एहसास होने लगा।

वह माँ के पास से उठ कर बावर्ची ख़ाने में चला गया। तमाम बर्तन धुले धुलाये रखे थे। किसी में कुछ खाने को न था।

उसने फ्रिज़ खोला उसमें सेब रखे थे.....वह दो सेब उठाकर कमरे में आ गया। एक सेब को खुद कतरने लगा और दूसरा सूबिया को पकड़ा दिया। सूबिया उसे खाने की कोशिश करने लगी। मगर उसके मुंह में उगे आठ दांत सेब के सख़्त छिलके के साथ इन्साफ न कर सके और वह महज़ सेब की सतह पर एक—आध निशान लगा कर रह गयी और चुप—चाप भाई को देखने लगी। सोनू ने सेब का एक टुकड़ा तोड़ कर दिया तो वह उसे चबाने की कोशिश में इधर—उधर घुमाती रही और आख़िर कार निगल गयी।

दोनों सेब ख़त्म हो गये तो सोनू फ़्रिज में पड़ा आख़िरी सेब उठा लाया। कुछ देर दोनो सेब पर जोर आज़माई करते रहे। इससे फ़्रारिग़⁽¹⁾ होकर फिर मम्मी को जगाने की कोशिश करने लगे।

मम्मी कुछ न बोली तो दोनों रो-रो कर मम्मी को हिलाने लगे। घर में इतनी गर्मी थी मगर मम्मी का बदन एकदम ठंडा पडा था. पता नहीं क्यों ?.....

फिर किसी वक़्त उनको नींद आ गयी दूसरी सुबह भी मम्मी नहीं उठीं !..... दरवाजे की घण्टी दोबारा बजी थी जिससे सोनू जग गया था।

"जी... ई ई....कौन है।" कोई जवाब न आया……। शायद मज़बूत दीवारो और भारी दरवाज़े के उस पार उसकी मासूम सी कमज़ोर आवाज़ पहुंच नहीं पायी थीं, और आने वाला फिर लौट गया था सूबिया ने जागते ही रोना शुरु कर दिया था और मम्मी के पास जा कर ज़ोर-ज़ोर से चीख़ते हुये रो-रो कर जब मायूस हो गयी तो हिचकियां लेती हुई बाहर आ गयी……।

उसका फूल सा चेहरा कुम्हिला गया था बावर्ची ख़ाने में सोनू फ्रिज़ खोले बग़ौर अन्दर देख रहा था। परसों का पड़ा हुआ दूध फट चुका था। सूबिया को क़रीब देख कर उस ने उस के कान्धे पर हाथ रख दिया।

"दू-दू पियेगी" उसने मम्मी की तरह पूछा था "हूं" वह जोर जोर से सर हिला कर बोली। उसने फटा हुआ दूध चम्मच से सूबिया के फीडर में डालने की कोशिश में बहुत सारा दूध गिरा कर थोड़ा सा डालने में कामयाबी हासिल कर ली

^{1.} फुर्सत पाकर

پھر پُپ ہو جاتی ۔

سونو نے دودھ کے پچھ بیچے ہوئے چچ خود بھی پے اور توہیہ کے پاس جا بیٹھابوتل خالی ہو کی تو توہیہ اٹھ کر بیٹے گئیپھر کھڑی ہوکر ممی ممی پکارتی ہوئی خوابگاہ میں چلی گئی۔ سونو بھی کمر ہے میں آ گیا۔ اور کچھ دیر دروازے کے پاس کھڑا ہوکر ماں کو د کھنے لگا۔ ممی کی شکل آج اچھی نہیں لگ رہی تھی۔

مسنر بھسین کی جزوقی طازمہ صبح اوپر آئی تھی تو کسی نے دروازہ نہیں کھولاتھا دراصل اما ن نے اُن کے ہاں فون کیا تھا کہ بابراکو بتادیں وہ ایک دن اور رک گیا ہے اور کل آجائے گا کہ بابرابہت جلد گھبراجاتی ہے طازمہ سے دروازہ نہ کھلنے کی خبر سکر مسنر بھسین نے سوچا تھا کہ پڑوی کہیں گھو منے گئے ہوں گے یا شاید سورہ ہوں۔ یا جوبھی

" توبى! آجااندر بينس '_سونون فربيس كها_

" کمرکی ہے باہر دیکھیں گئے وہ سراوپر سے نیچ کی طرف ہلا کر بولا درخیہ میں " جس افقہ میں ا

'دنہیںمی پاس' وہ محطکے سے نفی میں سر ہلا کر بولی '' ممی تو بولتی ہی نہیں تو میرے پاس آجا۔'' وہ اداس سا ہو کر بولا۔ اس کا چہرہ

آج پیلا نظر آر ہا تھا۔ جیمو نے جیموٹے ہونٹوں پر پپڑیاں جی ہوئی تھیں

तो फीडर बहन के बढ़े हुये हाथो में थमा दिया। सूबिया वहीं फर्श पर चीत लेटकर दूध पीने लगी। जब फटे दूध का कोई टुकड़ा निप्पल के छेद को बन्द करने लगता तो वह पैर पटख़-पटख़ कर पूरी ताक़त से निप्पल को चूसने लगती और रोने लगती क्या है। जाती। सोनू ने दूध के कुछ बचे हुये चम्मच खुद भी पिये और सूबिया के पास जा बैठा का बोतल ख़ाली हुई तो सूबिया उठ कर बैठ गयी कि पिर खड़ी होकर मम्मी-मम्मी पुकारती हुई ख़ाबगाह (1) में चली गयी सोनू भी कमरे में आ गया। और कुछ देर दरवाज़े के पास खड़ा हो कर माँ को देखने लगा। मम्मी की शक्ल आज अच्छी नहीं लग रही थी।

मिसेज भसीन की जुजवक्ती⁽²⁾ मुलाजिमा⁽³⁾ सुबह ऊपर आयी थी, तो किसी ने दरवाजा नहीं खोला था ररअसल अमान ने उनके हां फ़ोन किया था कि बाबरा को बता दें वह एक दिन और रुक गया है और कल आ जायेगा। बाबरा बहुत जल्दी घबरा जाती ह मुलाजिमा से दरवाजा न खुलने की ख़बर सुन कर मिसेज भसीन ने सोचा था कि पड़ोसी कहीं घूमने गये होंगे, या शायद सो रहे हों। या जो भी हो...

- ''सूबी, आजा अन्दर बैठें''- सोनू ने सूबिया से कहा।
- ''खिड़की से बाहर देखेगें''- वह सर ऊपर से नीचे की तरफ़ हिला कर बोला।
 - ''नहीं... मम्मी पास...'' वह झटके से नफ्नी में सर हिला कर बोली...
- ''मम्मी तो बोलती ही नहीं तू मेरे पास आ जा''- वह उदास सा होकर बोला। उस का चेहरा आज पीला नजर आ रहा था। छोटे-छोटे होंठों पर पपड़ियां जमी हुई थीं.....।
- ''आना सूबिया...आजा''- वह धीरे-धीरे सिसकने लगा। सूबिया माँ के फैले हुये बाजू पर सर रखे अपना मुन्ना सा अंगूठा चूसती रही और छोटा सा सर नफ़ी में हिला कर भाई को देखती रही।

सोनू उसके क़रीब जाकर उसे उठाने लगा, तो उसे महसूस हुआ की मम्मी के पास से ख़राब सी बू आ रही थी। मम्मी नहायी नहीं ना कल से कपड़े भी नहीं बदले हम भी नहीं नहाये उसने अपना गिरेबान सूंघा वहां उसे परसों के लगाये हुए बेबी पाउडर की हल्की सी महक आयी उसने फिर मम्मी की तरफ़ देखा मम्मी की शक्ल बदली - बदली सी लग रही थी वह आहिस्ता - आहिस्ता एक दो क़दम उलटे उठाता हुआ दीवार से लग गया

^{1.} सोने का कमरा 2. अल्पकालिक 3. तौकरानी

نظر آرہے تھے اور پھر ماں کا باتی جمم۔ بعد میں چرہ شھوڑی سے شروع ہوتا ہوا۔ اس کا نشا سا دل دھک دھک کررہا تھا اس نے دونو ں ہاتھ اٹھا کر اپنی آ تکھوں پر رکھ دیے۔ اور پھر پتانہیں کب وہ دیوار سے لگالگافرش پر آگیا۔ اس کے تھٹے اس کے سینے سے لگے ہوئے تھے اور وہ سو چکا تھا۔

صبح پھر دروازے کی کا ل بیل لگا تار پھے بل بجی تو وہی بیدار ہوا دروازے تک عمیا اور بے چارگی ہے اے دیکھنا رہا۔ پچھ منٹ بعدلوٹ آیاگھر میں ہوتا تو کھڑکی ہے نانی کو ا سواز لگا تا۔ یہاں تو نہ وہ دروازہ کھول سکتا تھا نہ کھڑکی، کھول بھی لیتا تو اس کی آواز کون من پا تا کہ کھڑکی ہے نظرآنے والے لوگ اس کی آواز کی رسائی ہے بہت دور تھے

آج ٹو بید ابھی تک سورہی تھی وہ دروازے پر تھہر کر مال کی طرف دیکھنے لگا۔ مال کا چہرہ بغیر پانی کے گلدان میں پڑے کئی دن پرانے بھول سالگ رہا تھا۔ وہ آہتہ آہتہ مال کے کچھ قریب جا کرغور سے دیکھنے لگا۔ می کی شکل بدل گئی تھی بیشکل کسی اور کی تھی۔ میلے سے نمیالے چہرے والی اس کی ممی تو گوری تھی تو کیا ہی اس کی ممی تو گوری تھی تو کیا اس کی ممی کی شکل کو پچھ ہو گیا ہے یا یا ہیکوئی اور ہے۔ کوئی عیب سی شے یا اس کی ممی کو گھر ہو گیا ہے یا یا ہیکوئی اور ہے۔ کوئی عیب سی شے انسان جیسی کوئی شے

ذہن میں اس خیال کے آتے ہی وہ زور سے چیخ بڑا۔ توبید نے حجت سے آتھیں کھولیں اور رونے گی۔ دہ چیخاہوا کمرے سے باہر بھاگا اور ڈرائنگ روم کے لیے سوفے کے عقب میں جا چھپا۔ اس کا چھوٹاسا وجود تفرتھر کانپ رہا تھا۔ اور آٹھوں سے موٹے موٹے آنو بہدر ہے تھے توبید کچھ دیرروتی رہی پھر اٹھ کر بھائی کو ڈھوٹڈ نے گی۔

''بیا بیا'' وہ باور کی خانے میں گئ اور روتے روتے بھائی کو پکارنے گئی۔ وہاں بھائی کونہ یا کر ڈرایک روم میں آگئی۔

"بیا۔آ۔آ" اس نے نیف ی آداز میں بکارا

سونو صوفے کے بیچھے سے نکل آیا۔ اس کے خو نزدہ دل میں احساس ذمہ داری نے قوت بھردی۔ بہن کو دیکھ اس کے قزیب چلا گیا اور دونوں ہاتھوں میں اس کا چہرہ لے کر اس کے آنسو یو نچھنے لگا۔ اے محسوس ہوا کہ اس کی ثوبی کو بہت تیز بخار ہے۔

''بیا۔ پانی'' وہ بھکیاں لیتی ہوئی بولی۔ '' بختے بغار ہے آ جااد هر لیٹ جا میں یانی لا تا ہوں''۔

उसकी नज़रें माँ के चेहरे पर गड़ी थीं। वह दीवार के साथ-साथ चलता हुआ कमरे के दूसरे कोने में पहुँच गया...... और दीवार से फिसलता हुआ फ़र्श पर बैठ गया। उसके दिल में अजीब क़िस्म का ख़ौफ़ सा छा रहा था। उसे नींद सी भी आ रही थी। मगर वह पता नहीं क्या सोच रहा था। खुद उसकी समझ में नहीं आ रहा था। आँख लगने लगती तो फ़ौरन आँखें खोल कर मां के चेहरे को देखने लगता.....।

दूर बैठा हुआ वहां से मां के तलवे नज़र आ रहे थे और फिर माँ का बाक़ी जिस्म। बाद में चेहरा..... थोड़ी से शुरु होता हुआ। उसका नन्हा सा दिल धक-धक कर रहा था। उसने दोनों हाथ उठा कर अपनी आंखों पर रख दिये और..... फिर पता नहीं कब वह दीवार से लगा-लगा फ़र्श पर आ गया। उसके घुटने उसके सीने से लगे हुये थे और वह सो चुका था।

सुबह फिर दरवाजे की काल बेल लगातार कुछ पल बजी तो वही बेदार हुआ। दरवाजे तक गया और बेचारगी से उसे देखता रहा। कुछ मिनट बाद लौट आया क्या में होता तो खिड़की से नानी को आवाज लगाता। यहां तो न वह दरवाजा खोल सकता था न खिड़की। खोल भी लेता तो उस की आवाज कौन सुन पाता क्योंकि खिड़की से नजर आने वाले लोग उसकी आवाज की रसाई से बहुत दूर थे।

आज सूबिया अभी तक सो रही थी। वह दरवाजे पर ठहर कर माँ की तरफ़ देखने लगा। माँ का चेहरा बग़ैर पानी के गुलदान में पड़े कई दिन के पुराने फूल सा लग रहा था। वह आहिस्ता-आहिस्ता माँ के क़रीब जा कर ग़ौर से देखने लगा। मम्मी की शक्ल बदल गयी थी यह शक्ल किसी और की थी। मैले से मटियाले चेहरे वाली उसकी मम्मी तो गोरी थी तो क्या यह उसकी मम्मी नहीं थी तो क्या उसकी मम्मी की शक्ल को कुछ हो गया है या.... यह कोई और है। कोई अजीब सी... शै इन्सान जैसी, कोई शै.... जेहन में इस ख्याल के आते ही वह जोर से चीख़ पड़ा। सूबिया ने झट से आंखें खोलीं और रोने लगी। वह चीख़ता हुआ कमरे से बाहर भागा और झाइंग रुम के लम्बे सोफ़े के अक़ब वीख़ता हुआ कमरे से बाहर भागा और झाइंग रुम के लम्बे सोफ़े के अक़ब जी से जा छुपा। उसका छोटा सा वजूद थर-थर कांप रहा था और आंखों से मोटे-मोटे आंसू बह रहे थे। सूबिया कुछ देर रोती रही फिर उठकर भाई को खूढने लगी।

^{1.} पीछे

اس نے صوفے پر چڑھے میں بہن کی مدد کی اور باور چی خانے کی طرف کیا۔خوابگاہ کے قریب سے گذرتے وقت اس نے ایک اوھوری کی نظر کرے کی طرف تیزی سے ڈالی اور فرج کے پاس چلا گیا۔ فرج میں سے بوتل نکال کر اسے گلاس میں انٹریلنے لگا۔ ساری بوتل خالی کر کے بی کہیں گلاس بھرسکا۔

گلاس اور چچ لیے وہ بہن کے پاس آگیا اور اسے دھیرے دھیرے پانی پلانے لگا۔ چ چ میں ایک آ دھ چچ وہ خود بھی پتیا رہا۔

" بھوکی گلی ہے؟" اس نے نہایت محبت سے توبیہ سے پوچھا تو اس نے نفی میں سر ہلا دیا۔ صبح جب دروازے کی مختنی سن کرسونو بے بسی سے بلٹ آیا تھا اس وقت مطر ہمسین کے ہاں پھر امان نے ٹیلی فون کیا تھا۔ پھر مسز ہمسین نے اپنی جزوقتی ملازمہ کو اور روانہ کیا تھا جو لگا تا رتین چار کھنٹیاں بجا کرلوٹ آئی تھی۔

توبية دائك ردم كے صوفے ير غد مال يدى تقى۔

سونو ذمہ دار بھائی کی طرح اس کے قریب بیٹھا تھا۔ ج بچ بیں دونوں او گھ لیتے شاید مسلسل نقا ہت یا رات بجر کھٹی ہوئی آلو دہ نضامیں رہنے کے باعث۔

مجمعی مجمعی سونوسر محماکر چور نظروں سے بید روم کی طرف دیکھتا اور جلدی سے چہرہ دوسری طرف پھیر لیتا۔ و تفے و تفے سے اس کے آنسو بہد نکلتے تھے۔ اس با رثوبیہ جاگی تو پھر رونے گئی۔

"دودھ ہے گی توبی۔؟"اس نے آواز میں بیار بھر کرکہا

" محر دودھ تو ہے ہی نہیں۔ اچھا تھہر جامیں کچھ اور دیکھتا ہوں' توبیہ نے کچھ نہ کہا اسے خود بھی بہت بھوک لگ رہی تھی۔

وہ تیز تیز قدم اٹھاتا ہواباور چی خانے کی طرف کیا اور پلاسٹک کی میز تھینے کر نعت خانے کی الماری کے ٹھیک مینے تک لے کیا۔

بسکٹ کا ڈبہ لے کر جب وہ خوابگاہ کے باہر سے گذرا تو اس نے بے افتیارساہو کر اندر نگاہ دوڑائی حالاتکہ وہ وہا س سے سیدھا ڈرائنگ روم میں بھاگ آنا چاہتا تھا۔ کیونکہ اسے پندتھا اندراس کی می نہیں۔ پندنہیں کون ہے اور کیا ہے اس نے دیکھا کہ بیڈ پر پڑی

"बय्या-बय्या" वह बावर्ची ख़ाने में गयी और रोते-रोते भाई को पुकारने लगी।वहां भाई को न पाकर ड्राइंग रुम में आ गयी।

''बय्या-आ-आ''उसने नहीफ़⁽¹⁾ सी आवाज में पुकारा।

सोनू सोफ़ के पीछे से निकल आया। उसके ख़ौफ़जदह⁽²⁾ दिल में एहसास-ए-जिम्मेदारी ने कुट्वत भर दी। बहन को देख उस के क़रीब चला गया और दोनों हाथो में उसका चेहरा ले कर उसके आंसू पोछने लगा। उसे महसूस हुआ की उसकी सूबी को बहुत तेज बुख़ार है।

''बय्या-पानी'' वह हिचकियां लेती हुई बोली।

"तुझे बुख़ार है...आजा इधर लेट जा....मैं पानी लाता हूं" उसने सोफ़े पर चढ़ने में बहन की मदद की और बावचीं खाने की तरफ़ गया ख़्वाबगाह के क़रीब से गुजरते वक़्त उसने एक अधूरी सी नजर कमरे की तरफ़ तेजी से डाली और फ़्ज़ के पास चला गया। फ़्रिज़ में से बोतल निकाल कर उसे गिलास में उंडेलने लगा। सारी बोतल ख़ाली कर के ही कहीं गिलास भर सका।

गिलास और चम्चा लिए वह बहन के पास आ गयी और उसे धीरे-धीरे पानी पिलाने लगा। बीच-बीच में एक-आध चम्मच वह खुद भी पीता रहा।

''भूख लगी है?'' उसने निहायत मोहब्बत से सूबिया से पूछा तो उस ने नफ़ी⁽³⁾ में सर हिला दिया।

सुबह जब दरवाजे की घण्टी सुन कर सोनू बेबसी से पलट आया था। उस वक़्त मिस्टर भसीन के हां फिर अमान ने टेलीफोन किया था और फिर मिसेज भसीन ने अपनी जुजवक़्ती मुलाजिमा को ऊपर रवाना किया था जो लगातार तीन-चार घंटियां बजा कर लौट आयी थी।

सूबिया ड्राइंग रुम के सोफ़े पर निढाल पड़ी थी।

सोनू जिम्मेदार भाई की तरह उसके क़रीब बैठा था। बीच-बीच में दोनों ऊंघ लेते शायद मुसलसल नक़ाहत $^{(4)}$ या रात भर घुटी हुई आलूदह $^{(5)}$ फ़जा में रहने के बाअस $^{(6)}$ ।

कभी-कभी सोनू सर घुमा कर चोर नज़रों से बेडरुम की तरफ़ देखता और जल्दी से चेहरा दूसरी तरफ़ फेर लेता। वक्नफ़े-वक्नफ़े से आंसू बह निकलते थे।

इस बार सूबिया जागी तो फिर रोने लगी।

^{1.} कमज़ोर 2. भयभीत 3. नकार 4. कमज़ोरी 5. प्रदूषित 6. कारण

ہوئی می جیسی کوئی چیز جیسے دب کر پھیل گئی ہے بند آ تکھیں جیسے بوے بوے ابجرے ہوئے۔ دائروں میں دھنی پڑی تھیں۔ اس چیز کے ہاتھ پاؤں اور چہرہ جانے کس رنگ کے تھے۔ ۔۔۔۔۔دوسرے ہی ہل اس نے منہ دوسری طرف موڑا اور پوری طاقت لگا کر ڈرائنگ روم کی طرف بھا گا۔ اس کا چہرہ خوف سے سفید ہوگیا تھا۔ بدن بسینہ بسینہ ہورہا تھا۔

شاید وہ ایک زور دار چیخ مار کر بے ہوش ہوجاتا گر بخا رہیں چپ چاپ لیٹی ہوئی بوئی بہن نے اس کے حواس کو قابو میں رکھا۔ چیخ اس کے نضے سے سینے میں گھٹ کر رہ گئی۔ وہ بہن کے یاس چلا گیا اور باچھیں کھول کرمسکرانے لگا تو اس کے سوکھ سوکھ

وہ جہن کے پاس چلا کیا اور با پیس کھول کر سفرانے لگا تو اس کے سوتھے سوتے لب پہلے ہورہے ہتھے۔

> 'بسکٹ۔ لایا۔ ہوں' وہ تحر تحراقی ہوئی آواز میں بولا۔ '' کھائے گی۔'' وہ بیار سے پوچھنے لگا۔ اور توبید کر کر بھائی کو دیکھتی رہی۔



''दूध पियेगी सूबी ?'' उसने आवाज में प्यार भर कर कहा।

''मगर दूध तो है ही नहीं! अच्छा ठहर जा मैं कुछ और देखता हूँ।'' सूबिया ने कुछ न कहा। उसे खुद भी भूख लगी थी।

वह तेज-तेज क़दम उठाता हुआ बावर्ची खाने की तरफ़ गया और प्लास्टिक की मेज खींच कर नेमत खाने की अलमारी के ठीक नीचे तक ले गया।

बिस्कुट का डिब्बा लेकर जब वह ख़्वाबगाह के बाहर से गुजरा तो उसने बेइख़्तेयार सा होकर अन्दर निगाह दौड़ाई हालांके वह वहां से सीधा ड्राइंग रुम में भाग आना चाहता था। क्योंकि उसे पता था अन्दर उसकी मम्मी नहीं। पता नहीं कौन है और क्या है? उसने देखा के बेड पर पड़ी हुई मम्मी जैसी कोई चीज, जैसे दब कर फैल गई है। बन्द आंखें जैसे बड़े-बड़े उभरे हुए दायरों में धसी पड़ी थीं। उस चीज के हाथ पांव और चेहरा जाने किस रंग के थे.....।

दूसरे ही पल उसने मुंह दूसरी तरफ़ मोड़ा और पूरी ताक़त लगा कर ड्राइंग रुम की तरफ़ भागा। उस का चेहरा ख़ौफ़ से सफेद हो गया था। बदन पसीना-पसीना हो रहा था।

शायद वह एक जोरदार चीख़ मार कर बेहोश हो जाता मगर बुख़ार में चुप-चाप लेटी हुई बहन ने उस के हवास (1) को क़ाबू में रखा। चीख़ उसके नन्हें से सीने में घुट कर रह गयी।

वह बहन के पास चला गया और बांछें खोल कर मुस्कराने लगा तो उस के सुखे-सूखे लब पीले हो रहे थे।

''बिस्कृट लाया हुँ'' वह थर-थराती आवाज में बोला।

''खायेगी'' वह प्यार से पूछने लगा और सूबिया टुकुर-टुकुर भाई को देखती रही।



^{1.} होश